गव्रिईल त्रोयेपोल्स्की

श्याम कर्णी श्वेत बीम

प्रगति प्रकाशन

गव्रिईल त्रोयेपोल्स्की

श्याम कर्णी श्वेत बीम

प्रगति प्रकाशन • मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

अलेक्सांद्र त्रीफ़ोनोविच
त्वार्दोव्स्की को समर्पित

अनुक्रम

पहला अध्याय। एक कमरे में दो प्राणी ७
दूसरा अध्याय। वन में वसन्त २५
तीसरा अध्याय। बीम का पहला शत्रु ३४
चौथा अध्याय। सुनहला जंगल ४७
पांचवां अध्याय। भेड़ियों की घाटी में ५७
छठा अध्याय। दोस्त को अलविदा ६५
सातवां अध्याय। खोज निरन्तर जारी है ८७
आठवां अध्याय। रेल-मार्ग की दुर्घटना ९९
नवां अध्याय। एक नन्हा दोस्त, झूठी अफ़वाहें, बीम पर गुप्त दोषारोपण और लेखक का विषयान्तरण . . . ११३
दसवां अध्याय। धन की ख़ातिर १२८
ग्यारहवां अध्याय। ग्रामीण जीवन १४१
बारहवां अध्याय। मैदानों के विस्तार। एक असामान्य आखेट। बच निकलना १५७
तेरहवां अध्याय। वनीय चिकित्सालय। ममी और डैडी। जंगल में गर्जन १८५
चौदहवां अध्याय। उसके अपने दरवाज़े का रास्ता। तीन चालें . . २०६
पंद्रहवां अध्याय। अंतिम दरवाज़े पर। लौह वाहन का रहस्य . . २१९
सोलहवां अध्याय। एक खोज के दौरान मुलाक़ातें। पृथ्वी पर बीम के चिन्ह। चार धमाके २२९
सत्रहवां अध्याय। नव जीवन का उच्छ्वास (उपसंहार के स्थान पर) २४९

पहला अध्याय

एक कमरे में दो प्राणी

वह अब-तब, सहसा, सकरुण स्वर में और एक प्रकार की हताशा के साथ रिरियाने लगता और अपनी मां की खोज में अग़ल-बग़ल गिरता-पड़ता लड़खड़ाता फिरता। तब उसका मालिक उसे उठाता और दूध की एक बोतल का चूचुक उसके मुंह में लगा देता।

एक माह का पिल्ला और कर भी क्या सकता था? अभी उसे जीवन के बारे में कुछ पता नहीं था और उसकी सारी शिकायतों के बावजूद उसकी मां कहीं मिल नहीं रही थी। इस तरह पहले एक-दो दिन उसने अपने दुख-कष्टों से दुनिया को अवगत कराने की कोशिश की। लेकिन इन सब बातों के होते हुए भी उसे दूध की बोतल को अपने पंजों में दबाकर सोने में कोई दिक़्क़त नहीं होती थी।

चौथे दिन से वह नन्हा प्राणी मानवीय हाथों की ऊष्मा का आदी होने लगा। पिल्लों पर प्यार-दुलार का तुरन्त प्रभाव पड़ता है।

शुरू में तो वह अपना नाम भी नहीं जानता था, लेकिन हफ़्ता पूरा होने से पहले ही उसने यह दृढ़ धारणा बना ली कि उसका नाम बीम है।

दो माह का होने पर उसे अपने आसपास की चीज़ों का अहसास होने लगा और वह उन्हें देख हैरान रह जाता: ऊपर तक उठी ऊंची डेस्क, दीवार पर लटकी बंदूक़, शिकारी-थैला और थैले के बग़ल में लम्बे बालों-वाला मानवीय चेहरा। वह जल्दी ही इन सबका आदी हो गया। दीवार पर लटके चेहरे में विचित्र गतिशून्यता थी। तो क्या? जो वस्तुएं हिलती-डुलती नहीं वे बहुत दिलचस्प नहीं होतीं।

अगली दीवार थोड़ी अधिक दिलचस्प थी। वह ऐसी छोटी-छोटी ईंटों से बनी थी जिन्हें उसका मालिक निकाल भी सकता था और वापस लगा भी सकता था। चार माह का होने पर जब बीम अपने पिछले पैरों पर

खड़ा होने लगा तो उसने दीवार की एक ईंट खुद खींच निकाली और उसका अध्ययन करने की कोशिश की। लेकिन उसमें से एक अजीब फड़-फड़ाहट की आवाज़ आने लगी और एक पन्ना बीम के दांतों में फंस गया। परन्तु उस पन्ने को फाड़कर चिंदी-चिंदी करने में मज़ा खूब आया।

"अरे, यह क्या कर डाला?!" उसके मालिक ने कहा। "नहीं, बीम, नहीं, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए!" उसने बीम की नाक को उस पुस्तक में रगड़ दिया।

इस प्रकार के समझाने-बुझाने से तो एक इन्सान को भी पढ़ाई से नफ़रत हो जाती—लेकिन बीम को नहीं हुई: वह अपने सिर को कभी एक तरफ़, तो कभी दूसरी तरफ़ घुमाता बड़ी जिज्ञासा के साथ पुस्तकों को निहारता बैठा रहा। और फिर ऐसा जान पड़ा कि उसने एक फ़ैसला कर लिया है—अगर उसे यह नहीं लेनी चाहिए तो क्या हुआ, दूसरी तो ली ही जा सकती है। तो उसने दूसरी पुस्तक पर अपना पंजा साफ़ कर लिया और उसे लेकर सोफ़े के नीचे जा घुसा। वहां उसने पुस्तक का एक कोना चबाया, दूसरा कोना चबाया और फिर अपने आपको भूल उस अभागी पुस्तक को कमरे के बीचोंबीच घसीट लाया और उसकी बुरी गत बना दी, यही नहीं, उसके ऊपर चढ़कर कूद-फांद करने लगा।

और तभी उसने पहली बार जाना कि चोट लगना क्या होता है और "नहीं" का क्या अर्थ होता है। उसका मालिक अपने डेस्क से उठा और डांटकर बोला:

"नहीं!" और उसने उसका कान उमेठ दिया। "बेवकूफ़, तूने मेरी 'आस्तिकों और नास्तिकों के लिए बाइबिल' फाड़ दी!" उसने वही शब्द, "नहीं! तुझे मेरी पुस्तकें नहीं लेनी चाहिए," फिर कहे और बीम के कान को एक बार फिर ज़ोर से उमेठा।

बीम दर्द से चिंचियाया और उसने अपने चारों पैर ऊपर उठा दिये। वह पीठ के बल पड़ा अपने मालिक को ताकता रहा और यह नहीं समझ पाया कि हो क्या रहा है।

"नहीं! नहीं!" मनाही का यह शब्द फिर सुनायी दिया और पुस्तक एक बार फिर उसकी नाक की तरफ़ धकियायी गयी, लेकिन इस बार का तरीक़ा पीड़ादायी नहीं था। फिर उसके मालिक ने उसे उठा लिया और थपथपाते हुए वही बात फिर कही, "बेवकूफ़ बच्चे! तुम्हें

ऐसा नहीं करना चाहिए, जानते हो, नहीं करना चाहिए।" फिर वह नीचे बैठ गया और उसने बीम को अपनी गोद में बैठा लिया।

इस तरह बीम को उसकी कम उम्र में 'आस्तिकों और नास्तिकों के लिए बाइबिल' के ज़रिए अपने मालिक का पहला संदेश मिला। उसने अपने मालिक का हाथ चाटा और बहुत ही ध्यानमग्न दिखने की कोशिश की।

उसे अपने मालिक का बोलना तो पसन्द आया लेकिन कुल मिलाकर जो वह समझ सका वे सिर्फ़ दो शब्द थे "बीम" और "नहीं"। पर उसके बावजूद मालिक के माथे पर झुके सफ़ेद बालों और उसके सहृदय होंठों को हिलते देखना तथा उसकी मृदु उष्ण उंगलियों के स्पर्श को महसूस करना बहुत ही दिलचस्प था। बीम निश्चित रूप से यह जानता था कि उसका मालिक अच्छी मनोदशा में है या दुखी है, उस पर दोष लगा रहा है या उसकी प्रशंसा कर रहा है, उसे पास बुला रहा है या दूर भगा रहा है।

जब उसका मालिक उदास होता वह अपने आप से भी बातें करता और बीम से भी:

"हां, बेवकूफ़ यही मामला है। तू उसे क्यों देख रहा है?" उसने दीवार पर टंगे फ़ोटो की ओर संकेत किया। "वह मर गयी है, बेटे। वह अब नहीं रही।" उसने बीम को थपथपाया और इस तरह से बुदबुदाया मानो उसे पक्का यक़ीन हो कि उसकी बात को समझा जा रहा है। "आह, बीमू बेटे, ओ रे, बेवकूफ़, तुझे अभी कुछ पता नहीं।"

लेकिन उसकी यह बात पूरी तरह से सही नहीं थी क्योंकि बीम निश्चित रूप से जानता था कि उसके साथ अभी खेला नहीं जायेगा और वह यह भी समझ गया था कि "बेवकूफ़" और "बेटा" उसी पर लागू होते हैं। इसलिए जब उसका अच्छा दोस्त उससे बेवकूफ़ या बेटा कहता तो वह उतनी ही तत्परता से प्रतिक्रिया करता जितनी कि अपना नाम पुकारे जाने पर करता था। और यदि वह इतनी कम उम्र में अपने मालिक की आवाज़ के स्वरों को भांप लेता था तो बीम निश्चय ही बहुत चतुर कुत्ता बनने जा रहा था।

लेकिन क्या एक कुत्ते की हैसियत का अंदाज़ा सिर्फ़ उसकी अक्लमंदी से लगाया जा सकता है? दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं होता। बीम चतुर होगा लेकिन अन्य मामलों में वह उन्नीस ही रह जाता था।

यह सच था कि वह असली नस्ल के मां-बाप से जन्मा था — उ
मां-बाप दोनों ही शिकारी सेटर थे। इसके अलावा उसका वंशवृक्ष बहुत ल
था और इस बात को सिद्ध करने के लिए प्रमाणपत्र मौजूद थे। बीम
मालिक उसके प्रपितामह और उसकी पड़दादी तक तथा, चाहे तो, उ
भी पीछे तक के नाम गिना सकता था। यह सचमुच एक अच्छी बात थ
लेकिन अपने सारे गुणों के बावजूद उसमें एक बड़ा दोष था, जो बाद
उसके भविष्य पर विशेष बड़ा प्रभाव डालनेवाला था। वह असली शिका
कुत्ता था — गौर्डन-सेटर — जो स्कॉटलैंड की एक नस्ल है। लेकिन उस
रंग सामान्य गौर्डन-कुत्तों से नितांत भिन्न था और यही असली मुसीबत थ
अहेरी कुत्तों के प्राधिकारिक वर्णन के अनुसार एक गौर्डन-सेटर का र
"कौवे जैसा काला होना चाहिए, उसमें नीलाभ चमक होनी चाहिए त
पार्श्वों में सुस्पष्ट भूरेपन की आभा होनी चाहिए।" ग़लत जगहों पर सफ़े
निशान गौर्डन कुत्ते का गम्भीर दोष माना जाता था। प्रकृति ने बीम व
सफ़ेद रंग दिया था और उसके बदन में भूरेपन के कुछ चिन्ह थे और कु
धुंधले-धुंधले नज़र आनेवाले लाल धब्बे भी थे। उसकी एक टांग और सि
एक कान काले थे और वे सचमुच ही कौवे के पंख जैसे गहरे काले थे
उसका दूसरा कान पीताभ-अरुण रंग का था। वह सचमुच ही एक अजूब
था: रंग, जो बिल्कुल उलट-पुलट था, के सिवा अन्य सभी मामलों
वह एक गौर्डन-सेटर था। बीम के किसी दूरस्थ पुरखे ने उसके रूप को
ढालने में अनपेक्षित भूमिका अदा की थी। उसके माता-पिता गौर्डन नस्
के थे लेकिन वह था ऐल्बीनो।

भिन्न-भिन्न रंग के कानों और बड़ी-बड़ी गहरी-भूरी व बुद्धिमत्तापू
आंखों तले रंग के धब्बों की वजह से बीम का चेहरा अन्य कुत्तों के मुक़ाबले
शायद अधिक प्रभावशाली, अधिक आकर्षक, अधिक चतुर या, यों कहिये
अधिक दार्शनिक व अधिक विचारशील लगता था। वह महज़ थूथन नह
एक असली चेहरा था। लेकिन जानवरों में विशिष्ट गुण विकसित करने
वाली विद्या के नियमों के मुताबिक़ इस विशेष मामले में सफ़ेद रंग ह्रा
का चिन्ह माना जाता है। तो ऐसा था वह — हर तरह से एक ख़ूबसूर
प्राणी, लेकिन कुत्तों के पारखी की दृष्टि से, पूर्णरूपेण अपविकसित नह
तो, एक संदिग्ध मामला। बीम के मामले में यही मुसीबत थी।

यह सच है कि अपनी उत्पत्ति के बारे में बीम में कोई अपराध भावन

नहीं थी क्योंकि एक पिल्ले को अपने मां-बाप चुनने का उतना ही अधिकार होता है जितना किसी भी अन्य प्राणी को। चूंकि उसे इस मामले पर विचार करने का अवसर कभी भी नहीं दिया गया इसलिए वह परम आनन्द के साथ ज़िन्दगी बिताये चला जा रहा था।

लेकिन उसका मालिक चिंतित था। क्या वे बीम को असली नस्ल के शिकारी कुत्ते का दर्जा देनेवाला अभिजाति वंशीय प्रमाणपत्र देंगे या वह हमेशा जातिच्युत रहेगा? इसका निर्णय छः मास की अवस्था में तब होगा जब एक पिल्ला (फिर उसी कुक्कुरविज्ञान के नियमों के अनुसार) पर्याप्त रूप से बड़ा हो जाता है और उसे कुत्तों की असली नस्लों में से किसी एक में श्रेणीबद्ध किया जा सकता है।

बीम की मां के मालिक ने उत्पन्न पिल्लों में से सफ़ेद को फेंकने का निश्चय कर लिया था, दूसरे शब्दों में उसे डुबोकर मार डालने का फ़ैसला कर लिया था, परन्तु तभी यह विचित्र व्यक्ति आ टपका जिसका यह ख़्याल था कि ऐसे सुन्दर प्राणी को नष्ट करना दुःख की बात होगी। वही विचित्र व्यक्ति बीम का वर्तमान मालिक था। उसे इस पिल्ले की आंखें भा गयी थीं, आप मानिये, उन आंखों से समझदारी झलकती थी। किसकी क्या रुचि हो सकती है, इस बारे में कोई कुछ नहीं कह सकता! ख़ैर, अब प्रश्न यह था कि वे उसे एक वंश-विवरण प्रदान करेंगे या नहीं?

इस बीच बीम का मालिक इस बात पर विचार करता रहा कि बीम के रूपरंग की विचित्र विसंगति का क्या कारण होगा। सत्य के निकट पहुंचने के लिए और अन्ततः बीम को निर्दोष सिद्ध को करने के लिए उसने आखेट तथा श्वान-प्रजनन सम्बन्धी सारी पुस्तकें पढ़ीं। उसने ऐसी हर सामग्री की नक़ल उतारकर रख ली जो यह सिद्ध कर सकती कि बीम गौर्डन जाति का सच्चा प्रतिनिधि है, क्योंकि इस समय तक बीम उसका दोस्त बन गया था और दोस्त मुसीबत में हों तो उनकी मदद करनी ही चाहिए। अन्यथा बीम श्वान-प्रदर्शन में भाग नहीं ले सकेगा और अपनी छाती में पदकावलि लटकाये घूम-फिर नहीं सकेगा। बीम कितना ही अच्छा शिकारी कुत्ता क्यों न बन जाये वह असली नस्ल की पदवी का सुखोपभोग कभी नहीं कर पायेगा। उसके लिए असली नस्ल का दरवाज़ा हमेशा के लिए बन्द हो जायेगा।

कैसी अन्यायी है यह दुनिया!

मालिक की टिप्पणियां

पिछले कुछ महीनों से बीम ने अपने आप को गुपचुप मेरे जीवन का अंग बना लिया है। वह ऐसा किस तरह कर सका? अपनी भलमनसाहत से, अपने अथाह विश्वास और स्नेह से, उन गुणों से जो यदि चाटुकारी की आदत से दूषित न हों तो हमेशा अप्रतिकार्य होते हैं, चाटुकारी की आदत कालांतर में सभी अच्छे गुणों को व्यर्थ कर देती है। हां, दुम हिलाकर चाटुकारी करने की आदत भयानक चीज़ है। इससे भगवान बचाये! लेकिन बीम अभी एक नन्हा कौतुकी पिल्ला मात्र है। वह किस प्रकार का कुत्ता बनता है, यह सब मुझ पर, उसके मालिक पर निर्भर होगा।

यह कुछ विचित्र सी बात है कि मैं कभी-कभी अपने आपको ऐसे काम करते देखता हूं जो मैंने पहले कभी नहीं किये। मसलन, जब मैं किसी तस्वीर में कोई कुत्ता देखता हूं तो सबसे पहले उस कुत्ते की नस्ल और उसके रंग पर ग़ौर करता हूं। मेरा ख़्याल है कि मैं अभी भी इस बात से चिंतित हूं कि बीम को अभिजातीय वंश का प्रमाणपत्र मिलेगा या नहीं।

कुछ दिन हुए मैं एक प्रदर्शनी में गया और वहां जिस पहली तस्वीर ने मेरा ध्यान आकृष्ट किया वह जैकोपो बसानो (१६वीं शताब्दी) द्वारा निर्मित चित्र 'चट्टान से पानी निकालते हुए मूसा' थी। इस चित्र की अग्रभूमि में एक कुत्ता है जो स्पष्टतः शिकारी कुत्ता है लेकिन उसका रंग अपेक्षाकृत विलक्षण है–सफ़ेद बदन, एक सफ़ेद धारी से विभाजित काला चेहरा और कान भी काले, लेकिन नाक में वही सफ़ेद रंग, बायें कंधे पर एक काला धब्बा और नितम्ब भी काला। विलक्षण रंगवाला यह प्राणी, जो स्पष्टतः अपनी अंतिम अवस्था में था, एक आदमी के कटोरे से पानी पी रहा था।

चित्र में एक और कुत्ता भी था, लम्बे बालोंवाला, उसके भी कान काले थे। वह भी प्यास से दुर्बल था और अपना सिर मालिक की गोद में रखे चुपचाप जल पीने का इन्तज़ार कर रहा था।

नज़दीक ही एक ख़रगोश और एक मुर्ग़ा था और बायीं तरफ़ दो भेड़ें।

अपने चित्र की अग्रभूमि में, लोगों के बीच, एक कुत्ते को खड़ा करके यह चित्रकार क्या कहने का प्रयत्न कर रहा था? मैं समझता हूं कि वह

यह कहना चाहता है कि लोग पुराने ज़माने में भी कुत्तों से हमेशा प्यार करते थे और कठिनाई के समय में, चाहे वह राष्ट्रीय विपत्ति का ही समय क्यों न रहा हो, कुत्तों का साथ देते थे और कि कुत्ते अपने मालिक की बग़ल में खड़े मरने को तत्पर, स्वामिभक्त व वफ़ादार होते थे।

उस चित्र में प्रदर्शित घटना से कुछ ही पहले उसमें दिखाये गये सभी लोग हताश थे, किसी को कोई आशा नहीं थी। वे मूसा के पास आये जो उन्हें दासता से छुड़ाकर लाया था और बोले :

"परमेश्वर के लिए हम मिस्र की भूमि में प्रभु के हाथों तभी मर गये होते जब हम मांस-पात्रों के पास बैठे और जब हमने भरपेट रोटी खायी थी! क्योंकि तू हमें, इस सारे समुदाय को भूख से मारने के लिए इस वीराने में ले आया है।"

और जब मूसा ने देखा कि मनुष्यों के हृदयों में दासता की भावना कितनी गहरी पैठी है तो उसके दुख का ठिकाना न रहा। यदि मांस-पात्रों और स्वतंत्रता के बीच पसन्द का प्रश्न होता तो वे निश्चय ही मांस-पात्रों को पसन्द करते। लेकिन तब मूसा ने चट्टान पर आघात करके पानी निकाल दिया और जो लोग उसके पीछे-पीछे चले आये थे वे सब फिर से प्रसन्न हो गये—कम से कम बसानो के चित्र के अनुसार तो हुए ही।

या यह भी हो सकता है कि बसानो ने अपने चित्र में आत्मशक्ति के अभाव के लिए मनुष्य की प्रताड़ना के रूप में, वफ़ादारी, आशा तथा निष्ठा के प्रतीक रूप में कुत्तों को प्रमुख स्थान दिया हो? कौन बता सकता है? बात बहुत ही पुरानी जो है।

बसानो का चित्र तीन सौ साल से भी ज़्यादा पुराना है। क्या बीम का काला और सफ़ेद रंग उन्हीं दिनों का है? निश्चय ही नहीं। फिर भी कौन जाने, प्रकृति तो प्रकृति ही है।

जो भी हो, बीम के कानों और शरीर के विसंगत रंग के बारे में सम्मत आरोपों से उसे बरी करने के लिए यह शायद ही सहायक हो। हम अतीत में जितना पीछे जायेंगे बीम पर पुरखों के दोषों की पुनरावृत्ति और दूषित वंश परम्परा का आरोप लगाये जाने की सम्भावना उतनी ही अधिक हो जायेगी।

नहीं, मुझे कहीं और तलाश करनी चाहिए। बहरहाल, अगर श्वान-प्रजनन का कोई विशेषज्ञ बसानो के चित्र का ज़िक्र करेगा तो मैं अंतिम

उपाय के रूप में यह तो कह सकूंगा कि "बमानो के काले कानों का इससे क्या वास्ता ?"

लेकिन मेरे लिए, शायद, बीम के अपने समय के निकट की कोई चीज़ खोज निकालना बेहतर होता।

* * *

शिकारी नस्लों के लिए निश्चित मानकों से लिये गये उद्धरण : "गौर्डन-सेटर – १९वीं सदी के उत्तरार्ध की प्रारम्भिक अवधि में स्कॉटलैंड में विकसित एक नस्ल... आधुनिक गौर्डन-सेटर की ताक़त तथा भारी अस्थि-संरचना पहले जैसी ही है पर रफ़्तार बढ़ गयी है। यह नस्ल अपनी विनीत और मृदु प्रकृति के लिए उल्लेखनीय है। गौर्डन आज्ञाकारी और अच्छे स्वभाव का होता है, आसानी से काम में जुट जाता है और दलदली भूमि तथा जंगल दोनों ही स्थानों में उपयोगी होता है... सिर को ग्रीवा-संधि से कभी नीचे न करते हुए ऊंची व स्थिर मुद्रा में खड़ा होना इसकी लाक्षणिक मुद्रा है..."

* * *

'शिकारी का पंचांग' और 'रूस की मछलियां' शीर्षक उत्तम पुस्तकों के लेखक ल० प० सबानेयेव की दो खंडोंवाली कृति 'कुत्ते' से :

"यदि हम यह याद रखें कि एक नस्ल के रूप में गौर्डन-सेटर शिकारी कुत्तों की उस सर्वाधिक प्राचीन प्रजाति से विकसित हुआ है जिसे शताब्दियों से ऐसा प्रशिक्षण दिया जाता रहा है जिसे हम घरेलू प्रशिक्षण कह सकते हैं तो हमें यह जानकर आश्चर्य नहीं होगा कि सेटर नस्ल के कुत्ते सर्वाधिक संस्कृत और अक़्लमंद होते हैं।"

तो! बीम एक अक़्लमंद रस्ल का कुत्ता है। यह बात उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

* * *

ल० प० सबानेयेव की उसी पुस्तक से :

"१८४७ में एक जागीरदार साहब इंगलैंड से सेटर कुत्तों की एक बहुत ही दुर्लभ नस्ल के दो अत्यंत सुन्दर कुत्ते लेकर आये। ग्रैंड ड्यूक मिख़ाईल पाव्लोविच के लिए उपहार के उद्देश्य से लाये गये वे कुत्ते बिकाऊ

नहीं थे... उनका २००० रूबल मूल्य के एक घोड़े के बदले में विनिमय किया गया..."

क्या सौदा था वह! एक उपहार, जिसका मूल्य बीस कृषकदासों के बराबर हो। लेकिन क्या यह कुत्तों का दोष था? ग्रौर इस सबसे बीम का क्या भला हो सकता है?

* * *

सुज्ञात प्रकृति प्रेमी, ग्राखेटक ग्रौर श्वान-प्रजनक स० व० पेंस्की के ल० प० सबानेयेव को लिखे एक पत्र से:

"प्रथम क्रीमियाई युद्ध के दौरान मैंने 'क्रेचींस्की का विवाह' के लेखक सुखोवो-कोबीलिन के पास एक बहुत खूबसूरत लाल सेटर ग्रौर रियाज़ान में कलाकार प्योत्र सोकोलोव के घर में कुछ चितकबरे पीले रंग के सेटर देखे।"

ग्रहा! यह है काम की चीज़। एक व्यंग्य लेखक के पास भी सेटर नस्ल का कुत्ता, दिलचस्प बात है। ग्रौर एक कलाकार के पास सुनहले चितकबरे। बीम? मैं सोचता हूं, यहीं से तुम्हारी नस्ल ग्रायी है। यह हुई कुछ बात! लेकिन कान काले क्यों? यह ग्रभी भी एक रहस्य है।

* * *

उसी पत्र से:

"दरबार के चिकित्सक डाक्टर बेर्स के पास भी लाल सेटर कुत्ते थे। उसने एक लाल कुतिया को उस काले सेटर के साथ रखा जो स्वर्गीय सम्राट ग्रलेक्सांद्र का था। उस कुतिया ने किस प्रकार के पिल्ले जने या उनका क्या हुग्रा, यह मैं नहीं जानता। मैं सिर्फ़ इतना जानता हूं कि उनमें से एक काउण्ट लेव निकोलायेविच तोलस्तोय की जागीर में पला हुग्रा था।"

ठहरो! यही होना चाहिए! ग्रगर तुम्हारी काली टांग ग्रौर काला कान तोल्स्तोय के कुत्ते से प्राप्त हुग्रा है तो तुम एक खुशकिस्मत कुत्ते हो ग्रौर ग्रसली नस्ल के प्रमाणपत्र के बग़ैर भी खुशकिस्मत हो, बीम। वास्तव में तुम दुनिया के सबसे ज़्यादा खुशकिस्मत कुत्ते हो। उस महान लेखक को कुत्तों से बहुत प्यार था।

* * *

उसी पत्र से एक और उद्धरण :

"मैंने सम्राट के काले सेटर को इल्यींस्कोये में उस प्रीतिभोज के देखा जिसमें सम्राट ने मास्को शिकारी समाज के सदस्यों को आम किया था। वह बहुत ही सुन्दर दिखायी देनेवाला घरेलू कुत्ता था। उ सिर बहुत शानदार और बाल बहुत अच्छे थे, लेकिन उसमें सेटर नस विशेष गुण नहीं थे – उसके पैर बहुत लम्बे थे और एक टांग बि सफ़ेद थी। कहते हैं कि स्वर्गीय सम्राट को यह सेटर पोलैंड के किसी स ने भेंट किया था और अफ़वाह यह थी कि वह असली नस्ल का नि कुत्ता नहीं था।"

अच्छा तो पोलैंड के सामंत महोदय ने उसे सम्राट के पास प दिया? ऐसा हो सकता है। ऐसी घटनाएं श्वान-जगत में भी होती करो परेशान उस शाही काले कुत्ते को! लेकिन हमें बेर्स की उस "आश जनक रूप से संवेदनशील और असाधारण चतुर" सुनहली कुतिया नहीं भूलना चाहिए। तो बीम, अगर तुम्हारी टांग सम्राट के काले से प्राप्त हुई तो अन्य सब मामलों में तुम उस कुत्ते के वंशज हो स हो जो उस महान लेखक की सम्पत्ति था... लेकिन बीम! हमने बात को गुप्त रखना चाहिए। सम्राट के कुत्ते के बारे में एक भी श न बोला जाये। वह, बस, हुआ ही नहीं। हमारे पास वैसे ही काफ़ी निबटाने को है।

* * *

अच्छा तो अब हमारे पास बीम के बचाव के लिए क्या-क्या है

स्पष्ट है कि मूसा से काम नहीं चलेगा, ना ही सूख़ोवो-कोबीलि से – ग़लत कालावधि और ग़लत ही रंग। हमारे पास जो बचा वह है ले निकोलायेविच तोलस्तोय : (क) समयानुसार वे हमसे निकटतम हैं औ (ख) उनके कुत्ते का बाप काला और मां लाल थी। यहां तक तो स ठीक है। लेकिन उनके कुत्ते का यह बाप, वह काला कुत्ता सम्राट क था – यह अफ़सोस की बात हो गयी।

जिस दृष्टिकोण से भी देखिये बीम के दूर के पूर्वजों से सम्बन्धित हमार खोजबीन पर पर्दा ही डालना होगा। विशेषज्ञों को सिर्फ़ बीम के मां-बा की वंश-परम्परा के आधार पर ही निर्णय लेना होगा। जैसा कि मान

जाता है, वे असली नस्ल के हैं। अगर उनमें सफ़ेद रंग नहीं है तो हमें कहना चाहिए "तथास्तु।" उन्हें तोलस्तोय की रंचमात्र परवाह नहीं है, और यह है भी बिल्कुल ठीक। अगर वे करते तो उसके कुत्ते की वंशावली को उस कुत्ते के साथ जोड़ने में सफल हो जाते जो एक लेखक का कुत्ता था और वहां से अपने आप को लेव तोलस्तोय जैसा सोचना उतना कठिन नहीं रह जाता है। वस्तुतः इधर-उधर काफ़ी तोलस्तोय हैं। बल्कि काफ़ी क्या, काफ़ी से भी अधिक हैं! कितने हैं, यह सोचने में दिमाग़ चकरा जाता है।

निराशापूर्ण होने पर भी मेरी तर्क-बुद्धि यह तथ्य स्वीकार करने के लिए तैयार है कि बीम असली नस्ल के कुत्तों की जाति से बाहर है। बहुत बुरी बात है। लेकिन थोड़ी सी सांत्वना की बात शेष है कि वह अक्लमंद नस्ल का कुत्ता है, वैसे इससे सिद्ध कुछ नहीं होता। आख़िर मानक तो मानक ही हैं।

* * *

"बहुत बुरा, बीम, यह बहुत ही बुरा है, है ना?" उसके मालिक ने आह भरी, क़लम किनारे रख दी और नोटबुक को एक दराज़ में ठूंस दिया।

अपना नाम सुनकर बीम जहां लेटा था वहां से उटकर बैठ गया और उसने अपने काले कानवाले हिस्से को कुछ इस तरह झुकाया मानो वह केवल पीताभ-लाल कान से ही सुन रहा हो। इस स्थिति में वह बहुत अच्छा दिखायी दे रहा था। वास्तव में उसकी सम्पूर्ण रूपांकृति यह कहती प्रतीत होती थी: "हां, मैं तुम्हें पसन्द करता हूं और मैं सुन रहा हूं। इससे ज़्यादा तुम और क्या चाहते हो?"

इस प्रश्न से प्रफुल्लित होकर उसके मालिक ने कहा:

"तुम अच्छे हो, बीम। अगर तुम्हारे पास समुचित प्रमाणपत्र नहीं भी है तो भी हम साथ-साथ चलते रहेंगे। तुम एक अच्छे कुत्ते हो और अच्छे कुत्तों को सब पसन्द करते हैं।" उसने बीम को अपनी गोद में उठा लिया और उसको थपकी देता हुआ बुदबुदाया, "कोई बात नहीं, बेटे, मेरे अच्छे बेटे।"

बीम को सहसा हार्दिकतापूर्ण सामीप्य और सुख की अनुभूति हुई और

उस वाक्य का अर्थ उसके मन में इतना गहरा पैठ गया कि वह उसे जं
पर्यंत याद रखेगा। "अच्छे" का अर्थ था दुलार, कृतज्ञता और दो

बीम सो गया। उसे इससे क्या लेना कि उसका मालिक कौन
महत्व सिर्फ़ इस बात का था कि वह एक अच्छा दोस्त था।

"अरे ओ, काले कान, सम्राट की टांग," उसका मालिक मृदु
में बोला और उसे कोने में बिछे उसके बिस्तर पर ले गया।

वह देर तक खिड़की पर खड़ा जामुनी रात के अंधेरे को ताकता
और फिर दीवार पर टंगे चित्र की ओर नज़र डालकर बोला :

"तुम देखती हो, अब मैं कुछ बेहतर महसूस कर रहा हूं। अब
अकेला नहीं हूं।" उसे इस बात का अहसास नहीं था कि अपने अके
में वह "उसके" साथ या ख़ुद अपने से और अब बीम से बातें करने
था। "अब मैं अकेला नहीं हूं," उसने तस्वीर को सम्बोधित करके अ
बात दोहरायी।

लेकिन बीम सोया हुआ था।

* * *

इस प्रकार वे अपने एक कमरे में साथ-साथ रहते। बीम एक हृ
पुष्ट जवान कुत्ता बन गया था। वह जल्दी ही यह जान गया कि उस
मालिक का नाम "इवान इवानिच" था। जी हां, वह एक चतुर जव
पिल्ला था और सीखने में तेज़ था। धीरे-धीरे वह यह सीख गया कि उ
किसी भी वस्तु को कभी भी नहीं छूना चाहिए। उसे वस्तुओं और लो
को देखने भर की अनुमति थी, परन्तु सामान्यत: अपने मालिक की इजाज़
या आदेश के बिना किसी भी चीज़ की अनुमति नहीं थी। इस तर
"नहीं" शब्द बीम के जीवन का मुख्य नियम बन गया। इवान इवानि
की आंखें, उसकी आवाज़ का लहजा, उसकी मुद्राएं, आदेश के सुस्पष्
शब्द और प्यार-दुलार की बातें उसके निर्देशक सिद्धान्त थे। यही नहीं
दूसरी तरफ़ यह भी अनिवार्य था कि किसी भी कार्यवाही पर उसका को
भी स्वतंत्र निर्णय उसके मालिक की इच्छाओं के विरुद्ध न हो। बीम शनै
शनै: यह सीख रहा था कि अपने दोस्त के इरादों को किस प्रकार समझ
जाये। उदाहरण के लिए, जब उसका मालिक खिड़की पर खड़ा दूर कहीं
देखता हुआ सोचता तो बीम भी उसके निकट आ बैठता और ख़ुद भी

बाहर को देखता विचार करता रहता। आदमी नहीं जान सकता था कि कुत्ता क्या सोच रहा है, लेकिन बीम की सम्पूर्ण उपस्थिति से यही लगता था मानो कह रहा हो : "अब मेरा अच्छा दोस्त अपनी डेस्क पर आकर बैठ जायेगा। मुझे पक्का यक़ीन है वह अवश्य बैठेगा, थोड़ी देर कमरे में चहलक़दमी करेगा, फिर बैठ जायेगा और उस सफ़ेद पर्चे पर अपनी छोटी सी छड़ी से कुछ अंकित करने लगेगा और उसकी वह नन्ही छड़ी आहिस्ता-आहिस्ता कुछ फुसफुसाती रहेगी। और देर तक ऐसा ही होता रहेगा, इसलिए मैं खुद उसकी बग़ल में बैठ जाऊंगा।" फिर वह अपनी नाक से अपने मालिक गर्म हाथों को छुयेगा और उसका मालिक कहेगा :

"अच्छा, बीम, हम थोड़ा काम कर लें।" और पक्की बात, वह अपने स्थान पर विराजमान हो जायेगा।

बीम गोलमटोल होकर उसके पैरों के पास लेट जायेगा या अगर "अपने कोने में जाओ" का आदेश मिलेगा तो जाकर अपने बिस्तर में लेट जायेगा और लेटा-लेटा इंतज़ार करेगा, एक नज़र का, एक शब्द का, किसी एक भाव-भंगिमा का। परन्तु कुछ समय बाद वह अपने कोने को छोड़कर उस मोटी गोल हड्डी को चबाने में जुट सकता था जिसे वह अपने दांतों से काट तो नहीं सकता था लेकिन जो उसके दांतों को पैना बनाने के लिए बहुत अच्छी थी; हां, उसे, जितना चाहो, कुतरे जाओ मगर काम में बाधा मत डालो।

लेकिन जब इवान इवानिच अपने हाथों से मुंह को ढांपे, डेस्क पर कोहनियां टिकाये बैठा होता तो बीम उसके पास चला जाता और अपने बहुरंगी कानोंवाले सिर को उसकी गोद में रख यों ही खड़ा रहता। वह जानता था कि जल्दी ही उसे थपकियां दी जायेंगी। वह जानता था कि उसके दोस्त को कोई कष्ट है। और इवान इवानिच उसे धन्यवाद देगा :

"धन्यवाद, प्यारे दोस्त। धन्यवाद, बीम बेटे।" और वह सफ़ेद काग़ज़ पर अपनी लिखने की छड़ी से फिर कुछ बनाने लगेगा।

यह था घर का जीवन।

परन्तु बाहर मैदानों में नितांत भिन्न जीवन था। वहां वे दोनों पूरी तरह खुल जाते। वहां बीम इधर-उधर दौड़ सकता था, कूद सकता था, तितलियों का पीछा कर सकता था, घास में लोट लगा सकता था – यहां सब कुछ करने की इजाज़त थी। लेकिन जब बीम आठ महीने का हो गया

तो उसे यहां भी अपने मालिक के आदेशों के अनुसार चलना पड़ा। "ि
जाओ!" – इसका मतलब होता तुम दौड़ सकते हो, खेल सकते हो। "वापस
– इसका मतलब साफ़ ज़ाहिर है; "नीचे!" – यह तो और भी अ
स्पष्ट है; "ऊपर!" – किसी चीज़ के ऊपर से कूदो; "खोजो!" – प
के टुकड़ों की खोज करो; "पीछे क़दमों पर!" – मेरी बग़ल में चलो पर के
बायीं तरफ़ से; "इधर आओ!" – दौड़कर फ़ौरन अपने मालिक के
आओ – तुम्हें चीनी का एक टुकड़ा मिलेगा। साल भर का होने तक
और भी बहुत से शब्द सीख गया। दोनों दोस्त एक दूसरे को अधिकाधि
अच्छी तरह से समझने लगे, एक दूसरे को अधिक चाहने लगे औ
मनुष्य और कुत्ता – बराबरी के आधार पर रहने लगे।

लेकिन एक दिन एक ऐसी घटना हुई जिसने बीम की ज़िन्दगी ब
दी और कुछ ही दिनों के अन्दर उसे परिपक्वता के निकट पहुंचा दिय
बीम को अचानक यह पता लगा कि उसके मालिक में एक बड़ी अ
आश्चर्यजनक कमी है।

यह घटना इस प्रकार हुई। बीम एक चरागाह में पनीर के बिखर
हुए टुकड़ों की खोज में कभी आगे और कभी पीछे एक शटल की त
चक्कर लगा रहा था कि सहसा उसे घास, फूलों और स्वयं धरती व न
की विविध गंधों के बीच हवा के झौंके के साथ एक नितांत भिन्न औ
उत्तेजक गंध मिली; वह एक पक्षी की गंध थी जो बीम की जानकारीवा
पक्षियों, गौरय्यों और नन्ही फुदकियों व अन्य ऐसी ही चिड़ियों, जिनक
पीछा करना व्यर्थ था (वह काफ़ी कोशिश कर चुका था), से बिल्कु
फ़र्क़ थी। यह एक अज्ञात गंध थी, ऐसी गंध जो ख़ून में उत्तेजन भ
रही थी। बीम रुका और उसने पलटकर अपने मालिक की तरफ़ देखा
लेकिन उसका मालिक ज़रा भी ध्यान दिये बग़ैर दूसरी तरफ़ को मु
गया। बीम हैरान रह गया: उसके दोस्त में गंध को पहचानने की क्षमत
थी ही नहीं। वह ज़रूर ही पंगु होगा! तब बीम ने ख़ुद फ़ैसला क
लिया: छोटे-छोटे क़दमों से, चुपचाप आगे बढ़ते हुए वह उस अज्ञात क
ओर जाने लगा और अब उसने इवान इवानिच की तरफ़ मुड़कर देखन
बन्द कर दिया था। उसके क़दम छोटे और छोटे होते गये, ऐसा लगत
था कि वह अपने हर क़दम के लिए एक और सिर्फ़ एक ही स्थल क
खोज कर रहा था, ताकि शोर न हो और उसे घास के पत्ते तक को

छूना पड़े। अन्त में गंध इतनी तीव्र हो गयी कि वह और आगे नहीं बढ़ सका। अपने अगले दायें पैर को अधर में लटकाये हुए बीम उसी स्थान पर स्थिर खड़ा हो गया। वह किसी प्रतिभावान मूर्तिकार द्वारा निर्मित कुत्ते की प्रतिमा की नाईं गतिशून्य खड़ा था। और यही थी वह चीज़— उसका पहला आखेट-संकेत। आखेट करने की प्रेरणा का उस प्रेरणा का प्रथम जागरण जो बढ़ते-बढ़ते पूर्ण आत्मविस्मृति पर पहुंचा देती है।

लेकिन नहीं, उसे आत्मविस्मृत नहीं होना चाहिए। उसका मालिक चुपचाप उसके पास आता है और रोमांच से थरथराता खड़ा हो बीम को थपकी देने लगता है।

"मेरे बेटे, अच्छे बेटे, शाबाश," वह कहता है और उसके गले का पट्टा पकड़ लेता है, "बढ़ो... आगे बढ़ो..."

लेकिन बीम हिल नहीं सकता, उसकी शक्ति उसका साथ छोड़ गयी।

"बढ़ो... आगे बढ़ो..." इवान इवानिच उसके पट्टे को थामे कोमलता से खींचता है।

तब बीम आगे बढ़ता है। बेहद धीरे। अब उसे थोड़ी ही दूर जाना है, अज्ञात पास ही तो है। फिर यकायक कठोर आदेश सुनायी पड़ता है:

"बढ़ो!!!"

बीम झपाटे से आगे बढ़ता है। एक बटेर शोर करता हुआ फड़फड़ाता उड़ता है। बीम उसे पकड़ने के लिए ग़ोता लगाता है और फिर अपने पैरों की हर पेशी पर ज़ोर देता हुआ उसका पीछा करने दौड़ पड़ता है।

"वापस!" परन्तु बीम कुछ नहीं सुनता जैसे कि उसके कानों का अस्तित्व ही न हो।

"वापस!" और फिर एक सीटी। "वा-प-स!" एक और सीटी।

बीम तब तक दौड़ता रहा जब तक कि बटेर उसकी आंखों से ओझल नहीं हो गया। फिर वह प्रसन्न होकर वापस लौट आया। लेकिन यह क्या मामला है? उसका मालिक संजीदगी से देख रहा था और उसने उसे दुलारने की कोई कोशिश नहीं की। लेकिन यह सच है! उसका दोस्त कभी कुछ सूंघ नहीं सका! उसका लाचार अभागा दोस्त... बीम ने किंचित सतर्कता से उसका हाथ चाटा मानो अपने निकट के प्राणियों में से निकटतम के इस हैरतअंगेज़ आनुवंशिकी दोष के लिए हमदर्दी प्रकट कर रहा हो।

उसके मालिक ने कहा :

"नहीं मूर्ख, कठिनाई यह नहीं है।" फिर प्रसन्न होते हुए उसने अ कहा, "अच्छा बीम, आओ हम गम्भीरता से काम शुरू करते हैं उसने बीम के गले से पट्टा निकाला और उसे दूसरा (तकलीफ़देह) प पहना दिया और उसमें एक लम्बी ज़ंजीर बांध दी। "चलो!"

अब बीम और कुछ नहीं केवल बटेर की गंध के पीछे जा रहा थ इवान इवानिच उसे उस दिशा की तरफ़ ले गया जहां वह बटेर गया थ बीम को इस बात का कुछ पता नहीं था कि उसके दोस्त ने वह जग देख ली थी जहां वह बटेर उस शर्मनाक खेदे के बाद जा बैठी थी (य सच है कि वह उसकी गंध नहीं पा सका लेकिन उसने उसे देख लि था)।

और वह गंध फिर आयी! ज़ंजीर के बारे में अनभिज्ञ बीम ने अप आखेट-परास को छोटा कर दिया। वह सूंघता-सूंघता बढ़ा और सहम तीव्र गंध पाकर उसने अपना सिर उठाया... एक और आखेट-संकेत सायंकालीन आकाश की पृष्ठभूमि में वह एक ऐसा दृश्य था जिसे वस्तुत कुछ ही लोग सराह सकते हैं। स्वयं भी उत्तेजना से प्रकम्पित इवान इवा निच ने ज़ंजीर को मज़बूती से अपनी कलाई में लपेट लिया और आहिस्त से आदेश दिया :

"बढ़ो... आगे बढ़ो..."

बीम ज़ंजीर के साथ आगे बढ़ा। फिर रुक गया।

"बढ़ो!!!"

बीम ने ठीक उसी तरह आगे की तरफ़ झपट्टा मारा जैसा कि उसने पहली बार किया था। बटेर उड़ा, उसके पंखों की फड़फड़ाहट से एक कर्णकटु ध्वनि निकली और बीम, एक अन्य वैसे ही, प्रचण्ड खेदे के लिए तीर की तरह आगे बढ़ा, लेकिन... ज़ंजीर के खिंचाव ने उसे रोक दिया और वह डगमगाता हुआ पीछे को आ गया।

"वापस!!!" उसका मालिक चिल्लाया, "वापस!!!"

बीम का संतुलन गड़बड़ा गया और वह गिर पड़ा। वह यह समझ नहीं पाया कि उसके साथ क्या किया जा रहा है और क्यों किया जा रहा है। उसने बटेर की दिशा में एक बार फिर भागने का प्रयास किया।

"नीचे!"

बीम ज़मीन पर लेट गया।

और एक बार फिर यही सब दोहराया गया और इस बार एक नये बटेर के साथ। लेकिन इस मरतबा बीम ने ज़ंजीर के खिंचाव को पहले की अपेक्षा जल्दी महसूस कर लिया और आदेश पाते ही ज़मीन पर लेट गया। वह ऐसी उपायातीत हताशा मिश्रित कामना से कांप रहा था जो दुम से लेकर नाक तक उसके सम्पूर्ण शरीर से अभिव्यक्त हो रही थी। यह बहुत दर्दनाक था! और सिर्फ़ उस गंदी-घिनौनी और कठोर ज़ंजीर के कारण ही नहीं बल्कि उन कांटों के कारण भी जो उस पट्टे के भीतरी हिस्से में लगे थे।

"हां, बीम, यही तरीक़ा है। इससे बचने का कोई उपाय नहीं—इसे करना ही होता है," इवान इवानिच ने उसे स्नेह से दुलारते हुए कहा।

एक असली शिकारी कुत्ते के रूप में वह दिन बीम की ज़िन्दगी का प्रारम्भ था। उस दिन से वह समझ गया कि वह और अकेला वही यह पता लगा सकता था कि पक्षी कहां था और कि उसका मालिक लाचार था, कि उसकी नाक को उसके चेहरे में महज़ दिखाने के लिए लगाया गया है। अब उसने अपना असली काम शुरू कर दिया था और वह काम तीन शब्दों पर आधारित था: "नहीं", "वापस लौटो" और "अच्छा"।

उसके बाद, उसके बाद बंदूक़ आयी थी! और फिर धमाका हुआ और बटेर इस तरह नीचे जा गिरा था मानो उस पर खौलता पानी डाल दिया गया हो।

और हुआ यह कि उसका पीछा भी नहीं करना पड़ा। जो कुछ करना पड़ा वह था सिर्फ़ उसका पता लगाना, उसे उड़ाना और इंतज़ार करना। शेष सब कुछ उसका दोस्त करता था।

इस तरह आखेट में उनका बराबरी का हिस्सा था, मालिक के पास सूंघने की शक्ति नहीं थी और कुत्ते के पास बन्दूक़ नहीं थी।

अब मैत्री और निष्ठा सौख्य में बदल गयी थी क्योंकि दोनों एक दूसरे को समझते थे और दो एक दूसरे को जो दे सकते थे उससे अधिक कुछ नहीं मांगते थे। और यही मैत्री का हृदय और आत्मा है।

* * *

दो वर्ष की अवस्था में पहुंचने पर बीम एक ऐसा उत्तम शिकारी कु
बन गया था जो विश्वास करता था और विश्वास करने के योग्य थ
वह आखेट और घर की शब्दावली के लगभग एक सौ शब्द जानता थ
इवान इवानिच को सिर्फ़ "लेकर आ" कहना होता था और चीज़ जा
ले आयी जाती थी। यदि वह कहता "मेरे सलीपर लेकर आ"
बीम उन्हें ले आता। "कटोरा लेकर आ", बीम आज्ञा का पालन करत
"कुर्सी पर!" और बीम झट कुर्सी पर जा चढ़ता। लेकिन यह कु
नहीं था, वह अपने मालिक की आंखों को देखकर उसके मन की ब
का अंदाज़ा लगा लेता था। एक मैत्रीपूर्ण नज़र, तो वह व्यक्ति बीम
दोस्त; लेकिन अमैत्रीपूर्ण नज़र पर बीम गुर्रा भी सकता था। वह ए
अजनबी की आवाज़ में चापलूसी (स्नेहपूर्ण चापलूसी) तक का पता ल
सकता था। मगर एक काम था जिसे बीम ने कभी नहीं किया और व
था काटना—यदि कोई उसकी दुम पर पैर भी रख देता तो भी वह काटत
नहीं था। रात को वह चेतावनी के रूप में यह कहने के लिए भौंकत
था कि कोई अजनबी डेरे के निकट आ रहा है। लेकिन वह हमला कभ
नहीं करता था। इसी बात में उसकी नस्ल का कमाल था, आख़िर व
अक़्लमंद नस्ल का जो था।

जहां तक उसके बौद्धिक गुणों का सम्बन्ध था बीम ने ख़ुद अपन
बुद्धि से सीखा था कि दरवाज़े को खुलवाने के लिए उसमें खड़खड़ क
जाती है। कभी-कभी, जब इवान इवानिच बीमार होता तो वह उसे अके
ही बाहर जाने देता था। बीम बाहर जाकर कुछ देर इधर-उधर दौड़ता
अपनी ज़रूरतें पूरी करता और फिर, जैसा कि एक अच्छे कुत्ते को करन
चाहिए, फ़ौरन घर चला आता था। वह अपने पिछले पैरों पर खड़ा हो
दरवाज़े को खुरचता और चिंचियाने की आवाज़ करता तो दरवाज़ा खु
जाता। उसका मालिक उसकी अगवानी के लिए गलियारे से पैर घिसटत
आता, बीम को दुलारता और फिर अपने बिस्तर पर जा लेटता। व
अधिक उम्र का व्यक्ति था और कभी-कभी बीमार हो जाता था (वास्त
में, जैसा कि बीम ने ज़रूर ही ग़ौर किया होगा, ऐसा अधिकाधिक बा
होने लगा था)। बीम के दिमाग़ में यह विचार घर कर गया था कि ज
वह किसी दरवाज़े को खुरचेगा तो वह खुल जायेगा। दरवाज़े इसीलि
होते हैं—अन्दर आने देने के लिए। इसके लिए आपको पूछना भर होत

है। एक कुत्ते के दृष्टिकोण से, दृढ़ विश्वास के लिए इतना काफ़ी है।

एकमात्र चीज़ जो बीम नहीं जानता था और जान भी नहीं सकता था वह यह थी कि अपने इस अबोध विश्वास की वजह से उसे कितने कष्ट और कितनी निराशा का सामना करना पड़ेगा। वह नहीं जानता था और सम्भवतः जान भी नहीं सकता था कि कुछ ऐसे दरवाज़े भी हैं जिन्हें आप कितना ही क्यों न खुरचिये वे कभी खुलते नहीं।

लेकिन यह कोई नहीं जानता कि भविष्य में क्या होगा। इस समय हम केवल इतना ही कह सकते हैं कि बीम, उत्तम घ्राण शक्तिवाला यह कुत्ता, अपनी उत्पत्ति के बारे में संदेहास्पद ही रहा। उसे असली नस्ल का प्रमाणपत्र नहीं दिया गया। इवान इवानिच ने उसे दो श्वान-प्रदर्शनों में सम्मिलित करवाया, लेकिन दोनों ही अवसरों पर उसे रिंग से बाहर कर दिया गया और किसी भी तरह का प्रमाणपत्र नहीं दिया गया। तो इससे मामला तय हो गया—वह जातिच्युत था।

लेकिन, कम से कम, यह तसल्ली ज़रूर थी कि बीम मूर्ख पैदा नहीं हुआ था; वह एक असली, एक शानदार कुत्ता था। उसने आठ माह की अवस्था से पक्षियों का शिकार करना शुरू कर दिया था, और कितना शानदार काम किया था! मैं यह विश्वास करना चाहूंगा कि उसका भविष्य सुखद है।

दूसरा अध्याय

वन में वसन्त

अपने दूसरे सीज़न के दौरान, यानी बीम की ज़िंदगी के तीसरे वर्ष में, इवान इवानिच ने उसे वन से परिचित कराया। इससे कुत्ते और उसके मालिक दोनों ही के लिए दिलचस्पियों का पिटारा खुल गया।

बाहर खेतों और चरागाहों में हर चीज़ दिन की तरह जगज़ाहिर थी—दूर-दूर तक फैले मैदान, घास, उगता हुआ अनाज और उसका मालिक, हर समय नज़रों के सामने। वहां आप आगे जा सकते हैं, खोज और पा सकते हैं, आखेट-संकेत कर सकते हैं और आदेशों का इंतज़ार कर सकते हैं। उत्तम! लेकिन यहां, इस वन में, सब कुछ बहुत ही भिन्न था।

वे वसन्त के प्रारम्भिक दिन थे।

जब वे पहली बार जंगल में प्रविष्ट हुए तो सूरज अस्त होने व
था। लेकिन पेड़ों के बीच में सांझ का सा झुटपुटा हो चला था।
पत्रविहीन थे। धरातल पर हर वस्तु—पेड़ों के तने, पिछले साल
गहरी भूरी पत्तियां, सूखी घास के तिनके—गहरी छाया में थे; यहां व
कि जंगली गुलाब के जो फल शरत्काल में चमकीले लाल थे वे अब शिा
के बाद कॉफ़ी के बीजों की तरह काले पड़ गये थे।

मन्द बयार में शाखाओं से मन्द मर्मर ध्वनि निकल रही थी; शाख
बिखरी-बिखरी सी और पत्रविहीन थीं और ऐसा लगता था कि वे क
छोरों पर और कभी बीच में यह देखने के लिए एक दूसरे को छू र
हैं कि अभी भी जीवित हैं या नहीं। लेकिन उसके सिरों का मंद दोल
पत्तों के बिना भी उन्हें जीवन्त बना रहा था। हर चीज़—वृक्ष, नी
गिरी हुई पत्तियां, वसंती गंध पूरित मृदु मृत्तिका और इवान इवानिच
शान्त और सतर्क क़दम—रहस्यमय ढंग से सरसराते हुए समृद्ध गंध बिखे
रही थी। उसके जूतों से भी सरसराहट की आवाज़ हो रही थी औ
पगचिन्ह खेतों की तुलना में अधिक तीव्र गंध दे रहे थे। हर वृक्ष के पी
कुछ था, कुछ विचित्र और रहस्यमय। इसलिए बीम ने अपना परास बी
क़दम से बड़ा नहीं होने दिया। वह बायीं तरफ़ फिर दायीं तरफ़ दौड़त
हुआ वापस आता और इस तरह से देखता मानो पूछ रहा हो: "ह
यहां आये किस लिए?"

"क्या तुम समझ नहीं सकते कि किस लिए आये हैं?" इवान इवानि
समझ गया कि वह क्या सोच रहा है, "पर तुम समझ जाओगे, बीम
ज़रा रुको, तुम समझ जाओगे।"

तो वे बीच बीच में एक दूसरे की ओर नज़र डालते चल
रहे।

वे एक ऐसे चौड़े खुले स्थान पर रुक गये जहां दो पगडण्डियां ए
दूसरे को काट रही थीं जिससे चारों तरफ़ को रास्ते बन गये थे। इवा
इवानिच अस्तमान सूर्य की तरफ़ मुंह किये एक झाड़ी के पीछे जाकर खड़
हुआ और ऊपर की तरफ़ देखने लगा। बीम ने उसकी निगाह का अनुसर
करते हुए अपनी पूरी सामर्थ से यह समझने की कोशिश की कि वह क्य
देख रहा है।

आकाश अभी भी उज्ज्वल था, लेकिन यहां, नीचे, अंधेरा बढ़ता ही चला जा रहा था। कोई चीज़ सरसराती हुई निकली और ख़ामोश हो गयी। एक सरसराहट और फिर ख़ामोशी। बीम इवान इवानिच की टांग से जा लगा। यह उसके पूछने का तरीक़ा था जिसका अर्थ था: "यह क्या है? क्या हम जाकर देखें?"

"एक ख़रगोश है," उसके मालिक ने इतनी हलकी आवाज़ में कहा जो मुश्किल से ही सुनायी पड़ती थी, "कोई ख़ास बात नहीं, यह एक ख़रगोश है। अच्छा है, उसे भागने दो।"

अगर वह "अच्छा" था तो चिंता की कोई बात नहीं। इसके अलावा "ख़रगोश" शब्द भी सार्थक है। अनेक बार पहले भी जब बीम ने उस नन्हे जानवर के पगचिन्हों का पता लगाया था तब भी इस शब्द को दोहराया गया था। और एक बार तो उसने सचमुच ही एक ख़रगोश देखा था और उसका पीछा करने की कोशिश की थी, पर उसकी सारी मेहनत के बदले मिला तो एक सख़्त चेतावनी और सज़ा। वह उन चीज़ों में से एक था जो "नहीं" में शामिल था।

तो, बिल्कुल पास ही से एक ख़रगोश सरसराता जा रहा था। अब आगे क्या होना है?

सहसा, ऊपर ऊंचाई में, किसी अदृश्य और अपरिचित जन्तु की आवाज़ सुनायी पड़ी: "काव-काव!.. काव-काव!.." वह आवाज़ बीम ने पहले सुनी, वह उसे सुनकर चौंक गया। उसके मालिक का भी यही हाल हुआ। उन दोनों ने आकाश की तरफ़, सिर्फ़ आकाश की तरफ़ देखा... रास्ते के ठीक ऊपर जामुनी नीले संध्याकाश की पृष्ठभूमि में, नितांत अन-पेक्षित रूप से, एक पक्षी आता दिखायी दिया। वह सीधा उनकी तरफ़ उड़ता आ रहा था, उसकी आवाज़ जानवरों की आवाज़ से अधिक मिलती-जुलती लग रही थी। लेकिन नहीं, था वह पक्षी ही। वह बहुत बड़ा दिखाई दे रहा था और उसके पंख बिल्कुल ध्वनिहीन थे (वह बटेर, तीतर या बत्तख़ जैसा नहीं था)। संक्षेप में, उधर, ऊपर, कोई नितांत अपरिचित चीज़ उड़ रही थी।

इवान इवानिच ने अपनी बंदूक़ उठाई। और बीम पक्षी पर नज़र गड़ाये इस तरह दुबक गया मानो उसे आदेश दिया गया हो... जंगल के बीच बंदूक़ का धमाका इतना ऊंचा और तीव्र सुनायी दिया जितना बीम

ने पहले कभी नहीं सुना था। उसकी अनुगूंज पेड़ों के सिरों को आन्दो
करती दूर कहीं खो गयी।

वह पक्षी किन्हीं झाड़ियों के बीच गिरा लेकिन दोनों दोस्तों ने ज
ही उसे खोज निकाला। इवान इवानिच ने उसे बीम के सामने रखा
कहा :

"यह एक वन-कुक्कुट है।" और उसने इस शब्द को दोहराते
कहा, "एक वन-कुक्कुट।"

बीम ने उसे भली-भांति सूंघा, अपने पंजे से उसकी लम्बी चोंच
छुआ और फिर बैठ गया। उसका बदन कांप रहा था और वह अपने अ
पंजों को आश्चर्य से पटपटा रहा था, वास्तव में इसका मतलब यह
कि वह अपने आप से कह रहा था : "वाह, मैंने ऐसी नाक पहले क
नहीं देखी। नाक हुई तो यह हुई!"

जंगल में अभी भी मद्धिम सरसराहट हो रही थी लेकिन पहले
अपेक्षा शांति थी। और फिर अचानक वह बिल्कुल निस्तब्ध हो गय
ऐसा लगा मानो किसी ने अपने शक्तिशाली पंखों से वृक्षों को अंतिम ब
झकझोर दिया हो—बस, फिर कोई सरसराहट नहीं हुई। शाख
निस्तब्धता में निश्चल हो गयीं और ऐसा प्रतीत होने लगा कि पेड़ों
नींद आने लगी है। अब उस अर्ध प्रकाशित स्थल में एक-आध बार होनेवाल
खड़खड़ाहट के सिवा और कुछ नहीं सुनायी देता था।

तीन और वन-कुक्कुट उड़ते हुए गुज़रे लेकिन इवान इवानिच ने उ
पर बंदूक़ नहीं दाग़ी। अंधेरे में अंतिम कुक्कुट नज़र नहीं आया, वे उसक
आवाज़ भर सुन सके थे। लेकिन बीम को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि
उसके दोस्त ने उन पर भी गोली नहीं चलायी जो साफ़ नज़र आ र
थे। इन सब बातों से वह हैरान हो गया था। लेकिन इवान इवानि
आकाश को ताकता खड़ा भर था, या उसने अपनी निगाहें झुका ली थ
और उस निस्तब्धता में कान लगाये कुछ सुन रहा था। वे दोनों ख़ामोश थे

वह ऐसा समय था जब न मनुष्य को शब्दों की ज़रूरत थी न कुत्ते
को—ख़ास तौर से कुत्ते को!

जब वे चलने को तैयार हुए, तभी इवान इवानिच ने कहा :

"अच्छा, बीम! जीवन फिर शुरू हो रहा है। यह वसन्त है।"

उसकी आवाज़ के लहजे से बीम समझ गया कि उसका दोस्त अच्छे

मनोदशा में है। उसने अपनी दुम हिलायी और अपने दोस्त के घुटनों को अपनी थूथन से गुदगुदाया मानो कह रहा हो: हां, क्यों नहीं यह है, यह बहुत शानदार है!

...जब वे दूसरी बार इस स्थल पर आये तो वह सुबह का समय था और सूरज काफ़ी ऊंचा चढ़ गया था, लेकिन इस बार उनके पास बंदूक़ नहीं थी।

बर्च-वृक्षों की मधुर सुगंधित कलियां, जड़ों की प्रबल गंध, घास की उन पत्तियों की हलकी, विरल ख़ुशबू जो धरती फोड़कर बाहर आ रही थी – यह सब आश्चर्यजनक रूप से नया और आह्लादपूर्ण था।

पाईन-वृक्षों के तनों के सिवा सारा जंगल धूप में नहाया हुआ था और पाईन-वृक्षों पर भी सुनहली किरणों के वार हो रहे थे। जंगल शांत था। हां, वही निस्तब्धता मुख्य चीज़ थी। वसन्त के प्रभात में जंगल की निस्तब्धता – कितना सुन्दर है यह!

इस बार बीम पहले से अधिक साहसी बन गया था। उसे हर चीज़ साफ़ नज़र आ रही थी, यह समय शाम के धुंधलके जैसा नहीं था। और वह जीभर कर जंगल में यत्रतत्र दौड़ा, लेकिन अपने मालिक की निगाहों से ओझल नहीं हुआ। हर तरफ़ सब कुछ सुन्दर था।

अन्त में बीम को वन-कुक्कुट की हलकी गंध मिली – तो वह था यह। उसने क्लासिकी अन्दाज़ में आखेट-संकेत किया। इवान इवानिच ने उसे "आगे" भेजा, लेकिन गोली दाग़ने के लिए कुछ नहीं था। उसने उससे नीचे लेटने का आदेश भी दिया जैसा कि परिंदे के उड़ने पर दिया जाना चाहिए था। बीम के लिए यह एक रहस्य था। उसका मालिक कुछ देख भी सकता है या नहीं? बीम ने अपने मालिक की तरफ़ नज़र उठायी और तब तक उसे देखता रहा जब तक उसे यक़ीन नहीं हो गया कि उसके मालिक ने परिंदे को देख लिया था।

दूसरे वन-कुक्कुट के मामले में भी यही हुआ। अब बीम अपमानित जैसा भाव प्रदर्शित करने लगा – एक चौकन्नी नज़र, एक तरफ़ को हट गया और उसने अवज्ञा तक की कोशिश की। दूसरे शब्दों में, उसका असंतोष बर्दाश्त की हद पर पहुंचकर सीमा पार करने को तैयार हो गया। यही कारण था कि बीम तीसरे वन-कुक्कुट के पीछे वैसे ही भागा जैसे कि मोंग्रेल प्रजाति का कोई भी सामान्य कुत्ता भागता है। लेकिन वन-कुक्कुट

का बहुत दूर तक पीछा नहीं किया जा सकता। वह शाखाओं के
बिजली की सी तेज़ी से उड़ा और ग़ायब हो गया। बीम असंतुष्ट ह
वापस आ गया और ऊपर से उसे सज़ा भी भुगतनी पड़ी। तो क्या क
वह दूर हटा, ज़मीन पर लेटा, एक गहरी सांस ली (कुत्ते ऐसा अ
तरह से करना जानते हैं)।

लेकिन यह सब बर्दाश्त किया जा सकता था बशर्ते कि इस सब
एक और निराशा न जोड़ दी जाती। बीम को पता लगा कि उसके मा
में एक और ख़ामी है—गंध का विकृत संवेद। यह आदमी पहले तो मुश्
से ही कुछ सूंघ पाता है और सूंघ सकता है तो...

यह घटना इस प्रकार हुई।

इवान इवानिच रुका और देखने लगा। हां, उसने चारों तरफ़ दे
और सूंघने लगा (मानो वह ऐसा कर सकता था!)। फिर उसने
पेड़ की तरफ़ क़दम बढ़ाये, नीचे बैठा और बड़ी ही सावधानी से एक न
फूल को एक उंगली से सहलाने लगा (उसके लिए उसमें मुश्किल से
कोई गंध थी, लेकिन बीम के लिए उसमें से भभकती हुई दुर्गन्ध नि
रही थी)। उसने उस चुरकुट जैसे फूल में क्या पाया? लेकिन वह व
पर मुस्कराता हुआ बैठा रहा। इसमें कोई शक नहीं कि बीम ने ऐसा दिख
की चेष्टा की कि वह भी उसमें आनन्द ले रहा है, लेकिन यह उस आद
के प्रति सम्मान के कारण किया जा रहा था, वैसे सच बात यह थी
वह बहुत हैरान था।

"ज़रा उसे देखो, देखो, बीम!" उसने विस्मयोद्‌गार सा प्रक
करते हुए कहा और कुत्ते के सिर को फूल की तरफ़ धकेला।

यह तो बीम के लिए अति हो गयी, उसे अपना सिर दूसरी तर
मोड़ना पड़ा। वास्तव में वह खिसक गया और एक खुली जगह पर ऐस
भाव प्रकट करता हुआ सा लेट गया जिसका केवल एक ही अर्थ था
"अच्छी बात है, तो सूंघो, सूंघो अपने फूल को!" इस मत-वैभिन्य व
समाधान हो सकता था, लेकिन उसका मालिक ख़ुशी से हंसने लगा औ
वह भी ठीक बीम के सामने। और यह परेशान करनेवाली बात थी
"वह सचमुच हंस रहा है!"

फिर वह फूल से बातें करने लगा:

"हैलो, पहले-पहले नन्हे फूल!"

हां, बीम ने "हैलो" का वह शब्द साफ़-साफ़ सुना और वह "हैलो" उसको सम्बोधित करके नहीं बोला गया था।

कुत्ते के हृदय में ईर्ष्या जागने लगी—यही तो मुसीबत थी। घर पर ऐसा लगता था कि वे अपने सामान्य सम्बन्ध पर लौट आये हैं, लेकिन यह दिन बीम के लिए अशुभ रहा। पहले उन्होंने एक पक्षी को उड़ाया और उसे गोली चलाये बग़ैर जाने दिया, फिर उसने एक पक्षी का खेदा किया तो उसको सज़ा दी गयी और अन्त में यह वाहियात फूल आ टपका। हां, कुछ ऐसे मौक़े भी होते हैं जब कुत्ते की ज़िन्दगी सचमुच ही कुक्कुर-जीवन हो जाता है, क्योंकि "नहीं", "वापस" और "अच्छा" उसके तीन नियामक सिद्धान्त हैं।

लेकिन जिस बात को वे नहीं जानते थे, न बीम, न इवान इवानिच, वह यह थी कि एक ऐसा समय आयेगा जिसके सामने यह दिन, अगर उन्हें इसकी कभी याद रही तो, अत्यधिक सुखद दिन सा जान पड़ेगा।

मालिक की टिप्पणियां

शिशिर से परिक्लांत वन में जब अभी जागृत कलियों का खिलना शुरू नहीं हुआ था, शिशिरकाल में गिराये गये पेड़ों के ठूंठों पर कोपलें फूटी न थीं पर वे अश्रु ज़रूर छलकाने लगी थीं, जब भूरे-भूरे मृत पत्ते अभी भी ज़मीन पर चित पड़े थे और निरावरण शाखाओं के पास सरसराने के लिए कुछ नहीं था और वे एक दूसरे से आहिस्ता-आहिस्ता रगड़ खाने के सिवा और कुछ नहीं कर सकती थीं— तब सहसा हिम-सुमनों की सुगंध हवा में तैरती आयी! वह जागते हुए जीवन की गंध थी और इसीलिए, मुश्किल से बोध होने के बावजूद, वह अपने साथ उल्लास का कम्पन लेकर आयी थी। मैंने चारों तरफ़ खोजा तो देखा कि वह तो मेरे पास ही है। वह नन्हा सुमन धरती से ऊपर उठ आया था, नीलाकाश की एक नन्ही बूंद, सुखी-दुखी हर किसी के लिए और उन लोगों के लिए आह्लाद और सौख्य का संदेसा लानेवाला का ऐसा सरल निश्छल दूत, जिन्हें यह वरदान मिल सकते हैं और मिलने चाहिए—यह कुछ ऐसी चीज़ थी जिसने जीवन को अधिक सुन्दर बना दिया था।

लोग भी ऐसे ही होते हैं। दुनिया में ऐसे विनीत, बनावटरहित लोग

हैं जिन्हें "छोटा" और "महत्वहीन" माना जाता है लेकिन जिनमें अ
आत्म-बल होता है। वे ही ऐसे लोग हैं जो जीवन को अधिक सुन्दर ब
हैं, क्योंकि वे मानवता के सर्वोत्तम गुणों—दया, सरलता और विश्व
के जीवन्त रूप होते हैं। इसीलिए हमें ऐसी प्रतीति होती है कि हिम-
पृथ्वी पर स्वर्ग की एक नन्ही बूंद है...

कुछ दिन बाद (कल) बीम और मैं फिर उसी स्थान पर गये
आकाश ने सारे जंगल में उन नन्ही नीली बूंदों को हज़ारों की संख्य
बिखेर दिया था। मैंने उस प्रथम सुमन को, उस सबसे अधिक सा
फूल को, खोजने की कोशिश की। हां, वहां था वह। या फिर वही
या नहीं, मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता। वहां इतने फूल थे, ः
कि वह अपने ही अनुयायियों के बीच खो गया था। लेकिन वह न
सुमन, इतना छोटा परन्तु वीर, इतना शान्त पर दृढ़निश्चयी फूल ही
फूल था जिसने पाले की अंतिम शक्तियों को खदेड़ भगाया और उस सुनह
सुबह को उन्हें जंगल के छोर पर आत्म-समर्पण का क्षीणकाय श्वेत ध
उठाने के लिए विवश कर दिया। जीवन चलता जाता है।

...पर इसके बावजूद, यह सब बीम की समझ से बहुत दूर
उस पहले अवसर पर तो उसने अपने को सचमुच अपमानित महसूस किय
उसे ईर्ष्या होने लगी थी। और वहां पर इतने अधिक फूल होने पर
उसके पास उनके लिए समय नहीं था। उसने आखेट को खोजने के अ
काम को अच्छी तरह नहीं किया, उसे बंदूक़ के बग़ैर काम करना पस
नहीं था। वह और मैं विकास के भिन्न-भिन्न धरातलों पर हैं, परन्तु ह
एक दूसरे के बहुत निकट हैं। एक प्राणी को दूसरे की आवश्यकता हो
है और प्रकृति इसी सनातन नियत के अनुसार रचना करती है। अ
इसे जीवन के सभी रूपों में, सरलतम जीवन रूप से लेकर जटिलतम त
में... हर जगह पाते हैं। क्या मैं बीम के बग़ैर ऐसे भयावह अकेलेपन
जीवित रह सकता था?

...ओह, मुझे उसकी कितनी आवश्यकता है! वह भी हिम-सुमन
से प्यार करती थी। अब अतीत एक स्वप्नवत है...

और शायद वर्तमान भी एक स्वप्न ही है? धरती पर उन सारे नीं
हिम-सुमनों सहित कल का वसन्ती वन भी? ख़ैर लोग कहते हैं, स्वप
दैवी चिकित्सक होते हैं चाहे उनका इलाज अस्थायी ही क्यों न हो। हां

सच ही तो है यह केवल अस्थायी होता है। यदि लेखकों के पास नीरसता से बचने के लिए इन आसमानी नीले सपनों के सिवा और कोई संदेशा पेश करने के लिए नहीं था तो हमें भविष्य पर ध्यान देना बंद कर देना चाहिए और यह सोचना चाहिए कि वर्तमान हमेशा के लिए है। काल में मनुष्य के अस्तित्व का ही यह मतलब है कि वर्तमान को अतीत बनना ही होगा। मनुष्य सूरज को रुकने का आदेश नहीं दे सकता। कालगति अदम्य अविराम है, क्रूर है। हर वस्तु काल और गति की जकड़ में है। इसलिए यदि कोई शाश्वत नीलाकाशीय शांति की खोज में है तो वह पहले से ही अतीत में रह रहा है, फिर चाहे वह स्व-सुमन का कोई कट्टर युवा समर्थक हो या कोई बूढ़ा—आयु का कोई अर्थ नहीं। नील वर्ण की अपनी ही एक ध्वनि होती है, शांति और विस्मृति की ध्वनि, लेकिन यह क्षण-भंगुर होती है, हमें विश्राम भर देने के लिए होती है और हमें ऐसे क्षणों को कभी भी बर्बाद नहीं करना चाहिए।

यदि मैं लेखक होता तो मैं निम्नांकित अपील करता :

"ओ अशांत-अधीर मनुज! भविष्य के वास्ते तेरे विचारों और तेरे सत्प्रयासों के लिए तुझे शाश्वत-कीर्ति मिले! यदि तू मन की शांति चाहता है तो वसंतारम्भ पर वन में जा, हिम-सुमनों के पास जा और तब तुझे एक ऐसा अद्‍भुत स्वप्न दिखायी देगा जिसका यथार्थ जगत में सचमुच का अस्तित्व है। शीघ्र जा, वरना चन्द दिनों में हिम-सुमन अदृश्य हो सकते हैं और तू उस प्रकृति-दत्त स्वप्न के जादू को याद नहीं कर पायेगा। जा और विश्राम कर। कहते हैं, हिम-सुमन ख़ुशक़िस्मती लाते हैं।"

...लेकिन बीम गहरी नींद सोया है और स्वप्न देख रहा है। मैं उसकी टांगों को देख रहा हूं—वे फड़क रही हैं, वह अपने स्वप्न में दौड़ रहा होगा। हिम-सुमनों के बारे में वह इससे अधिक परवाह नहीं कर सकता था, क्योंकि उसके लिए उनका नीला रंग धूसर वर्ण की एक अतिरिक्त आभा मात्र है (कुत्तों की दृष्टि इसी प्रकार की होती है)। प्रकृति माता ने कुत्ते की रचना करके अपने आपको "वास्तविकता का अवमानक" बना दिया। इसलिए आप ज़रा अपने प्रिय को विश्वास दिलाने की कोशिश तो कीजिये कि वह वस्तुओं को मनुष्य के दृष्टिकोण से देखे। अगर आप उसका सिर भी काट डालें तो भी वह वस्तु-स्थिति को अपने ही नज़रिये से देखेगा। अब वह एक जवान और आत्मनिर्भर कुत्ता बन गया है।

तीसरा अध्याय

बीम का पहला शत्रु

ग्रीष्म व्यतीत हो गया। बीम के लिए यह, इवान इवानिच की द
से परिपूर्ण व समृद्ध, एक सुखद और उल्लासमय ग्रीष्म था। चरागाहों
दलदलों के बीच उनके अभियान (बग़ैर बंदूक़ के), धूप से भरे ि
जलविहार, तट पर शांत-संध्याएं—एक कुत्ते को इससे अधिक और
चाहिए? कुछ भी नहीं, और यह पक्की सुनिश्चित बात है।

प्रशिक्षण और अभ्यास के दौरान वे अन्य शिकारियों से भी मि
परिचयों के मामले में ज़रा भी देर नहीं हुई क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति
पास एक कुत्ता था। उनके मालिकों के मिलने से काफ़ी पहले उनके
देखने-सूंघने और हावभावों की कुक्कुर-भाषा में एक दूसरे से बात व
के लिए दौड़ गये।

"कौन हो तुम, नर हो कि मादा?" बीम समुचित अंगों को सू
हुए पूछता (निश्चय ही, यह विशुद्ध औपचारिकता का मामला था

"पूछते क्यों हो? तुम स्वयं नहीं देख सकते क्या?" वह उत्तर दे

"क्या हालचाल है?" बीम प्रसन्नतापूर्वक पूछता।

"हमेशा की तरह व्यस्त हैं!" उसकी नव परिचिता बांके अंदाज़
अपने चारों पैरों पर एक साथ फुदकती उत्तर देती।

इसके बाद वे दौड़ते हुए अपने मालिकों के पास जाते और बा
बारी से अपने हर नये परिचित की ख़बर उस तक पहुंचाते। जब शिका
लोग आपस में बातचीत करने के लिए किसी झाड़ी अथवा पेड़ की छा
में बैठते तो कुत्ते कूदते-फांदते इधर-उधर दौड़ते और तब तक दौड़ते ज
जब तक कि उनकी जीभें बाहर को न लटक आतीं। तब वे आकर
जाते और अपने मालिकों की मन्द सहज बातचीत सुनते।

बीम के लिए शिकारियों के अलावा अन्य लोग ऐसी दिलचस्पी
चीज़ नहीं थे। वे महज़ लोग थे। भले लोग, लेकिन शिकारी नही थे

और कुत्ते, वे एक भिन्न चीज़ थे, सबके सब बिल्कुल भिन्न।

एक दिन, दूर, एक चरागाह में उसकी भेंट झबरे बालोंवाली ए
कुतिया से हुई। वह उसके आकार की तुलना में सिर्फ़ आधी थी औ

बिल्कुल काली थी। उन्होंने किसी नाज़-नख़रे के बग़ैर संयम के साथ एक दूसरे की अगवानी की। वैसे कोई नाज़नख़रे हो भी कैसे सकते थे, क्योंकि उसकी नव परिचिता ने सभी आम प्रश्नों के उत्तर में महज़ दुम हिलायी और ऐसे स्पष्ट ढंग से हिलायी जिसका अर्थ था:

"मैं भूखी हूं।"

उसकी सांस से चूहे की गंध आ रही थी। बीम ने उसके होंठ सूंघे तो आश्चर्य में पड़ गया और बोला:

"हैं, कहीं तुमने चूहा तो नहीं खाया है?"

"हां खाया है," उसने जवाब दिया, "मैं भूखी हूं।" और उसने नरकुल की उलझी सफ़ेद जड़ को चबाना शुरू कर दिया।

बीम ख़ुद भी उस जड़ को चखना चाहता था, लेकिन उसने फिर एतराज़ किया:

"मैं भूखी हूं।"

बीम तब तक रुका रहा जब तक कि उसने सारी की जड़ नहीं चबा डाली और फिर उसने उसे अपने पीछे आने का नियंत्रण दिया और उसने, बिना हीला हवाला किये, उसे स्वीकार कर उसके पीछे चलना शुरू कर दिया। उसके बाल झबरेदार थे पर थे साफ़ (स्पष्ट था कि उसे नहाना उतना ही पसन्द था जितना और कुत्तों को; गर्मियों में तो आवारा कुत्ते भी गंदे नहीं होते)। बीम उसे अपने मालिक के पास ले आया, जो इनकी बातचीत को दूर से देख रहा था। लेकिन कुमारी झबरी एक अजनबी पर फ़ौरन यक़ीन करने के लिए तैयार नहीं थी, इसलिए वह इस तथ्य के बावजूद कुछ दूरी पर जा बैठी कि बीम आगे-पीछे भागता हुआ उसे बुला रहा था और आश्वस्त कर रहा था कि सब कुछ ठीक है। इवान इवानिच ने अपनी पीठ का झोला उतारा, उसमें से एक गोल सौसेज निकाला, उसके छोटे-छोटे टुकड़े किये और एक टुकड़ा झबरी की तरफ़ फेंका:

"आ-जा झबरी, आ।"

मांस का टुकड़ा उससे दो-तीन क़दमों की दूरी पर गिरा। वह सावधानी से आगे आयी और मुंह बढ़ाकर उस टुकड़े को निगल गयी। इसके बाद वह उसी जगह पर बैठ गयी। अगला टुकड़ा उसे कुछ और निकट ले आया। बीम इस कार्यवाही में हस्तक्षेप किये बग़ैर खड़ा रहा। यह सामान्य बात थी। एक टुकड़ा, फिर दूसरा और तीसरे या चौथे टुकड़े तक

वह उसके क़दमों पर पहुंच गयी और, जैसा कि इवान इवानिच का ख़्य
था, विश्वास व वफ़ादारी के साथ सेवा करने के लिए तत्पर हो गयं
उसने झबरी को अच्छी तरह से टटोला और उसकी गर्दन के बाल पकड़
धीरे से हिलाया और कहा :

"इसकी नाक शीतल है, इसलिए यह ज़रूर ही स्वस्थ होगी। यह का
अच्छी बात है," तब उसने उन्हें आदेश दिया, "भागो।"

झबरी ऐसे शब्द नहीं जानती थी, लेकिन जब उसने देखा कि बी
तीर की तरह भागा और घास में इधर-उधर खोजता हुआ जाने लगा
वह समझी कि उसका अर्थ है दौड़ना। और तब उन्होंने खेलना शुरू क
दिया, जैसे कि कुत्ते खेलते ही हैं। उनका यह खेल इतने ज़ोर से चल
कि बीम को याद ही न रहा कि उसे वस्तुतः करना क्या था। इवा
इवानिच ने कोई एतराज़ नहीं किया और वह सीटी बजाता हुआ चलत
ही रहा।

झबरी शहर के छोर तक उनके पीछे आयी, लेकिन यहां पहुंचक
वह सड़क के एक किनारे पर बैठ गयी और एक भी क़दम आगे नहीं बढ़ी
उन्होंने उसे बुलाया, आग्रह किया, लेकिन सब व्यर्थ। वह वहां बैठी उन
ताकती रही। इवान इवानिच का ख़्याल ग़लत निकला—आप खाने क
लालच देकर हर कुत्ते को नहीं ख़रीद सकते।

बीम न तो जानता था और न जान सकता था कि झबरी के भं
मालिक थे, कि वे अपने छोटे से मकान में तब तक साथ रहे जब तक वि
उस गली के सारे मकानों को गिरा नहीं दिया गया। उसके मालिकों कं
आधुनिक सुख-सुविधाओं से सज्जित एक इमारत की पांचवी मंजिल पर नय
फ़्लैट मिल गया था।

हां तो, एक लम्बी कहानी को चटपट समाप्त करने के लिए, झबरं
को उसकी क़िस्मत के भरोसे छोड़ दिया गया था। उसने नयी इमारत क
पता लगा लिया था और फ़्लैट का दरवाज़ा भी खोज निकाला था, लेकि
उसके भूतपूर्व मालिक ने उसकी पिटायी की थी और उसे अपने यहां
भगा दिया था। उस समय से वह अकेली रह रही थी। अधिकांश आवार
कुत्तों की तरह शहर के अन्दर वह भी रात ही को आने का साहस करतं
थी। इवान इवानिच ने इन सब बातों का अनुमान लगा लिया था, लेकि
वह यह बातें बीम को नहीं समझा सका। बीम उसे छोड़ना ही नही चाहत

था। वह इवान इवानिच को मुड़कर पीछे देखने के लिए प्रेरित करने की कोशिश में बार-बार पीछे देखता और बीच-बीच में रुकता हुआ चल रहा था, लेकिन उसका मालिक चलता ही रहा।

अगर वह जानता कि भाग्य का कौन कटु चक्र बीम और झबरी को फिर एक दूसरे से मिलानेवाला है, यदि वह जानता कि वे कहां और कब मिलेंगे तो वह इतनी शांति से उन्हें छोड़कर चला न जाता। लेकिन भविष्य, मनुष्य के लिए भी, एक अनबूझ पहेली है।

* * *

...तीसरा ग्रीष्म व्यतीत हो गया। यह बीम के लिए अच्छा ग्रीष्म-काल था और इवान इवानिच के लिए भी बुरा नहीं था। एक रात उसने खिड़की बंद की और कहा:

"आज रात तुषारपात होनेवाला है, बीम, मेरे प्यारे दोस्त। शिशिर का पहला तुषार।"

बीम के पल्ले कुछ नहीं पड़ा, वह अंधेरे में उठ खड़ा हुआ और अपने मालिक के घुटनों पर मुंह रगड़ने लगा, जिसका आशय था: "तुम अपनी बात साफ़-साफ़ नहीं कह रहे हो।"

इवान इवानिच कुक्कुर-भाषा – जो गति और आंखों की भाषा है – को अच्छी तरह समझता था। उसने बिजली जलायी और पूछा:

"तू समझा नहीं रे, बेवकूफ़?" फिर उसने स्पष्ट करते हुए कहा: "कल हम वन-कुक्कुट का शिकार करने जायेंगे। वन-कुक्कुट!"

बीम इस शब्द को काफ़ी अच्छी तरह से जानता था, उसने ख़ुशी से उछलकर अपने दोस्त की ठोड़ी चाट ली।

"कल शिकार खेला जायेगा। शिकार, बीम!"

यह बढ़िया बात थी, बीम अपनी ही दुम का पीछा करता हुआ लट्टू की तरह घूमने लगा, फिर उसने ख़ुशी की एक आवाज़ निकाली और इवान इवानिच के चेहरे पर निगाह गड़ाकर अपनी पिछली टांगों पर बैठ गया। उसके अगले पंजों पर उगे लम्बे मुलायम बाल कांप रहे थे। बीम के दिमाग़ में वह लुभावना शब्द "शिकार" सुख का पर्याय था।

लेकिन उसके मालिक ने आदेश दिया:

"फ़िलहाल – बिस्तर पर जाओ।" और इसके साथ ही बिजली बुझा द

बीम ने रात का सारा शेष समय अपने मित्र के पैताने पर लेटे-ले गुज़ारा। नींद का तो प्रश्न ही नहीं था, यहां तक कि इवान इवानि भी, पौ फटने की प्रतीक्षा में, उखड़ी-उखड़ी नींद भर ले सका।

प्रातःकाल उन्होंने पीठ पर लटकानेवाले थैले को मिल-जुलकर भरा बंदूक़ की नालों का तेल साफ़ किया, हलका नाश्ता किया (भरपेट खाक शिकार पर जाना व्यर्थ है), कारतूस-पेटी को जांचा और अच्छी तर देख लिया कि उसका हर ख़ाना भरा हुआ है या नहीं। उनके पास ज थोड़ा सा वक़्त था उसमें ढेर सारे काम निबटाने थे। जब मालिक रसो में गया तो बीम भी वहीं गया; जब मालिक आलमारी के पास गय तो बीम भी वहीं जा पहुंचा; जब मालिक ने अपने थैले में जगह न हो पर मांस का एक टिन बाहर निकाल दिया तो बीम ने उसे उठाकर फि थैले में डाल दिया; और जब मालिक कारतूसों की जांच कर रहा था तो बीम उसे ग़ौर से देख रहा था (इसलिए कि कहीं कोई ग़लती न हो) उसने बंदूक़ के खोल में अपनी नाक अड़ाई (यह देखने के लिए बंदूक़ वह थी या नहीं)। इसके अलावा उसकी चिंता के कुछ और विषय भी थे ऐसे महत्वपूर्ण क्षणों में उसे घबराहट सी होने लगती और कानों के पीछे गुदगुदाने की इच्छा होती। जब पहले से ही इतना कुछ चिंता करने के लिए है तो और चाहे जहन्नुम में जाये उसे एक बार गुदगुदाना ही चाहिए इसलिए उसका पंजा तुरंत ऊपर उठ जाता।

अन्त में, वे तैयार हो गये। बीम सातवें आसमान में था। उसका मालिक शिकारी की पोशाक पहने, एक कंधे में थैला और दूसरे में बंदूक़ लटकाये खड़ा जो था।

"आज हम शिकार खेलेंगे, बीम! शिकार," उसने दोहराया।

और प्रसन्नता से पागल बीम ने अपनी आंखों से इस बात को दोहराया। अपने अन्यतम मित्र के प्रति प्रेम और कृतज्ञता ज्ञापन के लिए वह सचमुच ही चिंचियाया।

पर उसी क्षण एक आदमी कमरे में प्रविष्ट हुआ। बीम उसे जानता था – अहाते में उनकी भेंट हुई थी – लेकिन वह उसे न तो दिलचस्प मानता था, न ध्यान देने लायक़। वह गोल मटोल, मोटे, चौड़े चेहरे और भर्रायी हुई आवाज़वाला एक आदमी भर था जो बोला:

"कहिये, क्या हो रहा है!" वह एक कुर्सी पर बैठ गया और रूमाल निकालकर मुंह पोंछता हुआ बोला। "तो आप आखेट-अभियान पर जा रहे हैं, जा रहे हैं ना?"

"हां, सही बात है," इवान इवानिच ने किंचित खीझ से, प्रसन्नता-रहित आवाज़ में कहा, "वन-कुक्कुटों के शिकार पर। ज़्यादा अच्छी कुर्सी ले लीजिये, आराम से बैठिये।"

"शिकार खेलने, हैं? देखिये, आपको इसे कुछ देर के लिए स्थगित करना पड़ेगा।"

बीम ने आश्चर्य और ध्यान देने का भाव प्रकट करते हुए अपने मालिक से निगाह हटाकर मेहमान की तरफ़ डाली। इवान इवानिच ने, लगभग चिढ़कर, कहा: "मैं समझा नहीं, क्या आप अपने को स्पष्ट करेंगे।"

इस क्षण पर बीम ने, हमारे स्नेही बीम ने, पहले तो गुर्राहट की हलकी आवाज़ निकाली, फिर भौंकने की। ऐसी बात पहले कभी नहीं हुई थी–घर पर, मेहमान पर वह कभी नहीं भौंका था। उसे मेहमान ने भय का कोई भाव प्रकट नहीं किया, बल्कि वह बिल्कुल निरपेक्ष नज़र आता था।

"कोने में!" इवान इवानिच ने वैसे ही चिड़चिड़े स्वर में आदेश दिया।

बीम ने आज्ञा का पालन किया, अपने कोने में लेट गया और अपने सिर को पंजों के बीच रखकर उस अजनबी को ताकने लगा।

"ओहो! तो यह आज्ञाकारी कुत्ता है। मैं समझा.... लेकिन वह आपकी सीढ़ी पर खड़ा हो अन्य किरायेदारों पर ऐसे भौंकता है, जैसे कि... जैसे कि, मिसाल के लिए, लोमड़ियों पर?"

"कभी नहीं, वह कभी किसी पर नहीं भौंका। यह पहली बार हुआ है, मैं अपनी प्रतिष्ठा की शपथ लेकर कहता हूं!" इवान इवानिच शंकित और क्रुद्ध हो गया था। "प्रसंगतः, उसका लोमड़ियो से भी कभी कोई वास्ता नहीं रहा।"

"अच्छा, मैं समझा," उस मेहमान ने शब्दों को चबा चबाकर फिर कहा। "अच्छी बात है, आइये, काम की बात करें।"

इवान इवानिच ने अपनी जैकेट और शिकारी थैला उतार दिया।

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

"तो आपके पास एक कुत्ता है," मेहमान ने बात शुरू की। "और उसने अपनी जेब से कागज़ का एक पुर्ज़ा निकाला, "मेरे पास उ खिलाफ़ एक शिकायत है। लीजिये, इसे पढ़िये।" उसने वह पुर्ज़ा इ इवानिच को देते हुए कहा।

इवान इवानिच ने जो पढ़ा उससे वह विक्षुब्ध हो गया। इसे मह करने पर बीम अपने कोने से अपनी ही पहल पर उठा और अपने दो के पैरों के पास आकर ऐसे बैठ गया मानो उसकी रक्षा करने को तैय हो। अब वह मेहमान को नहीं घूर रहा था, पर सावधान अभी भी थ

अंत तक पहुंचने पर किंचित शांत होते हुए इवान इवानिच ने कह "इसमें ढेर सारी निरर्थक बातें हैं, एकदम वाहियात हैं। बीम एक स्ने शील कुत्ता है, उसने कभी किसी को नहीं काटा और किसी को अपमानि भी नहीं किया। वह एक प्रज्ञावान कुत्ता है।"

"ही-ही-ही!" वह मेहमान आवाज़ दबाकर इस तरह हंसा कि उसव तोंद दोलायमान होने लगी और अंत में वह बीम से नितांत सौजन्यता साथ बोला, "ओहो रे, जंगली!"

बीम ने अपना सिर और भी परे को हटा लिया, लेकिन वह जा गया था कि वे किसके बारे में बातें कर रहे हैं। उसने एक गहर सांस ली।

"आप ऐसी शिकायतों का क्या कर सकते हैं?" इवान इवानिच कहा, अब वह शांत हो गया था और मुस्करा रहा था। "जब किसी वे खिलाफ़ ऐसी शिकायत होती है तो क्या आप उसे महज़ उसके सामने पढ़ने के लिए पेश कर देते हैं? आप योंही, ज़बान से, कह देते तब भ मैं मान जाता।"

बीम ने मेहमान की आंखों में एक प्रकार की चमक देखी। उसने कहा "पहली बात यह है कि क़ायदा यही है। दूसरी बात, शिकायत आपके खिलाफ़ नहीं बल्कि आपके कुत्ते के खिलाफ़ है। हम इसे पढ़ने के लिए कुत्ते को नहीं दे सकते, दे सकते हैं क्या?" वह फिर हंसा।

इवान इवानिच भी थोड़ा हंसा। लेकिन बीम मुस्कराया भी नहीं वह जानता था कि वे उसके बारे में बातचीत कर रहे हैं, लेकिन वे क्य कह रहे हैं इसे वह ज़रा भी नहीं समझ पाया। यह मेहमान एक अमर्त रहस्य था। उसने बीम की तरफ़ संकेत किया और कहा :

"उस कुत्ते को निकालना होगा।" फिर उसने दरवाज़े की तरफ़ को हाथ से इशारा किया।

बीम इस बात के आशय को सही समझ गया, लेकिन वह अपने मालिक के पास से इंच भर भी दूर नहीं हटा।

"शिकायत करनेवाली औरत को बुलाइये। हम इस पर बातचीत करेंगे। हो सकता है कि सारा मामला शांतिपूर्वक तय हो जाये।" इवान इवानिच ने निवेदन किया।

मेहमान बिल्कुल अनपेक्षित ढंग से उठा और थोड़ी ही देर में एक औरत को लेकर लौट आया:

"यह हैं वे। आपकी काकी।"

उसे बीम भी पहचानता था। वह तीखी आवाज़ में बोलनेवाली छोटे कद की थी और अहाते की एक बेंच पर हर रोज़ तथा सारे दिन उन अन्य औरतों के साथ बैठी रहती थी जिनके पास कोई और अच्छा काम करने के लिए नहीं था। एक दिन बीम ने सचमुच ही उसका हाथ चाटा था (उससे व्यक्तिगत स्नेह के कारण नहीं बल्कि सामान्य मनुष्यजाति से प्रेम करने के कारण) जिससे वह चीख़ उठी थी और आसपास के फ़्लैटों की खुली खिड़कियों की ओर देखकर चिल्लाने लगी थी। वह क्या चिल्ला रही थी, बीम को कुछ पता नहीं, लेकिन वह इतना घबरा गया था कि फ़ौरन भाग खड़ा हुआ और अपने दरवाज़े पर पहुंच उसे खुलवाने के लिए खुरचने लगा था। इसके अलावा इस काकी से उसका और कोई वास्ता नहीं था। लेकिन जब वह कमरे में प्रविष्ट हुई तो उसे न जाने क्या हो गया। वह अपने मालिक की टांगों से चिपक गया और सहलाये जाने के बाद टांगों के बीच दुम दबा अपने कोने में जाकर बैठ गया और तिरछी नज़रों से उसे देखता रहा। जो कुछ उसने कहा वह समझ से परे था, लेकिन वह लगातार कांव-कांव करती बोलती जा रही थी और अपने हाथ को बार-बार दिखाती जा रही थी। उसके हाव-भावों और ग़ुस्से से भरी नजरों से बीम समझ गया कि यह सब इसलिए हो रहा है क्योंकि उसने गलत व्यक्ति का हाथ चाट दिया था। अफ़सोस, उन दिनों बीम बहुत छोटा था, ऐसी बातों को समझने के लिए बहुत कम उम्र का और अनुभवहीन था। शायद उसने सोचा: "बेशक मुझे खेद है, लेकिन अब इस मामले

में मैं कुछ नहीं कर सकता हूं।" कम से कम इस तरह की कोई बा उसकी आंखों से झलक ज़रूर रही थी।

लेकिन बीम यह नहीं जानता था कि उस पर जो आरोप लगाये ज रहे हैं वे बिल्कुल झूठे हैं।

"वह मुझे काटने जा रहा था! और लगभग काट ही लिया था!

काकी की कांव-कांव में बाधा डालते हुए इवान इवानिच ने सीधे बी को सम्बोधित करते हुए कहा :

"अच्छा, बीम, अब मेरे स्लीपर ले आओ।"

बीम ने ख़ुशी-ख़ुशी आज्ञा का पालन किया। स्लीपर लाकर अपन मालिक सामने रख दिये। मालिक ने अपने शिकारी-बूट उतारे और स्लीप पहन लिये।

"अब जूतों को ले जाओ।"

बीम ने यह काम भी कर दिया। वह एक बार में एक बूट उठाक ले गया और उन्हें कोट-टांगने के रैक में सब से नीचे रख आया।

काकी अवाक घूरती रह गयी। मेहमान ने प्रशंसा भाव से कहा :

"बहुत अच्छा! ज़रा देखिये उसे! वह जानता है यह सब कैसे करने हैं!" और उसने काकी की तरफ़ अपेक्षाकृत मैत्रीशून्य भाव से देखा। "वह और क्या-क्या कर सकता है?"

"कृपया, बैठ जाइये," इवान इवानिच ने काकी से कहा।

वह अपने हाथों को पेशबंद के नीचे रखकर बैठ गयी। मालिक ने एक कुर्सी आगे बढ़ाई और आदेश दिया :

"बीम! उठो, कुर्सी पर!"

बीम से दोबारा कुछ कहने ज़रूरत ही नहीं। अब वे सब कुर्सियों पर विराजमान थे। काकी ने होंठ काटे। मेहमान संतुष्ट होकर अपने पैर को झुलाते हुए बोला :

"सुन्दर काम है! मुझे कहना ही होगा कि बहुत सुन्दर है!"

इवान इवानिच ने अपनी भौंहों को किंचित ऊपर उठाया और बीम की ओर देखा :

"पंजा, बीम। मुझे अपना पंजा दो।" और उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया।

उन्होंने हाथ मिलाये।

"अरे बेवकूफ़, अब अपने मेहमानों से हाथ मिला," उसने इशारे से बताया कि उसका आशय किससे है।

मेहमान ने भी अपना हाथ आगे बढ़ाया :

"हैलो, प्यारे, हैलो।"

बीम ने बड़ी सुन्दरता से और शऊर के साथ हाथ मिलाया।

"वह काटेगा तो नहीं?" काकी ने घबराकर पूछा।

"नहीं, निश्चय ही नहीं!" इवान इवानिच ने आश्चर्य से कहा, "अपना हाथ आगे बढ़ाइये और कहिये 'पंजा'!"

काकी ने अपने पेशबंद के भीतर से हाथ बाहर निकाला और आगे बढ़ा दिया।

"लेकिन तू मुझे काटना नहीं," उसने चेतावनी दी।

इसके बाद जो हुआ वह अवर्णनीय है। बीम वापस अपने कोने में खिसक गया और वहां प्रतिरक्षात्मक स्थिति में खड़ा होकर अपने मालिक की ओर ताकने लगा। इवान इवानिच उसके पास आया, उसके सिर को थपथपाया और उसका पट्टा पकड़कर उसके आरोपी के पास लाया।

"अपना पंजा इनसे मिलाओ, चलो, मिलाओ।"

लेकिन नहीं, बीम ने वैसा किया ही नहीं, उसने दूसरी तरफ़ को मुंह फेर लिया, फ़र्श की तरफ़ देखने लगा। यह पहला मौक़ा था जब उसने अपने मालिक की आज्ञा का उल्लंघन किया। वह उद्विग्न असहाय सा अपने कोने को वापस लौट गया।

इसके बाद कटूक्तियों का असली दृश्य शुरू हुआ। काकी ने अपने कटु-प्रलाप का द्वार खोल दिया।

"ऐसा घोर अपमान!" वह इवान इवानिच से चीख़कर बोली। "एक सड़ियल खुजलहा कुत्ता अपनी नाक मेरी तरफ़ से, एक सोवियत नारी की तरफ़ से हटा रहा है!" फिर उसने बीम की तरफ़ संकेत किया, "अरे, मैं तुझे... मैं... देखना, तू देखना!"

"बस काफ़ी हो गया!" सहसा, वह मेहमान काकी पर बरस पड़ा, "तो वह सब झूठ का अम्बार था। कुत्ते ने तुम्हें न तो कभी काटा न काटने की कोशिश की। वह बेचारा तुम्हें देख डर के मारे बुत बन गया है।"

"मुझसे चिल्लाकर बातें न करो," उसने आक्रामक अंदाज़ में उत्तर दिया।

इस क्षण पर वह मेहमान असंदिग्ध रूप से बोला :

"ख़ामोश !" और बीम के मालिक की तरफ़ मुड़ते हुए कहने ल
"इस तरह के लोगों के लिए यही तरीक़ा है।" और काकी की त
फिर से घूमते हुए उसने कहा : "सुन लो, मुझे यह पसन्द नहीं है ! अ
तुम, तुम अपने को 'सोवियत नारी'... कहती हो। अच्छी बात
तुम भाग जाओ," उसने गरजकर कहा, "अगर तुम कोई और मुसी
खड़ी करोगी तो मैं तुम्हें ऐसी सज़ा दूंगा कि वह एक सार्वजनिक मिस
बन जायेगी। भागो !" और उसने उसकी शिकायत को उसी के साम
फाड़ फेंका।

बीम इस मेहमान के अंतिम भाषण का आशय अच्छी तरह से सम
गया। काकी अपनी नाक हवा में उठाये चुपचाप बाहर निकल गयी। बी
अपनी निगाहें उसी पर जमाये रहा और जब वह बाहर निकल गयी त
दरवाज़े पर यह देखने भी गया कि वह सचमुच चली गयी है या नहीं।

इवान इवानिच ने कहा : "आपने उनके साथ ... थोड़ी अशिष्टता जैस
बरती।"

"वही एक तरीक़ा था। मैं दावे से कहता हूं, वह सारे अहाते को सि
पर उठा लेगी। और जब मैं ऐसा कह रहा हूं तो तुम्हें पक्का यक़ीन ह
जाना चाहिए कि ऐसा ही होगा। यह झगड़ा-टंटा खड़ा करनेवाले बकवा
ऐसा ही तो मेरे साथ करते हैं," उदाहरण के लिए उसने अपनी गर्द
पर अपने हाथ से ख़ुद ही प्रहार किया। "उसके पास कोई भी बेहत
काम करने को नहीं है, इसलिए वह हमेशा ऐसे लोगों की खोज में रहत
है जिन्हें वह मुसीबत में फंसा सके। अगर आप ऐसे लोगों की बातों प
ध्यान दें तो वे आनन-फ़ानन सारे मकान को उलट-पुलटकर रख दें।

बीम उनके चेहरों के भावों, उनकी मुद्राओं और आवाज़ के उता
चढ़ावों को ध्यान से देख-सुन रहा था जिससे वह इस दृढ़ निष्कर्ष प
पहुंचा कि उसका मालिक और मालिक का मेहमान एक दूसरे के शत्रु नह
हैं और, दृष्टतः, एक दूसरे की इज़्ज़त भी करते हैं। वह उनके वार्तालाप
के दौरान कुछ समय तक उन्हें देखता रहा, लेकिन जब उसने मुख्य निष्क
निकाल ही लिया बाक़ी और बातों में उसे कोई ख़ास दिलचस्पी नहीं रही
वह मेहमान के क़रीब गया और उसके पैरों के पास लेट गया, मानो क
रहा हो : "वह जो हुआ उसके लिए मुझे खेद है।"

मालिक की टिप्पणियां

आज आवास-प्रबन्ध-समिति का अध्यक्ष बीम के ख़िलाफ़ एक शिकायत की जांच के लिए मुझसे मिलने आया। फ़ैसला बीम के पक्ष में रहा। लेकिन मेरे अतिथि ने सुलेमानी अक़्ल से फ़ैसला किया। उसमें ऐसी बातों की सहज प्रतिभा रही होगी।

लेकिन शुरू में बीम उस पर गुर्राया क्यों? मेरा ख़्याल है, मैं जानता हूं। मैंने रूखे ढंग से उसकी अगवानी की और उससे हाथ मिलाने की पेश-कश नहीं की (शिकार का कार्यक्रम स्थगित करना पड़ा था) और बीम ने अन्तर्जात भावना से काम लिया: मेरे मालिक का कोई भी शत्रु मेरा शत्रु है। इसलिए जिसे शर्मिंदा होना चाहिए वह बीम नहीं मैं हूं। यह आश्चर्यजनक बात है कि उसमें स्वरों के कम्पन, अभिव्यंजना और भाव-भंगिमाओं को सूक्ष्मता से समझने की अत्यंत-असाधारण क्षमता है। मुझे चाहिए कि मैं इस बात को हमेशा ध्यान में रखूं।

बाद में अध्यक्ष के साथ मेरी बातचीत बहुत ही दिलचस्प रही। वह मेरे साथ जल्दी ही घुलमिल गया:

"ज़रा तुम सोचो," उसने कहा, "मेरे ब्लाक में डेढ़ सौ फ़्लैट हैं! और कुल चार-पांच झगड़ा-टंटा खड़ा करनेवाले निठल्ले, जैसा कि मैं उन्हें कहता हूं, लोग हैं। वे इस सारी जगह को सबके लिए असह्य बना सकते हैं। हर कोई जानता है कि वे कौन हैं और हर कोई उनसे डरता है। वैसे वे गुपचुप उन्हें कोसते रहते हैं। अजी जनाब, दुष्ट किरायेदार को देखकर तो पाख़ाने का बर्तन भी बड़बड़ायेगा। ईमान से कहता हूं, सचमुच ऐसा ही होगा... अब, मैं पूछता हूं कि मेरा सबसे बड़ा दुश्मन कौन है? वह जो काम नहीं करता। इस जगह में, जैसा कि तुम अच्छी तरह से जानते हो, प्यारे, तुम बिना काम किये इतना खा सकते हो कि पेट ही फट जाये। यह ठीक नहीं है, तुम समझो, क़तई ठीक नहीं है... तुम्हें काम करने की ज़रूरत नहीं है। तुम बिना काम किये रह सकते हो, ऐसा तुम कर सकते हो। अब देखिये, मिसाल के लिए तुम क्या करते हो?

"मैं लिखता हूं", मैंने उत्तर दिया। वैसे मुझे पक्का यक़ीन नहीं था कि वह मज़ाक कर रहा या गम्भीरता से पूछ रहा है (विनोदप्रिय व्यक्ति कभी-कभी ऐसा करते हैं)।

"और तुम इसे काम कहते हो! कुछ करे-धरे बग़ैर एक जगह बैठे रहना और मैं शर्त लगाता हूं कि वे तुम्हें इसके लिए पारिश्रमि देते होंगे?"

"हां देते हैं," मैंने जवाब दिया। "लेकिन कोई ख़ास ज़्यादा न देते। मैं अब वैसा युवा नहीं हूं जैसा कि पहले कभी था। मैं मुख्य र से अपनी पेंशन पर गुज़ारा करता हूं।"

"और इससे पहले तुम क्या थे?"

"एक पत्रकार। मैं अख़बारों के लिए काम करता था। अब मैं योंही दो-चार पंक्तियां, घर पर बैठा लिख लेता हूं।"

"तो तुम लिखते हो, लिखते हो?" उसने अनुग्रह सा प्रकट करते हु दोहराया।

"हां।"

"अच्छा, तुम्हारे लिए शुभ कामना... बेशक, यदि तुम्हें पसन्द ह तो... तुम बुरे आदमी नहीं लगते हो, लेकिन तुम ख़ुद समझ सकते ह कि यह है क्या। मैं भी पेंशन पाता हूं, एक सौ रूबल प्रतिमाह, औ मैं प्रबन्ध-समिति के अध्यक्ष की हैसियत से काम करता हूं। यह काम मैं ध्यान दीजियेगा, निःशुल्क करता हूं। मुझे काम करने की आदत है। ं जीवनभर प्रशासन में रहा हूं, और मैंने चोटी के कुछ पदों पर काम किया कभी निकाला नहीं गया और मैंने कभी नीचा नहीं देखा। लेकिन आख़िर में उन्होंने मुझे दबाव डालकर बाहर निकलने को विवश कर दिया और मैं नीचे ही नीचे गिरता चला गया। मेरा अंतिम काम एक छोटी सी फ़ैक्टरी में था। और वहीं से मुझे मेरी पेंशन मिली। उन्होंने मुझे वह विशेष पेंशन नहीं दी जिसके लिए मैं, अपने अन्य पदों के आधार पर, हक़दार था—कहीं कोई अप्रत्याशित बाधा थी... फिर भी काम करना हर एक का कर्तव्य है। यह मेरा अपना विचार है।"

"लेकिन मेरा भी कोई आसान काम नहीं," मैंने अपनी सफ़ाई सी पेश करते हुए कहा।

"लिखना? उंह! अगर तुम जवान होते तो मैं तुम्हारे पीछे भी पड़ जाता। लेकिन तुम अवकाश पा चुके हो... अगर कोई जवान बग़ैर काम किये घूमता है, तो मैं उसे मकान में टिकने नही देता। या तो तुम काम करो या फिर दफ़ा हो जाओ।"

वह हमारे मकान में निठल्लों के लिए सचमुच ही आतंक है। मैं समझता हूं कि उसके जीवन का मुख्य उद्देश्य सारे आलसियों, गपोड़ियों और परजीवियों का पीछा करना है, लेकिन इसके साथ ही वह, सामान्यतः, सभी को उपदेश देने में भी आनन्दित होता है। उसे यह यक़ीन दिलाना असम्भव सिद्ध हो गया कि लिखना भी एक तरह का काम है। या तो वह मुझे अपने चतुराई भरे कूट व्यंग्य से बेवकूफ़ बना रहा था या अपना कृपाभाव जतला रहा था (लिखता है तो लिखे – दूसरे निठल्लू तो इससे भी गये बीते हैं!)।

लेकिन जब वह कमरे से गया तो सौहार्दपूर्ण मनोदशा में था और अपने सयानेपन को छोड़ बीम को थपथपाते हुए कहने लगा :

"तुम जैसे हो, वैसे ही चलते रहो, लेकिन काकी के चक्कर में मत फंसना।" फिर मुझसे बोला, "अच्छा, फिर मिलेंगे, बेहतर है कि तुम लिखो – तुम और कर भी क्या सकते हो।"

हमने हाथ मिलाये। बीम, दुम हिलाता और उसके चेहरे की तरफ़ ताकता उसे दरवाज़े तक पहुंचा आया। बीम को एक नया परिचित मिल गया : पावेल तीतिच रीदायेव या, जैसे कि वह सामान्यतः जाना जाता था "पल्तीतिच"।

लेकिन उसे एक शत्रु भी मिल गया था, काकी। वही एकमात्र ऐसी व्यक्ति थी जिस पर बीम ने विश्वास नहीं किया। कुत्ते ने एक निंदक को पहचान लिया था।

लेकिन उस दिन के शिकार का हमारा कार्यक्रम चौपट हो गया। कभी-कभी ऐसा होता है। आप एक अच्छे दिन की उम्मीद करते हैं, पर अप्रियता के सिवा कुछ भी हासिल नहीं कर पाते। हां, ऐसा होता है।

चौथा अध्याय

सुनहला जंगल

कुछ दिन बाद, एक दिन तड़के सवेरे वे साथ-साथ चल पड़े। पहले उन्होंने एक ट्राम पकड़ी और उसके पिछले भाग में खड़े हो गये। ट्राम की ड्राइवर इवान इवानिच और बीम को पहचानती थी। तो भई, जब

वह पटरी बदलने को बाहर निकली तो बीम ने उसकी अगवानी कं ड्राइवर ने उसके कानों को दुलराया, लेकिन बीम ने उसका हाथ न चाटा; वह एक जगह पर बैठा, अपने अगले पैरों को ऊपर-नीचे करत अपनी दुम को फ़र्श से टकराता हुआ समुचित अभिवादन करता रहा।

शहर से बाहर निकलने के लिए उन्हें एक बस पकड़नी थी, जिस उतने तड़के सिर्फ़ पांच या छः अन्य यात्री बैठे थे।

लेकिन जब उन्होंने अन्दर आना चाहा तो ड्राइवर बड़बड़ाने लग और अपनी बड़बड़ाहट में "कुत्ता" और "अनुमति नहीं" शब्दों व दोहराता रहा। बीम उसकी बात को फ़ौरन समझ गया—वह उनके चेह देखकर सही बात बता सकता था। एक यात्री ने उनका पक्ष लिया लेकि एक अन्य ड्राइवर की तरफ़दारी करने लगा। बीम ने इस बहस को गौ से सुना। अन्त में ड्राइवर अपने कक्ष से बाहर आया और बीम के मालि ने उसे पीले काग़ज़ का टुकड़ा थमाया, फिर बीम के साथ गाड़ी में च गया और एक लम्बी, स्पष्ट सुनायी देनेवाली, गहरी सांस लेकर ए सीट पर बैठ गया।

बीम बहुत समय पहले से देख रहा था कि लोग काग़ज़ के इन टुकड़ की अदला-बदली करते हैं। एक दिन टेबल में पड़े काग़ज़ के इन टुकड़ में से एक में से ख़ून की गंध मिली थी। उसने अपने मालिक का ध्यान आकृष्ट करने के लिए उसे सूंघा था, लेकिन उसके मालिक ने रंचमात्र भी ध्यान नहीं दिया—हां, दे भी कैसे? सूंघने की क्षमता ही नहीं हुई!—और महज़ "नहीं, नहीं!" कहता रहा। उसके बाद उसने काग़ज़ के उन टुकड़ों को अपनी दराज़ में ताला लगाकर बंद कर दिया। इन टुकड़ों में से कुछ, जब वे साफ़ हों तो रोटी और सौसेज की और सामान्यतः दूकानों की गंध देते थे, लेकिन अधिकांश में से हाथों की बू आती थी—सैकड़ों हाथों की। बीम ने देखा था कि लोग काग़ज़ के इन टुकड़ों को बहुत पसन्द करते हैं और उन्हें अपनी जेबों और दराज़ों में रखते हैं, जैसे कि उसका मालिक करता था। यद्यपि बीम इन बातों को कुछ नहीं समझता था फिर भी उसके लिए यह समझना आसान था कि जैसे ही उसके मालिक ने ड्राइवर को काग़ज़ का एक टुकड़ा दिया वैसे ही वे दोनों दोस्त बन गये। लेकिन, जैसा कि अपने दोस्त की आंखों पर टिकी उसकी सवालिया निगाह से जाहिर था, बीम यह नहीं समझ पाया कि इसके बाद इवान

इवानिच ने गहरी सांस क्यों ली। परन्तु, कुल मिलाकर, बीम को काग़ज़ के उन टुकड़ों की जादुई-शक्ति का लेशमात्र भी अन्दाज़ा नहीं था। यह उसकी श्वान-बुद्धि से परे था। वह यह भी नहीं समझ सका कि एक दिन काग़ज़ के वही टुकड़े उसकी ज़िन्दगी में एक त्रासद भूमिका अदा करेंगे।

मुख्य रोड से वे जंगल की तरफ़ पैदल चले।

जंगल के किनारे पर पहुंचकर इवान इवानिच थोड़ी देर विश्राम के लिए रुक गया और बीम ने खोजबीन के लिए एक चक्कर लगाया। उसने ऐसा जंगल पहले कभी नहीं देखा था। असल में यह वही जंगल था जहां वे वसन्त में तथा ग्रीष्म में (सिर्फ़ घूमने के लिए) आये थे, लेकिन अब वह सुनहरे प्रकाश से भरा-पुरा था, मानो सूर्य की तरह चमक रहा हो।

पेड़ों के पत्ते अभी गिरने शुरू ही हुए थे, और प्रत्येक पत्ती, हवा में झूलती-लहराती ख़ामोशी के साथ नीचे गिरती थी। शीतलतापूर्ण ताज़गी, स्फूर्ति और प्रफुल्लतादायक थी। जंगल की शारदीय गंध में कुछ विशेषता थी और वह इतनी साफ़ और अपरिवर्ती थी कि बीम बीस या तीस मीटर की दूरी से भी अपने मालिक की गंध पा लेता था। उसने एक जंगली चूहे की गंध को बहुत दूरी से पकड़ लिया था, लेकिन उसने उसकी अवहेलना कर दी (उसे ऐसे छोटे-मोटे जानवरों के बारे में सब कुछ मालूम था), पर कुछ ही देर में, किसी जीवित प्राणी की गंध, बहुत दूरी से आ उसकी नाक से टकरायी और वह जहां का तहां खड़ा रह गया। जब वह निकट-तर गया तो एक कंटीली गेंद पर भूंकने लगा।

इवान इवानिच, जो एक ठूंठ पर बैठा था, आवाज़ सुनकर उठा और बीम के पास आया।

"नहीं, बीम। नहीं, तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, अरे बेवकूफ़ यह एक सेही है।" वह बीम को वहां से हटा ले गया।

सो, सेही एक छोटा जानवर है और अच्छा जानवर है, लेकिन आपको उसे छूने की अनुमति नहीं।

इवान इवानिच फिर एक ठूंठ पर बैठ गया और उसने बीम को भी बैठने का आदेश दिया। उसने अपनी टोप उतारी, उसे बग़ल में रखा और पत्तियों को निहारने लगा। वह जंगल की निस्तब्धता में कान लगाये हुआ था, और हां, मुस्करा रहा था। शिकार करने से पहले वह हमेशा ऐसा ही करता था।

तब बीम ने भी उसी निस्तब्धता में अपने कान लगा दिये।

एक कालकण्ठ नीचे उतरी, कुछ देर साहस के साथ कूजन करती और फिर उड़कर भाग गयी। एक नीलकण्ठ पक्षी डाल दर डाल फुद आया और बिल्ली की जैसी आवाज़ लगाता फिर से फुदकता हुआ नि गया। फिर पास ही एक फुदकी "टीं-टीं", "टीं-टीं" करने लगी। आप इसका क्या कर सकते हैं। वह गुबरैले जितनी बड़ी भी नहीं फिर भी "टीं-टीं" की रट लगाये चली जा रही थी। ख़ैर कोई नहीं, उसकी आवाज़ से ऐसा लगता था गोया आपको सलाम कर रही ह

शेष सब कुछ निश्शब्द था।

फिर अंत में, उसका मालिक खड़ा हो गया। उसने खोल से बं बाहर निकाली और उसमें कारतूस भरे। बीम उत्तेजना से कांपने लग इवान इवानिच ने गर्दन के पास उसे दुलराया, पर इससे बीम की उत्तेज और भी बढ़ गयी।

"ठीक, बेटे... खोजो!"

बीम फ़ौरन दौड़ पड़ा। पेड़ों के बीच में, ज़मीन की तरफ़ ना लगाये, आहिस्ता से क़दम रखते और लगभग ज़रा भी आवाज़ किये बि वह कभी आगे जाता, कभी पीछे, कभी दायें जाता तो कभी बायें। उस मालिक जंगल को, उसके सारे आकर्षणों को भूल गया। अब समस्त आ र्षणों का केन्द्र बीम था, हल्का-फुल्का, लास्यपूर्ण आग्रही बीम। बीच-बी में इवान इवानिच बीम को लेटने का आदेश देता ताकि उसे शांत कि जा सके, उसकी ऊर्जा को बचाया जा सके। बीम शीघ्र ही सुचारु ढंग और यह समझकर दौड़ने लगा कि वह क्या कर रहा है। सेटर जाति शिकारी कुत्ते का काम एक ललित कला है। वह अपने सिर को ऊंच उठाये हलकी चौकड़ी मारता जाता है; उसे सिर झुकाने की ज़रूरत न पड़ती क्योंकि वह गंध को ज़मीन से काफ़ी अधिक ऊंचाई पर भी पक लेता है; जब वह दौड़ता है तो उसके रेशम जैसे बाल उसकी सुगठि गर्दन में चिपके से रहते हैं। जिस तरीक़े से, जैसी शान और विश्वास वह अपना सिर ऊंचा उठाये चलता है तथा शिकार का पीछा जिस आवे के साथ करता है – वह सब ऐसी बातें हैं जो उसे इतना सुन्दर बना देती हैं

इवान इवानिच के लिए ऐसा समय परमसुखमय विस्मृति का सम होता था। वह युद्ध को भूल गया, जीवन में भोगे दुख-कष्टों को औ

अपने अकेलेपन को भूल गया। उसे यह तक महसूस होने लगा कि उसका अपना बेटा कोल्या, जिसे क्रूर युद्ध ने छीन लिया था, भी उसके साथ है और जीवन का आनन्द उठा रहा है; जबकि वास्तव में उसके बेटे का जीवन कब का समाप्त हो चुका था। वह भी शिकारी था! नहीं, मरनेवाले जिन्हें प्यार करते हैं उनके जीवन को छोड़कर कभी नहीं जाते और मरनेवाले कभी बूढ़े नहीं होते, क्योंकि वे जीवित लोगों के हृदय में हमेशा वैसे ही बने रहते हैं। यही हाल इवान इवानिच का था; घाव भर गया था लेकिन दर्द अभी भी होता था। दूर जंगल में कुत्ते और बन्दूक़ के साथ किसी भी दर्द को बर्दाश्त करना सरलतर हो जाता है। शिकारी बनकर जन्म लेने का एक सुख यह भी है!

सहसा बीम की गति हलकी हो गयी, उसका आखेट-परास छोटा हो गया, वह क्षणभर को रुका और फिर छोटे, दबे, ध्वनिहीन क़दमों से आगे बढ़ा। उसकी मृदुल, सतर्क और सुप्रवाही गति में बिल्ली से गुण थे। अब उसका सिर आगे को बढ़ रहा था और उसकी पीठ की रेखा में आ गया था। उसके शरीर का प्रत्येक तंतु, जिसमें उसकी पीछे को सीधी बढ़ी हुई झालदार दुम भी थी, गंध के प्रवाह पर संकेन्द्रित था। एक और क़दम... अब वह अपना एक पंजा ऊपर उठाये खड़ा था। एक और क़दम—और दूसरा पंजा क्षणभर को ऊपर आया और फिर ज़रा भी आवाज़ किये बग़ैर धीरे से नीचे आ गया। और अन्त में, उसका दायां पंजा ऊपर उठा, और लगभग हमेशा की तरह, हवा में मूर्तिवत स्थिर हो गया।

पीछे बंदूक़ लिये तैयार इवान इवानिच चुपचाप क़रीब आया। अब वहां पर दो मूर्तियां थीं—आदमी और कुत्ता।

जंगल ख़ामोश था। केवल बर्च-वृक्षों की पत्तियां सूर्य के किरन-सरोवरों में नहाती मंद मर्मर ध्वनि कर रही थीं। नवोदित शाहबलूतों का एक झुरमुट अपने सबल पुरखे के पास खड़ा था। एस्प-वृक्ष की चमकीली रजत वर्णी धूसर पत्तियां ध्वनिहीन कम्पनों से सिहर रही थीं। और ज़मीन में बिखरी पिंगल पत्तियों के बीच थी प्रकृति की और धीर मनुष्य की सुन्दरतम कृति—एक कुत्ता। एक भी पेशी कम्पित नहीं हुई। ऐसे क्षणों में बीम सिर्फ़ अर्ध-जीवित सा जान पड़ता था मानो वह आवेशोल्लास के सम्मोहक प्रभाव में हो। और यही था, सुनहले जंगल की पृष्ठभूमि में, उसका क्लासिकी आखेट-संकेत।

"आगे बढ़ो..."

बीम ने वन-कुक्कुट को उड़ाया।

बन्दूक़ चलने का धमाका हुआ।

क्षणभर के लिए जंगल आन्दोलित हो गया और उसने एक असंतु क्रुद्ध अनुगूंज से इसका उत्तर दिया। शाहबलूतों और एस्प वृक्षों के बीच कि पर खड़ा बर्च-वृक्ष घबराकर चौंक सा गया। शाहबलूतों ने दानवों की त सांस ली और पड़ोस में एस्प-वृक्षों ने जल्दी-जल्दी अपनी चांदी बिखरा द

वन-कुक्कुट पत्थर की तरह नीचे गिरा। बीम उसे खोजकर ले आ और नियमानुसार, अपने मालिक को भेंट कर दिया। लेकिन उसके मालि ने, उसको दुलराने तथा उसके अच्छे काम के लिए धन्यवाद देने के ब उस पक्षी को अपने हाथ से पकड़ा, उसे देखा और जैसी लम्बी सांसें अक्सर लेता था वैसी ही एक सांस लेकर विचार कर हुआ सा बोल

"सच, ऐसा नहीं करना चाहिए था..."

बीम ने चकराकर उसकी तरफ़ देखा पर वह बोलता गया:

"बीम मैंने यह तुम्हारी ख़ातिर किया, तुम्हारी, अरे पगले तेरी ख़ाति अन्यथा, यह वस्तुतः खेद की बात है।"

बीम फिर चक्कर में पड़ गया— ऐसी बातें उसकी बुद्धि से परे थीं शेष सारे आखेट के दौरान उस बंदूक़ची ने, जैसा कि बीम को महसू हुआ, अंधे आदमी की तरह सब कुछ चौपट कर दिया। और जब उस मालिक ने एक वन-कुक्कुट पर बन्दूक़ संधानी तक नहीं तो बीम बहु परेशान हो गया। लेकिन इसके बावजूद आख़िरी वन-कुक्कुट को उस सही ढंग से मार गिराया।

जब वे घर आये तो अंधेरा हो चला था, दोनों थके थे और एक दूस के प्रति सहृदयता और स्नेह का अनुभव कर रहे थे। मिसाल के लिए बीम ने अपने कोने में न सोने का फ़ैसला कर लिया। वह अपने कम्बल को अपने मालिक की खाट के पास घसीट लाया और वहीं, फ़र्श पर ले गया। उसके कहने का मतलब यह था कि अब उसे उसके अपने कोने में नहीं भेजा जा सकता क्योंकि वह अपने "कोने" को अपने साथ ले आया है। इवान इवानिच ने उसके कान को थपथपाया और उसकी गर्दन के बालों को सहलाया। उनकी दोस्ती, ऐसा प्रतीत होता था, हमेशा-हमेश तक की है।

लेकिन रात के समय इवान इवानिच एक या दो बार कराहा, बिस्तर से उठा और कुछ गोलियां निगलकर फिर लेट गया। बीम ने पहले तो सावधानी से सुना, फिर उसने अपने मालिक की तरफ़ देखा, खड़ा हुआ और खाट से नीचे लटके उसके हाथ को चाटने लगा।

"यह बम के खोल का एक टुकड़ा है, एक टूटी छिपटी, बीम प्यारे... और यह हरकत करने लगा है। यह बुरा है, बेटे।" इवान इवानिच ने अपने हृदय-स्थल को मलते हुए कहा।

बीम काफ़ी समय से और बिल्कुल अच्छी तरह से जानता था कि "बुरा" शब्द का अर्थ क्या होता है। उसने "छिपटी" शब्द भी कई बार सुना था। वह इसका अर्थ नहीं समझ पाया, लेकिन उसकी अन्तर्जात श्वान-बुद्धि ने उसे बताया था कि वह एक बुरा मनहूस शब्द है, एक ऐसा शब्द है जिसमें भय अन्तर्निहित है।

लेकिन संकट टल गया। सुबह, घूमने-फिरने के बाद इवान इवानिच, रोज़ की तरह अपनी डेस्क पर बैठा, सफ़ेद कागज़ निकालकर अपने सामने रखे और फिर अपनी छोटी सी छड़ी की सहायता से उससे फुसफुसाहट की आवाज़ निकालने लगा।

मालिक की टिप्पणियां

कल एक सुखद दिन था। हर चीज़, जैसी होनी चाहिए वैसी ही थी। शरद, धूप, सुनहला जंगल और बीम की सुन्दर सजीली दौड़। पर इसके बावजूद, एक हलकी, अप्रिय कड़वाहट शेष रह गयी? क्यों?

बस में, जिस तरह से मैंने सांस ली थी उसे बीम ने स्पष्टतः देखा और उसे देखकर उसका चकराना भी उतना ही स्पष्ट था। कुत्ता यह बिल्कुल नहीं समझ सकता था कि मैं ड्राइवर को रिश्वत देने के लिए विवश हो गया था। कुत्ते को इसकी क्या परवाह हो सकती है? और क्या मुझे परवाह है? यदि मैंने एक छोटे "काम" के लिए एक रूबल दिया या बीम, अथवा एक बड़े काम के लिए हजार दिये तो भी क्या फ़र्क़ पड़ा? मैं अभी भी शर्मिंदगी महसूस कर रहा हूं। यह कौड़ियों के मोल अपनी आत्मा को बेचना जैसा है। पर हां, बीम किसी भी मनुष्य की तुलना में

निचले, बहुत ही निचले धरातल पर है और उसे ऐसी बातों की जानकारी नहीं है।

बीम यह कभी नहीं समझ सकता था कि काग़ज़ के वे टुकड़े एक आदमी का ईमान बहुधा परस्पर-निर्भर होते हैं। लेकिन मैं ः बेवक़ूफ़ हूं! एक कुत्ते को प्रकृति ने जितना दिया है उससे अधिक अपेक्षा नहीं की जा सकती; आप एक कुत्ते को मनुष्य नहीं बना सकते

और दूसरी बात। मुझे अब शिकार मारना अच्छा नहीं लगता। बुढ़ापे की वजह से होगा। हर तरफ़ हर चीज़ इतनी सुन्दर थी और सः वह मरी हुई चिड़िया... मैं शाकाहारी नहीं हूं, ना ही मैं एक ए पाखण्डी हूं जो मारे हुए जानवरों की पीड़ाओं का वर्णन करता है अ ख़ुद उन्हीं का मांस हड़पता जाता है। लेकिन अपने जीवन के अंत में अपने लिए यह नियम बनाने जा रहा हूं: एक बार के शिकार में एक दो वन-कुक्कुट से अधिक नहीं। बेहतर तो यह होता कि एक भी न म जाता, लेकिन तब शिकारी कुत्ते की हैसियत से बीम का अस्तित्व ख़ हो आयेगा और मुझे वह शिकार ख़रीदना पड़ेगा जिसे किसी अन्य मारा हो। नहीं, मुझे इससे दूर ही रहने दीजिये... और हां, जो हो, मैं यह सब किसे बता रहा हूं? असल में ख़ुद अपने आपको। अकेले की इतनी लम्बी अवधि के दौरान आप का कुछ हद तक खण्डित-व्यक्ति का आदमी बन जाना अवश्यंभावी है। कुत्ता उससे मनुष्य को शताब्दि से बचाता रहा है।

तो फिर कल की वह कड़ुवाहट कहां से आयी? शायद मैंने अप एक दो विचारों को मस्तिष्क से निकल जाने दिया?.. अच्छा हम विग कल पर एक नज़र डालें: सुख की कामना और एक रूबल का पील नोट; सुनहला जंगल और मृत पक्षी। तो यह सब क्या है? शाय अंतर्विवेक के साथ एक समझौता?

एक मिनट रुको! यह है वह विचार जो कल मेरे दिमाग़ से उत गया था। यह समझौता नहीं था, बल्कि अन्तर्विवेक की टीस थी औ उन सबके लिए दर्द था जो अनावश्यक हत्याएं करते हैं, उन मनुष्य के लिए जो अपनी मानवता खो देते हैं। अतीत से, अतीत की अपनं स्मृतियों से मैं पक्षियों और जानवरों के लिए बढ़ती हुई सम्वेदना का अनुभ करता हूं।

मैं याद करता हूं।

एक बार शिकारियों की सोसायटी ने हानि पहुंचानेवाले कालकण्ठ पक्षी को नष्ट करने पर एक नियम बनाया था और माना गया था कि वह नियम जैविकीविदों के पर्यवेक्षण पर आधारित है। इसी तरह का नियम बाज़ के जैसे सभी पक्षियों के बारे में भी था। उन्हें भी नष्ट किया जाना था। और भेड़ियों के बारे में भी। तथ्य तो यह है कि भेड़ियों का लगभग सफ़ाया ही कर दिया गया था। एक भेड़िये को मारने पर आपको तीन सौ रूबल (पुरानी मुद्रा में) का पुरस्कार दिया जाता था और एक कालकण्ठ या चील के पंजों के लिए, बशर्ते आप उन्हें शिकारियों की सोसायटी की अपनी शाखा के पास लायें, आपको पांच कोपेक या शायद पचास, मुझे ठीक से याद नहीं, मिल सकते थे।

ख़ैर जो हो, अचानक एक नया नियम प्रकट हुआ जिसमें यह कहा गया था कि चीलें और कालकण्ठ, अन्य पक्षियों के शत्रु नहीं, उपयोगी पक्षी हैं। इसलिए उन्हें मारने की मनाही कर दी गयी। उन्हें मारने के कड़े आदेश के स्थान पर उन्हें मारने पर कड़े प्रतिबंध लगा दिये गये।

अब केवल एक पक्षी रह गया था जिसे नष्ट करना ही चाहिए था, वह था जाति-बाह्य स्लेटी कौवा। कहा गया कि यह अन्य पक्षियों के घोंसलों को नष्ट करनेवाला है (वही आरोप जो पहले कालकण्ठ पर निश्चित रूप से लगाया जाता था)। दूसरी तरफ़ स्तेपी के मैदानों तथा वन-स्तेपी क्षेत्रों में विषैले रासायनिक पदार्थों से पक्षियों की आबादी में फैलनेवाली विषाक्तता का कोई दायित्व किसी पर नहीं डाला गया। हमने जंगलों और खेतों को हानिकारक जीवजंतुओं से बचाने की कोशिश में पक्षियों को नष्ट किया और ऐसा करके जंगलों को ही बर्बाद कर दिया। दोष किसका था? मानव समाज के पीछे चलनेवाले, सतत रूप से सफ़ाई में लीन रहनेवाले अपमार्जक स्लेटी कौवे का तो निश्चय ही नहीं था।

इस सब का आरोप स्लेटी कौवे पर मढ़ दो! पक्षी-जीवन के विनाश के लिए दोषी हर किसी का ज्वलंत तर्क यही था।

मृत्यु के साथ लम्बे अर्से के प्रयोग भयावह होते हैं। सभी ईमानदार जैविकीविद और शिकारी उनके ख़िलाफ़ संघर्ष में उठ खड़े हुए हैं। पक्षी-जीवन तथा वनों के संरक्षण की लड़ाई अब अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर लड़ी जा रही है।

लेकिन क्या मैंने इन "मौत के साथ प्रयोगों" के विरुद्ध कभी आव उठायी है? नहीं। यही कारण है कि मेरी अन्तरात्मा मुझे धिक्कारती यदि मैं इस समय, वक़्त बीतने के बाद यह कहूं :

"स्लेटी कौवे को बचाओ, मनुष्यों की बस्ती को साफ़ रखनेवाले उत्तम सफ़ाई-कर्मी को बचाओ, उसका समूल नाश होने से बचाओ। हमारे आसपास की ज़मीन को ठीक वैसे ही साफ़ करता है जैसे कि । व्यंग्यकार हमारे समाज की आध्यात्मिक गंदगी को साफ़ करता है। इस लिए स्लेटी कौवे को बचाओ; वह कुछ अन्य चिड़ियों के अण्डे चुरा सक है, लेकिन यह एक और काम है जिसके लिए स्लेटी कौवा बना है चिड़ियों से अपना घोंसला सही ढंग बनवाने के लिए। उस चिढ़ानेव क्लेशप्रद पक्षी को, उस एकमात्र ऐसे पक्षी को बचाओ जिसे मनुष्य सम्मुख यह चिल्लाने का अबोध साहस है: 'कांव-आंवआंव!' ('भाग ज बेवकूफ़, भाग!')।—तो मेरी आवाज़ कितनी कमज़ोर और बेजान लगेगी जैसे ही आप चले जाते हैं वैसे ही स्लेटी कौवा नीचे उतरता है अ व्यंग्यपूर्ण कांव-कांव के साथ उस सड़े हुए मांस के टुकड़े को निगलने लगत है जिसे कोई कुत्ता भी कभी न छुए। स्लेटी कौवे को बचाओ! पक्ष जगत के व्यंग्यकार को बचाओ! उससे डरो मत। ज़रा देखो कि नन्ह अबाबीलें किस तरह उस पर झपटती हैं और उसे उसके घर, जो पहत से काफ़ी साफ़ होता है, से भगा देती हैं और कौवा घृणा से कर्णक आवाज़ करते हुए उस जगह को चल पड़ता है जहां से दुर्गन्ध आती है स्लेटी कौवे को बचाओ!"

मेरी यह पुकार निश्चय ही निष्प्राण और अविश्वसनीय लगेगी। लेकिन इन शब्दों को बीम से सम्बन्धित टिप्पणियों की इस पुस्तक में रहने दो। मैं इसकी जिल्द पर "बीम" लिखने जा रहा हूं। वे सिर्फ़ मेरे लिए हैं। आख़िर, मैंने इन्हें बीम की प्रतिष्ठा की रक्षार्थ शुरू किया था जो जन्म से ही कलुषित हो गयी थी। लेकिन इनमें वह सब कुछ सम्मिलित किया जा रहा है जो सिर्फ़ बीम ही नहीं बल्कि मुझसे भी सम्बन्धित है। मुझे संदेह है कि इन्हें कभी कोई प्रकाशित भी करेगा। "एक कुत्ते और मेरे बारे में" कौन पढ़ना चाहेगा? कोई नहीं। इससे मुझे कोल्त्सोव को उधृत करने की इच्छा होती है।

कीर्ति प्रतिष्ठा नहीं चाहता मेरा लेखन,
वह तो आह्लाद अकेला अपना है।
प्यारे-प्यारे, सच्चे अच्छे यारों का है
उन यादों का, जो बीते युग का सपना है।

...लेकिन बीम भरी दोपहरी में अभी भी पसरा पड़ा है। प्यारे दोस्त, दिनभर का सारा काम अच्छा था, और तुम्हारे फेफड़े सुनहले जंगल की गंध से अभी भी भरे हैं।

सुनहला जंगल! यह है ख़ुशी का तुम्हारा हिस्सा, तुम्हारा ध्यानार्थ स्थल। सौर प्रकाशित शरद वन में मनुष्य का हृदय पावनतर हो जाता है।

पांचवां अध्याय

भेड़ियों की घाटी में

शरत्काल में एक दिन एक आदमी, जिससे बंदूक़ और कुत्ते की गंध आ रही थी, इवान इवानिच से मिलने आया। यद्यपि वह शिकारी के लिबास में नहीं बल्कि सभी ग़ैरदिलचस्प लोगों के से साधारण कपड़े पहने हुए था, फिर भी बीम ने जंगल की हलकी गंध, उसके हाथों में बंदूक़ के चिन्ह और उसके बूटों में शरत्कालीन पत्तियों की ख़ुशबू पहचान ली। बीम ने अतिथि को हर तरह से सूंघते हुए अपने मालिक की ओर तेज़ी से नज़र दौड़ाते तथा ज़ोर-ज़ोर से दुम हिलाते हुए यह सब बातें बतलायीं। वे पहली बार मिले थे, पर तुरन्त दोस्त बन गये।

अतिथि कुक्कुर-भाषा जानता था, इसलिए वह सौहार्दता के साथ बोला:

"अच्छा तो तुम मुझे जानते हो, जानते हो न? अच्छा बच्चा, अच्छा बच्चा," उसने बीम के सिर को दुलराया और दृढ़ स्वर में कहा, "बैठो!"

बीम ने आदेश का पालन किया और अपने पंजों को अधीरता से ऊपर-नीचे करता बैठा रहा। उसकी आंखें दोनों दोस्तों पर जमी थीं।

उसके मालिक और अतिथि ने हाथ मिलाये और मैत्रीपूर्ण नज़रों से एक दूसरे को देखा।

"उत्तम," बीम ने प्रसन्नताभरी चीत्कार से अपने उद्गार प्रकट किये।

"होशियार कुत्ता है!" अतिथि ने बीम की ओर दृष्टिपात करते हुए कहा।

"हां, अच्छा है, बीम अच्छा कुत्ता है। मैं इससे बेहतर कुत्ते की आशा नहीं कर सकता था।" इवान इवानिच ने पुष्टि की।

इस तरह उन तीनों के बीच बातचीत जारी रही। उनके शिकार... अतिथि ने अपनी जेब से काग़ज़ का एक टुकड़ा निकाला और उस पर अपना अंगूठा चलाना शुरू कर दिया:

"यहां है वह... ठीक यहां, भेड़ियों की घाटी के सबसे घने भाग में। उनके सरदार ने दीर्घ स्वर में हूंक लगायी तो पांच अन्य ने उत्तर दिया: तीन नवागंतुक और दो पुराने अनुभवी। उनमें से एक को मैंने देखा है और मैं कह सकता हूं कि भेड़िया हो तो ऐसा हो!"

बीम ने अपने मालिक को शिकार के समय "यहां" शब्द का उपयोग करते सुना था, इसलिए वह चौकन्ना हो गया। लेकिन जब "भेड़िया" शब्द बोला गया तो उसके नेत्रगोलक नज़र आने लगे। उस शब्द में जंगली कुत्ते की भयावह गंध थी, ऐसी गंध जिसने एक बार बीम को भयाक्रांत कर दिया था, वह ऐसी गंध थी जिसके बारे में उसके मालिक ने उसे तब आगाह किया था जब उसने भेड़िये के पैरों के चिन्हों की ओर संकेत किया था: "वह भेड़िया था बीम, भेड़िया!" और अब एक और अहेरी ने उसी स्वर से कहा: "भेड़िया हो तो ऐसा!"

जब वह अतिथि जाने लगा तो उसने बीम से भी अलविदा कही।

इवान इवानिच कुछ कारतूसों में सीसे की भारी गोलियां भरने के लिए बैठ गया। उसने उन गोलियों में आलू का आटा छिड़क रखा था।

उस रात बीम बेचैन रहा।

दूसरे दिन, वे पौ फटने से काफ़ी पहले ही बंदूक़ सहित घर से बाहर निकल गये और एक सड़क के किनारे पर इन्तज़ार करने लगे। कुछ ही देर में शिकारियों से भरी एक लॉरी उनके पास रुकी। वे लोग पीछे की तरफ़ बेंचों में बैठे थे और सबके सब शांत व गम्भीर थे। इवान इवानिच ने पहले बीम को ऊपर चढ़ाया फिर ख़ुद चढ़ा। कल के अतिथि ने उससे कहा:

"अरे नहीं, बीम को अपने साथ क्यों ले जाते हैं!"

"हांके में कोई कुत्ता नहीं होना चाहिए। उसे हटाओ!" किसी और ने कठोर स्वर में कहा, "वह टें की आवाज़ निकालेगा और सारा खेल बिगाड़ देगा।"

"बीम ऐसा नहीं करेगा," इवान इवानिच ने अपना बचाव करते हुए कहा। "वह गंध के पीछे भागनेवाला कुत्ता नहीं है।"

इस उत्तर के ख़िलाफ़ कई आवाज़ों ने एक साथ जवाब दिया, लेकिन इसका अंत यह हुआ कि कल के अतिथि ने कहा:

"अच्छी बात है, इवान इवानिच, मैं तुम्हें और बीम को रिज़र्व में रख दूंगा। वहां तुम्हारे लिए एक स्थान है। वहां ऐसे मामले हुए हैं जबकि एक भेड़िये ने जलधारा के नीचे की तरफ़ ध्वजरेखा को तोड़ने की कोशिश की थी।"

बीम भांप गया कि वे उसे नहीं ले जाना चाहते हैं। उसने भी अपने पड़ोसियों को फुसलाने की कोशिश की पर वहां इतना अंधेरा था कि वह जो कुछ कर रहा था उसे कोई देख नहीं सकता था। पर इस सबके बावजूद लॉरी आगे बढ़ती हो गयी।

जब वे जंगल के वार्डन की चौकी पर पहुंचे तब सूर्य उदय हो गया था। वे एक भी शब्द बोले बिना, ख़ामोशी से नीचे उतरे। बीम ने भी ऐसा ही किया। फिर वे जंगल के किनारे कुछ समय तक एक ही पंक्ति में चलते रहे। उनमें से न किसी ने सिगरेट पी, न कोई खांसा और तो और, उन्होंने अपने एक बूट को दूसरे से रगड़ तक नहीं खाने दी। वे सब जानते थे कि वे कहां जा रहे हैं और क्यों जा रहे हैं—बीम के सिवा सभी। परन्तु वह भी अपने मालिक के क़दमों पर छाया की तरह, हलके क़दमों से चलता रहा। और उसका मालिक बीच-बीच में अपने हाथ से बीम का कान छूता था, मानो कह रहा हो, सब ठीक-ठाक है, बीम, सब बिल्कुल ठीक है।

उनका नेता वह अहेरी था जो पिछले दिन उनके घर आया था। उसने अपना हाथ ऊपर उठाया तो वे सब रुक गये। पंक्ति में तीन, सबसे आगेवाले, जंगल की तरफ़ मुड़ गये और पहले से भी ज़्यादा ख़ामोशी से, बिल्लियों की तरह चुपके-चुपके बढ़े और जल्दी ही लौट आये। तब नेता ने अपनी टोपी ऊपर उठायी और उसे आगे की तरफ़ लहराया। इस संकेत

को पाते ही आधे शिकारी, जिनमें इवान इवानिच और उसके पीछे बी भी था, नेता का अनुसरण करने लगे। इसका मतलब यह था कि पंक्ति में बीम का नम्बर आख़िरी होगा। जिस मृदुता से वह चल रहा था वैसे और कोई नहीं चल सकता था। इस पर भी इवान इवानिच ने उसे ज़ंजीर से बांध लिया।

नेता के ध्वनिहीन आदेश पर पंक्ति का पहला व्यक्ति एक झाड़ी के पास रुक गया और उस स्थल पर मूर्तिवत खड़ा हो गया। शीघ्र ही दूसरा व्यक्ति शाहबलूत के पेड़ों के निकट रुक गया। इसके बाद एक और रुका तथा उसके उपरांत वे एक-एक कर तब तक रुकने चले गये जब तक कि सब अपने-अपने ठिकाने पर खड़े नहीं हो गये। अब इवान इवानिच और बीम ही नेता के साथ रह गये थे। अब वे पहले से भी ज़्यादा सतर्कता से चल रहे थे। बीम ने देखा कि उस सारे रास्ते में एक डोरी बंधी थी और उस डोरी से शोलों के रंग के गतिहीन कपड़ों के टुकड़े लटके हुए थे। अन्त में नेता ने उनको एक ठिकाने पर खड़ा कर दिया और उल्टे पांव लौट गया।

लेकिन उसके जाने के काफ़ी देर बाद भी बीम के संवेदनशील कानों में नेता के क़दमों की आहट आती रही, वह अन्य लोगों को उनके अपने-अपने ठिकानों पर मार्ग दर्शन दे रहा था। पर अन्त में वह इतनी दूर चला गया कि बीम भी कुछ नहीं सुन सका।

निस्तब्धता नीचे उतर आयी थी, जंगल की बेचैन और सतर्क निस्तब्धता। बीम ने अपने मालिक की स्थिर मुद्रा, उसके घुटनों के कम्पन से तथा ध्वनिहीन ढंग से बंदूक़ खोलने, कारतूस भरने, बंदूक़ को फिर से बन्द करने के तरीक़े और फिर तनकर मूर्तिवत खड़े होने से भी इस बात को महसूस किया।

वे घने कांटों से भरे जलधारा के थाले की एक तरफ़ एक झाड़ी की आड़ में खड़े थे। उनके चारों ओर शाहबलूत के विशाल वृक्षों का जंगल कठोर ख़ामोशी में तना खड़ा था। जंगल का हर वृक्ष विराट था, और उनके बीच उगी घनी झाड़ियां और पौधे इस प्राचीन वनक्षेत्र की महाशक्ति पर बल देने का काम कर रहे थे।

बीम पूर्णत: चौकस खड़ा था। वह गंध सूंघ रहा था। लेकिन तब तक वहां कोई ख़ास गंध थी ही नहीं, क्योंकि हवा बिल्कुल थमी हुई थी। इससे उसे घबराहट होने लगी। जब हलकी, मंद बयार भी होती तो वह

हमेशा जान जाता था कि उसके ग्रागे क्या है। वह वायुधाराग्रों को पुस्तक मे लिखी पंक्तियों की तरह पढ़ सकता था। लेकिन इतनी स्थिर हवा में ग्रौर ऐसे घने जंगल में सिर्फ़ शांत रहने की चेष्टा करो, ख़ास तौर पर तब, जब कि उसकी बग़ल में खड़ा उसका ग्रच्छा दोस्त भी ग्रान्दोलित हो रहा था।

ग्रौर सहसा वह शुरू हो गया।

संकेतार्थ दाग़ी गयी बंदूक़ की ग्रावाज़ ने निस्तब्धता को चीरकर तार-तार कर दिया ग्रौर उसकी ग्रनुगूंज दूर कहीं से टकराकर तीव्र गति से ग्रागे-पीछे ग्राती-जाती सुनायी पड़ी। ग्रौर तब, ग्रनुगूंज के साथ स्वर मिलाते हुए, दूर से, दल के नेता की ग्रावाज़ ग्रायी :

"हांका चालू! लिहो, लिहो, लि-हो-हो-हो!"

इवान इवानिच बीम के कानों तक नीचे झुका ग्रौर मुश्किल से सुनायी पड़नेवाली ग्रावाज़ में फुसफुसाया :

"नीचे!"

बीम थर्राता नीचे लेट गया।

"लिहो, लिहो, लि-हो-हो-ग्रो-ग्रो!" ग्रब हांका लगानेवाले चिल्ला रहे थे।

निस्तब्धता ग्रजीब, जंगली चीत्कारों से खण्ड-खण्ड हो गयी। पेड़ों को डण्डों से पीटा जाने लगा। ऐसी हड़बड़-खड़बड़ शुरू हो गयी मानो सैकड़ों कालकण्ठ पक्षी महाविपत्ति में फंसे हों। हांका लगानेवालों की क़तार चीख़ती-चिल्लाती, हवा में बन्दूक़ें दाग़ती निकट ग्राने लगी।

ग्रौर तब बीम को वह गंध मिली जिसे वह बचपन से जानता था – भेड़िये की गंध! वह ग्रपने मालिक के पैरों के पास सट गया, थोड़ा – बिल्कुल थोड़ा सा ऊपर को उठा ग्रौर उसने ग्रपनी दुम तान ली। इवान इवानिच उसके संकेत को समझ गया।

दोनों ने उसे एक साथ देखा। भेड़िया ध्वजरेखा के साथ-साथ दौड़ता हुग्रा ग्राया, पर बंदूक़ की मार से बाहर था। वह ग्रपना सिर झुकाये लम्बे डग भरता चल रहा था ग्रौर उसकी दुम लकड़ी के कुन्दे की तरह नीचे को लटकी थी। फिर वह जानवर ग़ायब हो गया ग्रौर तभी, तुरंत, बंदूक़चियों की पंक्ति से एक गोली चली ग्रौर फिर दूसरी।

जंगल गुरगुराया ग्रौर गरजा। वह उत्तेजना से उन्मत्त था।

एक अन्य ठिकाने से फिर एक गोली चली। यह गोली बिल्कुल प
ही से चली थी। शोरगुल की आवाज़ें और-और नज़दीक आने लगी थीं
एक भेड़िया, विशाल, प्रौढ़ भेड़िया नितांत अनपेक्षित रूप से प्रक
हो गया। वह कांटों के बीच छिपा, जलधारा के थाले से ऊपर को आर
और झंडियों को देखकर सहसा ऐसे रुका, मानो वह किसी दीवार
सामने आ पहुंचा हो। लेकिन यहां जलधारा के थाले में लटकी झंडिय
शेष रेखा से अधिक ऊपर और भेड़िये की ऊंचाई से तीन गुना ज़्याद
ऊंची थीं। हांके का शोर उसके लगभग पास ही पहुंच गया था। भेड़िय
कोई निर्णय के बग़ैर, बल्कि अपेक्षाकृत उपेक्षा के साथ झंडियों के नीचे
गुज़र गया और इवान इवानिच व बीम की तरफ़, लगभग पन्द्रह मीट
की दूरी तक, आगे बढ़ आया। उसके उन चन्द क़दमों के दौरान आदमी
और कुत्ते ने देखा कि वह घायल था, उसकी एक बग़ल में रुधिर क
धब्बा फैल रहा था और उसका मुंह रक्तिम फेन से भरा था।

इवान इवानिच ने बंदूक़ दाग़ी।

भेड़िया चारों पैरों पर उछला और अपना सिर घुमाये बिना, सम्पूर्ण शरीर से उस दिशा को घूम गया जहां से गोली आयी थी – और फिर अपने स्थान पर खड़ा हो गया। चौड़ा और भारी माथा, दांत खुले हुए और वह रक्तिम फेन... इस पर भी यह दयनीय दृश्य नहीं था। इसके विपरीत वह सुन्दर था, निर्बन्ध जंगली जानवर था। वह कायर भी नहीं था। ऐसी हालत में भी वह गर्व से सिर उठाये था और मज़बूती से खड़े रहने की कोशिश कर रहा था, पर सहसा उसके पैर जवाब दे गये और वह ज़मीन पर लुढ़क गया, हवा में उठे पैर धीरे-धीरे हिल रहे थे। शीघ्र ही वह गतिहीन, निष्क्रिय और शांत हो गया।

यह सब बीम के लिए बहुत अधिक था। वह उछला और आखेट-संकेत की मुद्रा में खड़ा हो गया। लेकिन वह कैसा आखेट-संकेत था! उसकी पीठ के बाल कांटों की तरह खड़े हो गये थे और उसकी गर्दन के बाल चारों तरफ़ झालरदार कण्ठे की तरह उठे हुए थे और दुम पैरों के बीच थी। वह उसके बंधु की ओर, कुत्तों के उस गर्वीले राजा की ओर, ऐसे प्राणी की ओर, अधम, कायरतापूर्ण और घिनौना आखेट-संकेत था जो यद्यपि मर गया था तथा ख़तरनाक नहीं रह गया था पर फिर भी अपनी भावना और अपने रक्त की वजह से अभी भी भय का कारण था।

बीम को अपने बंधु से घृणा थी, क्योंकि बीम मनुष्य पर विश्वास करता था पर वह भेड़िया ऐसा नहीं करता था। बीम अपने बंधु से डरता था, लेकिन वह भेड़िया घातक रूप से घायल होने पर उससे नहीं डरा था।

...चिल्लाने की आवाज़ें और भी नज़दीक आ गयीं। एक गोली और दग़ी और फिर दो एक साथ चलीं। ज़ाहिर था कि कोई अनुभवी भेड़िया ध्वजरेखा के निकट से गुज़र रहा था या शायद अंतिम क्षण में जब शिकारियों की चौकसी कुछ कम हो गयी और वे एक दूसरे की स्थितियों के निकट आने लगे थे तो वह उसे पार करके निकल गया था। दल का नेता इवान इवानिच के पास आया और बीम पर एक नज़र डालकर बोला :

"क्या है, तुम्हें क्या हुआ है! तुम एक कुत्ते के बजाय जंगली जानवर जैसे अधिक दिखायी दे रहे हो। लेकिन उनमें से दो घेरा तोड़कर भाग गये। एक घायल था।"

इवान इवानिच ने बीम को थपथपाया और दुलारा, लेकिन उसके बालों का हर्षण रुक जाने के बावजूद उसका शरीर अभी भी ऐंठ रहा था और वह जीभ बाहर निकाले हांफ़ रहा था और लोगों से बचकर परे हट रहा था। जब वे दोनों शिकारी भेड़िये को देखने के लिए गये तो बीम उनके पीछे नहीं गया। इसके बजाय वह सारे नियम तोड़कर, अपनी ज़ंजीर को घसीटता हुआ लगभग तीस मीटर दूर चला गया और पीले पत्तों में सिर रखकर जूड़ी के मरीज़ की तरह कांपता हुआ लेट गया। उसके निकट आने पर इवान इवानिच ने देखा कि बीम की आंखें ख़ून जैसी लाल हो गयी हैं। उस क्षण पर वह एक जंगली जानवर था!

"ओह, बीम, प्यारे दोस्त। तुम्हारी हालत अच्छी नहीं है, है ना? हां, यही बात है। यह ऐसा ही होना था, बेटे। इसे तो किया ही जाना था।"

"लेकिन ध्यान रखो, इवान इवानिच," दल के नेता ने कहा, "तुम भेड़िये से एक शिकारी कुत्ते को बेकार बना सकते हो। इससे वह जंगल से डरने लगेगा। कुत्ता ग़ुलाम होता है और भेड़िया एक निर्बन्ध जानवर है।"

"यह बात काफ़ी सही है, लेकिन अब बीम चार वर्ष का हो गया है। वह एक पूर्ण वयस्क कुत्ता है, वह जंगल से कभी नहीं डरेगा। दूसरी तरफ़ जिस जंगल में भेड़िये होंगे, वहां वह कभी भी आपका साथ नहीं

छोड़ेगा। वह उनकी गंध पा लेगा और आपको बता देगा कि वे वहां हैं
"हां, एक भेड़िया कुत्ते को ठीक वैसे ही खा जायेगा जैसे किसी
को। लेकिन वे इसके निकट नहीं आयेंगे। भेड़िये की गंध पाने पर
आपके क़दमों को कभी नहीं छोड़ेगा।"

"यही बात है! लेकिन आप समय से पहले उन्हें भेड़िये से डरा
मत। उसे यह सहन करना ही होगा। इसके सिवा और कुछ किया
नहीं जा सकता।"

इवान इवानिच बीम को लेकर दूर चला गया और दल का ने
भेड़िये के पास खड़ा हांका लगानेवालों का इन्तज़ार करने लगा।

जब शिकारियों का सारा दल जंगल के वार्डन की चौकी के पास जा
हो चुस्कियां लगाता उत्साह के साथ ख़ुशियां मनाने लगा तो लाल-ला
आंखें लिये तथा भेड़िये के भय से संक्रमित व आक्रांत बीम सबसे अलग
अकेला और गम्भीर, बाड़ के पास सिकुड़कर लेटा था। काश, वह जानत
कि नियति उसे एक बार फिर उसी जंगल में लानेवाली है।

जंगल का वार्डन उसके पास आया, नीचे बैठा और उसकी पीठ
थपथपाने लगा:

"अच्छा कुत्ता। चतुर कुत्ता। शुरू से लेकर आख़िर तक एक बार भ
नहीं किकियाया।"

यहां के सभी आदमी कुत्तों को प्यार करते थे।

लेकिन जब वे लॉरी में चढ़े और इवान इवानिच ने बीम को अन्दर
रखा तो वह फिर बिल्ली की तरह कूदकर बाहर निकल गया, उसके बाल
खड़े हो गये थे और वह कूं-कूं कर रहा था। वह तीन मुर्दा भेड़ियों के
साथ नहीं बैठना चाहता था।

"ओहो!" दल के नेता ने कहा। "यह कुत्ता कभी मुसीबत में नही
पड़ेगा।"

दल का एक सदस्य, एक बड़ा और हृष्ट-पुष्ट आदमी इवान इवानिच
और बीम के लिए ड्राइवर के कक्ष में जगह करने के वास्ते असंतोष के
साथ नीचे उतर आया।

* * *

उस सीज़न में वन-कुक्कुटों का आखेट बहुत बार नहीं किया गया,
लेकिन जब हुआ तब बीम ने हर मौक़े पर अच्छा काम किया। उसे जैसे

ही भेड़िये की गंध मिलती वह कुक्कुटों की खोज बन्द कर देता और अपने मालिक के पैरों से जा चिपकता – यह इस बात का पक्का संकेत होता कि पास में कहीं पर भेड़िया है। यह अच्छी बात थी। भेड़िये के शिकार के बाद वह इवान इवानिच को और भी ज़्यादा प्यार करने लगा और उसकी शक्ति में उसका विश्वास बढ़ गया। बीम मानवीय दया पर भी विश्वास करता था। विश्वास करना और प्यार करना एक बहुत बड़ा वरदान होता है। जिस कुत्ते में यह विश्वास नहीं होता वह कुत्ता नहीं रह जाता बल्कि एक भटकता हुआ भेड़िया या (जो उससे भी बुरा है) एक आवारा कटखने क़िस्म का कुत्ता बन जाता है। जब एक कुत्ते को अपने मालिक पर विश्वास नहीं रह जाता और वह उसे छोड़कर भाग जाता है या निकाल दिया जाता है तो उसे इन्हीं दो विकल्पों में एक को छांटना पड़ता है। लेकिन उस कुत्ते को क्या कहिये जो अपने प्यारे दोस्त और मालिक को गंवा देता है और उसके पास मालिक को खोजने या उसकी प्रतीक्षा करने के सिवा और कोई विकल्प नहीं होता है? इस प्रकार का कुत्ता न तो एक निर्बन्ध घूमनेवाला भेड़िया बन सकता है न सामान्य आवारा, उसे पहले ही जैसा निष्ठावान समर्पित कुत्ता ही बना रहना होता है और अपने जीवन के अन्त तक अकेलापन भोगना पड़ता है।

प्यारे पाठको, ऐसी निष्ठा की अनेक सच्ची कहानियां हैं, लेकिन मैं सिर्फ़ बीम की कथा सुनाऊंगा, उस बीम की जिसका एक कान काला था।

छठा अध्याय

दोस्त को अलविदा

एक दिन, इवान इवानिच शिकार खेलकर घर आया तथा बीम को खाना खिलाकर और स्वयं खाये बग़ैर बिस्तर पर लेट गया और उसने सोने से पहले बिजली भी नहीं बुझायी। उस दिन बीम ने सचमुच कठिन श्रम किया था इसलिए वह जल्दी ही सो गया और ऐसा सोया कि दुनिया से बेख़बर हो गया। लेकिन इसके बाद के दिनों में उसने ग़ौर किया कि उसका मालिक दिन के समय अधिकाधिक बार चारपायी पर लेटने लगा है, कि कोई चीज़ उसे परेशान किये हुए है और कि वह कभी-कभी दर्द

से हांफने लगता है। एक सप्ताह से भी अधिक समय तक बीम अके
घूमने गया और वह भी थोड़ी समय के लिए मैदान जाकर अपनी दै
आवश्यकता पूरी करने। लेकिन फिर वह समय आया जब इवान इवा
बीम के लिए दरवाज़ा खोलने को भी मुश्किल से उठ सकता था और
दिन उसकी चारपायी से आनेवाली कराहें विशेष करुणाजनक हो गयी
बीम उसकी चारपायी के पास जाकर बैठ गया और अपने दोस्त के
में ग़ौर से देखने लगा, फिर उसने अपना सिर उसके फैले हुए हाथ
रख दिया। उसने देखा कि मालिक का चेहरा एकदम विवर्ण हो गया
आंखों के गिर्द गहरे घेरे बन गये हैं और हजामत के बिना ठोड़ी की रेख
तीखी होती जा रही हैं। इवान इवानिच बीम की तरफ़ मुड़ा और शां
दुर्बल आवाज़ से बोला:

"तो? हम क्या करेंगे, बेटे? मैं संकट में हूं, बीम, बड़े संकट
वह टुकड़ा मेरे हृदय बिल्कुल क़रीब है। यह बुरा है, बीम"

उसकी आवाज़ इतनी असाधारण थी कि बीम चिंतित हो गया।
कमरे में इधर-उधर दौड़ने और दरवाज़े को खुरचने लगा मानो कह र
हो: "आओ, हम यहां से निकल चलें।" लेकिन इवान इवानिच को चल
में डर लगता था। बीम फिर इवान इवानिच के पास बैठ गया और धी
से किकियाया।

"अच्छा बीम, आओ, कोशिश करें," इवान इवानिच जैसे-तै
बुड़बुड़ाया और बहुत ही सावधानी से बिस्तर पर उठ बैठा।

वह कुछ देर चारपायी के किनारे पर बैठा रहा, फिर उठा और ए
हाथ से दिल थामे तथा दूसरे को दीवार का सहारा लेने के लिए बढ़ा
हुए दरवाज़े की तरफ़ चला। बीम अपने दोस्त पर नज़र टिकाये उस
साथ-साथ चला और इस बीच उसने एक बार भी अपनी दुम नहीं हिलायी
यह ठीक है, वह मानो कह रहा था, घबराओ मत, धीरे-धीरे आगे बढ़ें

सीढ़ी के पास पहुंचकर इवान इवानिच ने अपने पड़ोसी के घर की
घंटी बजायी और जब नन्ही लड़की लूस्या आयी तो उसने उससे कुछ
कहा। वह दौड़ी-दौड़ी अपने कमरे में गयी एक बूढ़ी महिला के साथ लौट
आयी, उस महिला का नाम स्तेपानोव्ना था। जैसे ही इवान इवानिच ने
वह शब्द "टुकड़ा" कहा वैसे ही उसने दौड़ भाग शुरू कर दी, उसने
उसका हाथ पकड़ा और उसे वापस उसके कमरे में ले आयी।

"तुम्हें लेट जाना चाहिए, इवान इवानिच। हां बिस्तर में," उसने कहा और जब वह पीठ के बल लेट गया तो उसने अपनी बात पूरी की, "तुम्हें हिलना नहीं चाहिए।" उसने मेज़ से चाबियां उठायीं और लगभग दौड़ते हुए तेजी से, जितनी तेज़ी से बूढ़ी औरतें दौड़ सकती हैं, बाहर निकल गयी।

हां, बीम ने बिस्तर पर लेटने के आदेश को इस तरह लिया मानो वह उसी पर लागू होता हो। वह चारपायी की बग़ल में दरवाज़े की तरफ़ नजर किये लेट गया। उसके मालिक की दुखद स्थिति, स्तेपानोव्ना की चिंता और मेज़ से चाबियों को उठाने का उसका तरीक़ा – यह सब बीम की समझ में आये और वह दुविधा की स्थिति में पड़ा था।

थोड़ी ही देर में ताले में चाबी लगने की आवाज़ सुनायी दी। खड़क आवाज़ हुई और दरवाज़ा खुला। गलियारे में आवाज़ें सुनायी पड़ीं और स्तेपानोव्ना भीतर आयी और उसके पीछे कोट पहने अजनबी आये – दो औरतें और एक पुरुष। उनकी गंध अन्य लोगों से भिन्न थी और कुछ-कुछ दीवार पर लटके उस बक्से जैसी लगती थी जिसे उसका मालिक तभी खोलता जब वह कहता: "मेरी हालत अच्छी नहीं है, बीम। अच्छी नहीं।"

पुरुष चारपायी के पास आया, लेकिन...

बीम जानवर की तरह उस पर चढ़ बैठा, उसने अपने पंजे उसकी छाती पर रख दिये और ज़ोरदार आवाज़ में दो बार भौंका।

"निकल जाओ!" भौंकने का मतलब था।

वह व्यक्ति बीम को धकेल कर पीछे को कूदा, औरतें वापस दरवाज़े को भागीं और बीम चारपायी के पास बैठ गया, उसका हर अंग कांप रहा था, स्पष्ट था कि वह ऐसी संकटापन्न अवस्था में अजनबियों को अपने दोस्त के पास आने देने की बजाय अपनी जान कुर्बान करने को तैयार था।

दरवाज़े पर खड़े डाक्टर ने कहा:

"कैसा कुत्ता है! अब हमें क्या करना चाहिए?"

इवान इवानिच ने बीम को पास बुलाया और थोड़ा सा घूमकर उसके सिर को सहलाया। बीम अपने कंधे से दोस्त से सट गया और उसने उसकी गर्दन, चेहरे व हाथों को चाटा...

"मेरे पास आइये," इवान इवानिच ने डाक्टर की तरफ़ देखते धीरे से कहा।

डाक्टर उसकी चारपायी के पास आया।

"मुझे अपना हाथ दीजिये।"

डाक्टर ने उससे हाथ मिलाया।

"आप कैसे हैं?"

"आप कैसे हैं?" डाक्टर ने कहा।

बीम ने डाक्टर के हाथ को नाक से टटोला, इसका अर्थ था: "अच ठीक है। मेरे दोस्त का दोस्त मेरा दोस्त है।"

एक स्ट्रेचर अन्दर लाया गया। इवान इवानिच को उस पर र गया। और उसने कहा:

"स्तेपानोव्ना... क्या आप बीम पर एक नज़र रखेंगी। उसे सुब बाहर जाने दीजियेगा। वह जल्दी ही और अपने आप वापस आ जात है... बीम मेरा इन्तज़ार करेगा।" और बीम से उसने कहा: "तुम इन्तज़ार करना चाहिए... इन्तज़ार।"

बीम "इन्तज़ार" का अर्थ जानता था। बाहर एक दुकान में उस बैठने और इन्तज़ार करने के लिए कहा जाता था। जब वे बाहर शिका पर जाते तो उससे अक्सर थैले के पास बैठने और इन्तज़ार करने के लि कहा जाता था। इसलिए अब उसने हलके स्वर में कूं-कूं की और सा ही अपनी दुम हिलायी, जिसका तात्पर्य था: "हां, मेरा दोस्त वाप आयेगा! इस समय वह जा रहा है, लेकिन वह जल्दी ही वापस अ जायेगा।"

उसकी बात को सिर्फ़ इवान इवानिच ने समझा। बाक़ी चक्कर ं पड़ गये थे, जैसा कि वह उनकी आंखों को देखकर समझ सकता था। बी स्ट्रेचर की बगल में बैठ गया और उसने अपना पंजा उस पर रख दिया इवान इवानिच ने उसके पंजे को दबाया:

"इन्तज़ार करो, बेटे, इन्तज़ार करो।"

और फिर कुछ ऐसा हुआ जैसा बीम ने पहले कभी नहीं देखा था- उसके मालिक की आंखों से जल की बड़ी-बड़ी बूंदें नीचे ढुलक आयी

जब स्ट्रेचर बाहर ले आया गया और दरवाज़े की चाबी घुमा दं गयी तो बीम नीचे दरवाज़े के पास लेट गया, उसने अपने अगले पं

आगे को फैला दिये और सिर को पार्श्व की तरफ़ मोड़कर फ़र्श पर रख दिया। कुत्ते इस तरह से तभी लेटते हैं जब वे व्याकुल होते हैं या उन्हें वेदना होती है। तथ्य यह है कि वे बहुधा इसी स्थिति में मरते हैं।

लेकिन बीम अंधे व्यक्ति के उस मार्गदर्शी कुत्ते की तरह व्याकुल नहीं था जो अपने मालिक की क़ब्र के पास गया था, जिसने खाना खाने से इन्कार कर दिया था और जो पांचवें दिन सूर्योदय के समय मर गया। यह एक सच्ची कहानी है।

नहीं, बीम मरा नहीं। बीम से स्पष्टतः कहा गया था: "इन्तज़ार करो!" उसे दृढ़ विश्वास था कि उसका दोस्त वापस आयेगा। ऐसा पहले भी हुआ है जब उसके दोस्त ने उससे रुकने के लिए कहा था। उसका आना निश्चित है।

इन्तज़ार करो! अब बीम के जीवन का सम्पूर्ण उद्देश्य यही था।

लेकिन उस रात कमरे में अकेला रहना कितना संतापकारी, कितना पीड़ाप्रद था! किसी चीज़ का अभाव था। उन सफ़ेद कोटों से विपत्ति की गंध आ रही थी। और बीम हताशा की हद तक परेशान हो गया।

आधी रात को जब चंद्रोदय हुआ तो यह स्थिति उसकी बर्दाश्त से बाहर हो गयी। जब उसका मालिक घर में होता था तब भी चन्द्रमा को देखकर बीम को चिंता होने लगती थी। उसकी आंखें थीं, वे मुर्दा आंखें थीं, फिर भी वे हमेशा ताकती रहती थीं, उसकी रोशनी भी मृत थी और बीम उसे देख अंधेरे कोने में सरक जाता था। और अब उन विचित्र ताकती हुई आंखों ने उसे भयाक्रांत कर दिया और वह डर से कांपने लगा; उसे दिलासा देने के लिए उसका मालिक वहां नहीं था। इसलिए, घोर रात के सूनेपन में वह हू-हू करके क्रंदन करने लगा। वह एक ऐसा दीर्घरव पूर्ण आक्रंदन था मानो कोई बड़ी मुसीबत टूट पड़ी हो। उसका विश्वास था कि कोई उसकी आवाज़ सुनेगा और शायद उसका मालिक भी सुन ले।

दरवाज़ा खुला और स्तेपानोव्ना भीतर आयी।

"क्या मामला है, बीम? तुम्हें इवान इवानिच का अभाव खल रहा है, है ना? हे भगवान, कैसी बुरी बात है।"

बीम ने उत्तर देना तो दूर, दुम तक नहीं हिलायी। वह महज़ दरवाज़े की तरफ़ ताकता रहा। स्तेपानोव्ना ने रोशनी जलायी और बाहर चली

गयी। प्रकाश होने से कुछ बेहतर हो गया, क्योंकि ऐसा जान पड़ा चन्द्रमा कुछ पीछे हट गया है और पहले से छोटा हो गया है। बीम चन्द्र की तरफ़ पीठ किये रोशनी के ठीक नीचे लेट गया, लेकिन थोड़ी देर ब वह फिर दरवाज़े पर आ डटा—इन्तज़ार में।

सुबह स्तेपानोव्ना कुछ दलिया लेकर आयी और उसने उसे बीम बर्तन में डाला, लेकिन बीम अपनी जगह से हिला तक नहीं। उस मा दर्शक कुत्ते का भी ऐसा ही हाल हुआ था—भोजन भी उसे उत्साहित न कर सका।

"ज़रा देखो इसे—कुत्ते में कैसी भावना है! यह क्या अविश्वसनी नहीं है? बीम, जाओ घूम आओ," और उसने दरवाज़ा खोल दिया "जाओ, घूमने जाओ।"

बीम ने अपना सिर उठाया और उस बूढ़ी औरत को ग़ौर से देखा वह "घूमने" का अर्थ जानता था। इसका मतलब था स्वतंत्रता। औ "जाओ, घूमने जाओ" का मतलब था पूरी स्वतंत्रता। हां, बीम निश्चि रूप से जानता था कि स्वतंत्र होने का मतलब अपने मालिक के आदेश पालन करना है। लेकिन उसका मालिक यहां नहीं था। इसलिए जब उससे "जाओ, घूमने जाओ" कहा गया तो वह किस क़िस्म की स्वतंत्रता थी?

स्तेपानोव्ना यह नहीं जानती थी कि कुत्तों के साथ किस तरह का व्यवहार किया जाता है। मगर वह यह जानती थी कि बीम जैसे कुत्ते शब्दों के बग़ैर भी समझ जाते हैं और कि जो शब्द वे जानते हैं उनके कई भिन्न-भिन्न अर्थ होते हैं जो भिन्न-भिन्न परिस्थितियों पर निर्भर होते हैं। इसलिए उसने महज़ यह कहा:

"अगर तुम दलिया नहीं खाना चाहते तो जाओ अपने लिए कुछ खोजो। कुत्ते तो कभी-कभी घास भी खाते हैं। या तुम कुछ टुकड़े कहीं खोज सकते हो" (उसे इस बात का कोई भान नहीं था कि बीम कूड़े के डिब्बों के निकट कभी नहीं गया), "जाओ, उसे खोजो।"

बीम उठ खड़ा हुआ और उसने अपने बदन को हिलाया। यह सब क्या है? "खोजो?" उसे क्या खोजना चाहिए? "खोजो" का अर्थ है पनीर के छुपाये हुए टुकड़े को ढूंढ़ना, शिकार की खोज करना या कोई ऐसी चीज़ का पता लगाना जो खो गयी है या छिपायी गयी है। "खोजो"

कहना एक आदेश था। उसे क्या खोजना था, इसे बीम स्थिति के अनुसार चलते-चलते तय करता था। प्रश्न था कि अब उसे क्या खोजना था।

उसने यह सारी बातें अपनी आंखों से, अपनी दुम से और अपने अगले पंजों को ऊपर-नीचे करके स्तेपानोव्ना से कहीं, लेकिन उसके पल्ले कुछ भी नहीं पड़ा, उसने महज़ दोहराते हुए कहा:

"जाओ घूमो। जाओ खोजो।"

बीम झपाटे के साथ दरवाज़े से बाहर निकला, बिजली की सी तेज़ी के साथ दौड़ता हुआ सीढ़ियों से नीचे उतरा और भागता हुआ अहाते की तरफ़ चल पड़ा। उसे मालूम था कि क्या खोजना है—अपने मालिक को! इसके अलावा और कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं था! यह थी वह जगह जहां स्ट्रेचर रखा था। वहां सफ़ेद कोटवाले उन लोगों की हलकी सी गंध अभी भी शेष थी। अहाते में किसी कार की बू थी। बीम एक वृत्त में घूमा और फिर उसके बीच आ गया। कम से कम प्रतिभा-सम्पन्न कुत्ता भी ऐसा ही करता। फिर वही गंध। वह उस गंध के पीछे-पीछे सड़क पर पहुंचा, लेकिन कोने में पहुंचते ही वह गंध लापता हो गयी, वहां से आगे सारी सड़क में रबर की जैसी एक ही गंध थी। मनुष्यों के छोड़े हुए चिन्ह अनगिनत और भिन्न-भिन्न होते हैं लेकिन कारें और लॉरियां सब एक ही गंध में समा जाती हैं। पर कोई बात नहीं, जिस गंध को वह चाहता था वह उसे अहाते से बाहर इस कोने तक लायी है, इसलिए यही वह दिशा है जो उसे पकड़नी चाहिए।

बीम सड़क की सारी लम्बाई में दौड़ता गया, फिर दूसरी में गया, घर लौटा और उसने उन जगहों में छानबीन की जहां वह और इवान इवानिच घूमा करते थे। लेकिन वहां अब कोई पदचिन्ह नहीं थे। दूर कहीं एक चौखानेदार टोपी पर उसकी दृष्टि अवश्य पड़ी, वह उसके पीछे दौड़ा, पर वह कोई और ही आदमी निकला। अच्छी तरह देखने-भालने के बाद वह इस नतीजे पर पहुंचा कि चौखानेदार टोपी पहनकर बहुत सारे लोग घूमते-फिरते हैं। वह कैसे जान सकता था कि उस शरत्काल में पुरुषों का, दुकानों में उपलब्ध, एकमात्र शिरोवस्त्र चौखानेदार टोपियां ही थीं। अतः वे हर किसी की पसन्द थीं। उसने इस बात पर पहले कभी ग़ौर नहीं किया था, क्योंकि कुत्ते सामान्यतः एक व्यक्ति के लिबास का निचला

हिस्सा ही देखते हैं (और याद रखते हैं)। यह एक ऐसी चीज़ है उन्हें भेड़ियों से, प्रकृति से उत्तराधिकार में मिली है, शताब्दियों के अ से हासिल हुई है। मिसाल के लिए यदि कोई शिकारी किसी ऐसी झाड़ी के पीछे खड़ा हो जिससे वह सिर्फ़ कमर तक ही ढका रहे तो लोमड़ी उसे तब तक नहीं देख सकेगी जब तक कि वह हिले नहीं या से उसकी गंध लोमड़ी तक न पहुंचे। इसलिए बीम ने यह निष्कर्ष नि कि ऊपरी भाग में देखना व्यर्थ है क्योंकि लोगों के सिर कुछ इस से बने हो सकते हैं कि सबके सब एक जैसे नज़र आयें।

वह दिन उजला और मौसम साफ़ था। कुछ सड़कों पर कहीं- पत्तियों के ढेर लगे थे और कुछ में पत्तियां बिखरी हुई थीं। ऐसी हा में अगर उसके मालिक की कम से कम गंध भी कहीं होती तो बीम जरूर पा लेता। पर वहां कुछ भी नहीं था।

दोपहर तक बीम हताश होने लगा। सहसा एक अहाते में उसे स्ट्रे की गंध मिली। वहां एक स्ट्रेचर खड़ा था। फिर उसे एक दूसरी दिशा भी वैसी ही गंध मिली। बीम उसके पीछे इस तरह चला जैसा वि सुपरिचित राह पर जा रहा हो। द्वार की सीढ़ियों पर से वैसी ही आ रही थी जैसी कि सफ़ेद कपड़े पहने उन लोगों से। बीम ने दरव को खुरचा। सफ़ेद कोट पहने एक लड़की ने दरवाज़ा खोला और बं को देखते ही घबरा कर पीछे हट गयी। लेकिन बीम ने जितने भी तरी से वह कर सकता था, उसका स्वागत किया और पूछा: "क्या इव इवानिच यहां हैं?"

"भाग जा!" वह चिल्लायी और द्वार बन्द लिया। लेकिन क्षण बाद उसने दरवाज़े को फिर से थोड़ा खोला और चिल्लाकर बोल "पेत्रोव! उस कुत्ते को भगाओ वरना मेरा अफ़सर मुझ से आ भिड़े और कहेगा: 'यह क्या है—कुत्ताघर या एमरजेंसी एम्बुलेंस यूनिट कृपया उसे निकालो!"

काला लम्बा कोट पहने हुए एक व्यक्ति गैराज से बाहर आया औ चूंकि उसे करना ही था, इसलिए निहायत ख़ुशमिज़ाजी से, बल्कि वस्तु आलस्य के साथ, बोला:

"ऐ जंगली, जा चला जा, भाग जा!"

बीम को "अफ़सर", "कुत्ताघर", "निकालना", "भिड़ना" "एम्बुलेंस यूनिट" जैसे शब्दों का अर्थ बिल्कुल नहीं आता था, लेकि

"जा चला, जा" और "भाग जा" शब्दों का अर्थ तथा उनके बोलने के तरीक़े को वह अच्छी तरह से समझता था। इस मामले में बीम को बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता था। इसलिए वह निरापद दूरी तक भागा और बैठकर दरवाज़े को देखने लगा। यदि किसी को पता होता कि बीम क्या खोज रहा है तो उसकी सहायता कर देते, वैसे इवान इवानिच को एमरजेंसी वार्ड में नहीं, सीधे अस्पताल ले जाया गया था। लेकिन आप इस मामले में कर क्या सकते हैं जबकि कुत्ते लोगों की बातों को समझ लेते हैं परन्तु लोग कुत्तों को या एक दूसरे को भी हमेशा नहीं समझ पाते। लेकिन, जो भी हो, इस तरह के गहन विचार बीम की समझ से बाहर थे। वह इस रहस्य को भी नहीं समझ सकता था कि जब उसने बिल्कुल ईमानदारी और विश्वास के साथ दरवाज़े को खुरचा था तो वे उसे अन्दर क्यों नहीं आने देते। उस दरवाज़े के पार उसके दोस्त के मिलने की हर सम्भावना है।

बीम विवर्ण पत्तियोंवाले लैलक के झाड़ के पास शाम तक बैठा रहा। एम्बुलेंसें आतीं और सफ़ेद कोटवाले लोग उनसे उतरते, वे या तो लोगों को चलने में मदद देते या उनके पीछे-पीछे चलते; कभी-कभी किसी को स्ट्रेचर सहित एम्बुलेंस से निकालाकर ले जाया जाता, ऐसे मौक़ों पर बीम नज़दीक आकर गंध का परीक्षण करता: लेकिन नहीं यह वह नहीं है। शाम होने तक अन्य लोगों ने इस कुत्ते में दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी। कोई व्यक्ति उसके लिए सौसेज का एक टुकड़ा ले आया–बीम ने उसे छुआ भी नहीं। काला लम्बा कोटवाला वह व्यक्ति कई बार वहां से गुज़रा, सहानुभूति के साथ बीम को देखने के लिए रुका और उसने अपना पैर नहीं पटका। बीम एक मूर्ति की तरह बैठा था और किसी से कुछ नहीं कह रहा था। वह इन्तज़ार कर रहा था।

जब सांझ ढली तो उसे सहसा यह ख़्याल आया कि उसका मालिक घर में हो सकता है। वह द्रुत गति से दौड़ता हुआ घर की ओर चल पड़ा।

वह नगर के बीच से गया, सुन्दर सजा-संवरा सफ़ेद कुत्ता जिसका एक कान काला था। जो भी उसे देखता यही कहता: "कितना सुन्दर शिकारी कुत्ता है!"

बीम ने अपने घर के दरवाज़े पर आकर खुरचा, लेकिन वह नहीं खुला। तब वह गोल-मटोल गेंद सा बनकर दरवाज़े के पास लेट गया। वह

न खाना चाहता था न पीना। उसे कुछ नहीं चाहिए था। वह पूर्णतः निरानन्द था।

अपने फ़्लैट से स्तेपानोव्ना बाहर आयी।

"तो तुम यहां हो, बेचारा?"

बीम ने दुम हिलायी, सिर्फ़ एक बार ("हां, मैं यहां हूं")।

"अच्छा तो, रात का खाना खा लो," उसने सुबह का दलिया उसकी तरफ़ सरकाया।

बीम ने उसे छुआ ही नहीं।

"हां, मैं जानती थी, तुमने खा लिया है ना? अच्छा बच्चा है। अब सो जाओ।" और उसने दरवाज़ा बन्द कर दिया।

उस रात बीम ने क्रंदन नहीं किया। पर वह दरवाज़े से भी एक इंच इधर-उधर नहीं हटा। उससे इन्तज़ार करने के लिए, रुकने के लिए जो कहा गया था!

अगली सुबह उसे फिर चिन्ता हो गयी। उसे जाना ही होगा, अपने दोस्त को ढूंढ़ने के लिए! खोजो! उसके लिए जीवन का अर्थ यही था। जब स्तेपानोव्ना ने उसे बाहर जाने दिया तो वह सीधे सफ़ेद कोटवालों की तरफ़ दौड़ गया। लेकिन इस बार एक भारी-भरकम, रोबीला व्यक्ति सब लोगों पर चिल्लाया और "कुत्ता-कुत्ता" शब्द दोहराता रहा। बीम पर पत्थर फेंके गये, वैसे फेंकनेवालों का प्रयोजन उसे चोट पहुंचाना नहीं था। उसे छड़ियां भी दिखायी गयीं और अन्त में किसी ने एक पतली लम्बी छड़ी से एक सपाका मार ही दिया। यह बड़ा ही पीड़ादायी था। बीम दूर भागा और बैठ गया, लेकिन कुछ देर बाद उसने, दृष्टतः, यह निष्कर्ष निकाला कि उसका मालिक वहां नहीं हो सकता अन्यथा वे उसे ऐसी निर्दयता से नहीं भगा सकते थे। इसलिए, अकारण ही सताया हुआ वह उदास, अकेला कुत्ता चुपचाप खिसक गया।

वह एक व्यस्त सड़क में पहुंचा। लोगों के दल के दल, थोड़ी-थोड़ी बातें करते, चलते ही चले जा रहे थे। सबको जल्दी थी और आने-जाने-वालों का प्रवाह अन्तहीन था। बीम ने सोचा होगा: "शायद वह इस रास्ते से गुज़रेगा!" तो वह किसी विशेष आधार के बिना ही एक छांहवाले कोने में बैठ गया। वह कोना एक फाटक से ज़्यादा दूर नहीं था। वह बैठा-बैठा हर गुज़रनेवाले को देखने लगा।

जिस पहली चीज़ पर उसने ग़ौर किया वह यह थी कि उन सबसे मोटरगाड़ियों से निसृत गैसों की गंध आ रही थी और कि कम-बाक़ी तीव्रतावाली अन्य गंधों को उसे वेधकर आना पड़ रहा था।

एक लम्बा, पतला आदमी, लगभग पूरी घिसी एड़ियोंवाले जूते पहने और धागे की जाली से बने थैले में आलू लिये, चला आ रहा था। उसका मालिक भी ऐसा ही थैला लेकर जाता था। वह आदमी आलू ले जा रहा था लेकिन उससे तम्बाकू की गंध आ रही थी और वह तेज़ी से चल रहा था, मानो उसे किसी को पकड़ना हो। लेकिन यह एक भ्रम था। वे सब खोज रहे थे, जिस तरह बीम दूर मैदानों में कभी इधर कभी उधर आखेट की टोह लगाता था वैसे ही वे भी टोह लगा रहे थे। वरना सड़क पर भागते जाने, कभी इस दरवाज़े और कभी उस दरवाज़े जाने और फिर तेज़ी से निकलकर बाहर आने की क्या ज़रूरत थी?

"हैलो, काले-कान!" उस लम्बे पतले आदमी ने गुज़रते समय कहा।

"हैलो!" बीम ने अपनी दुम की केवल एक हरकत से गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया। उसका ध्यान अभी भी आने-जानेवालों पर लगा था।

फिर मज़दूरों के कपड़े पहने एक आदमी आया। उसमें से एक दीवार (गीली दीवार) की सी गंध आ रही थी, जो दीवार को चाटते समय आती है। वह ऊपर से नीचे तक स्लेटी-सफ़ेद था और एक ऐसी लम्बी छड़ी लिये हुए था जिसके सिरे पर एक छोटी सी दाढ़ी और एक भारी थैला लगा था।

"तू यहां क्या कर रहा है?" उसने वहां रुककर बीम से पूछा। "अपने मालिक के लिए रुका है? या उसका इन्तज़ार कर रहा है?"

"मैं इन्तज़ार कर रहा हूं," बीम ने अपने अगले पंजों को ऊपर-नीचे चलाते हुए कहा।

"अच्छा तो यह ले लो।" उसने अपनी बैग से काग़ज़ की एक थैली निकाली, बीम के सामने एक मिठाई रखी और उसके काले कान को सहला दिया। "इसे खा डालो!" (बीम ने मिठाई को नहीं छुआ)। "तो तुम सुशिक्षित हो, हो ना! बौद्धिक हो! किसी दूसरे की थाली से नहीं खाओगे।" और वह आदमी शांति से टहलता हुआ आगे बढ़ गया, वह दूसरे लोगों जैसा नहीं था।

दूसरा कोई कुछ भी क्यों न सोचे, बीम के लिए वह एक भला आदमी

था। वह जानता था कि "इन्तज़ार करो" का क्या अर्थ है, उसने कहा इसलिए, वह बीम की बात समझ गया।

एक बहुत मोटा आदमी, एक मोटी छड़ी लिये, मोटे काले चश्मे प और मोटा फ़ोल्डर थामे आया; उसके पास की हर चीज़ मोटी और भा थी। उसके बदन से उसी तरह के काग़ज़ों की गंध आ रही थी जिन इवान इवानिच अपनी छोटी सी छड़ी से फुसफुमाया करता था, इस अलावा उससे उन पीले काग़ज़ के टुकड़ों की बू भी आ रही थी जि लोग अपनी जेबों में रखते हैं। वह बीम के सामने रुका और बोला:

"उह! हम कहां जा रहे हैं। तरुवीथियों में कुत्ते!"

अहाते का एक सफ़ाई-कर्मी झाड़ू हाथ में लिये फाटक से बाहर आ और उस मोटूराम की बग़ल में खड़ा हो गया। मोटूराम की लफ़्फ़ाज़ी जा थी और उसकी उंगली बीम की तरफ़ उठी हुई थी:

"तुम देख नहीं सकते! वह तुम्हारे इलाक़े में है। है कि नहीं?

"मैं देख सकता हूं," अहाते के उस आदमी ने अपने झाड़ू को उठाक ज़मीन में रोप दिया और उसका सहारा लेकर खड़ा रहा।

"तुम कुछ नहीं देख सकते," मोटूराम ने कुढ़कर कहा, "यह जानव मिठाई तक नहीं खाता। वह बहुत मिठाई खाकर अघाया बैठा है। क तक ऐसा चलेगा?" वह बौखला गया था।

"तो मत चलो," अहाते के सफ़ाई-कर्मी ने कहा तथा नितांत अवज्ञ से इतना और जोड़ दिया, "तुम तो जैसे हड्डी और चमड़ी के सिवा कुछ भी नहीं। ग़रीब बेचारे!"

"क्या तुम मेरी बेइज़्ज़ती करने की कोशिश कर रहे हो?" मोटूरा ने डपटकर पूछा।

तीन जवान लड़के आकर खड़े हो गये और किसी कारणवश मो और बीम को देख मुस्कराने लगे।

"इसमें हंसी की क्या बात है? मैं उसे इस कुत्ते के बारे में बत रहा हूं! एक हज़ार कुत्ते दो या तीन किलो मांस रोज़ खा जाते हैं—य हुआ दो या तीन टन मांस प्रतिदिन। समझे यह कुल कितना बनता है?"

एक लड़के ने उत्तर दिया:

"एक ऊंट तो तीन किलो नहीं खा सकेगा।"

सफ़ाई-कर्मी ने शांतिपूर्वक सुधार कर दिया:

"ऊंट मांस नहीं खाते।" सहसा उसने अपने झाड़ू की पकड़ को बदला और डामर की सड़क पर, ठीक मोटू के सामने, तेज़ी से झाड़ा। "अरे, हटिये, अलग हटिये! अब देखिये, मैंने क्या कहा था, जनाब ख़रदिमाग़ साहब!"

मोटूराम ग़ुस्से में थूकता हुआ आगे बढ़ गया। वे तीनों लड़के भी खिलखिलाते हुए अपनी राह चल दिये। सफ़ाई-कर्मी ने झाड़ना फ़ौरन बन्द कर दिया, बीम को एक थपकी दी और कुछ देर उसके पास खड़ा रहा।

"तू बस इन्तज़ार कर, वह ज़रूर आयेगा।" और वह फाटक की तरफ़ को चला गया।

बीम इस नोक-झोंक में बोले गये शब्दों में से "मांस" और "कुत्ता" शब्द ही नहीं समझा बल्कि जिस अन्दाज़ में वे बोले गये थे उसे भी समझ गया। और सबसे बड़ी बात यह है कि उसने हर चीज़ देखी और यह किसी भी प्रज्ञावान कुत्ते के लिए इस तथ्य को समझने के वास्ते काफ़ी था कि मोटूराम जीवन से असंतुष्ट था और सफ़ाई-कर्मी संतुष्ट, कि एक बुरे स्वभाव का व्यक्ति था और दूसरा अच्छे स्वभाव का। उस समय तक बीम यह जान गया था कि प्रातःकाल इधर-उधर आने-जानेवाले प्राणी सिर्फ़ अहातों के सफ़ाई-कर्मी और कुत्ते होते हैं और कि सफ़ाई-कर्मी कुत्तों से प्यार करते हैं। अहाते के कर्मी ने मोटे को जिस तरह से भगाया वह तरीक़ा बीम को अच्छा लगा। लेकिन इस छोटी घटना से बीम का कुछ भला होने के बावजूद इससे, कुल मिलाकर, उतनी देर तक बीम का केवल ध्यान ही बंटा। वह यह महसूस करने लगा था कि लोग भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं और वे अच्छे या बुरे हो सकते हैं। नेपथ्य से हम कह सकते हैं कि यह ज्ञान भी उपयोगी चीज़ है। लेकिन जो हो उस क्षण पर इसका बीम के लिए कोई महत्व नहीं था। वह आने-जानेवालों को देखने में बहुत ही व्यस्त था।

कुछ औरतों में से वासंती पौधे के फूलों की, उन श्वेत पुष्पों की तीव्र गंध आ रही थी जो गंध-संवेदन को कुंद कर देते हैं और बीम को गंधरहित बना देते हैं। ऐसे मौक़ों पर वह दूसरी तरफ़ को मुंह मोड़ लेता और सांस रोक देता। बहुत सी औरतों के होंठ ऐसे थे जो भेड़ियों के शिकार के दौरान प्रयुक्त झण्डियों से बहुत मिलते-जुलते थे। लगभग सभी औरतें कुछ लेकर चल रही थीं। बीम ने देखा था कि पुरुषों के मामले

में ऐसा कई बार नहीं होता। बहुधा ग्रौग्नों पर अधिक भार होना
...लेकिन इवान इवानिच प्रकट नहीं हुआ। ओ, मेरे दोस्त
कहां हो?

भीड़ का प्रवाह चलता रहा, चलता रहा। इस प्रवाह में बीम संताप धीरे-धीरे घटता गया और वह अपनी चौकसी की तरफ़ और अधिक ध्यान देने लगा। वह दूर तक निगाह दौड़ाता कि वही आ र है या नहीं। आज बीम यहीं पर रुका रहेगा, यहीं इन्तज़ार करेगा!

भारी, लटकन होंठों, ऊपर को चढ़ी हुई चपटी नाक तथा बाहर व उभरी हुई आंखों के नीचे गहरे गढ़ोंवाला एक आदमी उधर को आया

"शर्म की बात है, शर्म!" वह चिल्लाया (और लोग सुनने लिए खड़े हो गये)। इन्फ़्लुएंज़ा, हर तरफ़ महामारियां, पेट का कैंस और यहां, यह देखो क्या है?" उसने अपना हाथ झटककर बीम की तरफ़ इशारा किया, "मेहनतकशों के बीच–रोगों का घर!"

"सभी कुत्ते रोग नहीं फैलाते। देखो, कितना बढ़िया कुत्ता है, वह,' एक लड़की ने उसे उत्तर दिया।

नकचढ़े ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा और कुपित होकर मुंह फेर लिया।

"क्या जंगलीपन है यह! तुम महज़ जंगली हो, जंगली लड़की।"

और तब... काश, बीम एक मनुष्य होता! वहां काकी आ धमकी, वह "सोवियत नारी", वह निंदक। बीम पहले तो घबरा गया, फिर उसने अपनी पीठ के बाल खड़े कर लिये और प्रतिरक्षात्मक स्थिति अपना ली। और काकी बड़बड़ करती उस छोटी भीड़ की तरफ़ आयी जो बीम के चारों तरफ़ निरापद दूरी पर खड़ी थी।

"जंगलीपन तो है ही! इस कुत्ते ने मुझे काट दिया था, सचमुच काट दिया था!" और उसने भीड़ को अपना हाथ दिखाया।

ब्रीफ़केस हाथ में लिये एक युवक ने पूछा:

"कहां पर काटा था, ज़रा हमें दिखाइये।"

"तुम ख़ुद अभी पिल्ले हो!" काकी ने पलटकर जवाब दिया और अपने हाथ को झटककर अलग हटा लिया।

नकचढ़े को छोड़कर सब हंसने लगे।

"बड़ी अच्छी शिक्षा मिलती है तुझे तेरे संस्थान में, सांप का संपोला

कहीं का," वह उस विद्यार्थी पर बरस पड़ी। "तुम मेरी बात का यक़ीन नहीं करते, एक सोवियत नारी की बात का? तुम आगे की ज़िन्दगी में करोगे क्या? साथियो, हम कहां जा रहे हैं, या फिर सोवियत सत्ता जैसी कोई चीज़ है ही नहीं?"

वह युवक आवेशित हो गया:

"अगर तुम जानती कि तुम दूसरे लोगों को कैसी दिखायी देती हो तो तुम्हें इस अच्छे कुत्ते से ईर्ष्या होने लगती," उसने भड़ककर कहा और उस औरत की तरफ़ एक क़दम बढ़ाया, "तुम्हें लोगों का अपमान करने का क्या अधिकार है?"

यद्यपि बीम को कुछ भी पता न था कि इन शब्दों का क्या अर्थ है, फिर भी वह अधिक देर ज़ब्त नहीं कर सका। वह उस औरत की ओर कूदा, अपनी पूरी सामर्थ से ज़ोर लगाकर भौंका और आगे के लिए आत्म-नियंत्रण की गारंटी करने में असमर्थ अपने चारों पंजों पर आ खड़ा हुआ। वह प्रज्ञावान तो था, पर था तो कुत्ता ही।

काकी ने चीख़ना शुरू कर दिया।

"मिलीशिया! बचाओ! मिलीशिया!"

एक सीटी सुनायी पड़ी और एक आवाज़ आयी:

"कृपया चलिये बढ़िये, नागरिको चलिये!" वह मिलीशियामैन था। (भावेशित होने पर भी बीम ने अपनी दुम को सचमुच थोड़ा सा हिलाया)। "कौन चीख़ रहा था? आप थीं क्या?" उसने काकी से पूछा।

"यही थी," विद्यार्थी ने पुष्टि की।

नकचढ़े ने हस्तक्षेप किया:

"यह सब क्या है? आप क्या कर रहे हैं? उसने मिलीशियामैन से पटापट कहा, "कुत्ते! एक प्रादेशिक केन्द्र की मुख्य सड़क पर कुत्ते!"

"कुत्ते!" काकी चिल्लायी।

"और इस जैसे जंगली पिथेकैंथ्रोपस वानर," विद्यार्थी ने आवाज़ लगायी।

"उसने मेरी बेइज़्ज़ती की है," काकी ने लगभग सुबकते हुए चीत्कार किया।

"अच्छी बात है, अब भीड़ हटाओ! और तुम, तुम और तुम मेरे

साथ मिलीशिया चलो," उसने उस विद्यार्थी, काकी और नकचढ़े को न
इशारा करके कहा।

"और कुत्ता?" काकी तीखी आवाज़ में चीख़कर कर बोली, "कु
का क्या होगा?! तुम निर्दोष लोगों को मिलीशिया ले जाते हो और कु
को जाने देते हो..."

"मैं नहीं आऊंगा," विद्यार्थी ने तुनककर कहा।

तभी एक और मिलिशियामैन आ पहुंचा:

"यहां क्या हो रहा है?"

नीचे को झुकी टोप और टाई पहने हुए एक आदमी ने एक स्पष्टी
करण पेश किया, जो उसकी राय में स्पष्टत: तर्कसम्मत स्पष्टीकरण था

"यह जो विद्यार्थी है, वह मिलीशिया में नहीं जाना चाहता, उस
जो कहा जाता है उसे करता नहीं। वे दोनों चाहते हैं, वह नहीं चाहता
यह आज्ञा का उल्लंघन है, अवज्ञा है। यह ग़लत बात है। उससे जो कह
जाता है उसे करने के लिए विवश कीजिये। आप नहीं जानते कि आगे
क्या हो..." और अन्य लोगों की तरफ़ से अलग मुड़कर वह अपने अंगूठे
से अपने कान को इस तरह से कुरेदने में जुट गया मानो उसके छेद को
बड़ा करना चाहता हो। साफ़ ज़ाहिर था कि उसकी यह कान-कुरेदक
क्रिया अपने चिंतन की युक्तिसंगतता तथा अन्य सभी उपस्थित लोगों –
जिनमें मिलीशियामैन भी शामिल थे – के मुक़ाबले अपनी असंदिग्ध श्रेष्ठता
में उनके पूर्णविश्वास की एक अभिव्यक्ति थी।

मिलीशियामैनों ने एक दूसरे की तरफ़ देखा और उस विद्यार्थी को ले
चले, उसके पीछे नकचढ़ा और काकी थे। अन्य लोग इधर-उधर सरक
गये और कुत्ते की बात भूल गये। पर वह लड़की उसे नहीं भूली थी।
वह बीम के पास गयी, थपथपाया और फिर वह भी मिलीशियामैनों के
पीछे चल पड़ी। जैसा कि बीम ने निष्कर्ष निकाला, वह अपनी मर्ज़ी से
गयी। उसने उसे जाते देखा, एक मिनट हिचकिचाया, फिर उसके पीछे
दौड़ा और उसके साथ क़दम मिलाकर चलने लगा।

वे दोनों मिलीशिया को एक साथ चले।

"काले-कान, तुम किसके लिए इन्तज़ार कर रहे थे?" उसने क्षणभर
के लिए रुकते हुए बीम से पूछा।

बीम हताश होकर बैठ गया और उसने अपना सिर झुका लिया।

"ओहो, तुम्हारे तो पेट की जगह पर गढ़ा बना हुआ रे! मैं तुम्हारे लिए कुछ खाने को लाती हूं। सिर्फ़ एक मिनट, काले-कान मैं तुम्हें खाना खिलाऊंगी।"

बीम को "काला-कान" कहकर कई बार सम्बोधित किया गया था और उसका मालिक कभी-कभी कहा करता था: "हत भाग्य, काले-कान!" वह ऐसा बहुत पहले, बीम के उन दिनों में कहा करता था जब वह पिल्ला भर था। "मेरा दोस्त अब कहां है," बीम ने सोचा, और वह घोर विपन्न और दुखी फिर उसी लड़की के पीछे चल पड़ा।

वे दोनों साथ-साथ मिलीशिया पहुंचे। काकी चिल्ला रही थी और नकचढ़ा गरज रहा था; विद्यार्थी कुछ भी बोले बग़ैर सिर झुकाये खड़ा और एक मिलीशियामैन, जो नया था, डेस्क पर बैठा हुआ इन तीनों की तरफ़ सुस्पष्ट वैरभाव से देख रहा था।

लड़की ने कहा:

"मैं अपराधी को लायी हूं," और उसने बीम की तरफ़ इशारा किया, "वह एक प्यारा जानवर है। जो कुछ हुआ उसे मैंने शुरू से आख़िर तक ज्यों का त्यों देखा है। यह लड़का," उसने सिर हिलाकर विद्यार्थी थी तरफ़ इशारा किया, "बिल्कुल निर्दोष है।"

उसने कभी बीम की तरफ़, कभी उन तीनों में से किसी एक की तरफ़ संकेत करते हुए सारी कहानी शांतिपूर्वक सुनायी। उन्होंने उसकी बात में बाधा डालने की कोशिश की, लेकिन मिलीशियामैन ने काकी तथा नकचढ़े दोनों को सख़्त चेतावनी दी। स्पष्ट था कि लड़की के प्रति उसका व्यवहार अच्छा था। लड़की ने अपनी बात विनोदपूर्ण ढंग से समाप्त करते हुए कहा:

"क्यों काले-कान, ऐसा ही हुआ ना?" और मिलीशियामैन से उसने कहा, "मेरा नाम दाशा है।" और फिर बीम से, "मैं दाशा हूं, समझे?"

बीम ने अपने सारे हावभावों से यह दर्शाया कि वह उसकी बहुत ही इज़्ज़त करता है।

"अच्छा, तो काले-कान, इधर आओ, आ-ओ," मिलीशियामैन ने कहा।

बीम "इधर आओ" शब्दों को जानता, निश्चित रूप से जानता था, उसने आज्ञा का पालन किया।

मिलीशियामैन ने उसकी गर्दन में कोमल थपकी दी, उसके गले का

पट्टा पकड़ा, उसमें लगी धातु की चकत्ती का निरीक्षण किया और कुछ लिखा।

"नीचे!" उसने आदेश दिया।

बीम सही स्वीकृत विधि से लेट गया: पिछले पैर शरीर के मुड़े हुए और अगले बाहर को फैले हुए, सिर, बात करनेवाले से अ मिलाने के लिए, ऊपर को उठा हुआ और एक तरफ़ को किंचित हुआ।

मिलीशियामैन ने फ़ोन उठाया।

"शिकारी-संघ?"

"शिकार!" इस शब्द से बीम चौंक गया। उसका यहां क्या प्रयो हो सकता है?

"शिकारी-संघ? यह मिलीशिया है, क्या आप मेहरबानी करके नम २४ देख देंगे। यह सेटर जाति का कुत्ता है... आपके यहां उसका व ज़िक्र नहीं है? लेकिन यह असम्भव है। वह एक अच्छा कुत्ता सुप्रशिक्षित है... मुझे म्यूनिसिपल परिषद को फ़ोन करना चाहिए? ब अच्छा।" उसने टेलिफ़ोन का चोंगा नीचे रखा, फिर उठाया, प्रश्न और जवाब कागज़ में लिख लिये। वह ज़ोर से दोहराता हुआ बोल "एक सेटर... कुछ आनुवंशिक दोषवाला। शुद्ध नस्ल का प्रमाणपत्र न है। मालिक इवान इवानिच इवानोव, ४१, प्रोयेज़्जाया मार्ग। धन्यवाद। वह लड़की की तरफ़ मुड़ा। "बढ़िया बात हो गयी, दाशा। हमने पता ल लिया है कि इसका मालिक कौन है।"

बीम उछल पड़ा। उसने मिलीशियामैन के घुटने में अपनी नाक रगड़ दाशा का हाथ चाटा और उसकी आंखों की तरफ़ इस तरह से ता जैसे कि केवल होशियार, विश्वासी व स्नेहशील कुत्ते ही ताक सकते है आख़िर वह समझ गया था कि वे इवान इवानिच के बारे में, उसके दोस्त उसके बंधु, उसके भगवान के बारे में बातें कर रहे हैं – ऐसी परिस्थिति में मनुष्य भी ऐसा ही कहता। बीम भावावेश से कांपने लगा था।

मिलीशियामैन ने निहायत रुखाई से काकी और नकचढ़े से कहा

"आप लोग जा सकते हैं, अलविदा।"

नकचढ़े ने फिर अपने वाग्वाण छोड़े।

"ग्रौर बस? ऐसी घटना के बाद ग्राप व्यवस्था बनाये रखने की उम्मीद कैसे करते हैं? वे सब क़ाबू से बाहर हुए चले जा रहे हैं!"

"ग्रब चल पड़िये दादा जी, नमस्ते। जाइये ग्राराम फ़र्माइये।"

"मैं तुम्हारा दादा नहीं हूं। तुम्हें मुझसे पिता या बापू कहना चाहिए। ग्राजकल के लोग तो स्नेहपूर्ण सम्बोधन भी भूल गये हैं – ग्रधकचरे पिल्ले कहीं के। ग्रौर ग्राप इस तरह के लोगों को शिक्षा देना चाहते हैं," उसने ग्रपनी उंगली से उस विद्यार्थी की तरफ़ इशारा किया, "उनके सिर में थपकियां देकर पढ़ाना चाहते हैं। ग्रच्छी बात है, थोड़ा ग्रौर इन्तज़ार कीजिये! यह सब – भौं-भौं हो जायेगी ग्रौर वह तुम्हें खा जायेगा।" उसने कुत्ते की ग्रावाज़ में भौंकते हुए कहा।

बेशक, बीम भी इसके जवाब भौंका।

मिलीशियामैन हंसा:

"बाप जान, उसे देखिये। कुत्ता ग्रापकी बात समझता है ग्रौर ग्रापसे हमदर्दी रखता है।"

ग्रादमी ग्रौर कुत्ते के भौंकने की दोहरी ग्रावाज़ से घबराकर, काकी दरवाज़े की तरफ़ खिसक गयी ग्रौर चिल्लायी:

"वह मुझ पर भौंका था, मुझ पर! सोवियत नारी के लिए कोई सुरक्षा नहीं है, मिलीशिया में भी नहीं!"

ग्रन्त में वे चले गये।

"मेरा क्या होगा? क्या तुम मुझे नज़रबंद करनेवाले हो?" विद्यार्थी ने मुंह फुलाकर पूछा।

"देखो मेरे बच्चे, जब तुमसे कहा जाता है तो तुम्हें ग्रादेश का पालन करना चाहिए। यही नियम हैं।"

"क्या नियम हैं? ऐसा कुछ नहीं है। एक भले-चंगे ग्रादमी को पकड़ना ग्रौर चोर की तरह उसे ले ग्राना। उस ग्रौरत को पन्द्रह दिन की जेल होनी चाहिए, ग्रौर ग्राप... ग्राप ग्रपने को क़ानून का ग्रंग बतलाते हैं!" ग्रौर वह बाहर को चल पड़ा, पर चलते-चलते बीम का कान सहलाता गया।

बीम बिल्कुल चकरा गया। बुरे ग्रादमियों ने मिलीशियामैन को डांटा ग्रौर ग्रच्छे भी ऐसा ही कर गये। मिलीशियामैन यह सब सहन करता

गया और मन ही मन, सचमुच ही, हंसता भी रहा। यह समझना चतुर कुत्ते के लिए भी ज़रा मुश्किल ही था।

"क्या तुम उसे ख़ुद घर ले जाओगी?" मिल्नीशियामैन ने द से पूछा।

"हां। घर, काले-कान! हम घ-र जा रहे हैं।"

अब बीम इधर-उधर नज़र डालता, दाशा के लिए रुकना-ठहरत रास्ता दिखाता चला। वह "घर" शब्द अच्छी तरह से समझता था अ उसे वहां ले जा रहा था। यह कोई नहीं समझा कि वह स्वयं रास खोज सकता था, उन्होंने सोचा कि वह इतना होशियार नहीं होगा; केव दाशा, बड़ी-बड़ी विचारशील, और मैत्रीपूर्ण आंखोंवाली दाशा ही इस ब को समझ सकी थी। बीम को शुरू से ही उस पर विश्वास हो गया थ तो वह उसे सीधे अपने घर के दरवाज़े पर ले आया। उसने घंटी बजा पर कोई उत्तर नहीं मिला। उसने फिर घंटी बजायी, पर इस बार पड़ो के दरवाज़े की। स्तेपानोव्ना ने द्वार खोला और बीम ने उसकी अगवा की; आज वह, स्पष्टतः पहले से अधिक ख़ुश नज़र आ रहा था। व कह रहा था: "मैं दाशा को लाया हूं, दाशा को लाया हूं।" (बी दाशा और स्तेपानोव्ना की ओर बारी-बारी से जो देखता जा रहा उसका इसके सिवा और कोई स्पष्टीकरण नहीं हो सकता)।

औरतों ने आहिस्ता-आहिस्ता बातें कीं और अपनी बातचीत में "इवा इवानिच" और "टुकड़ा" का ज़िक्र किया। फिर स्तेपानोव्ना ने दरवाज़ खोला। बीम ने दाशा को भीतर आने का निमंत्रण दिया — उसे क्षणभ के लिए भी अपनी आंखों से ओझल नहीं होने दिया। उसने सबसे पह उसके खाने के बर्तन को उठाया और उसमें पड़े दलिये को सूंघा और कहा

"यह ख़राब हो गया है।" उसने दलिये को खुरचकर निकाला औ उसे एक बाल्टी में उलट दिया, फिर बर्तन को धोकर फ़र्श पर रख दिया "मैं एक मिनट में लौटकर आती हूं। काले-कान तुम इन्तज़ार करे।"

"उसका नाम बीम है।" स्तेपानोव्ना ने उसकी ग़लती सुधारी।

"इन्तज़ार करो, बीम," दाशा ने कहा और बाहर निकल गयी स्तेपानोव्ना एक कुर्सी पर बैठ गयी। बीम उसके सामने बैठ गया, लेकि उसकी नज़र दरवाज़े पर लगी रही।

"तुम चालाक कुत्ते हो," स्तेपानोव्ना ने घोषणा की। यहां तुम अप

भरोसे छोड़ दिये गये हो, लेकिन तुम जानते हो कि तुम्हारे लिए कौन अच्छा है और कौन नहीं। मैं भी ऐसी ही हूं, बीम बेटे... अपने बुढ़ापे में मैं अपनी पोती के साथ रह रही हूं। उसके माता-पिता ने एक लड़की को जन्म दिया था, फिर वे काम करने साइबेरिया चल दिये। इसलिए उसे मैंने पाला-पोसा। और मेरी नन्ही लड़की मैं जानती हूं वह अच्छी है, वह पूरी हार्दिकता से मेरे पास आती है।"

स्तेपानोव्ना वहां बैठी-बैठी बीम से बातचीत करती अपने मन का बोझ उतार रही थी। जब कोई अन्य पास नहीं होता तो लोग अक्सर कुत्तों से या अपने प्यारे घोड़े से या गाय से सचमुच बातें करते हैं। समझदार कुत्ते किसी एक व्यक्ति के मन में निहित दुख को तुरन्त समझ जाते हैं और उनके साथ हमेशा हमदर्दी दिखलाते हैं। यहां यह पारस्परिकता का मामला था। साफ़ ज़ाहिर था कि स्तेपानोव्ना उससे शिकायत कर रही थी और बीम इस बात पर शोक मना रहा था कि सफ़ेद कोट पहने हुए वे लोग उसके दोस्त को उठा ले गये थे। उस दिन के सारे संकटों ने बीम का ध्यान अपने दर्द से थोड़ा हटा दिया था, अब वह दर्द फिर आया और द्विगुणित होकर लौटा। स्तेपानोव्ना ने जो कुछ कहा उसमें उसने दो शब्दों, "अच्छा" और "मेरे पास आती", जो उदासी भरे स्नेह के साथ बोले गये थे, को समझ लिया था। तो वह उठा और स्तेपानोव्ना के पास जाकर उसने अपना सिर उसकी गोद में रख दिया और स्तेपानोव्ना ने अपना रूमाल अपनी आंखों पर रख लिया।

दाशा कागज में लिपटा एक पार्सल लेकर आयी। बीम उसके पास गया और उसने अपना एक पंजा उसके जूते पर रख दिया और दूसरे पंजे पर अपना सिर रख दिया—यह "धन्यवाद" कहने का उसका अपना तरीक़ा था।

दाशा ने अपने पाकेट से मांस की दो टिकियां और दो आलू निकाले और उन्हें बीम के बर्तन में डाल दिया।

"खाओ!"

यद्यपि बीम ने दो दिन से एक भी दाना नहीं खाया था, फिर भी वह खाने के लिए तैयार नहीं हुआ। दाशा ने उसकी गर्दन के पीछे, लम्बे-बालों को कोमलता से सहलाया और स्नेहपूर्वक कहा:

"आओ, बेटे आओ, खाना खा लो।"

दाशा की आवाज़ मन्द, मृदु और शांत थी, उसके हाथों में सहृदय की ऊष्मा थी और वे हाथ उसे दुलरा रहे थे। लेकिन बीम ने मुंह प लिया। दाशा ने बीम का मुंह खोला और मांस की एक टिकिया उस रख दी। बीम उसे मुंह में रखते हुए दाशा की तरफ़ ताज्जुब से देख खड़ा रहा और फिर न आने कैसे वह टिकिया ख़ुद ब ख़ुद उसके पे में चली गयी। दूसरी भी इसी तरह अन्दर गयी और आलू भी ऐसे ह उदरस्थ हो गये।

"उसे हाथ से खिलाना होगा," दाशा ने स्तेपानोव्ना से कहा "वह अपने मालिक के लिए व्याकुल हो रहा है, इसलिए वह खान नहीं खाता है।"

"क़तई नहीं," स्तेपानोव्ना ने ज़ोर से कहा। "कुत्तों को कुछ न कु खाने के लिए मिल ही जाती है। तुम देख लो, कितने कुत्ते इधर-उध भटक रहे हैं, वे सभी किसी न किसी तरह खाना पा ही जाते हैं।"

"हम क्या करें?" दाशा ने बीम से पूछा। "तुम्हारा बहुत बुर हाल होगा।"

"नहीं, ऐसा नहीं होगा," स्तेपानोव्ना ने दृढ़ता से कहा। "इस जैसे होशियार कुत्ते को कोई नुक़सान नहीं होगा। मैं उसके लिए दिन मे एक बार खाना पका दूंगी। आख़िर वह एक जीवित प्राणी है।"

दाशा ने एक क्षण विचार किया, फिर बीम के गले का पट्टा उतार लिया।

"जब तक मैं इस पट्टे को लेकर वापस न आऊं तब तक उसे बाहर मत जाने देना। मैं कल सुबह लगभग दस बजे आऊंगी... लेकिन इवान इवानिच कहां है?" उसने स्तेपानोव्ना से पूछा।

बीम के कान खड़े हो गये।

"वे उसे विमान द्वारा मास्को ले गये हैं। यह हृदय का कठिन आपरेशन होगा, बम के खोल का टुकड़ा हृदय के बिल्कुल पास है।"

बीम का सारा ध्यान इसी बात पर केन्द्रित हो गया। फिर वही शब्द "टुकड़ा"। इसमें से तीव्र व्यथा की ध्वनि आती है। लेकिन अगर वे इवान इवानिच के बारे में बातें कर रहे हैं तो वह कहीं न कहीं अवश्य होगा। इसलिए बीम को उसे ढूंढ़ना ही होगा। खोजना होगा!

दाशा चली गयी और उसके साथ ही स्तेपानोव्ना भी। अब बीम को

एक बार फिर, अकेले ही, रात गुज़ारनी थी। उसे एक झपकी आयी, लेकिन एक बार में कुछ ही मिनटों के लिए आंखें लगतीं और उसे हर बार इवान इवानिच के सपने आते – कभी घर पर, कभी बाहर शिकार पर। वह चौंक कर जाग जाता, कमरे में इधर-उधर घूमता, चारों कोनों में सूंघता, उस निस्तब्धता में कुछ सुनने की कोशिश करता और फिर दरवाज़े के पास लेट जाता। उसे उन लोगों ने पतली लम्बी छड़ी से जहां पर मारा था वहां पर नील पड़ गयी थी और अभी भी दर्द कर रही थी, लेकिन यह दर्द कुछ खो जाने की, कुछ अज्ञात की उस पीड़ा के मुक़ाबले कुछ भी नहीं था।

इंतज़ार करो, रुको। अपने दांत पीस लो और इन्तज़ार करो।

सातवां अध्याय

खोज निरन्तर जारी है

उस दिन सुबह बीम लगभग रो ही पड़ा। सूरज खिड़की से ऊपर चढ़ आया था, पर तब भी वहां कोई नहीं पहुंचा था। उसने सीढ़ियों से ऊपर-नीचे जाते लोगों के पैरों की आहट पर कान लगा रखे थे। वे सभी परिचित आहटें थीं, पर उनमें उसके ही पैरों की आहट नहीं थी। अंत में उसने दाशा के जूतों की आवाज़ को स्पष्ट पहचाना। वह आ रही है! बीम कुछ इस तरह से भौंका जिसका मानवीय भाषा में अर्थ था: "मैं तुम्हारी आहट सुन सकता हूं, दाशा।"

"सिर्फ़ एक मिनट," उसने जवाब दिया और स्तेपानोव्ना की घंटी बजायी।

वे दोनों बीम को देखने आयीं। बीम ने दोनों का स्वागत किया और फिर दरवाज़े की तरफ़ भागा और वहां खड़ा होकर उन महिलाओं की तरफ़ देखता हुआ इस प्रकार दुम हिलाने लगा मानो नम्र निवेदन कर रहा हो: "कृपया, इसे खोल दीजिये, मुझे खोज करने जाना है।"

दाशा ने उसका पट्टा उसे पहना दिया। अब उस पट्टे में धातु की एक चौड़ी चकती लगी थी जिसमें निम्नांकित शब्द खुदे थे: "उसका नाम

बीम है। वह अपने मालिक की प्रतीक्षा कर रहा है। वह अपने घर अच्छी तरह से जानता है और फ़्लैट में अकेले रहता है। कृपया, उस दया कीजियेगा।" दाशा ने यह इबारत स्तेपानोव्ना को पढ़कर सुनायी

"तुम कितनी अच्छी हो!" स्तेपानोव्ना ने हाथ हिलाते हुए संत के साथ कहा। "तुम्हें कुत्तों से विशेष लगाव होगा।"

दाशा ने बीम को थपकियां दीं और एक अनपेक्षित उत्तर दिया

"मेरे पति मुझे छोड़कर चले गये हैं और मेरा नन्हा बेटा मर ग है... अब मैं तीस साल की हूं। मैं अकेली रहती आ रही हूं और जल ही यहां से चली जाऊंगी।"

"अच्छा तो तुम अकेली रहती हो। ओहो, कैसे दुख की बात है तुम इतनी अच्छी लड़की हो।" स्तेपानोव्ना ने हमदर्दी प्रकट करना शु कर दिया था, लेकिन दाशा ने उसकी बात काट दी:

"मुझे जाना चाहिए," दरवाज़े पर पहुंचकर उसने आगे कहा, "बी को अभी फ़ौरन बाहर मत जाने देना। मैं नहीं चाहती कि वह मेरे पीछे पीछे आये।"

बीम ने दाशा के साथ ही दरवाज़े से धंसते हुए निकलने की कोशिश की, लेकिन उसने उसे वापस धकेल दिया और स्तेपानोव्ना के साथ बाहर निकल गयी।

एक घंटे बाद बीम ने किकियाना शुरू कर दिया और फिर वह कुक्कुरी आर्तनाद करने लगा और ऊंची तथा लम्बी आवाज में क्रंदन करता चला गया। जब लोग यह कहते हैं कि "मैं कुत्ते की तरह हूंक लगाकर रोना चाहता हूं" तो उनका मतलब जिस क्रंदन से होता है, बीम का आर्तनाद ठीक वैसा ही था।

स्तेपानोव्ना ने उसे बाहर जाने दिया (तब तक दाशा बहुत दूर निकल गयी थी):

"ठीक है, तुम जाओ। आज शाम मैं तुम्हारे लिए खाना तैयार करूंगी।"

बीम ने उसे एक नज़र देखा तक नहीं। वह हवा की तरह सीढ़ियों से नीचे उतरा और बाहर अहाते में जा पहुंचा। वहां उसने आखेट की खोज की पहली टोह लगायी और फिर दौड़ता हुआ सड़क में पहुंच गया, क्षणभर कुछ सोचता सा खड़ा रहा और फिर गंधों को पंक्ति दर पंक्ति पढ़ने

लगा; इस प्रक्रिया में उसने अपनी बिरादरी के अन्य सदस्यों द्वारा छोड़े गये उन हस्ताक्षरों की अवहेलना कर दी जिनका सम्मान हर स्वाभिमानी कुत्ते को करना ही होता है।

दिन बीत गया और बीम इवान इवानिच का कोई चिन्ह नहीं खोज पाया। शाम ढलते-ढलते वह भटकता हुआ, अपने को आश्वस्त करने के लिए एक नये पार्क में जा पहुंचा। इस पार्क को शहर के नये भाग में अभी लगाया ही गया था। वहां चार लड़के गेंद से खेल रहे थे। बीम कुछ देर के लिए वहां बैठ गया और जहां तक उसकी नाक के लिए सम्भव था आसपास की हवा की जांच करने लगा। फिर जब वह वहां से उठकर जाने ही वाला था तो उनमें से एक लड़का, जो बारह बरस का था, अन्य से अलग हटकर कौतूहल के साथ बीम का निरीक्षण करने लगा।

"तुम कहां के हो?" लड़के ने इस प्रकार पूछा मानो वह उसके प्रश्न का उत्तर दे सकता हो।

बीम ने दुम हिलाकर उसे सलाम तो किया, लेकिन अपने सिर को पहले एक पार्श्व की तरफ़ फिर दूसरे पार्श्व को किया, मगर वह किंचित उदास सा था और साथ ही एक प्रश्न भी पूछ लिया: "तुम किस प्रकार के व्यक्ति हो?"

लड़का समझ गया कि कुत्ते को अभी उस पर यक़ीन नहीं आया है, इसलिए वह साहस करके आगे आया और उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया:

"हलो, काले-कान।"

जब बीम ने अपना पंजा उठाया तो लड़का चिल्लाया:

"ओ, लड़को! इधर आओ!"

अन्य लड़के दौड़ते हुए आये पर सुरक्षित दूरी पर खड़े रहे।

"देखो, उसकी आंखें कैसी बुद्धिमत्तापूर्ण हैं!" पहले लड़के ने अपने उद्गार प्रकट किये।

"शायद यह प्रशिक्षित कुत्ता है?" एक हृष्ट-पुष्ट मोटे गुलगुले लड़के ने विवेकपूर्ण सुझाव पेश किया। "तोलिक, उससे कुछ कहो। देखो वह समझता है कि नहीं।"

अन्य से कुछ अधिक उम्रवाले तीसरे लड़के ने आधिकारिक लहजे में कहा:

"हां, हां, क्यों नहीं, उसके पट्टे पर लगे बिल्ले को देखो।"

"नहीं, वह प्रशिक्षित नहीं है," एक दुबले सींकिया लड़के ने इमका उत्तर दिया, "अगर वह प्रशिक्षित कुत्ता होता तो इतना दुर्बल और विपन्न न होता।"

इवान इवानिच के चले जाने के बाद बीम सचमुच ही बेहद दुर्बल हो गया था और उसकी पहलेवाली सजीली रूपाकृति नष्ट हो गयी थी। उसका पेट गढ़े में धंसा था, बालों में कंघी न होने से पैरों के बाल आपस चिपक गये थे, उसकी पीठ, जो कभी साफ़-सुथरी और चमकीली हुई करती थी, अब धूमिल हो गयी थी। विपन्न और भूखा होने पर कोई भी कुत्ता इससे बेहतर नहीं दिखायी देता।

तोलिक ने बीम के मस्तक को छुआ और बीम ने उन सबका सर्वेक्षण किया और सभी पर पूर्ण विश्वास का इज़हार किया। बदले में उन सबने उसे थपथपाया और उसने कोई एतराज़ नहीं किया। उनके सम्बन्ध शीघ्र अच्छे हो गये, पारस्परिक समझ के ऐसे वातावरण में घनिष्ठ मैत्री कभी दूर नहीं होती। तोलिक ने बीम के पट्टे पर अंकित इबारत पढ़ी और तुरन्त चिल्लाया :

"उसका नाम बीम है! वह एक फ़्लैट में बिल्कुल अकेला रहता है! वह भूखा है। आओ, हम सब घर जायें। हर कोई उसके लिए खाने की कोई चीज़ लेकर आये!"

बीम के साथ तोलिक रह गया और बाक़ी सभी बच्चे अपने-अपने घरों को दौड़ गये। तोलिक एक बेंच पर बैठ गया। बीम उसके क़दमों पर लेट गया और उसने एक गहरी सांस ली।

"दुर्दिन बिता रहे हो, बीम?" तोलिक ने कुत्ते के सिर को सहलाते हुए कहा। "तुम्हारा मालिक कहां है?"

बीम ने अपनी नाक तोलिक के जूते पर लगायी और वहीं लेटा रहा। इसी दौरान अन्य लड़के, एक के बाद एक, दौड़ते हुए आये। गोल-मटोल गुल्लू लड़का एक गुझिया लेकर आया। अधिक उम्रवाला सौसेज का टुकड़ा और पतला सींकिया लड़का दो मालपुए। उन्होंने यह सब चीज़ें बीम के सामने रख दीं, लेकिन उसने उन्हें सूंघा तक नहीं।

"वह बीमार है," सींकिया बोला, "संक्रामक भी हो सकता है," वह पीछे हट गया।

गुल्लू ने अपने पैंट से न जाने क्यों हाथ पोंछे और वह भी कुछ क़दम पीछे हट गया। अधिक उम्रवाले ने सौसेज से बीम की नाक रगड़ी और विश्वास के साथ ऐलान किया:

"वह इसे नहीं खायेगा, उसे कुछ भी नहीं चाहिए।"

गुल्लू ने किंचित आशंका के साथ कहा: "मां ने कहा है कि सभी कुत्ते संक्रामक होते हैं। और यह तो असली बीमार है।"

"अच्छी बात है, तो भाग जाओ," तोलिक ने कुढ़कर कहा, "यहां से निकल जाओ... 'संक्रामक'... कुत्तों को पकड़नेवाले हर बीमार कुत्ते को पकड़कर ले जाते हैं, लेकिन ज़रा यह नाम-पट्ट देखो जो इसके गले में है!"

यह तर्क प्रभावशाली रहा और लड़के फिर बीम के गिर्द जमा हो गये। तोलिक ने बीम के पट्टे को थोड़ा ऊपर खींचा। बीम बैठ गया। लड़के ने उसके होंठ के मुलायम हिस्से को ऊपर को उलटा और उस किंचित खुले भाग को खोज निकाला जहां पर दांत समाप्त होते हैं, फिर उसने सौसेज का एक टुकड़ा तोड़ा और उसे बीम के मुंह में ठूंस दिया। बीम ने उसे निगल लिया। इसके बाद दूसरा टुकड़ा आया, बीम उसे भी निगल गया। इस तरह उन्होंने सबकी आम स्वीकृति के साथ सौसेज समाप्त कर दी। वे बड़े ही ग़ौर से उसे देख रहे थे, जब-जब कुत्ता निगलता था तब-तब वह गोल-मटोल गुल्लू भी सचमुच ही निगलने की क्रिया करता था, जबकि उसके मुंह में निगलने के लिए कुछ नहीं था, इस प्रकार वह बीम की मदद कर रहा था। गुझिया को इस तरह से इस्तेमाल नहीं किया जा सका, क्योंकि उसका चूरा हो गया। लेकिन अन्त में बीम ने गुझिया ख़ुद ही उठा ली, लेट गया और उसे अपने पंजों के बीच में रखा, थोड़ी देर उसे देखा, फिर खा लिया। ज़ाहिर था कि उसने यह काम तोलिक के प्रति सम्मानवश किया। लड़के के हाथों में इतना दुलार, आंखों में इतनी मृदुता व कुछ-कुछ उदासी, तथा बीम के लिए उसके मन में इतना दुख था कि कुत्ता उसकी भावात्मक ऊष्मा का प्रतिरोध नहीं कर सका। बच्चों के प्रति बीम का रवैया हमेशा विशिष्ट रहा था और अब उसे पक्का यक़ीन हो गया था कि नन्हे लोग सभी अच्छे होते हैं और बड़ों में विविधता होती है, वे या तो अच्छे होते हैं या बुरे। यह सच है कि उसे इस बात की ज़रा भी जानकारी नहीं थी कि नन्हे लोग बाद में बड़े हो जाते हैं और उनमें से कुछ भले और कुछ बुरे बन जाते हैं। लेकिन इस बात का

पूर्वानुमान लगाना कुत्ते का काम नहीं है कि भले-भले नन्हे लोग कभी कभी काकी और नकचढ़े की तरह के बुरे बड़े लोगों में किस प्रकार परिवर्तित हो जाते हैं। उसने गुझिया को महज़ तोलिक की खातिर खा लिया और सिर्फ़ इसी कारण से खाया। इससे उसे अच्छी अनुभूति हुई, क्योंकि इसके बाद उसने मालपुए खाने से इनकार नहीं किया। इसके अलावा सप्ताह की सम्पूर्ण अवधि में यह दूसरी बार थी जब उसने खाया था।

बीम के भोजनोपरांत बोलनेवाला पहला व्यक्ति तोलिक था :

"आओ, पता लगायें कि यह क्या-क्या कर सकता है।"

सींकिया बोला :

"जब सर्कस में वे उन्हें कुदाना चाहते हैं तो 'ऊपर' कहते हैं।"

बीम उठा और ध्यान से उस लड़के की तरफ़ देखने लगा, मानो पूछ रहा हो : "मैं किस चीज़ के 'ऊपर' से होकर जाऊं?"

उनमें से दो लड़कों ने एक पेटी के दो सिरे पकड़ लिये और तोलिक ने आदेश दिया :

"बीम! ऊपर!"

बीम इस सामान्य सी बाधा को आसानी से पार कर गया। सभी प्रफुल्लित हो गये। गुल्लू ने स्पष्ट आदेश दिया :

"नीचे!"

बीम नीचे लेट गया (तुम्हारे लिए? हां, आपका काम करना प्रसन्नता की बात है!)।

"बैठो!" तोलिक ने निवेदन किया (बीम बैठ गया)। "ले आओ!" और उसने अपनी टोपी फेंकी।

बीम टोपी लेकर आ गया। तोलिक मारे ख़ुशी के उससे लिपट गया और बीम ने प्रशंसा की इस अभिव्यक्ति के उत्तर में सीधे, उसके गाल को चाट लिया।

इसमें कोई शक नहीं कि इन नन्हे बच्चों की संगति में बीम को अपना जीवन बहुत सुखी जान पड़ा। लेकिन तभी, हाथ में छड़ी लिये, एक आदमी आया। वह ऐसे गुपचुप आया कि लड़कों को उसकी उपस्थिति का पता तभी लगा जब उसने एक प्रश्न पूछा :

"यह किसका कुत्ता है?"

वह स्लेटी रंग तथा पतले किनारेवाले अपने टोप, स्लेटी बो-टाइ,

स्लेटी कोट, स्लेटी-सफ़ेद पैंट, छोटी सी स्लेटी दाढ़ी ग्रौर ग्रपने चश्मे सहित काफ़ी महत्वपूर्ण सा दिखायी दे रहा था। ग्रपनी नज़रें बीम पर गड़ाये उसने फिर पूछा :

"हां, तो बच्चो, किसका कुत्ता है क्या ?"

ग्रधिक उम्रवाले लड़के तथा तोलिक एक साथ बोले।

"किसी का नहीं," एक ने मासूमियत से कहा।

"मेरा," तोलिक ने सावधानी से कहा। "इस समय यह मेरा है।"

तोलिक ने इस स्लेटिये ग्रादमी को कई बार देखा था। वह उस पार्क में ग्रकेले घूमने का ग्रादी था। एक दिन उसने उसे एक कुत्ते को घसीटते हुए देखा था, कुत्ता बार-बार पीछे को हट रहा ग्रौर उसके साथ नहीं जाना चाहता था। एक ग्रन्य ग्रवसर पर वह लड़कों के क़रीब ग्राया था ग्रौर बड़बड़ाते हुए कहने लगा था कि वे पहले लड़कों की तरह खेल ही नहीं सकते, ग्रौर कि उतने विनीत नहीं रहे, कि उनका लालन-पालन ठीक से नहीं होता ग्रौर कि काफ़ी समय पहले, गृहयुद्ध में, लोग उनकी ख़ातिर, उन सड़ियल गंदे बच्चों की ख़ातिर लड़े थे, ग्रौर कि वे इसका महत्व नहीं समझते ग्रौर कुछ काम नहीं कर सकते ग्रौर कि उन्हें शर्मिंदा होना चाहिए।

उस समय तोलिक सिर्फ़ नौ वर्ष का था। ग्रब वह बाहर वर्ष का होने जा रहा था। पर उसे इस ग्रादमी की याद थी। तोलिक बीम को बांहों में समेटे बैठा था ग्रौर कह रहा था, "यह मेरा है।"

उस ग्रादमी ने तोलिक की तरफ़ इशारा करते हुए पूछा : "हूं, कौन-सी बात सही है : किसी का नहीं या उसका ?"

"उसके पट्टे में एक बिल्ला लगा है," गुल्लू, दुर्भाग्यवश, कह बैठा।

स्लेटिया बीम के पास ग्राया, उसके कान में थपकी दी ग्रौर उसके पट्टे में ग्रंकित इबारत को पढ़ा।

बीम को बिल्कुल स्पष्टता से पता चल गया कि उस व्यक्ति से कुत्तों की गंध ग्रा रही थी। वह हलकी गंध थी, शायद कई दिन पुरानी, लेकिन थी जरूर। उसने निगाह उठाकर उसकी ग्रांखों में झांका ग्रौर झांकते ही उस पर शक करने लगा — उसकी ग्रावाज़, उसकी ग्रांखों ग्रौर उसकी गंध, सभी पर उसे ग्रविश्वास होने लगा। किसी विशेष कारण के बिना किसी भी ग्रादमी में इतने कुत्तों की हलकी-हलकी ग्रौर पुरानी-पुरानी सी गंध

नहीं हो सकती। बीम सिकुड़कर तोलिक से सट गया और उस स्ले
आदमी से अलग हटने की कोशिश करने लगा। परन्तु वह आदमी उ
छोड़ता ही न था।

"तुम्हें झूठ नहीं बोलनी चाहिए, लड़के," उसने तोलिक को ताड़
देते हुए कहा। "मैं इस पट्टे को देखकर समझ गया हूं कि यह कुत्त
तुम्हारा नहीं है। छोकरे, तुम्हें अपने आप पर शर्म आनी चाहिए। क्य
तुम्हारे मां-बाप ने तुम्हें यही सिखाया—झूठ बोलना? बड़े होने पर तु
बनोगे क्या? च-च-च-च!" उसने अपनी जेब से एक ज़ंजीर निकाली औ
उसे बीम के पट्टे में फंसा दिया।

तोलिक ने ज़ंजीर पकड़ ली और चिल्लाया:

"ख़बरदार, उसे छूना मत, मैं यह नहीं होने दूंगा!"

स्लेटिये आदमी ने लड़के के हाथ को झटककर परे कर दिया।

"यह मेरा कर्तव्य है कि कुत्ते को उसके समुचित स्थान पर पहुंचाऊं।
हो सकता है, मुझे रिपोर्ट पेश करनी पड़े (हां, उसने सचमुच ही 'रिपोर्ट'
शब्द का प्रयोग किया था)। हो सकता है कि उसका मालिक ज़रूरत से
ज़्यादा शराब पी गया हो (उसने पहले वाक्यांश पर अपेक्षाकृत नाटकीय
ढंग से स्वराघात किया)। यदि ऐसा है तो कुत्ते को उसके पास से हटाना
होगा। मैं जिसका समर्थक हूं वह है ईमानदारी, न्याय प्रियता और
मानवीयता। मैं उसके घर का पता लगाने और जांच करने जा रहा हूं।"

"उसके पट्टे में जो लिखा है, आप उस पर विश्वास तो नहीं करते?"
तोलिक ने शिकायत के अंदाज़ में लगभग रोते हुए पूछा।

"मैं करता हूं, लड़के। पूरा विश्वास करता हूं। लेकिन..." उसने
अपनी एक उंगली उठायी और उपदेशात्मक स्वर में, लगभग गम्भीरता
से कहा, "विश्वास करो, लेकिन जांच करके पक्का भी कर लो!" और
वह बीम को ले चला।

बीम पीछे को रुका और मुड़कर तोलिक की ओर देखने लगा। उसने
देखा कि उसकी आंखों से निराशा के आंसुओं की धार फूट चली है। पर
अंत में वह अपनी दुम दबाये और ज़मीन की तरफ़ ताकता हुआ उस स्लेटी
आदमी के पीछे चला। उसका यह तरीका उससे नितांत भिन्न था जैसा
कि वह पहले हुआ करता था। उसकी सम्पूर्ण मुद्रा को देखकर ऐसा लगता
मानो वह कह रहा हो कि "यह है वह जीवन, जो कुत्तों को अपना

मालिक गंवा देने पर बिताना पड़ता है।" उसे वस्तुत: केवल इतना करने की ज़रूरत थी कि उस आदमी के पैर को काटना और भाग जाना। लेकिन बीम एक बौद्धिक कुत्ता था: मार्ग दिखाइये और मैं अनुसरण करूंगा।

वे एक ऐसी सड़क से होकर गये जिसके दोनों ओर नये मकानों की क़तारें थी। वे सब स्लेटी रंग के थे और सबके सब एक दूसरे से इतने अधिक मिलते-जुलते थे कि बीम भी उनके बीच राह भटक सकता था। एक जैसे नज़र आनेवाले इस मकानों में से एक में वे दूसरी मंज़िल पर चढ़े। बीम ने देखा कि उनके सारे दरवाज़े भी एक से हैं।

स्लेटी कपड़े पहने एक औरत ने द्वार खोला:

"यह क्या, एक और कुत्ता? हे भगवान, किस लिए?"

"बक-बक न करो!" स्लेटिये ने सख़्त आवाज़ में उसकी बात काटते हुए कहा। उसने बीम का पट्टा उतारा और उस औरत को दिखलाकर बोला, "यह देखो।" औरत ने अपना चश्मा पहना और पट्टे को देखने लगी। इस दौरान वह आदमी आगे बोलता गया, "तुम इस बात को ज़रा भी नहीं समझती, ज़रा भी, कि इस सारे जनतंत्र में मैं ही एक अकेला ऐसा संग्रहकर्ता हूं जो कुत्तों के पट्टों में लगे बिल्लों को जमा करता है। और यह—यह असली चीज़ है! मेरा पांच सौवां!"

बीम समझ नहीं सका। एक भी परिचित शब्द और मुद्रा नहीं।

वह स्लेटी आदमी पट्टे को हाथ में लिए गलियारे से कमरे के अन्दर प्रविष्ट हुआ और उसने बीम को अन्दर बुलाया:

"**बीम, इधर आओ!**"

बीम ने इस पर कुछ क्षण तक विचार किया, फिर सावधानी से उसके पीछे चला गया। उसने चारों तरफ़ देखा और फिर उस आदमी से अलग द्वार के पास बैठ गया। कमरे की एक साफ़ दीवार पर मख़मल से ढके तख़्ते लटके थे। उनमें कुत्तों के पट्टों पर लगनेवाले हर तरह के चिन्ह थे—बिल्ले, चकतियां, स्लेटी-भूरे और सुनहले पदक, कुत्तों को बांधने की कई सुन्दर ज़ंजीरें, पट्टे व कुत्तों के अन्यान्य उपकरण—एक नाइलोन की गला घोंटने की डोरी भी रखी थी, ज़ाहिर था बीम को इस डोरी के मक़सद का कुछ पता न था; यह तो मनुष्यों के लिए भी एक रहस्य होता कि वह आदमी इस डोरी को कहां से पा गया, लेकिन बीम के लिए वह रस्सी का एक सामान्य टुकड़ा मात्र था।

बीम ने देखा कि उस आदमी ने एक जम्बूरे की मदद से उसके
के बिल्ले को उखाड़ा और उसे मख़मल से ढके एक तख़्ते के बीचोंबी
में लगा दिया, उसने नम्बर की चकती को भी इसी तरह उखाड़कर संभ
लिया। इसके बाद उसने बीम के पट्टे को वापस उसके गले में पह
दिया और कहा :

बीम का मालिक भी ठीक यही शब्द कहा करता था, लेकिन इ
समय बीम ने उन पर यक़ीन नहीं किया। वह बाहर गलियारे में चर
गया, मुख्य द्वार के सम्मुख यह कहता हुआ खड़ा हो गया : "मुझे बाह
जाने दो! यहां मेरे करने को कुछ नहीं है।"

"अरे, उसे जाने दो," उस औरत ने कहा, "तुम उसे यहां कि
लिए लाये हो? तुम उसका पट्टा वहीं सड़क पर निकाल सकते थे।"

"नहीं, मैं नहीं निकाल सकता था। वहां पर कुछ लड़के थे ज
मुसीबत खड़ी किये हुए थे। और मैं उसे इस समय भी बाहर नहीं निका
सकता। अगर वे देखेंगे कि उसके नाम का बिल्ला ग़ायब है तो वे इसक
रिपोर्ट कर सकते हैं... इसलिए बेहतर है कि वह सुबह होने तक यह
रहे। नीचे!" उसने बीम को आदेश दिया।

बीम दरवाज़े के पास लेट गया; वह कुछ और कर भी क्या सकत
था? इस बार भी उसे सिर्फ़ इतना करने की ज़रूरत थी कि वह अपन
पूरी ताक़त से भौंकता, फ़्लैट में इधर-उधर भागता और स्लेटिये आदम
पर हमला कर देता—सारा मामला तय हो जाता। वह उसे फ़ौरन बाह
निकलने देता। लेकिन बीम इन्तज़ार अच्छी तरह से कर सकता था
इसके अलावा वह थका हुआ था और इतना कमज़ोर हो गया था कि इस
अजनबी के दरवाज़े पर भी उसे एक बेचैन झपकी आ गयी।

यह ऐसी पहली रात थी जब बीम अपने घर नहीं लौटा। उसे इस
बात का अहसास तब हुआ जब उसकी नींद खुली और वह यह समझ ही
न सका कि वह है कहां। लेकिन जैसे ही वह समझा उसे ऐसा लगा कि
वह घोर अभागा है। उसने सपने में इवान इवानिच को फिर देखा; जब
भी वह सोता उसे अपने सपनों में देखता और जागने पर उन हाथों की
हार्दिकता को महसूस करता जिन्हें वह बचपन से ही जानता था। वह कहां
है, उसका अच्छा, दयालु दोस्त? कहां है? यह असह्य था, एक ऐसा
अकेलापन था जिससे बचने का कोई उपाय न था। और उधर वह स्लेटिया

ऐसे फ़र्राटे से ख़र्राटे ले रहा है जैसे घोड़े बेचकर सोया हो। ग्रौर मख़मल से ढके वे सारे तख़्ते? उनसे मुर्दा कुत्तों की गंध ग्राती है। हाय, हत-भाग्य! बीम ने रिरियाना-पिपियाना शुरू कर दिया। फिर दो-चार मरतबा वह भौंका ग्रौर, शाम के खाद्यान्वेषण को निकले हुए खरहे के पीछे भागते हुए कुत्तों की तरह किकियाया ग्रौर ग्रन्त में हुग्राने लगा।

"होग्रा, होग्रा-ग्रा-ग्रा-ग्रा, बचाग्रो, लोगो, मुझे बचाग्रो-ग्रो-ग्रो!" उसने दीर्घ स्वर से क्रंदन किया। "मैं ग्रब ग्रपने दोस्त के बिना ग्रौर नहीं सह सकता। मुझे जाने दो। मुझे उसे खोजने के लिए जाने दो। ग्रो होग्रां होग्रांग्रां!"

स्लेटिया उचककर चारपायी से उठा, बिजली जलायी ग्रौर एक छड़ी से बीम को मारने लगा।

"चुप कुत्ते के बच्चे!" उसने फुफकारते हुए कहा। "पड़ोसी सुन लेंगे। ये ले! ग्रौर यह ले!"

बीम ने सहज बुद्धि से ग्रपने सिर को बचाते हुए उसके वारों को ख़ाली करने का प्रयत्न किया ग्रौर ग्रादमियों की तरह कराहा: "ग्राह! ग्रोह!"

लेकिन उस दुष्ट ग्रादमी ने एक बार उसके सिर पर वार कर ही दिया। कुछ सेकेण्डों के लिए बीम की चेतना लुप्त हो गयी ग्रौर वह कांपते हुए पंजों के साथ नीचे लेट गया। लेकिन उसने जल्दी ही होश संभाल लिया, दरवाज़े से उछलकर एक कोने में दुबका ग्रौर गुर्राते हुए ग्रपने दांत नंगे कर लिये। यह उसकी पहली क्रोधपूर्ण गुर्राहट थी।

स्लेटी ग्रादमी घबराकर पीछे हटा।

"ग्रोहो, तू काटेगा, मुझे काटेगा, राक्षस!" ग्रौर उसने झटके से दरवाज़ा खोल दिया।

लेकिन बीम ने इस बात पर भी यक़ीन नहीं किया कि दरवाज़ा खुल गया है। ग्रौर उसने स्लेटिये ग्रादमी का तब भी यक़ीन नहीं किया जब उसने कहा:

"तो निकल जाग्रो फिर। जाग्रो, बीम, चले जाग्रो, ग्रच्छे कुत्ते!"

उसे मार की पीड़ा के बाद कृपा की दुहाई देनेवाली इस ग्रावाज़ में कोई विश्वास नहीं रह गया था। पिटाई के बाद चापलूसी बीम के लिए नया ग्रनुभव था। काकी ग्रौर नकचढ़ा महज़ ग्रप्रिय लोग थे। लेकिन यह

ग्रादमी... बीम को उससे वास्तविक घृणा हो गयी! बीम मनुष्य ग्रपने विश्वास को खोने लगा था। हां ऐसा ही था।

बीम ने ग्रपनी गर्दन फैलायी, दांत नंगे किये ग्रौर... उस स्ले ग्रादमी की तरफ़ बढ़ा—धीरे-धीरे मगर दृढ़ता से, ग्राहिस्ता-ग्राहि लेकिन ग्रात्मविश्वास से। स्लेटी ग्रादमी पीछे हटा दीवार की तरफ़:

"ग्रयं! तेरी क्या मन्शा है?!"

रात के कपड़े पहने उसकी ग्रौरत ने चिल्लाकर ग्रपने पति से कह

"लो, तुम्हीं इस मुसीबत को बुला रहे थे! ग्रब वह तुमको काटेगा

बीम ने देखा कि वह ग्रातंककारी ग्रादमी भयाक्रांत हो गया था, वस्तुतः उसी को देखकर भयभीत था। इससे बीम का संकल्प ग्रौर मज़बूत हो गया। वह उछलकर झपटा, उसने शत्रु पृष्ठ भाग में दांत गड़ ग्रौर दरवाज़े से बाहर निकल गया। बीम दौड़ता चला गया, उसके में उस व्यक्ति के मानवीय मांस का स्वाद भरा था जिससे वह ग्र ग्रंगप्रत्यंग से घृणा करने लगा था। नहीं बीम ने ग्रपने को हतभागी ग्र शोचनीय नहीं माना; उस क्षण पर उसे वीरत्व की ग्रनुभूति हो रही ग्रौर वीरत्व के साथ, हमेशा, गर्व ग्रौर प्रतिष्ठा की भावना होती है गंदी दुर्गंध छोड़नेवाली गंध-मार्जार तक इसका ग्रपवाद नहीं है।

सुबह के धुंधलके में बीम ग्रपने पट्टे सहित भागता जा रहा था, लेकि ग्रब उस पट्टे में वह "नम्बर २४" नहीं था जो पहले हमेशा उसके ग में लटका रहता था। शुरू में, जल्दबाज़ी की वजह से, वह ग़लत दिश की तरफ़ चल पड़ा ग्रौर नगर के बाहर पहुंच गया (वहां मकान नहीं र गये थे)। वह उल्टे पांवों वापस लौटा ग्रौर एक जैसे ग्रावास-खण्डों व उसी भूलभुलैय्या में फिर से ग्रा पहुंचा। वह वृत्तों ग्रौर ग्राठ की ग्राकृ के चक्रों में घूमा ग्रौर ग्रन्त में उस मकान के पास पहुंचा जहां से व भागा था। यहां से वह तीव्र गति से सही दिशा की तरफ़ चल पड़ा इसमें उसे एक ऐसी पूर्ण प्राकृतिक चीज़ से मदद मिली जिसकी जानका कम लोगों को होती है। पिछले दिन जब उसे बांधकर ले जाया ज रहा था तो उसे एक कोने में ग्रपने किसी बंधु के "हस्ताक्षरों" की गं मिली थी ग्रौर ग्रगले कोने पर दूसरे की ग्रौर, इसी तरह ग्रौर भी क स्थानों पर। ग्रब दूसरी गंध से पहली की तरफ़ वापस जाने पर उसे स गंधवाला स्थान मिल गया। इस भूलभुलैय्या में सिर्फ़ मकान को खोज

के लिए ही नहीं बल्कि बाहर निकलने के लिए भी उत्तम कोटि के गंध संवेद की ज़रूरत थी। बीम में ऐसा गंध-संवेद तो था ही साथ ही उच्च कोटि की पशु-बुद्धि भी थी।

जब वह अपने घर पहुंचा तो उजाला हो चुका था। वह अपने घर के फ़्लैट के दरवाज़े तक चढ़ा और उसे खुरचा। कोई उत्तर नहीं। उसने एक बार फिर खुरचा – तब भी कोई उत्तर नहीं मिला। द्वार के आसपास इवान इवानिच का कोई चिन्ह नहीं था और अपनी प्रातःकालीन नींद में बेख़बर स्तेपानोव्ना के लिए बीम की इस पुकार को सुनकर उठने के वास्ते अभी काफ़ी दिन नहीं चढ़ा था। वह विचारशील मुद्रा में द्वार के पास बैठ गया।

छड़ी की मार से उसका सारा बदन दुख रहा था। उसके सिर के अन्दर कुछ धड़कता सा जान पड़ता था, उसे मतली आने लगी और सारी शक्ति निःशेष हो गयी। लेकिन इसके बावजूद वह फिर से सड़क पर जा पहुंचा – अपने दोस्त को खोजने के लिए। बीम के सिवा उसे और कौन खोज सकता था?

वह कुत्ता, जो अब नगर में भटक रहा था, दिखने में तो विषण्ण नज़र आ रहा होगा, परन्तु वह था वफ़ादार, निष्ठावान और साहसी।

आठवां अध्याय

रेल-मार्ग की दुर्घटना

दिन बीतते गये। बीम ने अब उन पर ध्यान देना बन्द कर दिया था। वह रोज़ नगर की गश्त लगा रहा था और उसके कोने-कोने से परिचित हो गया था।

अब वह एक निश्चित मार्ग पर चलता था। यदि लोग इस बात को समझ गये होते तो वे बीम को देखकर अपनी घड़ियां मिला सकते थे। यदि वह पार्क में होता तो सुबह के पांच बजे होते, स्टेशन पर – छह, फ़ैक्टरी के दरवाज़े पर – साढ़े सात, तरुवीथि पर – बारह, नदी के बायें तट पर – शाम के चार, आदि-आदि।

उसने कुछ नये लोगों का परिचय प्राप्त किया। बीम ने पता लग
कि अधिकांश लोग दयालु थे, ये लोग सड़क पर मामान्यत: ख़ामोश
थे, लेकिन दुष्ट जन हमेशा बहुत शोर मचाते। उसने कुछ ऐसे लोगों
पता भी लगाया जिनसे तेल और लोहे की गंध आती थी (वह उनमें क
कभार ही मिलता था)। हर रोज़, सुबह लगभग आठ बजे, ये लोग
फाटक से लगातार, एक धारा की तरह, निकलते और एक द्वार-गृह
दरवाज़े से बाहर आते थे।

यहां वे उतने ही ज़ोर शोर से बातें करते जैसे कि काले कौवे क
कांव करते हैं और उनकी एक भी बात समझ में नहीं आती थी, लेि
जो भी हो, बीम को उनकी बातों में बहुत ज़्यादा दिलचस्पी नहीं थ
वह इस जन-प्रवाह से कुछ दूरी पर बैठा प्रतीक्षा करता।

मज़दूरों के नीले कपड़े पहने एक युवक हर सुबह उससे बातें करत

"ओ! काले-कान! हैलो, क्या हाल है!" वह अपने साथ ल
हुए खाने के पैकेट को खोलता हुआ कहता। "अभी ज़िन्दा हो, चल-ि
रहे हो, है? कैसे हो?" और वह बीम की तरफ़ अपना सौहार्दपूर्ण मानवं
पंजा बढ़ाता, जो खुरदरा तो था पर था सहृदयतापूर्ण।

अन्य लोग ख़ामोशी से अपना हाथ उसकी तरफ़ बढ़ाते, कुछ अभि
वादन की आवाज़ निकालते और जल्दी-जल्दी आगे बढ़ जाते। यहां ब
को किसी ने कभी भी कोई चोट नहीं पहुंचायी।

अब बीम, धीरे-धीरे विभिन्न प्रकार के लोगों को पहचानना सी
रहा था। मिसाल के लिए, उसका अक्सर एक भारी-भरकम, बोतल जै
पैरोंवाली औरत से सामना होता था। उसके चेहरे पर ख़ुशमिज़ाजी औ
साथ ही आत्मतुष्टि का भाव दिखायी देता था; लेकिन वह जब भी बी
को देखती तो उसे कोसने लगती, बिल्ली की तरह फुफकारती, बाज़ा
से ख़रीदे सौदे-सामान से भरेपुरे अपने झोले को छाती तक उठाती औ
एक ही बात कहा करती:

"कैसा भयावना जंतु है! हमारी मानसिकता को बर्बाद होने
बचाने के लिए क्या इन सारे कुत्तों का सफ़ाया नही किया जा सकता
कहते हैं 'तुम्हारी मिलीशिया तुम्हारी देखभाल करती है'। कोई सम्भावन
नहीं! यहां के कुत्ते किसी भी दिन आपकी स्कर्ट फाड़ सकते हैं, औ

मिलीशिया इसका क्या करेगी? उनके लिए हम कुत्ते की पांचवीं टांग, और कुछ नहीं।"

वह अपनी इस बात को इतनी बार दोहरा चुकी थी कि बीम ने अपनी मासूमियत से यह निष्कर्ष निकाल लिया कि उस औरत का नाम पांचवीं टांग होगा। लेकिन वह निश्चित रूप से जानता था कि उसके निकट नहीं जाना है। वह, उसके नाम के सिवा, उसकी कही हुई बातों में से कितना ही कम क्यों न समझा हो अपने मन में एक पक्का नियम बनाने के लिए काफ़ी देख-सुन सका था, यह नियम था, ऐसे लोगों के निकट नहीं जाना है, उनसे कोई वास्ता नहीं रखना है। बाद में (सम्भवतः अन्तर्जात बुद्धि से) वह यह सीख गया कि शुरू से ही किन लोगों से बचना चाहिए। लोगों का बहुत बड़ा बहुमत दयामय था और कुछ ही व्यक्ति दुष्ट थे, लेकिन सभी भले लोग दुष्टों से डरते हैं। बीम ख़ुद उनसे नहीं डरता था लेकिन उसके पास उनके लिए वक़्त नहीं था। मानवजाति के बारे में उसका ज्ञान बढ़ रहा था और एक कुत्ते के दृष्टिकोण से अब वह पास से गुज़रनेवाले किसी भी व्यक्ति के लिए दुम हिलाने को तैयार नहीं था, बना ठना अपरिपक्व व आदर्शवादी कुत्ता नज़र नहीं आता था। थोड़े ही समय के अन्दर बीम एक बेहद दुर्बल मगर गम्भीर व सही क़िस्म का कुत्ता बन गया था और उसने अपने जीवन में एक उद्देश्य बना लिया था—खोजना और प्रतीक्षा करना।

एक दिन तड़के सवेरे, पैदल-पथ की गंधों की जांच करते समय वह सहसा ख़ुशी से उछल पड़ा। वह वहां रुका, नाक से फुनफुनाया और फिर दौड़ा, पागल कुत्ते की तरह, अपने रास्ते की हर चीज़ से बेख़बर। लेकिन यह वैसा ही था जैसा कि किसी अजनबी को जान पड़ता। वास्तव में वह एक ताज़ी गंध का अनुसरण कर रहा था—जहां से दाशा गुज़री थी! वह कुछ समय पहले वहां थी।

उस गंध ने उसे स्टेशन पहुंचा दिया। वह इमारत में प्रविष्ट नहीं हो सका क्योंकि वहां बहुत लोग थे, लोगों की भीड़ ही भीड़ थी। यहां तक कि सड़क में भी एक छोटी सी खिड़की के पास लोग धकापेल मचाये हुए थे और एक ख़रगोश को फाड़ खाने के लिए तैयार ऐसे शिकारी कुत्तों की तरह की शोर कर रहे थे जिन्हें शिकारी के चाबुक और तुरही की आवाज़ की भी पर्वाह न हो। दाशा की गंध का पता लगाने के लिए यह

उपयुक्त स्थान नहीं था। इसलिए बीम ने स्टेशन का एक चक्कर लग
और एक प्लेटफ़ार्म पर पहुंच गया, यहां पर लोग, पहियों पर खड़े ह
छोटे मकानों के दरवाज़ों पर, समूह बनाये खड़े थे। यहां शोरगुल व धक्
मुक्की नहीं हो रही थी, बल्कि इसके विपरीत, वे एक दूसरे को
लगा रहे थे, चूम रहे थे और एक दरवाज़े के सम्मुख तो नाच भी
थे। बीम की तरफ़ किसी ने ध्यान नहीं दिया, उसने आखेट की ख
करने के अंदाज़ में उनके पैरों के बीच से इधर-उधर घूमना शुरू कर दि
और प्लेटफ़ार्म को अच्छी तरह से "पढ़ा"।

और अचानक, एक दरवाज़े के पास उसे दाशा की गंध मिली। ब
ने भीतर घुसने की कोशिश की, मगर अपनी छाती पर बड़ा सा
लगाये एक औरत ने उसे दूर दिया। लेकिन बीम हिम्मत हारनेवाला न
था। उसने खिड़कियों को सूंघना और उनके भीतर झांकना शुरू कर दिय
तभी उसने देखा कि पहियोंवाले उस मकान के अन्दर घुसनेवाले अंति
दो व्यक्ति सफ़ेद कोट पहने दो महिलाएं थीं। वह उनके पीछे दौड़
परन्तु उसी क्षण सभी मकानों ने एक साथ चलना शुरू कर दिया। बं
खिड़कियों की तरफ़ झपटा। अपने कुक्कुर-मस्तिष्क में वह ऐसे निष्
पहुंचा जो उसे बिल्कुल सही लग रहा था। वहां दाशा थी, सफ़ेद को
पहने कुछ लोग थे, इसलिए इवान इवानिच भी वहां हो सकता था। ह
वह हो सकता था। उसे सफ़ेद कोट पहने हुए लोग ही उठाकर ले गये थे

और बीम, बेचारा बीम अब बुरी तरह से हताश हो गया था, व
खिड़कियों की तरफ़ देखता हुआ उन मकानों के साथ-साथ दौड़ने लगा
और तभी, दाशा ने उसे देखा।

"बीम! बीम!" उसने पुकारा। "प्यारे बीम! तुम मुझे विदा कर
आये! अच्छे प्यारे बीम! बीम!.."

उसकी आवाज़ धूमिल पड़ने लगी। पहियेदार मकान अधिकाधिक ते
गति से चलने लगे। बीम, हज़ार कोशिशों के बावजूद पिछड़ने लगा।

वह अंतिम पहियेदार मकान के पीछे दौड़ता गया, पर वह भी, कु
ही देर में, उसकी आंखों से ओझल हो गया। वह, कहीं न मुड़नेवाले इ
मार्ग पर दौड़ता गया, दौड़ता ही गया। अंत में, जब उसके शरीर
नाममात्र का ही दम बाक़ी रह गया था, वह चारों पंजे फैलाये पटरि
के बीच धराशायी हो गया और चुपचाप रिरियाने लगा। अब उसे को

उम्मीद नहीं थी। वह कहीं नहीं जाना चाहता था और उसमें इसकी शक्ति भी नहीं थी, अब वह जीना भी नहीं चाहता था।

जब कुत्ते उम्मीद छोड़ देते हैं तो ज़रा भी शोर मचाये बग़ैर, चुपचाप, कुदरती मौत मर जाते हैं। उस दुख को समेटे चल बसते हैं जिसके बारे में शेष संसार कुछ नहीं जानता है। यह बीम के जानने या समझने की बात नहीं थी कि अगर दुनिया में कोई भी आशा शेष न रहे, यदि आशा का अंतिम आधार भी ख़त्म हो जाये तो समस्त लोग भी निराशा से मृत्यु को प्राप्त हो जायेंगे। बीम के लिए यह बात इससे कहीं अधिक सरल थी; उसके अन्तर में अतीव वेदना थी और उसका दोस्त वहां नहीं था—इससे अधिक और कुछ नहीं था। जिस प्रकार एक राजहंस अपने प्रिय की मृत्यु के बाद दूर आकाश की ऊंचाइयों पर जा, पत्थर की तरह नीचे गिरकर मर जाता है, जिस तरह क्रौंच पक्षी अपने एकमात्र सहचर की मृत्यु पर अपने पंख फैलाकर ज़मीन पर पड़ा-पड़ा, चन्द्रमा से चीख़-चीख़कर अपने प्राण लेने की भीख मांगता है, उसी तरह का हाल बीम का भी था। वह वहां पर पड़ा था और अपने प्रमाद में अपने एकमात्र, अक्षतिपूरणीय दोस्त को देख रहा था और किसी भी स्थिति के लिए तत्पर था, वैसे उसे अपनी इस तत्परता का स्वयं कोई भान नहीं था। वह ख़ामोश था। दुनिया में किसी ने भी किसी कुत्ते को मरते नहीं सुना है, कुत्ते निश्शब्द मर जाते हैं।

काश, उसे पानी की कुछ बूंदें मिल जातीं। तो बीम फिर कभी न हिलता अगर...

एक औरत उसके क़रीब आयी, वह रुईभरा जैकेट और वैसा ही पैंट पहने हुए थी और उसका सिर एक शॉल में लिपटा हुआ था। वह बड़ी और ताक़तवर औरत थी। पहली नज़र में उसने यही सोचा होगा कि बीम मर गया है। वह झुकी और उसकी तरफ़ कान लगाकर सुनने लगी; बीम की सांस चल रही थी। वह अपने मित्र के खो जाने के बाद से इतना कमज़ोर हो गया था कि उसके लिए ऐसी दौड़ प्रतियोगिता में शामिल होना नितांत मूर्खतापूर्ण दुस्साहसिकता होती जैसी की उसने रेलगाड़ी के साथ की थी। लेकिन क्या ऐसी परिस्थितियों में उचित-अनुचित का ध्यान आता है! और तो और मनुष्य भी ऐसा नहीं कर सकता है।

उस औरत ने बीम के सिर को हाथों में लेकर उठाया।

"क्या बात है, प्यारे कुत्ते? क्या हुआ है, काले-कान? तुम कि पीछे दौड़ रहे थे? तुम ग़रीब बेचारे?"

इस अपेक्षाकृत उजड्ड नज़र आनेवाली औरत की आवाज़ शांत औ सौहार्दपूर्ण थी। वह बंध से नीचे उतरी, एक तिरपाल से बने अंगुलिही दस्ताने के अन्दर पानी लेकर आयी, उसने बीम का सिर उठाया औ दस्ताने को पकड़कर उसकी नाक गीली कर दी। बीम ने जीभ से पा को चाटा और धीरे से गर्दन सीधी करके फिर थोड़ा पानी चाटा, इस बाद वह जीभ से उस पानी को सुड़कने लगा। उस औरत ने उसकी पी थपथपायी। वह समझ गयी थी, एक प्रिय व्यक्ति हमेशा के लिए चल गया था और यह भयावह बात थी। हमेशा के लिए अलविदा कहने सबसे बुरी बात यह है कि इस तरह की जुदाई जीवित को दफ़न कर के समान होती है।

उसने बीम के सम्मुख अपनी शिकायत पेश की:

"मैं भी इस सबसे होकर गुज़री हूं... मैंने अपने पिता और प को युद्ध में जाने के लिए विदाई दी थी... देखो, काले-कान, अब मैं कितनी बूढ़ी हो गयी हूं... पर इसके बावजूद मैं वह सब अभी भी भूल नहीं सकती... मैं रेलगाड़ी के पीछे दौड़ी, ठीक तुम्हारी तरह... और गि पड़ी... मैंने मौत की भीख मांगी... पियो, प्रिय, लाचार प्राणी पियो..."

बीम ने दस्ताने में भरा, लगभग, सारा पानी पी लिया, फिर उस औरत की आंखों में देखा और तुरन्त उस पर विश्वास करने लगा। हां, यह एक अच्छा व्यक्ति है। वह उसके खुरदरे, बिवाई फटे हाथों को चाटता गया और उन बूंदों को भी चाटता रहा जो उसकी आंखों से ढुलक रही थीं। यह दूसरा मौक़ा था जब बीम ने मानवीय आंसुओं का स्वाद पाया। पहली बार वे उसके मालिक के आंसू थे और अब यह सूर्य की किरणों में चमकती बूंदें थीं जो दुख के लावण्य से कड़ुवेपन की सीमा तक खारी हो गयी थीं।

उस औरत ने बीम को उठाया और उसे पटरी से हटाकर बंध के नीचे ले आयी:

"तुम यहां लेटे रहो, काले-कान, मैं जल्द वापस आ जाऊंगी," और वह चलकर उस स्थान को रवाना हो गयी जहां कई औरतें रेल-पथ में खुदाई कर रही थीं।

बीम ने धुंधली निगाहों से उसे जाते देखा। फिर भारी प्रयत्न के साथ वह उठा और धीरे-धीरे लंगड़ाता हुआ उसके पीछे चल पड़ा। उस औरत ने मुड़कर पीछे देखा और उसके लिए रुक गयी। वह निकट आया और उसके सामने ज़मीन पर लेट गया।

"क्या तुम्हारे मालिक ने तुम्हें छोड़ दिया?" उसने पूछा। "क्या वह तुम्हें छोड़कर चला गया?"

वे उस समूह के पास पहुंचे जो काम में जुटा हुआ था। उनमें सभी औरतें थीं और वे इसी भले-व्यक्ति की तरह के कपड़े पहने हुए थीं। एक ओर, अपने सिर के पीछे की तरफ़ समूर की टोपी डाले तथा दांतों में पाईप दबाये एक आदमी खड़ा था। उसने झुंझलाकर कहा:

"तुमने अपने को एक कुत्ते के साथ बांध लिया है क्या मत्योना? तो अब काम कौन करेगा? क्या औरत हो। मत्योना नाम तुम्हारे लिए बिल्कुल ठीक है," उसने खिल्ली उड़ाते हुए उसकी तरफ़ इशारा किया।

बीम समझ गया कि उस भले-व्यक्ति को मत्योना कहते हैं। उसने बीम से किनारे पर उगी घास में लेटने के लिए कहा और ख़ुद एक विशाल संड़सी उठायी और उससे रेल की पटरी के एक स्लीपर को ठीक उसी तरह से जकड़ा जैसे की अन्य औरतें कर रही थीं।

"एक दो, ऊपर को!" वह आदमी कर्कश स्वर में बोला, "ऊपर-ऊपर! और ऊपर!" वह अपने हाथों को कमर में रखे गरजा।

वे औरतें उसकी हर चीख़ के साथ लकड़ी के स्लीपरों में फंसी संड़सियों को एक साथ ऊपर खींचती थीं। हर खिंचाव के साथ एक के सिवा सब औरतों के चेहरे लाल हो जाते। वह अकेली औरत दुबली-पतली, क्षीणकाय थी और उसका चेहरा हर खींच के साथ पीला, बल्कि लगभग नीला पड़ जाता था। मत्योना ने उससे अलग हटने का इशारा किया और उससे ठीक उसी तरह से बोली जैसे कि बीम का मालिक बीम को दूर भेजते समय बोला करता था:

"जाओ! आराम करो, वरना तुम जल्दी ही अपने प्राण तज दोगी," और फिर उस आदमी से उसने कहा, "बिल्कुल ठीक है, चीख़ते जाओ, प्रभु ख्रीष्ट का वैरी कहीं का!"

"एक दो, ऊपर को!" वह रंभाया और अपनी टोपी को सीधा धकेलते हुए एक प्रकार का गीत जैसा इस तरह गाने लगा मानो उस पर

बहुत बड़ा बोझ पड़ा हुआ हो। "चलो, लड़कियो आगे आओ, फिर पूरा ज़ोर लगाओ! मर्द तुम्हारा, भागा घर से, पायी दूजी बीबी इ से। कोढ़ की मारी, आवारा नारी। बस काफ़ी है, औज़ार रख दो!

बीम ने "आवारा" शब्द नकचढ़े की ज़बानी सुना था, वह बु शब्द था। अन्य शब्दों में से वह एक भी नहीं समझ सका।

औरतों ने अपनी संड़सियां एक तरफ़ को रख दीं, लोहे के भा पच्चर उठाये और उन्हें लम्बे भारी हथौड़ों से ठोंकना शुरू कर दिया मल्योना ने अपने पच्चर को तीन आसान से प्रहारों से उचित स्थान प ठोंक दिया, लेकिन वह क्षीणकाय औरत हर प्रहार के साथ हांफती औ कराहती थी :

"आह! ओह!"

"चलो ठीक से करो!" आवारा ने अपने पाईप को भरते हुए चिल्ल कर कहा। "अनीस्या, चलो वार करो!" वह उस औरत के पास आया "हथौड़े को सही क़िस्म की झूल दो – तब यह तुम्हारे लिए आसा हो जायेगा।"

तो वह क्षीणकाय औरत अनीस्या थी। उसे अपने पच्चर ठोंकने किसी भी अन्य से अधिक समय लगा और अंत में वह पीछे रह गयी तब कुछ ऐसा हुआ जो सब औरतों को विचित्र और लगभग अबूझ पहेल सा लगा। बीम लंगड़ाता हुआ अनीस्या के पास पहुंचा और उसने उस साथ भी ठीक वही किया जो मल्योना के साथ किया था – उसके कड़ुवे स्वादवाले, तिरपाल से बने, अंगुलिरहित दस्तानों को चाटा। उन सभ ने काम रोक दिया और हैरत में पड़कर बीम को निहारने लगे।

आवारा के आदेश पर वे कुछ झाड़ियों की छांह में बैठे, प्रत्येक अपने-अपने बंडल से खाना निकालकर खाया। उन्होंने बीम को खिलाय और जो कुछ उन्होंने दिया उसे बीम ने खाया। अब वह भले आदमिय का दिया हुआ खाना खाता था और यही वह चीज़ थी जिसने उसक रक्षा की।

शाम होने तक वह बेचैन होने लगा। वह मल्योना के पास गया, नी बैठा और उसके चेहरे को देखते हुए अपने पंजों को ऊपर-नीचे किया फिर वह वापस मुड़ा और दूर जाकर लेट गया। कुछ देर बाद वह फि आया और एक बार फिर पीछे हट गया।

"काले-कान, क्या तुम जाना चाहते हो?" मत्योना ने बात समझते हुए कहा, "अच्छा तो जाओ काले-कान। मैं तुमसे क्या कर सकती हूं। मेरे पास तुम्हें रखने के लिए जगह ही नहीं है, जाओ चले जाओ।"

बीम ने अलविदा कही और लंगड़ाते हुए चल दिया, उसकी यह चाल कुत्तों जैसी थी ही नहीं। वह रेलमार्ग पर वापस उल्टी तरफ़ को चला। एक मार्ग, मार्ग ही है। यदि आप उस पर चलते हैं तो आप ग़लत जगह को नहीं जा सकते, बशर्ते कि आपने शुरू में सही दिशा पकड़ी हो। लेकिन उसे एक दिन पहले जो चोटें लगी थीं उनसे उसका सारा शरीर दुख रहा था और चलते समय वह मुश्किल से ही सांस ले पा रहा था। फिर भी, इसका कोई उपाय नहीं था। अच्छा हुआ कि उन औरतों ने उसे खाना खिला दिया था और रेलमार्ग के किनारे का रास्ता सुगम और सरल था। वह धीरे-धीरे अपनी सही चाल में आ गया और जल्दी ही हलके क़दमों से दुलकी चाल दौड़ने लगा। यह कैसी जीवन्तता है, एक कुत्ते में अपनी शक्ति को पुनः प्राप्त करने की कैसी क्षमता होती है!

एक अजनबी को इस दृश्य में कोई ख़ास बात नज़र नहीं आ सकती थी—एक बीमार कुत्ता रेलमार्ग के किनारे-किनारे दुलकी चाल से भागा जा रहा है, बस इतना ही।

नगर के निकट रेलमार्ग दो हिस्सों में बंट गया; इस्पाती पटरियों के एक जोड़े से दूसरा जोड़ा प्रशाखित हो निकला हुआ था। फिर तीन पटरियां दिखायी देने लगीं। अचानक एक सिगनल-बक्स से थोड़ी ही दूरी पर दो लाल आंखें झपकने लगीं। वे तेज़ी के साथ अग़ल-बग़ल को जा रही थीं—दायें से बायें, बायें से दायें। कोई भी जानवर लाल रंग पसंद नहीं करता। मसलन, एक भेड़िया लाल रंग की झंडियों के घेरे को पार नहीं कर सकता और ऐसी झंडियों के घेरे में फंसी लोमड़ी दो या तीन दिन तक या उससे भी अधिक समय तक वहीं फंसी रह जायेगी। तो बीम ने इन विशाल जीवित लाल आंखों से बचने का फ़ैसला किया। वह पटरियों के तीसरे जोड़े की तरफ़ हटा, रुका और हिचकते हुए उन झपकती लाल रोशनियों की तरफ़ देखने लगा। और सहसा, ठीक उसके पैरों के पास करकराती हुई आवाज़ हुई...

बीम दर्द से चीख़ उठा लेकिन अपने पैर को खींचकर बाहर नहीं निकाल सका; लाईन बदलने के लिए रेल की पटरियों के पाइंट सरके

और उनके शिकंजे जैसी पकड़ में बीम का पंजा फंस गया। बीम की चीं
एक दीर्घ क्रंदन में बदल गयी जिसका सिर्फ़ एक ही अर्थ था: "तुम मु
चोट पहुंचा रहे हो! बचाओ!"

आसपास कोई नहीं था। किसी पर दोष नहीं डाला जा सकता था
एक कुत्ता, जैसा कि कभी-कभी फंसा हुआ भेड़िया करता है, अपने पं
को ख़ुद ही काटकर विलग नहीं कर सकता; कुत्ता मनुष्य से अपेक्ष
करता है कि वह उसकी सहायता करेगा, वह मानवीय मदद की उम्मी
रखता है।

पर यह क्या था? दो विशाल चमकीले श्वेत नेत्रों का प्रकाश बी
पर पड़ा, उसकी आंखें चौंधिया गयीं। वे दोनों नेत्र धीरे-धीरे और क्रूरत
से उसकी तरफ़ बढ़ने लगे। बीम वेदना और भय की व्याकुलता से ज़मी
की तरफ़ सिकुड़ गया, वह आसन्न विपत्ति की असंदिग्ध अनुभूति से स्तब्ध
हो गया था। लेकिन चमकीले नेत्रोंवाला घड़घड़ाता आता वह दैत्य लगभग
तीस मीटर की दूरी पर आकर रुक गया और एक आदमी, कूदकर
प्रकाश-क्षेत्र में आया और बीम की ओर दौड़ा। उसके, लगभग तुरंत बाद
एक और आदमी आता हुआ दिखायी पड़ा।

"ओहो, यह ग़रीब बेचारा इस तरह कैसे फंस गया?" पहले व्यक्ति
ने पूछा।

"हम क्या करें?" दूसरे ने पूछा।

उनके शरीरों से लगभग वैसी ही गंध आ रही थी जैसी कि गैराज
के ड्राइवरों से आती थी; वे दोनों ओरीदार टोपी पहने हुए थे और उन
टोपियों में बड़े-बड़े बैज लगे हुए थे।

"हम गाड़ी रोकने से मुसीबत में पड़ जायेंगे, चाहे हम स्टेशन के
नज़दीक ही क्यों न हों," पहले ने कहा।

"इससे अब कोई फ़र्क़ नहीं पड़ सकता," दूसरे ने उत्तर दिया और
वह सिगनल-बॉक्स की तरफ़ चल पड़ा।

हमारा ग़रीब बीम आवाज़ों के स्वर से (शब्दों से नहीं) यह समझ
गया कि वे लोग उसको बचानेवाले हैं। उसने बॉक्स के अन्दर एक घंटी
की तीव्र करकराहट सुनी और एक मिनट बाद उसके पंजे पर कसा धातु
का शिकंजा ढीला हो गया। लेकिन वह तब भी हिल न सका, वह स्तम्भित
हो गया था। एक आदमी ने उसे उठाया और पटरी से अलग एक किनारे

पर रख दिया। वहां वह ऐंठकर गेंद सा बन गया और अपने कुचले हुए पंजे को चाटने लगा। लेकिन इतना होने पर भी (कुत्ते बहुत अच्छे प्रेक्षक होते है) उसने रेलगाड़ी के डिब्बों की खिड़कियों और दरवाज़ों से लोगों के बोलने की आवाज़ें सुनीं। अब उसकी तिलमिलाहट ख़त्म हो गयी थी और उस अन्धकार में रेलगाड़ी को देख सकता था, ऐसी अनेक आवाज़ें सुनी जा सकती थी जो उसके परिचित शब्दों को दोहरा रही थीं "कुत्ता" और "शिकारी कुत्ता"।

बीम इन भले लोगों का आभारी था। बीम जिस रेल-मार्ग पर इतने विश्वास से चल रहा था उसके पाइंटों को किसी ने कहीं से बदल दिया। यदि इस प्रक्रिया में एक कुत्ते का पांव फंस गया था और उसके कारण वह आगे लिये पंगु बनने जा रहा था तो यह उस कुत्ते का दोष नहीं था। फिर भी वह रेलमार्ग पर फिर कभी नहीं भागेगा, वह इस तथ्य को ठीक उसी तरह से समझ गया था जैसे कि अपने पिल्लेपन में वह इस तथ्य को समझा था कि आप उस सड़क पर नहीं चल सकते जिस पर गाड़ियों का आवागमन जारी है।

थका-मांदा, पंगु बीम तीन पैरों से लंगड़ाता चला। वह बीच-बीच में अपनी सूजी हुई उंगलियों को चाटने के लिए रुक जाता था और ऐसा तब तक करता रहा जब तक कि उसकी विरूपित उंगलियां बिल्कुल साफ़-सुथरी नहीं हो गयीं। यह दर्दनाक था, लेकिन इसके अलावा और कोई चारा नहीं था। इस नियम को हर कुत्ता जानता है; अगर दर्द करता है तो भी उसे भुगतो, पीड़ादायी है तो भी उसे चाटो और ख़ामोश रहो।

...जब वह लंगड़ाता अपने घर के द्वार पर पहुंचा तो आधी रात गुज़र गयी थी। इवान इवानिच का कहीं कोई चिन्ह नहीं था। बीम हमेशा की तरह द्वार खुरचना चाहता था। लेकिन उसने देखा कि वह अपने पिछले पैरों पर न तो बैठ सकता है न खड़ा रह सकता है। इसलिए उसने दरवाज़े की चौखट के कोने में अपनी नाक डाली और गंध का परीक्षण किया; नहीं, उसका मालिक वहां नहीं था, वह हमेशा के लिए चला गया होगा। बीम कुछ देर तक उसी स्थिति में खड़ा रहा, मानो अपने शिथिल होते शरीर को सिर से सहारा दे रहा हो। फिर वह स्तेपानोव्ना के दरवाज़े पर गया और सिर्फ़ एक बार, हताश स्वर में, ज़ोर से भूंका।

"भौं!" (यह मैं हूं!)

स्तेपानोव्ना हक्की-बक्की रह गयी :

"हे भगवान! यह कहां हुआ?" उसने दरवाज़ा खोला, उसे उस मालिक के फ़्लैट में जाने दिया और ख़ुद भी उसके पीछे-पीछे चली आयी "अरे ओ, लाचार अभागे कुत्ते। अब मैं तुम्हारा क्या करूं। इवान इवानि क्या कहेगा? यह हुआ कहां?"

स्तेपानोव्ना को इसकी कोई जानकारी नहीं थी कि कुत्तों से कै बरताव किया जाता है। उसे उनको खिलाने-पिलाने तथा उनकी देखभा के बारे में कुछ भी पता नहीं था। लेकिन वह स्नेहपूर्वक सहानुभूति व प्रदर्शन करना जानती थी। शायद इसी सहानुभूति से इस समय वह बी को समझ सकी थी और यह जान गयी थी कि "इवान इवानिच" कह से उस बीमार कुत्ते में आशा की एक चिनगारी बल उठी थी।

"हां, इवान इवानिच," उसने दोहराया। "ज़रा रुको मैं अभ आयी।" वह जल्दी से बाहर निकली और थोड़ी ही देर में एक चिट्ठ थामे वापस आयी और उसने उसे बीम की नाक के पास रखा, "यह है वह! इवान इवानिच की चिट्ठी।"

बेचारा बीम जो मर गया था पर फिर जीवित हो गया, जो कुचल गया था पर बचा लिया गया, जो बीमार और घोर निराशा से पीड़ित था सहसा कांपने लगा। उसने अपनी नाक से चिट्ठी को कोंचा और उसके किनारे-किनारे सूंघा... जब स्तेपानोव्ना ने चिट्ठी निकालने के लिए लिफ़ाफ़े को फ़र्श से उठाया तो वह घिसटता हुआ उठा और उसकी तरफ़ को बढ़ा। उसने उसी लिफ़ाफ़े से एक बिल्कुल ख़ाली काग़ज़ निकाला और उसे बीम के सामने रख दिया, उसे देखकर बीम सचमुच दुम हिलाने लगा। इवान इवानिच ने अपनी उंगलियों की गंध से वह पत्र लिखा था और जानबूझकर ऐसा किया था।

"यही है, वह जो उसने तुम्हारे लिए भेजा है," स्तेपानोव्ना ने कहा। "उसने लिखा है कि बीम को यह कोरा काग़ज़ दे देना।" उसने कोरे काग़ज़ को "इवान इवानिच... इवान इवानिच..." कहते हुए बीम के सामने कर दिया।

अचानक, बीम फ़र्श पर लुढ़क गया और उसने अपने सिर को उस काग़ज़ पर गिरने दिया। उसकी आंखें छलछला आयीं। बीम अपने जीवन में पहली बार रो रहा था। वे आशा के, सुख के आंसू थे, दुनिया के

सर्वोत्तम आंसू थे, ऐसे किन्हीं भी आंसुओं जैसे थे जिन्हें हम मिलन की ख़ुशी में बहाते हैं।

...हां, प्यारे पाठक, मेरा विश्वास करें, सेटर-कुत्ता हंस भी सकता है और रो भी सकता है।

...स्तेपानोव्ना कुत्ते को समझने लगी थी, लेकिन वह महसूस करती थी कि वह अकेले यह काम नहीं कर सकती। वह देर तक बीम के साथ बैठी रही और स्वयं अपने जीवन पर विचार करती रही। वह अपने उस गांव की याद में व्याकुल हो गयी जहां वह पैदा हुई थी, पली और बढ़ी थी। उसे ईंट के बने इन पिंजड़ों में एकाकीपन की प्रबल अनुभूति होने लगी। लोग इन पिंजड़ों में, एक ही घर और एक ही सीढ़ी होने के बावजूद, एक दूसरे को जाने-पहचाने बग़ैर बरसों तक रहते हैं। ख़ैर उसने कम से कम यह तो महसूस किया कि बीम को पानी पिलाना चाहिए।

उसे इसकी कितनी सख़्त ज़रूरत थी! उसने जैसे-तैसे उठकर भीषण प्यासे की तरह पानी पिया और बहुत सा जल फ़र्श में छलका दिया। इसके बाद वह अपनी पुरानी स्थिति में जा गिरा, उसने आंखें बन्द कर लीं और ऐसा प्रतीत हुआ कि वह बेहोश हो गया है।

जब स्तेपानोव्ना फ़्लैट छोड़कर गयी तो पौ फटने ही वाली थी। वह बहुत ही आहिस्ता से इस तरह बाहर निकली, मानो उसे किसी बीमार व्यक्ति के आराम में खलल डालने का भय हो।

केवल एक अकेला कुत्ता फ़र्श पर लेटा हुआ था।

उसे कभी भी पता नहीं लगा कि वह कितनी देर तक सोया रहा। कुछ घंटे, या शायद कुछ दिनों तक। वह अपने पैर में होनेवाली तीव्र पीड़ा से जागा था। वह दिन का समय था क्योंकि सूरज चमक रहा था। दर्द के बावजूद उसने उस कोरे काग़ज़ को फिर सूंघा। उसके मालिक की गंध हलकी और पहले से अधिक दूरस्थ हो गयी थी, लेकिन इसका कोई महत्व नहीं था। मुख्य बात यह थी कि वह अभी वर्तमान था कि वह कहीं पर मौजूद था और उसे खोजा जाना था। बीम उठ गया, उसने अपने कटोरे से पानी पिया और अपने तीन पैरों से फ़्लैट में इधर-उधर लंगड़ाते हुए चलने लगा। उसने कुछ ही देर में चलने का एक ऐसा तरीक़ा निकाल लया जिससे उसके कुचले हुए पंजे में दर्द नहीं होता था, उसे अपने उस पंजे को हर समय ज़मीन से अलग रखना पड़ता था। जब स्तेपानोव्ना

कुछ खाना लेकर अन्दर आयी तो उसने उसकी अगवानी करके उसे ꣳ
कर दिया और उसका दिया हुआ खाना भी सचमुच खा लिया।

जब अभी उम्मीद बाक़ी है तो वह खाना क्यों न खाये? उसका मस्ति
उन दो जादुई शब्दों: "खोजो" और "इन्तज़ार करो" में सक्रिय ꣳ

लेकिन वह स्तेपानोव्ना से कितना ही क्यों न कहता, उसे कितना
परेशान क्यों न करता, वह उसे बाहर जाने ही नहीं देती थी (तुम
ही में रहो—तुम बीमार हो)। लेकिन अन्त में, वह यह समझ गयी
बीम एक जीवित प्राणी है और बाहर जाने की उसकी इच्छा का समु
कारण है। अगर उसे यह मालूम होता कि कुत्तों को तीन दिन से अधि
समय तक बाहर न जाने देने से वे मूत्राशय के फट जाने अथवा क़ब्ज़
अधिकता के कारण मर भी जाते हैं तो वह आश्चर्यान्वित भी हो जा
और भयभीत भी।

स्तेपानोव्ना अपने सम्पूर्ण जीवन में सहानुभूति और सहृदयता से निर्देशि
होती रही। इससे अधिक कुछ नहीं। उसने बीम के पट्टे में एक ज़ंज
बांधी और उसे बाहर लायी। बीम लंगड़ाता हुआ उसके पीछे-पीछे च
आया। और उधर अहाते में कोने में वे दो खड़े थे: खिचड़ी बालोंवा
एक बुढ़िया और एक क्षीणकाय लंगड़ा कुत्ता।

अपने-अपने स्कूलों को जाने के लिए, विभिन्न दरवाज़ों से बच्चे दौड़
आये, लेकिन उनमें से कुछ यह पूछने के लिए रुक गये:

"दादी, बीम सिर्फ़ तीन पैरों पर क्यों चल रहा है?"

या: "हैलो बीमू, क्या तुम्हें चोट लगी है!"

लेकिन उन्हें तो अभी स्कूल जाना था। वह उनकी बड़ी ज़िम्मेदा
थी, अपने परिवार, अध्यापक और दोस्तों के प्रति उनकी प्रमुख ज़िम्मेदा
थी। इसलिए वे ज़्यादा देर तक वहां नहीं रुके, यह एक ऐसा तथ्य थ
जो स्तेपानोव्ना और बीम दोनों के लिए बहुत बड़े महत्व का था, लेकि
उस समय उन्होंने उसे नहीं समझा और, जब वे तैयार हो गये तो, चुप
चाप घर को लौट आये।

अपने ज़ीने के प्रवेशद्वार पर उनकी भेंट पल्तीतिच (पावेल तीति
रीदायेव) से हो गयी:

"अब सुनो, मामला यह है कि यह कुत्ता अच्छा कुत्ता है और देख
भाल करने के योग्य है। चूंकि उसके मालिक ने तुम्हें यह काम दिया है

इसलिए मेरी सलाह है कि तुम उसे ज़ंजीर से बांधकर रखो। तुम्हें ऐसा करना पड़ेगा। वरना वह भाग जायेगा। तुम उस पर हर समय नज़र नहीं रख सकती हो। वह दो झटकों में उस दरवाज़े के पार हो जायेगा – और तब वह गया-बीता कुत्ता बन जायेगा।"

"लेकिन इससे वह ख़ूंख़्वार हो जायेगा, बंधे कुत्ते हमेशा ख़ूंख़्वार हो जाते हैं।"

"तुम नादान हो, इस बात को गांठ-बांध लो कि ख़ूंख़्वार हो या न हो, वह जिन्दा तो रहेगा। उसे ज़ंजीर से बांधकर रखो – यह तुम्हारे लिए मेरा निर्देश है। ज़ंजीर से बांधके। तुम्हें यह करना ही है – उसकी अपनी भलाई के लिए।"

स्तेपानोव्ना अध्यक्ष की इच्छाओं की अवहेलना नहीं कर सकी, इसलिए उसने एक रूबल दस कोपेक में कुत्ते को बांधने की ज़ंजीर ख़रीदी और बीम को उसी ज़ंजीर से बांधकर अहाते में लायी। लेकिन घर आकर वह ज़ंजीर खोल देती और उसे एक कोने में फेंक देती। चतुर बुढ़िया दादी स्तेपानोव्ना – वह जानती थी कि किसी की बात रखते हुए भी उसका उल्लंघन कैसे किया जाता है। लेकिन, जैसा कि हुआ, वह बीम को केवल दो या तीन बार ही घुमाने ले गयी और इसका कारण स्वयं बीम से सम्बन्धित एक असाधारण घटना थी।

नवां अध्याय

एक नन्हा दोस्त, झूठी अफ़वाहें, बीम पर गुप्त दोषारोपण और लेखक का विषयान्तरण

बच्चों के स्कूल पहुंचते ही बात चल पड़ी कि उनके अहाते में एक कुत्ता है जो पहले चारों पैरों से चलता था और अब तीन पैरों पर लंगड़ाता चल रहा है। पहले वह ख़ूब सजीला और बना-संवरा रहता था और अब सींक जैसा पतला हो गया है। उसके बाल उलझ गये हैं और उनमें मैल के

थक्के जम गये हैं, पहले वह खुश रहता था और अब बिल्कुल उदास और उसका नाम बीम है। उसके मालिक को आपरेशन के लिए मास्व भेज दिया गया है और स्तेपानोव्ना दादी उस कुत्ते को घुमाने ले जा रह हैं।

स्कूल के कर्मचारियों में से एक शिक्षा-अध्ययन अध्यापक के कान भी यह बात आ पहुंची, अगले दिन उसने ज़िला शिक्षाविदों की सभा एक दिलचस्प तक़रीर की। उसका सार-संक्षेप लगभग इस प्रकार था हमारी उदीयमान पीढ़ी अति उत्तम है, यह पीढ़ी "करुणा के विचार को ग्रहण कर रही है, यह एक ऐसी अवधारणा है जिसमें पृथ्वी के समस्त जीवजंतुओं के प्रति सहानुभूति की भावना भी शामिल है।" उसने कहा कि यह बात एक स्कूल-विशेष में काले कानवाले अज्ञात कुत्ते, जिसके मालिक को एक आपरेशन के कारण बहुत लम्बे अर्से तक के लिए दूर रहना था, के प्रति गहन (जी हां, ग़ौर कीजियेगा, गहन) दिलचस्पी से सिद्ध हो जाती है।

ज़िले के सारे स्कूलों के अध्यापकों ने, लगातार तीन दिन तक, बच्चों से इस आशय की बातें कीं कि जानवरों के प्रति करुणा होनी चाहिए और उन्हें बताया कि फलां-फलां नम्बर के स्कूलवाले एक लंगड़े कुत्ते के साथ कैसा स्नेहपूर्ण बर्ताव कर रहे हैं। लेकिन इनमें से कुछ अधिक शंकालु अध्यापकों ने यह चेतावनी भी दी कि यह देखने की सावधानी बरतना ज़रूरी है कि वह विचाराधीन कुत्ता कहीं पागल तो नहीं है। जिस स्कूल में तोलिक पढ़ता था उसकी अध्यापिका ने भी इस घटना के बारे में बतलाया। लेकिन उसके बताने का तरीक़ा सरल और अनौपचारिक था।

"ज़रा सोचो बच्चो," अध्यापिका ने कहा। "किसी निर्दयी ने एक कुत्ते की टांग काट दी।" (जब से यह कहानी अध्यापकों के हत्थे पड़ी उसमें थोड़े से बदलाव हो गये थे–आख़िर अफ़वाहें तो अफ़वाहें ही होती हैं)। "एक सोवियत व्यक्ति के लिए यह काम करना कितना घृणास्पद है! यह ग़रीब श्यामकर्णी कुत्ता अब जीवनभर के लिए पंगु हो जायेगा।" उसने अपनी नोटबुक में वह पन्ना खोज निकाला जिसकी उसे ज़रूरत थी, और आगे कहा, "हां, तो बच्चो, मैं चाहती हूं कि तुम एक निबन्ध लिखो, निबन्ध छोटा सा ही होगा और उसमें तुम 'मुझे जानवरों से प्यार है' विषय पर जो कुछ महसूस करते हो, लिखोगे। तुम मुक्त भाव से,

बग़ैर उलझन में पड़े लिख सको, इसलिए तुम्हें प्रश्नों के रूप में एक ख़ाका दिया जा रहा है।"

अपनी नोटबुक में देखते हुए, उसने ब्लैक बोर्ड में लिखा :

१. तुम्हारे कुत्ते का नाम क्या है?

२. वह सफ़ेद है या काला है अथवा कोई अन्य रंग का है?

३. क्या उसके कान खड़े हैं या नीचे को लटके हुए?

४. उसकी दुम है या केवल ठूंठ है?

५. उसकी नस्ल क्या है, बशर्ते घर में कोई जानता हो?

६. वह स्नेहशील है या कटखना?

७. क्या तुम उससे खेलते हो, यदि हो तो किस प्रकार?

८. क्या वह काटता है? अगर ऐसा है, तो किसे?

९. क्या मां-बाप उसे प्यार करते हैं?

१०. तुम्हें अपने कुत्ते से प्यार क्यों है?

११. अन्य जानवरों (मुर्ग़ियों, बत्तख़ों, भेड़ों, हिरनों, चूहों आदि!) के प्रति तुम्हारा क्या दृष्टिकोण है?

१२. क्या तुमने बारहसिंगा देखा है?

१३. लोग गायों को क्यों दुहते हैं, पर बारहसिंगों को नहीं (घरेलू और जंगली जानवर)?

१४. क्या जानवरों को प्यार करना चाहिए?

तोलिक इस क़दर उत्तेजित था कि वह, लिखना तो दूर, शांति से बैठ भी नहीं सक रहा था। आम ख़ामोशी के बीच वह सहसा बोला :

"आन्ना पाव्लोव्ना, इस काले कानवाले कुत्ते का नाम क्या है?"

अध्यापिका ने अपनी नोटबुक देखी और जवाब दिया :

"बेम।"

"बीम!" वह सारे क्लास को चौंकाता हुआ चिल्लाया। "आन्ना पाव्लोव्ना, कृपया मुझे जाने दीजिये। बीम को खोजने दीजिये, मैं उसे जानता हूं, वह ऐसा ही कुत्ता है। कृपया!" उसने अत्यंत करुण स्वर में कहा और वह, कृतज्ञतावश, उसके हाथ भी चूमने के लिए तैयार था।

"तोलिक!" उसने कठोर स्वर में उसे सम्बोधित करते हुए कहा। "तुम बाकी सारे क्लास को काम नहीं करने दे रहे हो। ध्यान लगाओ और अपना निबन्ध लिखो।"

तोलिक फिर बैठ गया। जब उसने अपने कोरे काग़ज़ को देखा उसे वहां बीम के सिवा और कुछ नहीं दिखायी दिया। वह अन्य ल के साथ काम करता हुआ दिखायी दे रहा था लेकिन उसने जो कुछ ि था वह केवल शीर्षक था : 'मुझे जानवरों से प्यार है'। लेकिन घंटी ब के ठीक पहले उसने जल्दी-जल्दी जवाब लिखने शुरू कर दिये। वह बजने के बाद भी रुका रहा और आन्ना पाव्लोव्ना, जैसा कि वह मामलों में आम तौर से किया करती थी, अपनी डेस्क पर धैर्य से प्रतीक्षा करती रही। आख़िरकार तोलिक ने, जो दृष्टतः अकारण ही फुलाये व असंतुष्ट दिखायी देता था, अपना निबन्ध उसे दिया और क से बाहर निकल गया।

उसका निबन्ध आख़िर में मिला था, इसलिए आन्ना पाव्लोव्ना सबसे पहले उसी को पढ़ा (क्योंकि ढेर में वही सबसे ऊपर था)।

तोलिक ने सवालों के सही उत्तर ही नहीं दिये बल्कि अधिक ही ि डाला। और उसकी रचना में कविता लिखने का भी एक प्रयत्न वि गया था, वैसे यह सही था कि उसका एक अंश, स्पष्टतः, एक लोक गीत से लिया गया था जिसे सभी स्कूली लड़के जानते हैं। उसका निब इस प्रकार था :

"मुझे जानवरों से प्यार है"

"उसका नाम बीम है। वह सफ़ेद है और उसका एक कान काला है उसके कान मुलायम व लटके हुए हैं। उसकी एक ठीक-ठाक सी पूंछ है वह साधारण नहीं एक शिकारी नस्ल का कुत्ता है। वह स्नेहशील है, एक बार उसके साथ खेला, लेकिन एक चिड़चिड़ा आदमी आया और उ बांधकर ले गया। वह दुष्ट बूढ़ा और ख़ब्ती था। बीम काटता नहीं है मां और पिता जी उसे पसन्द नहीं करते। वे कर भी नहीं सकते। व किसी और का है। उसके गले के पट्टे में पीतल की एक चकती है। मैं न जानता कि मैं उसे क्यों पसन्द करता हूं; मैं समझता हूं कि मैं, बस करता हूं। मुझे मुर्गियां, बत्तखें, भेड़ें, हिरन और चूहे अच्छे लगते है लेकिन मैं चूहों से डरता हूं। मैंने बारहसिंगा अभी तक नहीं देखा है वे शहर में नहीं रहते। लोग गायों को दुहते हैं ताकि दूकानों में दूध

ग्रौर योजना की पूर्ति हो।" ("वह वस्तुत: कुछ-कुछ ग्रविकसित बुद्धि का है," ग्रान्ना पाव्लोव्ना ने मन ही मन सोचा)। "वे बारहसिंगे को कभी नही दुहते क्योंकि दूकानों में उसका दूध नहीं होता ग्रौर उसकी किसी को ज़रूरत नहीं है। जानवरों को प्यार करना चाहिए ग्रौर कुत्ता ग्रादमी का सबसे ग्रच्छा दोस्त होता है। मैंने ग्रभी-ग्रभी एक गीत रचा है:

ग्रच्छा है बारहसिंगा,
चूहा भी बुरा नहीं,
ग्रच्छा होता हिरना भी,
बेहतर ही है कुत्ता लेकिन।

मैं गिनी-पिग भी पाला करता था, लेकिन मां ने कहा कि वे फ़्लैट में बड़ी दुर्गन्ध फैलाते हैं ग्रौर उन्हें एक ऐसी लड़की को दे दिया जिसे मैं जानता नहीं था। लेकिन चाहे जो हो, मैं बीम को खोजने जा रहा हूं ग्रौर इसके बावजूद जा रहा हूं कि मुझे कक्षा से बाहर जाने की ग्रनुमति नहीं दी गयी। मैंने कहा है मैं उसे खोज लूंगा ग्रौर ग्रवश्य खोज लूंगा। ग्रान्ना पाव्लोव्ना ग्राप भी मुझे नहीं रोक सकेंगी।"

ग्रान्ना पाव्लोव्ना की ग्रांखें कपार पर जा चढ़ीं। यह लड़का तो सारी मर्यादाएं तोड़ गया। ख़ुदा जाने, ग्रब उसका क्या इरादा है। यह "स्थिर जल में ..." लेकिन वह एक सामान्य ग्रध्यापिका मात्र थी, इसलिए उनसे इस ग्रंतिम विचार को ग्रागे नहीं बढ़ाया, इसकी बजाय उसने तोलिक को ख़राब ग्रंक दे दिया।

हां, कभी-कभी ऐसा होता है। ग्रान्ना पाव्लोव्ना ग्रपने व्यवसाय की सम्मानित सदस्या थीं। उसके शिक्षार्थी उसे पसन्द करते ग्रौर उसकी ग्राज्ञा का पालन करते दिखायी पड़ते थे, इसके एक दो ऐसे ग्रपवाद ज़रूर थे जिन्हें सभी स्कूलों को बर्दाश्त करना ही पड़ता है। शिक्षा बड़ा ही पेचीदा मामला है, बड़ा ही पेचीदा। इसलिए, मैं समझता हूं कि तोलिक ने इसी कारण से ग्रपना निबन्ध, जो उसका पहला निबन्ध था, इस तरह से लिखा; यह काम जानबूझकर नहीं बल्कि महज़ एक ग्रजान-ग्रबूझ भावना से किया गया था। क्योंकि, ज़ाहिर था कि प्रश्नों की उस तालिका में गिनी-पिग ग्रथवा ग्रान्ना पाव्लोव्ना के बारे में कुछ भी नहीं था। हो सकता है कि जब वह बड़ा होगा तो ग्रपने बचपन की इस ग़लती को समझे, लेकिन

अभी नहीं। वह तो आधी छुट्टी के बाद कक्षा में वापस भी नहीं लौ
और यह आशंकित होने का असली कारण था।

तोलिक अपने नये ज़िले से उस पुराने ज़िले की ओर गया जहां वह स
नम्बर... स्थित था, वहां उसने बच्चों से सारी बातें पूछीं: उन्होंने
को कब देखा, वह कहां रहता था। उसे यह जानकर प्रसन्नता हुई
उसकी टांग कटी नहीं है, वह सिर्फ़ पंगु भर हुआ है। वे साथ-स
घर गये।

उसने घंटी बजायी। बीम ने एक प्रश्न से उत्तर दिया: "भौं! (व
है?)"

"यह मैं हूं – तोलिक!" उसने सुना कि बीम ने दरवाज़े में नाक ल
कर ज़ोर से सूंघा। "बीम, यह मैं हूं – तोलिक।"

बीम ने कूं-कूं की और भौंकने लगा: "हैलो, तोलिक!"

और वह लड़का समझ गया, कुक्कुर-भाषा का अपना पहला वा
समझ गया।

कुत्ते और लड़के के बीच होनेवाली इस बातचीत की आवाज़ सुनक
स्तेपानोव्ना आ गयी।

"लड़के, क्या है?"

"मैं बीम को देखने आया हूं।"

स्पष्टीकरणों में ज़रा भी वक़्त नहीं लगा और वे एक साथ भीतर गये

तोलिक मुश्किल से ही बीम को पहचान सका। उसकी पसलियां सा
नज़र आ रही थीं, बाल मिट्टी में सने और उलझे हुए थे। तथा वह ती
पैरों पर लंगड़ा रहा था – क्या यह बीम हो सकता है? लेकिन उसक
आंखों ने, उन चतुर और स्नेहमयी आंखों ने कहा: "मैं बीम हूं।
तोलिक नीचे बैठ गया और उसने कुत्ते को अपनी इच्छानुसार आचर
करने दिया। बीम ने उसे भली-भांति सूंघा, उसकी जैकेट, ठोड़ी औ
हाथों को चाटा और अंत में अपने चेहरे को उसके जूतों पर टिका दिया
जान पड़ता था कि वह आश्वस्त हो गया है।

स्तेपानोव्ना ने इस विचित्र लड़के को वे सब बातें बतायीं जो वह बी
और इवान इवानिच के बारे में जानती थी, लेकिन वह यह नहीं ब
सकी कि उसका पंजा कैसे और किसके द्वारा कुचला गया।

"यह भाग्य की बात थी," उसने कहा, "एक कुत्ते का भी भाग
पहले से ही तय होता है।"

वह उस लड़के से अपनी उम्र के बारे में डींग हांके बग़ैर तथा जीवन के बारे में अपने विराट अनुभव से बेख़बर शांति से, उदासी से बातें करती रही, उसने बराबरी के स्तर से बातें कीं।

"उसके नाम का बिल्ला कहां गया?" तोलिक ने पूछा। "उसके गले में हुआ करता था। मैंने उसे पढ़ा है।"

"हां, उसके गले में था। तुम्हारा नाम क्या है?"

"तोलिक।"

"यह बहुत अच्छा नाम है ... हां, उसके नाम का बिल्ला था। उसे ज़रूर किसी ने निकाल लिया होगा।"

तोलिक ने क्षणभर विचार किया। "मैं जानता हूं वह कौन था," उसने सोचा। "यह करतूत उसी स्लेटी आदमी की थी।" लेकिन उसने यह बात प्रकट रूप में नहीं कही, क्योंकि उसे अभी पक्का यक़ीन नहीं था। "हे भगवान, मैं इसका क्या करूं?" स्तेपानोव्ना ने बीम की तरफ़ देखते हुए कहा, "यह कैसी खेद की बात है, लेकिन मैं नहीं जानती कि करूं क्या। उसे डाक्टर को दिखाना ही चाहिए।"

"उसे जानवरों के डाक्टर को दिखाना चाहिए," तोलिक ने श्रेष्ठता का अनुभव किये बग़ैर उसके कथन में संशोधन किया और फिर उसके प्रश्न का उत्तर पेश किया, "मैं स्कूल के बाद रोज़ आऊंगा और उसे घुमाने ले जाऊंगा। क्या मैं ऐसा कर सकता हूं?"

इस तरह, बीम को एक नया नन्हा दोस्त मिल गया। शाम का खाना खाने के बाद तोलिक हर दिन नगर के आरपार चलकर बीम को देखने आता, उसे अहाते में घुमाने ले जाता, सड़कों और पार्क की सैर कराता और अन्य बच्चों के पूर्ण संतोष के साथ घोषणा करता:

"कुत्ता मनुष्य का सबसे अच्छा दोस्त है।"

और इसका अर्थ उससे नितांत भिन्न था जिसे वह अपनी अनजानी भावना के साथ लिखे उस निबन्ध में कहने की कोशिश कर रहा था।

लेकिन तोलिक ने एक बात करने का फ़ैसला कर लिया था। वह उस स्लेटी आदमी का पता लगायेगा और उसके साथ बातें करेगा। वह अपने ज़िले में उस आदमी की खोज में लगा रहा और एक दिन दोनों का आमना-सामना हो गया।

"माफ़ कीजियेगा," तोलिक ने अपनी टोपी की ओरी को पीछे

धकेलते हुए तथा अपने हाथों को पीठ की तरफ़ करते हुए कहा, "लेकि आपने बीम के नाम का बिल्ला क्यों ले लिया?"

"क्या है यह? तू पागल तो नहीं है रे, छोकरे?" उस आदमी प्रतिकार करते हुए कहा।

"जब आप उसे बांधकर ले गये तो उसके पट्टे में एक बिल्ला था उस घटना को देखनेवाला मैं ही अकेला नहीं हूं।"

"और जब मैंने उसे जाने दिया तो वह बिल्ला तब भी वहीं था उसने मुझे काट दिया था! उसे कौन नहीं जाने देगा—वह तो भेड़ि की तरह काटता है।"

"आप सच नहीं बोल रहे हैं। बीम स्नेहशील कुत्ता है।"

"सच नहीं बोल रहा हूं? अरे दुष्ट छोकरे। तेरे मां-बाप कहां हैं? बोल, कहां हैं?"

उस स्लेटिये ने सत्य का अंश भर बताया था और सिर्फ़ एक अंश; और यह मुद्दे की बात थी। जब उसने यह कहा था कि बीम ने उसे काटा था तो वह सच कह रहा था, इसलिए, अनुमानतः, उसे क्रोधित होने का पूरा अधिकार था। लेकिन जब उसने यह कहा कि उसने बीम के नाम का बिल्ला नहीं निकाला तो वह झूठ बोल रहा था। वह इस तथ्य को मुसीबत का कारण नहीं मानता था कि उसने उसके नाम के बिल्ले को निकाल लिया था बल्कि बीम के काटने को इसका कारण मानता था। और अपनी बात को सिद्ध करने की चेष्टा में कारण और परिणाम के सम्बन्ध को उलट-पलट कर देना एक उपयोगी चाल है। उसे पक्का यक़ीन था कि वह सच बोल रहा है और इस तथ्य से उसका कोई लेना-देना नहीं था कि यह सम्पूर्ण सत्य नहीं था। कौन कब पता लगा सकेगा कि कौन कारण था और कौन परिणाम? वह सबके लिए रहस्य ही बना रहेगा। लेकिन तोलिक का दृढ़ विश्वास था कि बीम उस स्लेटिये आदमी को नहीं काट सकता क्योंकि वह स्लेटिया भी तो आख़िर मनुष्य ही था, कोई ख़रगोश, लोमड़ी या कुछ और तो था नहीं। इसलिए उसने अपने आरोप को दोहरा दिया:

"आप मुझे बेवकूफ़ बनाने की कोशिश कर रहे हैं। आपको शर्म आनी चाहिए।"

"निकल जाओ," वह आदमी भौंका और अपने पिछवाड़े को बाहर

की ओर उचकाये लंगड़ाता हुआ चल दिया (बीम ने गहरे दांत गड़ाये होंगे)।

नितांत आश्चर्य की बात है कि जब एक पक्ष सिर्फ़ आधा सत्य बताता है और दूसरा शेष आधे के बारे में नहीं जानता तो दोनों पक्ष कितने सही हो सकते हैं।

स्लेटिया आदमी चला गया। वह सोच रहा था कि यह तथा वे दूसरे चंट छोकरे मिलीशिया में जाकर रिपोर्ट कर देंगे और वे आकर मेरे संग्रह को देख लेंगे... नहीं, मैं अपने ५०० वें को, अपने पंचशतीय को नहीं छोड़ूंगा। यह अन्य प्रकार के बीस बैजों के बराबर है। तो उसने फ़ैसला किया कि बचाव का सबसे अच्छा तरीक़ा आक्रमण है।

घर पहुंचने पर उसने एक बयान लिखा और उसे जानवरों के डाक्टर के पास ले गया।

"... एक कुत्ता (संकर नस्ल का सेटर, जिसका एक कान काला था) भागता जा रहा था और मेरे पास से गुज़रते समय उसने मुझे काट दिया और मेरे शरीर के एक विशिष्ट अंग का मांस नोच ले गया... उसकी दुम और मुंह ज़मीन की तरफ़ थे और वह लाल-लाल आंखें किये पागल कुत्ते की तरह दौड़ रहा था ... या तो उसे पकड़कर नष्ट किया जाय तथा इस उद्देश्य के वास्ते आवारा कुत्तों को पकड़ने के लिए नियुक्त लोगों को सूचित किया जाये या फिर मैं आपके नौकरशाही तरीक़ों और निकम्मेपन के बारे में उच्चतर अधिकारियों से आपकी शिकायत करूंगा ..." आदि आदि।

जानवरों का डाक्टर शंकित हो गया।

"तुम्हें कहां काटा? कब? किधर? किन परिस्थितियों में?"

स्लेटिये आदमी ने कुशल कथा वाचक की तरह अपनी कहानी सुनायी, लेकिन उसमें कल्पनाशीलता काफ़ी नहीं थी। डाक्टर को जो कुछ जानना था वह सब उस आदमी के लिखित बयान में मौजूद था: उसे सड़क पर एक आवारा कुत्ते ने काट दिया था! उसने टेलिफ़ोन उठाया और टीका लगानेवाले ठिकाने पर मौजूद ड्यूटी डाक्टर से सम्पर्क किया।

कुछ ही मिनटों में एक महिला डाक्टर कार द्वारा वहां आ पहुंची, उसने स्लेटिये आदमी से अपना पैंट उतारने को कहा और काटे हुए भाग पर नज़र डाली और पूछा:

"इसे कितने दिन हो गये हैं ?"

"क़रीब दस दिन," उस अनिच्छुक रोगी ने उत्तर दिया।

"तुम चार दिन के अन्दर पागल हो जाओगे," डाक्टर ने प
तौर पर ऐलान कर दिया, लेकिन जब इस वाक्य को सुनकर रोगी
आशंकित होने के कोई चिन्ह प्रकट नहीं किये तो वह, सहसा, संदेह
पड़ गयी। "तुम्हें बग़ैर नहाये कितने महीने हो गये ?"

"काटे जाने के तीन शनिवार पहले मैंने नहाया था। मुझे नहाने
पानी से ज़हरबाद होने का डर था ... यह एक खुला घाव है।"

इस क्षण पर जानवरों के डाक्टर ने हस्तक्षेप किया।

"हां, यह निश्चय ही, एक टेलिविज़न पट की तरह तुम्हारी अ
ताकता है।" (वह ज़रा मज़ाक़िया था, वह जानवरों का ख़ुशमिज़
डाक्टर)।

काटे हुए घाव पर एक और नज़र डालने के बाद महिला डाक
बोली :

"तुमने ऐसी लापरवाही की कैसे ? चलो, फ़ौरन टीका लगाने
ठिकाने पर आओ ! हम तुम्हें पागलपन से बचाने के लिए अभी, इ
वक़्त इंजेक्शन लगाने जा रहे हैं ... इंजेक्शन पेट में लगेंगे और छः मह
तक की अवधि में लगाये जायेंगे।"

"आप ज़रूर सनकी होंगे," स्लेटिये आदमी ने हूंक लगायी।

"अरे नहीं, ऐसा नहीं है," जानवरों के डाक्टर ने शांतिपूर्वक कह
"अगर तुम चुपचाप नहीं चलोगे तो हमें बल-प्रयोग करना पड़ेगा। अग
तुम अपने अज्ञान पर अड़े रहोगे तो तुम्हें घर से पकड़ बुलाने के लि
हम मिलीशिया को बुलायेंगे।"

"मैं, और अज्ञानी ? !" स्लेटिये ने भैंस की सी आवाज़ में कह
"तुम जानते हो मैं कहां काम करता था ? !"

"उसका हमसे कोई वास्ता नहीं," डाक्टर ने उत्तर दिया। "तु
इंजेक्शन अवश्य लगेंगे," उसने पहले से भी ज़्यादा सख़्ती से कहा।

तो भई, इस रिपोर्ट करनेवाले को नियमित दिनों और नियमित सम
पर इंजेक्शन लगवाने जाना पड़ा और वे इंजेक्शन हंसी-खेल नहीं थे
हाय रे बदक़िस्मती – पिछवाड़े कुत्ते के दांत और पेट में डाक्टर की सुई

अब इसके बाद क्या हुआ, वह भी सुनिये।

यह हम नहीं बता सकते कि काकी से उसकी भेंट कैसे हुई। (हो सकता है कि वे एक दूसरे को लम्बे अर्से से जानते हों—ऐसा हो सकता है)। उस दिन वे सड़क में मिले। जिस तरह एक मछलीमार दूसरे मछलीमार की तरफ़, एक बेवकूफ़ दूसरे बेवकूफ़ की तरफ़ और एक निंदक दूसरे निंदक की तरफ़ आकृष्ट होता है ठीक उसी तरह ऐसे लोग भी सहज बुद्धि से एक दूसरे के प्रति आकृष्ट हो जाते हैं। तो वे मिले और बात करने लगे, बात ही बात में यह बात बाहर आयी कि वह इतने भौंड़े ढंग से इसलिए लंगड़ा रहा है क्योंकि उसे एक काले कानवाले कुत्ते ने काट लिया था।

"मैं उस कुत्ते को जानती हूं! यक़ीन मानो, मैं जानती हूं!" काकी ने ज़ोर-ज़ोर से कहा, "उसने मुझे भी काटा था।"

स्लेटिया आदमी जानता था कि वह झूठ बोल रही है, फिर भी वह बोला:

"मैंने उस जानवर को पकड़वाने और नष्ट करवाने के लिए इस मामले पर एक व्यक्तिगत रिपोर्ट की। मैंने इसे अपना कर्तव्य समझा।"

"और आपने बिल्कुल सही काम किया!" काकी ने तत्परता से उसका उत्साह बढ़ाया।

"बेहतर हो कि तुम भी एक रिपोर्ट लिखो, बशर्ते कि तुम एक ज़िम्मेदार व्यक्ति हो तो।"

"बेशक, मैं लिखूंगी। वे मुझे टाल नहीं सकते।"

और उस दिन वह अपना बयान लेकर जानवरों के उसी अस्पताल में पहुंची। उधर वह स्लेटिया आदमी सोच रहा था (मन ही मन): "तुम झूठ बोलती रही हो, इसलिए तुम्हारे पेट में भी डाक्टरी ख़ुराक पहुंचे तो ठीक रहेगा।" जब दूसरे लोग झूठ बोलते थे तो उसे अच्छा नहीं लगता था, और उसे इस तथ्य पर घमंड था। और हां, काकी भी ख़ूब पकड़ी गयी। वह चीख़ी-चिल्लायी, गाली-ढाली देती रही और जहां ठीक समझा झूठ बोलती गयी, ख़ास तौर से कुत्ते के काटने के घाव के बहुत बड़े न होने तथा उसके ठीक होने के बारे में। उसने अपने हाथ में एक पुराने घाव का चिन्ह दिखाया और गुहार मचायी कि वह एक ईमानदार सोवियत नारी है, उसने समुदाय के हित में अपना बयान दिया है और अब उसे पेट में सुई भोंककर इसके लिए दण्ड दिया जायेगा।

किसी विचित्र कारण से उन्होंने उसका पता लेकर उसे जाने दि
और कहा कि वे जांच करने के लिए उस स्थल पर आयेंगे। इन सा
घटनाओं से काकी को बीम के प्रति घोर घृणा हो गयी और उस स्लीि
आदमी से भी, पर इस मामले में उसकी घृणा इस तथ्य के बावजूद उत
तीव्र नहीं थी कि उसे संकट में फंसानेवाला वही था।

दो दिन बाद, इन दो शिकायतों के संदर्भ में क्षेत्रीय समाचारपत्र
एक सूचना प्रकाशित हुई :

"यह विश्वास करने का कारण है कि संकर नस्ल का एक सेट
कुत्ता, जिसका एक कान काला है, सड़क में लोगों को काट रहा है
जो कोई उस कुत्ते का अता-पता जानता हो या जिन लोगों को उसने का
हो, उनसे निवेदन किया जाता है कि वे निम्नांकित पते पर रिपोर्ट करें .
ताकि विश्लेषण तथा सम्भव परिणामों की छानबीन के उद्देश्य से उस कु
को पकड़ा जा सके। नागरिको! अपनी और अन्य लोगों की तन्दुरुस्ती व
हिफ़ाज़त कीजिये। ख़ामोश मत रहिये ..." आदि।

शीघ्र ही पाठकों के पत्रों का आना प्रारम्भ हो गया। उनमें से ए
पत्र इस प्रकार था :

"... (तारीख़, महीना) ... एक कुत्ता स्टेशन की दिशा में दौ
रहा था (संकर नस्ल का सेटर, एक कान काला)। वह, स्पष्टतः
यह नहीं जानता था कि वह क्या कर रहा है, बस, आगे की ओर दौड़
चला जा रहा था; स्वस्थ कुत्ते इस तरह नहीं दौड़ते—सीधे या एक चौर
के आरपार तिरछे; वे रास्ते की बाधाओं या पड़ी हुई वस्तुओं के गिर
चक्कर लगाकर घूमते हुए जाते हैं। उस कुत्ते की दुम नीचे थी और सिर
भी, सीधे नीचे, झुका हुआ था। ऊपर चर्चित कुत्ता (संकर नस्ल का
सेटर, एक कान काला) बेहद ख़तरनाक है और सोवियत संघ के किसी
भी नागरिक को या उन विदेशी पर्यटकों को भी काट सकता है जो यहां
ख़ासी तादाद में हैं। उसे पकड़ा जाये आपके समाचारपत्र, जिसका हम
सब सम्मान करते हैं, में प्रकाशित सूचना में प्रस्तावित किसी भी तरह
की छानबीन के बग़ैर उसे पकड़ और नष्ट कर दिया जाये।"

इस पिटिशन के नीचे बारह हस्ताक्षर थे।

इसके अलावा और भी चिट्ठियां थीं (इतनी अधिक कि सबकी चर्चा
नहीं की जा सकती)। मसलन : "... ठीक वैसा ही कुत्ता जैसा कि आपने

लिखा है, लेकिन काले कान के बग़ैर, ठीक वैसे ही ... सीधा दौड़ रहा था।" या : "शहर कुत्तों से भरा है और यह बताना असम्भव है कि उनमें से किसे पागलपन का रोग है।" या : "वह कुत्ता किसी रोग से ग्रस्त नहीं है, तुम, जानवरों के डाक्टर, ख़ुद पागलपन के रोग से ग्रस्त हो।" या : "यदि क्षेत्रीय कार्यकारी समिति आनेवाले कई वर्षों तक के लिए समुचित पैमाने पर कुत्तों के उन्मूलन की व्यवस्था नहीं कर सकती तो देश का क्या होगा, साथी सम्पादक? कहां गयी योजना? कहां गयी कारगर आलोचना और तुम इस पर ध्यान क्यों नहीं देते? हम जानते हैं कि रोटी कैसे पकायी जाती है, लेकिन जब श्रमजीवी लोगों के स्वास्थ्य की रक्षा का मामला आता है तो हममें कमियां ही कमियां दिखायी पड़ती हैं। मैं एक ईमानदार व्यक्ति हूं और मैं हमेशा लोगों के मुंह के सामने सच कह देता हूं, मैं किसी से डरता भी नहीं। इसलिए जो मैंने कहा है उस पर ध्यान दो। मेरा धैर्य चुक गया है; मैं लिखता जाता हूं पर नतीजा होता है सिफ़र।"

ख़ैर, चिट्ठियां इतनी अधिक थीं कि एक बहस छिड़ गयी और इस बहस के फलस्वरूप एक सम्पादकीय छपकर सामने आया—'घर में कुत्ता' शीर्षक से लिखे इस सम्पादकीय में शिक्षा-सिद्धान्त के एक प्रवक्ता के पत्र को उद्धृत किया गया था। यह प्रवक्ता महोदय, स्पष्टतः कुत्तों से घृणा करते थे। वह कुत्तों से घृणा करनेवाला क्यों बना यह समझना इतना आसान नहीं था, लेकिन उसके दिये हुए किसी भी वक्तव्य का युवा पीढ़ी पर ज़बरदस्त असर पड़ने की संम्भावना थी। यदि युवा पीढ़ी उसके संदेश को ठीक वैसा ही समझती जैसा कि उसका आशय था तो वह श्रमजीवी लोगों के स्वास्थ्य की रक्षार्थ बचपन से ही सारे कुत्तों को क़त्ल करती जाती और जहां तक कुत्ते पालनेवालों का सम्बन्ध था, वे सब जमा हो जाते और सामूहिक रूप से चिल्लाते कि वह "निकम्मा" है (प्रवक्ता की शब्दावली में यह शब्द श्वान-प्रेमी का पर्याय था) और "मल-निर्माता" (प्रवक्ता का गढ़ा हुआ एक और शब्द) है।

जैसा कि मैं पहले कह चुका हूं, पत्र इतने अधिक थे उन सबको उद्धृत नहीं किया जा सकता है, लेकिन समापनार्थ एक का हवाला और दिया जा सकता है। वह सिर्फ़ दो पंक्तियों में और एक प्रश्न के रूप में था। "अगर उसके दोनों कान काले हों तो क्या उस पर प्रहार करना चाहिए?" यह पत्र ऐसे व्यावहारिक विचारोंवाले पाठक का था जिसे

दुनिया की अमूर्त संकल्पनाओं से दूर-दूर का भी वास्ता नहीं था। पर
भी, सम्पादकीय में या किसी और पृष्ठ में इसका उद्धरण नहीं दिया ग
था। वास्तव में इसका उत्तर दिया ही नही गया। एक व्यक्ति जि
अपनी सेवाएं प्रदान करने की पेशकश की है उसकी भावनाओं के प्र
सम्मान का ऐसा अभाव!

हां, ज़िम्मेदार पाठक अभी भी हैं, भला हो नियति का उनकी न
अभी लुप्त नहीं हुई है। इस तरह का पाठक अपने विचारों को पेश क
और किसी अन्य के विचारों की निन्दा करने का, अवसर कभी नहीं चूक
है। और ऐसा ही हमारे मामले में भी था। बीम को सारे नगर में ढू
जा रहा था, एक कुत्ते को बदनाम कर दिया गया था। किस लिए
हां यह सच था कि उसने एक आदमी को काटा, लेकिन उन परिस्थिति
का वर्णन और यह ख़्याल कि उसे पागलपन का रोग था बिल्कुल झूठ था
सारी बातों को उलझा देने के लिए चिंतातुर पाठक को दोष नहीं दिय
जा सकता था, क्योंकि उसे बदनामी का संदेह नहीं था और बदनामी
पैर छोटे मगर मज़बूत होते हैं।

लेकिन सम्पादक ने वक़्त पर यह तथ्य समझ लिया कि यह वाद
विवाद, जो स्वतःस्फूर्त था तथा जिसे अनुमानतः उस व्यक्ति ने शुरू किय
था जिसे काटा गया था, सीमाएं लांघने लगा है। उसने छापे के छोट
अक्षरों (ऐसे अक्षर जिन्हें ध्यान से पढ़नेवाला पाठक कभी नहीं छोड़ता
है) में एक सूचना छापने का बुद्धिमत्तापूर्ण क़दम उठाया: "काले कानवाल
कुत्ता पकड़ लिया गया है। इसलिए सम्पादक गण इस विषय पर बहस
बन्द कर रहे हैं। पांडुलिपियां वापस नहीं भेजी जायेंगी।"

यह सम्पादक थोड़ा बहुत विनोदी था, ऐसे क़िस्म का था जिसे
"जुझारू पाठक" बर्दाश्त नहीं कर सकते।

लेकिन जो कुछ उसने लिखा था वह असत्य था। बीम को किसी ने
नहीं पकड़ा था। जो दरअसल हुआ वह यह था कि स्कूल में अख़बारों
की छापी हुई बातों के बारे में सुनने के बाद तोलिक एक शाम को जानवरों
के डाक्टर से मिलने उसके घर गया। उसने घंटी बजायी और जब द्वार
खुला तो उसने कहा:

"मैं काले-कान के, बीम के पास से आया हूं।"

सारा मामला तुरन्त तय हो गया। अगले दिन तोलिक बीम के फ़्लैट

में गया और उसे तीन पैरों से चलाते हुए जानवरों के डाक्टर से उसके चिकित्सालय में मिलने गया। डाक्टर ने कुत्ते की जांच की और कहा:

"वह विचार-विमर्श झूठ और बेहूदगी का पुलिंदा है। कुत्ते में पागलपन के कोई भी लक्षण नही है, लेकिन वह बीमार है। उसे पीटा गया है तथा अंगभंग किया गया है," वह रुका और उसने एक अस्पष्ट ही आह की। "ओह, लोग!" वह बड़बड़ाया।

उसने बीम के घायल पंजे की भी जांच की, उसके पेट को भी ठोक-बजाकर देखा। पैर के लिए एक मलहम और पेट के लिए कुछ दवाएं दीं। फिर जब वह इन दो दोस्तों को विदा करने लगा तो उसने पूछा:

"नन्हे वीर, तुम्हारा नाम क्या है?"

"तोलिक।"

"तुम अच्छे लड़के हो, तोलिक। शाबाश!"

जाते-जाते बीम ने डाक्टर को धन्यवाद दिया। उससे दवाओं की गंध तो आ रही थी, लेकिन वह बीमार क़तई नहीं था। बीमारी तो दूर की बात वह हृष्ट-पुष्ट दिखनेवाला लम्बा व्यक्ति था और उसके नेत्रों से दया झलक रही थी।

"अच्छा आदमी," बीम ने अपनी हिलती हुई दुम और नज़रों से कहा: "तुम एक बहुत अच्छे आदमी हो।"

* * *

... पाठक और दोस्त! वह पाठक नहीं जो यह सोचते हैं कि उनके निन्दापूर्ण पत्रों के बग़ैर कुत्ते इस देश के प्रत्येक नागरिक, नर और नारी, को खा जायेंगे। मैं उससे नहीं बल्कि दूसरे क़िस्मवाले से अपील करता हूं। क्षमा कीजियेगा कि एक कुत्ते की इस गीतमय व आशावादी कथा में मैं कभी-कभी चन्द पृष्ठ व्यंग्य को समर्पित कर देता हूं। मुझ पर कला के नियमों को तोड़ने का आरोप मत लगाइयेगा, क्योंकि प्रत्येक लेखक के अपने ही "नियम" होते हैं। मुझ पर विभिन्न शैलियों के मिश्रण का आरोप मत लगाइयेगा, क्योंकि जीवन स्वयं ही एक मिश्रण है: भलाई और बुराई, सुख व दुख, हंसी व ग़म, सत्य व झूठ साथ-साथ रहते हैं और इतनी घनिष्ठता मे रहते हैं कि कभी-कभी उनके बीच भेद करना कठिन हो जाता है। यदि आप सहसा यह देखें कि मैं सिर्फ़ अर्ध-सत्य कह रहा हूं तो मेरी

दशा बदतर हो जायेगी। अर्ध-सत्य आधे-खाली पीपे की तरह होना और आधे-खाली तथा आधे-भरे पीपे के बीच अन्तर को सिद्ध करने प्रयत्न व्यर्थ होता है।

वास्तव में, मैं यह कहना चाहता हूं कि लिखनेवाले को हर समय ही चीज़ के बारे में नहीं, हर चीज़ के बारे में लिखना चाहिए। क्षो तो इसी में है। ज़रा एक क्षण इसके बारे में सोचिये! अगर आप भलाई के बारे में लिखते हैं तो यही वह चीज़ है जिसे बुराई चाहती यह उत्तम है; यदि आप सिर्फ़ सुख के बारे में लिखते हैं तो लोग जनों को देखना बन्द कर देंगे और अन्त में उन पर रंचमात्र भी ध्‍ नहीं देंगे, यदि आप सिर्फ़ ईमानदारी और सुन्दरता के बारे में लिखते तो जो असुन्दर है उस पर हंसना बंद कर देंगे।

लेकिन उस सारी कथनी-करनी के बावजूद मैं तो सिर्फ़ एक कुत्ते बारे में लिख रहा हूं। आनेवाले अध्यायों में इस तथ्य की पुष्टि हो जाये उनमें हमारे दोस्त बीम के साथ जो कुछ गुज़रा उसकी एक बड़ी दिलचस्प कहानी होगी, लेकिन वह, मुझे आपको आगाह कर ही चाहिए, आद्योपांत सुखद नहीं है।

दसवां अध्याय

धन की ख़ातिर

तोलिक और स्तेपानोव्ना के प्रयत्नों के फलस्वरूप बीम बेहतर हो गय दो सप्ताह के अन्दर उसके पंजे का घाव भरने लगा, वैसे वह अभी फैला-फैला सा तथा अन्य की तुलना में अधिक चौड़ा था। बीम ने पंजे पर चलने का प्रयत्न किया, परन्तु उसे पता लगा कि इस काम उसे सावधानी बरतनी होगी। वह पैर की उंगलियों पर कोई भार न डाल सका। चूंकि अब तोलिक उसके बालों में नियमित रूप से कंघी कर था इसलिए उसके बालों का आवरण काफ़ी सम्मानजनक दिखायी लगा था। लेकिन उसे हमेशा सिरदर्द की शिकायत रहती थी, उस स्लेटि आदमी ने उसे जो डण्डे मारे थे उनसे अन्दर की कोई चीज़ स्थान च्यु हो गयी थी। कभी-कभी उसे चक्कर से आने लगते और वह रुककर सोचता हुआ इंतज़ार करने लगता था कि क्या होने जा रहा है, लेकि

तभी, भला हो उसका, अगले दौरे तक के लिए उसके सिर का चकराना बन्द हो जाता था। जिस आदमी को कोई बुरी चोट लग गयी हो या किसी तरह के अन्याय से आघात लगा हो उसको भी ऐसा ही अनुभव होता है। तुरन्त नहीं बल्कि कुछ समय बाद, नितांत अनपेक्षित रूप से उसके कानों में भनभनाहट की आवाज़ आने लगती है या सिर चकराने लगता है अथवा हृदय ग़लत दिशा में उचकने सा लगता है और वह आदमी जहां का तहां खड़ा होकर डगमगाता हुआ दुखी मन से सोचता है कि उसे क्या होने जा रहा है, तब थोड़ी देर में संकट टल जाता है और कभी-कभी फिर लौटकर नहीं आता। सब कुछ होता है और सब कुछ गुज़र जाता है। मनुष्य भी एक जानवर है, लेकिन अन्य जानवरों से अधिक संवेदनशील है।

...शरद के अंतिम दिनों जब पाला पड़ने लगा था तभी बीम ने अपने चारों पैरों पर चलना शुरू किया। पर उस समय भी वह थोड़ा लंगड़ाता था—ऐसा मालूम पड़ता था वह पैर कुछ छोटा हो गया है। हां बीम पंगु था, पर उसके सिर की तकलीफ़ ठीक हो गयी लगती थी। सच है, हर बात होती है और गुज़र जाती है।

उस सब की कोई चिंता नहीं थी बशर्ते कि उसका मालिक घर आ जाता—लेकिन वह नहीं आया। और उस पत्र में कोई गंध बाक़ी नहीं रही। वह बेकार पड़े हुए किसी भी अन्य काग़ज़ की तरह एक कोने में पड़ा था। बीम ने अपने दोस्त की खोज फिर से शुरू कर दी होती, लेकिन तोलिक ने उसे बंधन मुक्त नहीं किया। उसे समाचारपत्र की उस सूचना तथा उस स्लेटिये आदमी तथा राह-चलते उन लोगों का डर था जो कभी-कभी उससे पूछते: "यह काले कानवाला पागल कुत्ता तो नहीं है, है क्या?" तोलिक बग़ैर उत्तर दिये चुपचाप आगे बढ़ जाता और फिर मुड़कर पीछे भी देखता था। वह कह सकता था: "नहीं, यह वह कुत्ता नहीं है!" और इतने से ही बात ख़त्म हो जाती। लेकिन वह झूठ बोलने तथा अपनी भावनाओं—भय, आशंकाओं, संदेहों आदि—को छुपाने में माहिर नहीं था। इसके विपरीत यह सब भावनाएं खुले आम बाहर निकल आती थीं। झूठ झूठ थी और सच सच था। यही नहीं, उसमें सत्य की अभिव्यक्ति के एक साधन-रूप में ऐसे वास्तविक व्यंग्यविनोद की भावना जागने लगी थी जिसका धारक रंचमात्र भी मुस्कराये बिना बोलता

है और यह भी सम्भव है कि बोलते वक़्त उसका अन्तर्मन आंसू ब
की अवस्था में हो। इसकी पहली अभिव्यक्ति उसका वह निबन्ध था जि
परिणामों को उस समय वह ख़ुद भी पूरी तरह से नहीं समझ पाया
वह अभी भी कोई चीज़ पूरी तरह से नहीं समझता था, उसने एक या
बातों को अभी समझना शुरू भर किया था।

तो अब एक लड़का शरत्कालीन खेलों की पैंट और पीले जूते, हल्
भूरी जैकेट और शरत्कालीन गर्म टोपी पहने हर शाम एक लंगड़े
को लेकर बाहर निकलता और हमेशा एक ही रास्ते से जाता था।
हमेशा इतना साफ़-सुथरा दिखायी देता था कि जिस किसी से भी
मिलता वह यही सोचता होगा: "यह लड़का किसी सुसंस्कृत परिवार
है।" आसपास रहनेवाले लोग देखने के आदी होने लगे थे और उनमें से
पूछा करते: "यह अच्छा सुसंस्कृत व्यवहारवाला लड़का कहां से आता है?

तोलिक अब तक अपने ही उम्र की पीले बालोंवाली लड़की लू
का घनिष्ठ मित्र बन गया था। वह अत्यंत शांत और शर्मीली लड़
स्तेपानोव्ना की पोती थी। किसी कारणवश वह घूमते समय उसे अ
साथ ले जाने में शर्माता था, लेकिन इवान इवानिच के फ़्लैट में वे कभ
कभी बीम के साथ खेलते थे और बीम निष्ठापूर्ण प्रेम तथा अटूट मनोयं
से उनका साथ देता था। स्तेपानोव्ना भी अपनी बुनायी का सामान लेक
आती और वहां बैठकर बच्चों को देखने का सुख उठाती।

एक दिन जब वे बीम के पैरों के लम्बे बालों और दुम की झाल
में कंघी कर रहे थे तो लूस्या ने पूछा:

"क्या तुम्हारे पिता, यहां, नगर में हैं?"

"हां। सुबह एक कार उन्हें काम पर ले जाने के लिए आती है औ
देर रात से पहले वापस नहीं लाती। वे बेहद थक जाते हैं। 'मेरी सा
नसें टूटने को हो रही हैं,' वे कहते हैं।"

"और तुम्हारी माता जी?"

"मां के पास वक़्त होता ही नहीं। कभी धोबन आ जाती है त
कभी दर्ज़िन और कभी फ़र्श चमकानेवाले होते हैं, तो कभी टेलिफ़ोन व
घंटी ही बजती रहती है। उन्हें तो स्कूल में माता-पिता की सभा में आ
तक का समय नहीं मिलता।"

"हां, वह उनके लिए कठिन होता होगा," लूस्या ने एक अबो

ग्राह के साथ यह बात कही, उसकी ग्रांखों में उदासी की छाया थी। उसने तोलिक से यह प्रश्न सिर्फ़ इसलिए पूछा था क्योंकि वह हमेशा ग्रपने पिता ग्रौर ग्रपनी मां के बारे में सोचा करती थी। "मेरी मां ग्रौर मेरे पिता हमेशा इतनी दूर रहते हैं। वे विमान से गये थे। इसलिए मैं ग्रौर मेरी नानी बिल्कुल ग्रकेले हैं..." फिर उसने निहायत प्रसन्नता से ग्रागे कहा, "ग्रौर हम दो रूबल रोज़ पर रहते-सहते हैं!"

"ग्रौर ईश्वर को धन्यवाद, यह बिल्कुल पर्याप्त है," स्तेपानोव्ना ने ऐलान किया। उनसे ग्राप दस बड़ी पावरोटियां ख़रीद सकते हैं। इससे ग्रधिक ग्रापको क्या चाहिए! लेकिन मुझे वह ज़माना याद ग्राता है—ग्रौर ग्राज उसके बारे में सोचने पर मुझे झुरझुरी होने लगती है—जब मुझे पावरोटी के बदले में ग्रपने पति के जूते देने पड़े थे—लूस्या, तुम्हारे नाना के जूते देने पड़े थे..."

"यह कब की बात है?" तोलिक ने भौहें उठाते हुए पूछा।

"गृहयुद्ध के दिनों की। तुम्हारे पैदा होने के बहुत समय पहले। ग्रौर मैं नहीं चाहूंगी कि तुम्हें ऐसी किसी दशा से गुज़रना पड़े।"

तोलिक लूस्या ग्रौर स्तेपानोव्ना की ग्रोर ताकता रहा। उसे यह बात रहस्यमय लगी कि मां ग्रौर बाप ग्रपने बच्चों के साथ न रहें ग्रौर कि एक ऐसा भी ज़माना था जब ग्रापको रोटी के बदले जूते देने पड़ते थे।

स्तेपानोव्ना उसकी ग्रांखों को देखकर समझ गयी कि वह क्या सोच रहा है।

"हम जा नहीं सकते। हमें फ़्लैट की देखरेख करनी होती है... वरना इसे हमसे ले लिया जायेगा... ग्रौर जब तक इवान इवानिच वापस नहीं ग्रा जाते तब तक इस फ़्लैट को भी देखते रहना है। ज़ाहिर है ऐसा तो करना ही होगा। इवान इवानिच ग्रौर हम पड़ोसी हैं।"

बीम ने स्तेपानोव्ना की तरफ़ देखा ग्रौर समझ गया कि इवान इवानिच ग्रभी भी ग्रासपास कहीं है। लेकिन कहां? उसे जाकर उसकी खोज करनी होगी। इसलिए उसने बाहर जाने देने का ग्राग्रह करना शुरू कर दिया। लेकिन उसकी इच्छा पूरी नहीं की गयी। वह द्वार के पास लेटकर प्रतीक्षा करने लगा। यदि वह ग्रपने मालिक को नहीं पा सकता तो उसे ग्रौर किसी की ज़रूरत नहीं है। इसलिए उसके जीवन का उद्देश्य ग्रपने मालिक के लिए रुके रहना है। खोजना ग्रौर इंतज़ार करना है।

तोलिक ने ग़ौर किया कि स्तेपानोव्ना दादी की व्याकरण बिल्कु
शुद्ध नहीं है, लेकिन इस बार उसने कुछ कहा नहीं, क्योंकि वह इस बू
औरत का सम्मान करने लगा था। लेकिन अगर कोई उससे पूछता कि
वह उसका सम्मान क्यों करता है तो वह इसका उत्तर नहीं दे सकता था
सीधी सरल बात यह थी कि लूस्या की एक अच्छी-भली नानी थी। आखि
बीम भी तो स्तेपानोव्ना को अच्छा मानता था।

"बीम, तुम स्तेपानोव्ना को पसन्द करते हो?" तोलिक ने पूछा

बीम हर किसी को उसके नाम से तो जानता ही था, साथ ही उसे
यह भी पता था कि पृथ्वी में एक भी जीवित प्राणी, चाहे वह गंदे से
गंदा खुजलहा कुत्ता ही क्यों न हो, बग़ैर नाम के नहीं होता है। लेकिन
वह यह भी ठीक-ठीक जानता था कि बच्चों के कहने पर किसके स्लीपर
लेकर आना चाहिए! और इस समय भी तोलिक और स्तेपानोव्ना की
नज़रों, उसकी मुस्कान से वह यह बता सकता था कि वे स्तेपानोव्ना के
ही बारे में बातें कर रहे हैं, इसलिए वह उठा, उसके पास गया और
अपना सिर उसकी गोद में रख दिया।

एक समय स्तेपानोव्ना कुत्तों के प्रति नितांत उदासीन थी (क्या उनमें
कोई विशिष्टता थी), लेकिन बीम ने उसे श्वान-प्रेमी बना दिया; उसने
यह काम अपने अच्छे स्वभाव से, अपनी विश्वसनीयता से तथा दोस्त के
प्रति अपनी वफ़ादारी से किया था।

इस तरह वे चार स्नेहशील प्राणी—तीन मनुष्य और एक कुत्ता—
एक फ़्लैट में साथ-साथ बैठे थे। स्तेपानोव्ना को एक आन्तरिक सुख और
शांतिमयता की अनुभूति भी हो रही थी। बुढ़ापे में इसके अलावा और
क्या चाहिए!

कालांतर में, कई वर्षों बाद तोलिक उन सायंकालीन घंटों की याद
करेगा जब वे खिड़की से छनकर आते उस हलके जामुनी प्रकाश में बैठते
थे। यह सच है वह तभी याद करेगा जबकि उसका हृदय अन्य लोगों
के लिए खुला रहे और अविश्वास का कीड़ा उससे चिपककर उसका ख़ून
न चूसता हो... लेकिन उसे ठीक उस क्षण में कुछ याद आ गया:

"मुझे नौ बजे घर पहुंचना है। ठीक नौ बजे मुझे बिस्तर में होना
चाहिए। लूस्या मैं कल तुम्हारे लिए एक स्केच-बुक और कुछ चेकोस्लो-
वाकियाई रंगीन पेंसिलें लेकर आऊंगा। तुम्हें वह पेंसिलें किसी दूकान में

नहीं मिलेंगी ; तुम जूतों के एक जोड़े से भी उन्हें नहीं ख़रीद सकती। वे विदेश से आयी हैं! "

"क्या तुम सचमुच लाओगे?" लूस्या ने प्रसन्न होकर पूछा।

"क्या तुमने अपने पिता जी को बता दिया है कि तुम रोज़ कहां जाते हो?" स्तेपानोव्ना ने पूछा।

"न-न-नहीं। मैं बताऊं क्यों?"

"तुम्हें बताना चाहिए, तोलिक, तुम्हें निश्चय ही ऐसा करना चाहिए।"

"वे कभी पूछते नहीं। ना ही मां पूछती है। मैं नौ बजे तक हमेशा घर पहुंच जाता हूं।"

जब तोलिक चला गया तो बीम ने एक बार फिर बाहर जाने देने की ज़ोरदार अपील की, लेकिन उसकी अपील मंजूर नहीं की गयी। उसकी देखभाल और रक्षा की जा रही थी, वह अपने रक्षकों को चाहता था, लेकिन अपने दोस्त की याद उसके दिल को कचोटती थी।

अगले दिन तोलिक नहीं आया। लूस्या को अपेक्षा थी कि वह स्केच-बुक तथा वे पेंसिलें लायेगा जिन्हें आप किसी भी दूकान से नहीं ख़रीद सकते। उसे उनकी कितनी चाह थी! वह बीम से भी बार-बार पूछती :

"तोलिक क्यों नहीं आ रहा है? उसे अब तक यहां होना चाहिए था।"

बीम उसकी चिंतातुरता को असंदिग्ध रूप से समझ गया, इसलिए वह लूस्या के साथ बैठकर खिड़की के बाहर देखने लगा और अधीरता से प्रतीक्षा करने लगा।

लेकिन वहां तोलिक का कोई चिन्ह नहीं था।

"उसने अपने पिता को बता दिया होगा," स्तेपानोव्ना ने मन ही मन सोचा। पर प्रकट रूप में कहा, "एक कुत्ते के साथ यही गुज़रती है... तोलिक के बिना हम मुसीबत में पड़ जायेंगे। बीम को घुमाने कौन ले जायेगा?"

लूस्या के हृदय ने कह दिया कि कहीं कोई गड़बड़ है।

"हां हम मुसीबत में पड़ जायेंगे," उसने सहमति प्रकट की, उसकी आवाज़ में एक कम्पन था।

बीम उसके पास आया और चेहरे को ढके उसके नन्हे हाथों को देखक कूं-कूं करने लगा (परेशान न हो, लूस्या)। उसे याद आया कभी-कभ इवान इवानिच भी अपनी डेस्क पर कोहनियां टिकाये और हाथों मे मुं ढके इसी प्रकार बैठा करता था। बीम जानता था – वह एक अशुभ संके था। ऐसे मौक़ों पर बीम हमेशा अपने मालिक के पास चला जाता औ उसका मालिक उसके सिर में थपकी देकर कहता: "धन्यवाद, बीम धन्यवाद।" और ऐसा ही लूस्या ने भी किया। उसने अपने चेहरे से एव हाथ हटाकर बीम के सिर को सहलाया।

"बस, बस लूस्या, यह काफ़ी है। रोने की ज़रूरत नहीं। तोलिव आयेगा। वह ज़रूर ही आयेगा, मेरी बच्ची। वह निश्चय ही आयेगा,' उसकी नानी ने उसे सांत्वना दी।

बीम लंगड़ाता हुआ दरवाज़े तक गया, मानो कह रहा हो: "तोलिक आयेगा। आओ, हम उसे खोजें।"

"वह बाहर जाना चाहता है," स्तेपानोव्ना ने कहा। "मेरी समझ में यह आने लगा है कि वह क्या कहता है। और तुम इन्कार नहीं कर सकती – तुम जानती हो, वह एक जीवित प्राणी है।"

लूस्या ने अपनी ठोड़ी ऊंची की और अपने स्वभाव से नितांत भिन्न स्वर में दृढ़ता से कहा:

"मैं उसे ख़ुद घुमाने ले जाऊंगी।"

स्तेपानोव्ना ने सहसा देखा कि लड़की बड़ी ही तेज़ रफ़्तार से बड़ी हो रही है। और वह भी इस बात से निराशा का अनुभव करने लगी कि तोलिक नहीं आया।

... और तब, एक लड़की और एक कुत्ता सड़क में घूमते चले जा रहे थे और तीन लड़के उसकी तरफ़ बढ़ रहे थे।

"हैलो, बुलबुल," चित्तीदार चेहरे और पीताभ लाल बालोंवाले एक छोकरे ने उसे चिढ़ाते हुए कहा, "तुम्हारा कुत्ता एक छोटा मर्द है या बड़ी लड़की?"

"मूढ़, गंवार!" लूस्या ने संक्षिप्त उत्तर दिया।

तीनों लड़कों ने लूस्या और बीम को घेर लिया। यह पहला अवसर था जब लूस्या के साथ किसी ने ऐसा बरताव किया था, वह रुआंसी हो गयी। लेकिन तभी उसने देखा बीम के बाल खड़े हो गये हैं और उसने

अपने सिर को नीचा कर लिया है तो वह सहसा साहस का अनुभव करने लगी और तीखी आवाज़ में बोली :

"चले जाओ यहां से!"

बीम इतने ज़ोर से भौंका तथा ऐसे आक्रामक ढंग से आगे को आया कि तीनों लड़के फ़ौरन तितर-बितर हो गये। निरापद दूरी पर पहुंचकर तथा भयभीत होने की ग्लानि से पीड़ित वह चितकबरा पतली आवाज़ में चीख़ा :

"इस जैसे बुड्ढे कुत्ते के साथ जाती लड़की को देखो! ओ बेशर्म!"

लूस्या सिर पर पैर रखकर घर भागी और बीम, बेशक उसके पीछे-पीछे आया। यह बुरे क़िस्म के छोटे मानव के साथ—उस चितकबरे के साथ—उसकी पहली मुठभेड़ थी।

इस घटना के बाद उन्होंने, जैसा कि वे पहले करते थे, बीम को फिर से अकेले जाने देना शुरू कर दिया। प्रारम्भ में लूस्या उसके पीछे-पीछे जाती और एक कोने में खड़ी हो जाती तथा वहीं से उसे देखती और लड़कों की तरह सीटी बजाती रहती ताकि वह अधिक दूर न जाये। इसके बाद स्तेपानोव्ना उसे तड़के सवेरे बाहर जाने दिया। फिर वह अकेला ही घूमने चला जाता, शाम को लौट आता और अच्छी तरह से भरपेट भोजन करता।

लेकिन होनी को होना ही था! एक चौराहे में, जहां कुछ ट्राम-लाइनों के आरपार पैदल चलनेवालों का रास्ता था, किसी ने उसे पुकारा।

"बीम!"

उसने घूमकर देखा। एक ट्राम के ड्राइवर के कक्ष से एक परिचित चेहरा झांक रहा था।

"बीम! तुझे सलाम!"

बीम दौड़ा गया और अपना पंजा पेश करता हुआ बैठ गया। यह वह भली औरत थी जो बीम और उसके मालिक को उनके शिकार के दौरे पर बस के अड्डे तक ले गयी थी।

"तुम्हारे मालिक को बहुत समय से नहीं देखा। क्या इवान इवानिच बीमार है?"

बीम चौंक गया। तो यह जानती है! शायद वह उससे मिलने जा रही थी!

जब ट्राम चालू हुई, तो वह भी अन्दर घुस गया। एक महिला य
पूरे ज़ोर से चीख़ी, एक आदमी ने घुड़का "निकल जा!" कुछ
यात्री बीम के साथ सहानुभूति में हंसे। ड्राइवर ने ट्राम रोकी और अ
कक्ष से बाहर निकली, यात्रियों को शांत किया (बीम ने इस बात
ग़ौर किया) और बीम से बोली:

"बीम तुम जाओ। तुम्हें अपने मालिक के बग़ैर नहीं चलना चाहि
नहीं, इवान इवानिच के बग़ैर नहीं।"

इस स्थिति में वह क्या कर सकता था? "नहीं" का मतलब
"नहीं"। बीम कुछ क्षण पैदल पथ पर बैठा रहा और फिर जहां को ट्
गयी थी उसी दिशा को दौड़ पड़ा। यही वह रास्ता था जहां से वह अ
उसका मालिक गये थे। हां, वह रहा मीनार के पास का कोना, अं
वहां मिलीशियामैन है।

बीम ट्राम लाइनों के किनारे-किनारे दौड़ता रहा, पर उसने उ
कहीं पार नहीं किया, कोनों पर भी नहीं। मिलीशियामैन ने सीटी बजायी
बीम ने बग़ैर रुके पीछे देखा और अपने रास्ते चलता रहा। व
मिलीशियामैनों का सम्मान करता था। उन्होंने उसे कभी नुक़सान न
पहुंचाया। मिलीशिया में पहली बार जाने की घटना याद थी। हां उसे
उस चतुर कुत्ते को, उस दिन का सारा हाल याद था। और वहां
वह तथा दाशा घर गये थे और सब कुछ अच्छा रहा। इसके अलाव
उसने एक मिलीशियामैन को अक्सर एक कुत्ते के साथ देखा था—ए
बड़े काले कुत्ते को जो पहली नज़र में बड़ा ही गम्भीर दिखायी देता था
एक दिन पैदल सड़क पर उसने उससे पहचान भी लगा ली थी। इवा
इवानिच और मिलीशियामैन ने उन्हें एक दूसरे से मिलने जी भर कर बा
करने की अनुमति दे दी थी।

"उसमें से जंगल की बू आती है," काले कुत्ते ने मिलीशियामैन क
तरफ़ देखते हुए कहा था।

"कल हम शिकार खेलने गये थे," इवान इवानिच ने उसकी
पुष्टि की।

"तुम कितने साफ़-सुथरे हो!" बीम ने सूंघा-सूंघी का वैध दौर पूर
करने के बाद काले कुत्ते से कहा।

"बेशक, मैं हूं। मेरे काम में इसकी ज़रूरत पड़ती है," काले कुत्ते ने अपनी ठूंठनुमा पूंछ हिलाते हुए कहा।

सम्भव मैत्री के चिन्हरूप में दोनों ने एक ही पेड़ पर अपने "हस्ताक्षर" कर दिये।

हां मिलीशियामैन अच्छे लोग हैं, वे कुत्तों को पसन्द करते हैं। बीम को इसका पक्का यक़ीन था।

तो वह ट्राम लाइनों के किनारे-किनारे दौड़ता रहा, लेकिन सिर्फ़ एक तरफ़ से, क्योंकि उसे याद था कि लोहे की पटरियों पर कभी क़दम नहीं रखे जाने चाहिए—वे तुम्हारा पैर दबोच सकती हैं।

अंतिम स्टेशन पर वह एक वृत्त में घूमकर अड्डे पर पहुंचा। वहां वह कुछ देर बैठा रहा। हां, आसपास के सारे लोग अच्छे जान पड़ते थे। यह एक अच्छी चीज़ थी। यहां से इवान इवानिच और वह सड़क को पार करके उस स्थान पर जाते थे जहां खम्भे पर एक छोटा सा बोर्ड लगा था। बीम लपककर वहां पहुंचा और बस के इन्तज़ार में खड़े लोगों की एक छोटी सी लाइन के अन्त में जाकर नीचे बैठ गया। उसने एक और नजर दौड़ायी जिससे वह आश्वस्त हो गया कि वहां दुष्ट लोग नहीं हैं।

जब बस आयी तो लाइन में खड़े लोग उसमें चढ़ने लगे, अपनी बारी आने पर बीम भी इस तरह बस में चढ़ने लगा जैसे कि एक कुलीन कुत्ते को चढ़ना चाहिए।

"ए, तू कहां जा रहा है?" ड्राइवर ने पूछा। सहसा उसने बीम को एक नज़र और देखा, फिर बोला, "अरे, एक मिनट रुक! मैं तुझे जानता हूं!"

बीम को अच्छी तरह से याद आ गया कि यह वह दोस्त था जिसने उसके मालिक के हाथ से काग़ज़ लिया था। उसने अपनी दुम हिलायी।

"अच्छा तो तुम भी मुझे जानते हो, यह है अच्छा कुत्ता!" ड्राइवर ने अपने उद्गार प्रकट किये। एक क्षण सोचने के बाद उसने ज़ोर से कहा, "अच्छी बात है। अन्दर आओ!"

बीम अपने स्थान पर बैठ गया। लोगों की राह में बाधा न डालने की दृष्टि से वह दीवार के साथ लगकर बैठा और भावावेश के साथ इंतज़ार करने लगा। आख़िर यही तो वह आदमी था जो उन्हें शिकार को जाने के लिए जंगल तक लाया था।

बस घरघराती हुई चलती रही, चलती रही और अंत में उस ३
पर आकर ख़ामोश हो गयी जहां पर बीम जंगल में प्रविष्ट होने के लि
इवान इवानिच के साथ उतरा करता था।

तब बीम सचमुच रोमांचित हो गया था। उसने दरवाज़े को खुरच
कूं-कूं की और बाहर जाने देने की भीख मांगी। "यही है वह जगह ज
मुझे अवश्य उतरना चाहिए।"

"बैठो," ड्राइवर ने सख़्त आवाज़ में हुक्म दिया।

बीम ने आज्ञा का पालन किया। बस फिर से घरघराने लगी। ए
यात्री ड्राइवर के पास आया और उसने बीम की तरफ़ इशारा किया

"क्या वह तुम्हारा कुत्ता है?"

"हां," ड्राइवर ने उत्तर दिया।

"क्या यह प्रशिक्षित है?"

"कोई ख़ास नहीं... लेकिन यह चतुर है। देखो: नीचे!"

बीम नीचे लेट गया।

"क्या आप इसे बेचना चाहेंगे? मेरा कुत्ता हाल ही में मरा है औ
मेरे पास चराने के लिए भेड़ों का एक रेवड़ है।"

"अच्छी बात है।"

"कितना?"

"पच्चीस।"

"ओहो!" यात्री ने कहा और, बीम के कान सहलाने के बाद अपन
सीट में बुड़बुड़ाता बैठ गया, "वह कुत्ता अच्छा है। बहुत अच्छा कुत
है वह।"

बीम इस प्रकार के शब्दों को अच्छी तरह से जानता था, ये वे शब
थे जिन्हें उसका मालिक इस्तेमाल करता था। उसने उस अजनबी के लि
अपनी दुम हिलायी।

बीम को कुछ ख़बर नहीं थी कि वह कहां जा रहा है, लेकिन व
बस के शीशे के बाहर नज़र रखे हुए था और रास्ते पर ऐसे ग़ौर क
रहा था जैसे कि नयी जगह पर पहली बार जानेवाला कोई भी कुत
करता है। गुज़री शताब्दियों की लम्बी अवधि में लोगों का यह अन्तर्जा
गुण लुप्त या लगभग लुप्त हो गया है। और यह खेद की बात है। वाप
लौटने का रास्ता याद रखना हमेशा एक अच्छी चीज़ होती है।

एक अड्डे में वह अच्छा आदमी, जिससे घास की गंध आती रही थी, बस से उतर गया। ड्राइवर भी, बीम को गाड़ी में छोड़कर नीचे उतर गया। बीम उन्हें बहुत ही ग़ौर से देखता रहा। ड्राइवर ने बीम की तरफ़ इशारा किया फिर उस अच्छे आदमी के कंधे पर हाथ रखा। अच्छा आदमी मुस्कराया, उसने काग़ज़ के कुछ टुकड़े निकाले, उन्हें ड्राइवर के हवाले कर दिया, फिर अपना पिट्ठू-थैला कंधे पर चढ़ाया, बस के अन्दर घुसा और अपनी पेटी खोलकर उसे बीम के पट्टे से बांध दिया।

"अच्छा तो आओ," बस से दो चार क़दम दूर चलने के बाद वह मुड़ा और उसने पूछा, "उसका नाम क्या है?"

ड्राइवर ने सवालिया निगाहों से बीम की तरफ़ देखा फिर ग्राहक की तरफ़ देखकर विश्वास के साथ बोला:

"काला-कान।"

"यह तुम्हारा कुत्ता नहीं है ना? बताओ, सच-सच बताओ।"

"यह मेरा है, उसका नाम काला-कान है। तुम्हें इसका यक़ीन होना चाहिए," और वह गाड़ी ले चलता बना।

इस तरह बीम को धन की ख़ातिर बेच दिया गया।

उसने यह महसूस कर लिया कि मामला कुछ गड़बड़ है, लेकिन वह आदमी, जिससे घास की गंध आती थी, स्पष्टत: एक दयालु व्यक्ति था और बीम दुखी व किंकर्तव्य-विमूढ़ सा उसके पीछे चल रहा था।

वे चुपचाप चलते जा रहे थे कि अचानक उस आदमी ने सीधे बीम को सम्बोधित करते हुए एक बात कही:

"नहीं, तुम्हारा नाम काला-कान नहीं है; लोग कुत्तों को इस तरह का नाम नहीं देते हैं। अगर तुम्हारा मालिक आ टपकता है तो वह मुझे मेरे पन्द्रह रूबल वापस दे सकता है। इस बारे में कोई संदेह नहीं हो सकता है।"

बीम ने अपना सिर एक तरफ़ को करके ऊपर उसकी ओर निहारा, जैसे कह रहा हो: भले आदमी, मैं नहीं समझा।

"प्यारे, तुम एक अच्छे कुत्ते, एक चतुर कुत्ते लगते हो।"

उसने फिर से उन शब्दों का उपयोग किया जिन्हें बीम का मालिक इतनी बार बोला करता था। बीम ने इस प्यार के लिए कृतज्ञता दर्शाने को अपनी पूंछ हिलायी।

"अच्छा, अगर यह बात है तो तुम्हारा मेरे साथ रहना ब
होगा," उस आदमी ने निष्कर्ष निकालते हुए बात ख़त्म की।

और वे चलते रहे। बीम ने एक या दो मरतबा अपने कंधों के
से देखते हुए पीछे हटने की ऐसी कोशिश की मानो कह रहा हो (
जाने दो, यह मेरे लिए ग़लत दिशा है)।

वह आदमी रुक जाता और उसे थपकी देता।

"कोई बात नहीं... कोई बात नहीं," उसने कहा।

यह कितना आसान होता – उस पेटी में जल्दी-जल्दी एक दो
मारे जाते और वह आज़ाद हो जाता। लेकिन बीम जानता था कि
में बंधा हुआ बंधन बांधकर ले चलने के लिए होता है, एक कुत्ते को अ
पीछे-पीछे ठीक उतनी ही दूरी या निकटता से चलवाने के लिए होत
जितनी दूरी या निकटता से उसे चलना चाहिए। इसलिए उसने प्रा
करना बन्द कर दिया।

शुरू में वे एक जंगल से होकर गुज़रे। पेड़ निश्शब्द और विचार
थे। वे पहले-पहले पाले से प्रशीतित, स्तब्ध, व नग्न खड़े थे। घास
गयी थी, रंगहीन और उलझी हुई थी – यह सब बीम के लिए बिल
निरानन्द था।

बाद में शीतकालीन गेहूं के खेत आये। धरती पर हरा-हरा, मुलाय
ख़ुशगवार कालीन सा बिछा हुआ था। बीम को थोड़ी-थोड़ी प्रसन्नता ह
लगी – दूर-दूर तक खुली जगहें, आकाश का विराट विस्तार, उसकी ब
में चलते आदमी की उल्लासभरी सीटी, यह सब इवान इवानिच के स
हमेशा आह्लाद का कारण हुआ करते थे। लेकिन जब उनका रास्ता
हुए खेतों में पहुंचा तो फिर ख़ुश होने के लिए कुछ ख़ास नहीं रह
मिट्टी काली-काली स्लेटी थी और इधर-उधर चॉक के कुछ अंश दिखा
देते, ढेले थे ही नहीं; वह मृत या अर्ध-मृत दिखायी देती थी – सि
धूसरित, क्लांत धरती।

वह आदमी सड़क से हटकर गया और उसने अपने पैर जुती ज़मी
में अड़ाये और एक आह भरी।

"बुरा धन्धा है, प्यारे," उसने बीम से कहा। "दो-चार काले तूफ
और आ जायें तो हमारी मिट्टी ख़त्म ही हो जायेगी। यह बुरा धंधा है
प्यारे दोस्त।"

"बुरा धंधा, प्यारे"–ऐसे शब्द थे जिन्हें बीम इवान इवानिच से कई बार सुन चुका था और जानता था कि उनका अर्थ उदासी और दुख है, या "कुछ गड़बड़ है।" और जहां तक "काला तूफ़ान" शब्दों का सम्बन्ध था तो वे बीम के लिए "काला कान" जैसे थे, मिट्टी के लिए उसका उपयोग बीम की समझ से बहुत दूर की चीज़ थी और वह आदमी इस बात को समझ गया था।

"हां, तुम केवल एक कुत्ते हो। तुमसे इन बातों को समझने की अपेक्षा नहीं की जा सकती है। लेकिन मैं इन बातों को और किससे कह सकता हूं। मैं तो सिर्फ़ शिकायत कर रहा हूं, तुमसे शिकायत कर रहा हूं, कालू... ऐ, ज़रा रुको, एक मिनट..." उसने बीम को देखा। "अच्छा तो यही ठीक है, हम तुम्हें कालू कहेंगे। यह नाम कुत्तों का जैसा है–हां, कालू। यह यों ही निकल पड़ा, तो हम इसे ऐसा ही रहने देंगे।"

अच्छा, तो क्या? गांव पहुंचने से पहले ही बीम यह जान गया था कि अब उसका नाम कालू है, क्योंकि उस आदमी ने उसे स्नेह के साथ इतनी बार दोहराया जो था।

इस तरह बीम का अच्छा नाम धन की ख़ातिर बिक गया। सौभाग्य से बीम को ख़ुद इसके बारे में वैसे ही कुछ नहीं मालूम था, जैसे कि उसे यह नहीं मालूम था कि कुछ लोग अपनी इज़्ज़त, अपनी आस्था, और अपना हृदय भी कागज़ के उन टुकड़ों की ख़ातिर बेच सकते हैं। यह एक कुत्ते का सौभाग्य है कि उसे इसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं होता है!

लेकिन अब बीम का कर्तव्य था कि वह अपना असली नाम भूल जाये। अगर उसे करना ही होगा तो वह ऐसा करेगा, लेकिन वह अपने दोस्त, इवान इवानिच को नहीं भूलेगा। अब वह बहुत ही भिन्न प्रकार का जीवन जीने जा रहा था, लेकिन वह उसे कभी नहीं भूलेगा।

ग्यारहवां अध्याय

ग्रामीण जीवन

जिस गांव में बीम को ले जाया गया उसे देखकर वह घोर आश्चर्य में पड़ गया। लोग यहां भी रहते थे, लेकिन यहां की हर चीज़ उस जगह

से भिन्न थी जहां वह पैदा हुआ था और पला-बढ़ा था। मकान सब छोटे थे, ज़मीन से थोड़ा ऊपर को झांकते हुए से; उनमें वे ज़ीने उतरने-चढ़ने की जगहें और सीढ़ियां कुछ नहीं थीं और दरवाज़ों के ह से खड़कने की आवाज़ भी नहीं आती थी। रात के समय वे भीतर तरफ़ से सिटकनी ज़रूर चढ़ा देते थे। सारे मकान नालीदार स्लेटी-र चादरों से ढके हुए थे। हर रोज़ सुबह, एक ही वक़्त पर प्रत्येक म से धुवां उठता, लेकिन मकान न तो कभी चलते थे न उड़ते थे। वे स सुथरी पंक्तियों में चुपचाप धुवां उगलते शांति से यों ही खड़े रहते उनसे न घरघराहट की आवाज़ होती न खटखटाहट की।

लेकिन बीम (जो अब कालू हो गया था) के लिए सबसे ज़्य आश्चर्यजनक चीज़ यह थी कि वहां लोगों के साथ ही विभिन्न प्रकार जानवर व पक्षी – गायें, मुर्ग़े-मुर्ग़ियां, बत्तखें, सूअर और भेड़ें – भी र थीं। उनसे जान-पहचान लगाने में कुछ समय लग गया। हर आदमी मकान के पीछे जानवरों के अपने ही छोटे-छोटे मकान थे। जो बह पुआल या नरकुल से छवाये हुए होते थे और उनके चारों ओर एक दू के साथ गुंथी हुई लकड़ियों और पतली-पतली टहनियों से बनी हुई ए नीची बाड़ थी जिसके आरपार देखा जा सकता था। कोई किसी को परेश नहीं करता था। लोग जानवरों या पक्षियों को हानि नहीं पहुंचाते थे अ वे आदमियों को। और कोई किसी पर कभी भी बंदूक़ नहीं दाग़ता था

पहले दिन उन्होंने बीम के लिए भीतर, ड्योढ़ी के एक कोने ं सूखी घास का बिस्तर तैयार किया। उस आदमी ने एक रस्सी से उ बांध दिया, उसे ख़ूब अच्छा भोजन दिया और फिर एक लम्बी बरसा पहनकर कहीं चला गया। बीम ने दिन का बाक़ी वक़्त पूर्ण निस्तब्धता एकांत में बिताया। शाम को उसने ज़मीन पर भेड़ों के खुरों की आह सुनी, उन्हें अहाते के अन्दर प्रविष्ट होते सुना और गाय को अपने छप्प में रंभाते सुना (वह ज़रूर कोई चीज़ मांग रही होगी)। अब फिर व आदमी आया, लेकिन इस बार उसके साथ एक लड़का था। वह भी लम्ब बरसाती, बूट और सिर पर गोल टोप पहने हुए था और एक लम्बी छड़ थामे हुए था। लड़के का चेहरा भी उतना ही भूरा था जितना कि उ अच्छे आदमी का और उसमें से भेड़ों की गंध आ रही थी।

"अल्योशा, आओ और हमारे नये दोस्त से मिलो," उस आदमी ने लड़के से कहा।

वे सीधे बीम के पास आये।

"डैडी, वह काटेगा तो नहीं?"

"नहीं अल्योशा, इस नस्ल के कुत्ते नहीं काटते... ऊह, कालू... कालू अच्छा कुत्ता है।" और उसने बीम को आहिस्ता-आहिस्ता थपकी दी।

बीम लेटा-लेटा लड़के को सावधानी से देख रहा था। लड़के ने भी उसे थपकी दी।

"कालू ... कालू-ऊ-ऊ..." और उसने ज्येष्ठ आदमी की तरफ़ मुड़कर कहा, "डैडी, अगर हम उसे खोल दें तो क्या वह भाग जायेगा?"

"अभी हम कुछ समय रुकेंगे," और डैडी दरवाज़े से होकर घर के अन्दर चले गये।

बीम उठकर बैठ गया और उसने लड़के को अपना पंजा पेश किया: "हैलो, तुम अच्छे हो।"

"डैडी," लड़का चिल्लाया। "डैडी! इधर आइये, जल्दी!"

वह आदमी लौट आया।

"हैलो, कालू!" लड़के ने अपना हाथ बढ़ाया।

बीम ने फिर हाथ मिलाया। आदमी और लड़के ने, स्पष्ट रूप से, बीम के शऊर का अनुमोदन किया। उनकी पहचान के यह प्रारम्भिक मिनट बीम के लिए महत्वपूर्ण थे। उसे पता लगा कि जो आदमी उसे यहां लाया था उसका नाम डैडी है और लड़का अल्योशा। साधारण से साधारण कुत्ता भी लोगों के नाम जल्दी ही सीख जाता है और जहां तक बीम का सम्बन्ध है ... हूं, हम जानते ही हैं कि वह किस क़िस्म का कुत्ता था।

जब सांझ ढलने लगी तो एक औरत का आगमन हुआ। वह अजीब तरह के कपड़े पहने हुई थी: उसके सिर में दो शॉल लिपटे थे और रुई से भरी उसकी जैकेट उसके चारों ओर एक ड्रम की तरह कस कर लिपटी थी। उसका पैंट उसी तरह का था जैसा कि उस दयालु औरत का जो उसे रेलमार्ग पर मिली थी और जो वहां पच्चर ठोंक रही थी। लेकिन इस औरत के शरीर से मिट्टी और चुकन्दर (वही मीठी जड़ जिसे कभी-कभी चूसने में बीम को भी कोई एतराज़ नहीं था) की गंध आ रही थी। वह घर के अन्दर गयी, मर्दों से किसी चीज़ के बारे में बात की और ड्योढ़ी

के रास्ते से, लगभग तुरन्त, बाहर गयी, अब उसके हाथ में एक बा
थी। बीम ने अपनी जगह पर बैठे-बैठे यह पता लगा लिया कि ड्योढ़ी
एक दरवाज़ा सड़क को जाता है और दूसरा जानवरों की ओर और ती
घर के अन्दर। लेकिन वह उनमें से किसी भी दरवाज़े तक नहीं प
सकता था, रस्सी की वजह से। और अभी तक बीम को सिर्फ़ इतना
ज्ञात हो सका था।

वह फिर लेट गया।

अहाते की ओर से भेड़ों की गंध बहुत तीव्रता से आयी। बीम ब
लम्बे समय से जानता था कि भेड़ें क्या होती हैं। जैसा कि वह सो
करता था, भेड़ें दूर मैदानों में झुण्ड बनाकर रहती हैं और खाने त
मिमियाने के सिवा और कुछ नहीं करतीं। और उनके क़रीब सदा ऐ
लोग होते हैं जो तिरपाल की बरसातियां पहने रहते हैं और हाथों
ऐसे लम्बे डण्डे लिये रहते हैं जिनका एक सिरा मुड़ा हुआ होता है
एक बार जब बीम और इवान इवानिच सूखी घास के एक ढेर में आरा
कर रहे तो इस तरह का एक आदमी उनके क़रीब आया। उसने बी
के मालिक तथा बीम से हाथ मिलाया था। उसके साथ एक बड़ा, झब
बालोंवाला कुत्ता भी था। वह कुत्ता बीम से झगड़ा करने के अन्दाज़
मिला था। वह ख़ूख़्वार ढंग से भौंकता हुआ झपटकर उसकी तरफ़ आया
लेकिन बीम तुरन्त चित हो लुढ़क गया और उसने अपने पंजे ऊपर उ
दिये। "क्या मामला है? क्या मैंने कोई ग़लती की है?"

ज़ाहिर है, धृष्टता पर सौजन्यता की जीत हुई और वह झबरे बाल
वाला कुत्ता बीम को आपादमस्तक सूंघने और उसके पेट को चाटने के बा
थोड़ा पीछे हटा और उसने एक पत्थर पर अपने "हस्ताक्षर" कर दिये
बीम ने भी यही किया। और इसका मतलब था दुनियाभर के लिए शांति
जब तक बीम का मालिक और झबरे का मालिक आपस में बातें करते र
तब तक वे दोनों एक दूसरे को पकड़ने और कन्नी काटने का खेल खेल
रहे, इसमें बीम इतना ज़्यादा तेज़ और फ़ुर्तीला साबित हुआ कि उसव
नव परिचित भी उसकी असंदिग्ध रूप से इज़्ज़त करने लगा था। जब
विदा हुए (क्योंकि उन्हें अपने मालिकों का अनुसरण करना ही था) त
उन्होंने उस पत्थर को सूंघा और एक दूसरे की तरफ़ ऐसे देखा जिसव
आशय था:

"फिर कभी यहां आना," बीम ने कहा और कुलांचें मारता दूर निकल गया।

"बहुत काम बाक़ी है," झबरा बोला और भेड़ों के झुण्ड की तरफ़ छलांगें लगाता चल दिया।

यह बहुत पहले की बात थी। और अब, फिर वही भेड़ों की गंध। बीम को बरबस इवान इवानिच की याद हो आयी। और एक अजीब ड्योढ़ी में, एक अजीब घर के अन्दर, सांझ के बढ़ते धुंधलके में अलग-थलग अकेले बीम को घोर दुख-दैन्य की अनुभूति होने लगी।

बाद में उसने धातु के साथ टकराते किसी द्रव की लय-बद्ध आवाज़ सुनी। पर्र! पर्र! न जाने कैसी आवाज़ थी, बीम समझ न सका। वे विचित्र आवाज़ें रुकीं तो, लगभग उसी समय, वह औरत हाथ में बाल्टी लिये अहाते की तरफ़ से अन्दर आयी और उसकी बाल्टी से दूध की गंध आ रही थी। अहा, कैसी अच्छी गंध! बीम ने शहर में ऐसी गंधवाला दूध कभी नहीं सूंघा था। यह ज़रूर दूसरे क़िस्म का दूध होगा लेकिन था वह दूध ही। शहर के दूध में मानवीय हाथों और भिन्न-भिन्न प्रकार के घासों की गंध नहीं आती और उसमें से गाय की गंध तो निश्चय ही नहीं आती थी – यह एक आश्चर्य की बात थी। यहां यह सब घुल-मिलकर एक ऐसी ख़ुशगवार सुगंध में परिवर्तित हो गये थे जो अभिभूत कर देने-वाली सुगंध थी। अब इस मामले में कौन तर्क करे? यदि एक मनुष्य भी कभी-कभी दूध और "दूध" में अन्तर करता है तो अति दीर्घ परिसर-वाली घ्राण-शक्ति से सम्पन्न बीम उस अन्तर को क्यों न देखे और उस सुगंध से आश्चर्यान्वित क्यों न हो जिसमें मानवीय हाथों की गंध फूलों और घासों की गंध से घुल-मिल गयी थी। तो वह सहज शीघ्रता से उछला और बाल्टीवाली उस औरत की अगवानी में अपनी दुम हिलाने लगा। लेकिन वह औरत बीम की प्रसन्नता का वास्तविक कारण नहीं समझ सकी।

अपने जीवन के लम्बे चार वर्षों में उसने, दुर्भाग्यवश, गाय का दुहा जाना नहीं देखा था। और दूध में गायों की गंध होती है। तो बीम अभी भी किंचित अंधकार में था, अभी कुछ ऐसी चीज़ बाक़ी थी जिसे वह नहीं जानता था। लेकिन ऐसी ढेर सारी चीज़ें हैं जिनके बारे में कुत्तों से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वे उन्हें जानें। यह कोई शर्म की बात नहीं है। यदि कोई कुत्ता यह घोषणा करे कि वह हर चीज़ जानता

है और उसे पक्का यक़ीन है कि वह अन्य को यह सिखा सकता है कि
क्या करें और कैसे करें तथा कहां दौड़ें, कहां भागें तो एक चूज़ा भी उ
यक़ीन नहीं करेगा। लेकिन, इसके बावजूद ऐसे कुत्ते होते हैं, मैं
रहा हूं कि होते हैं। मिसाल के लिए स्कोच-टेरियर को ले लीजिये।
ऐसा प्रभाव डालने की कोशिश करता है कि उसका ईंटनुमा खोपड़ा विच
से ठंसा पड़ा है (वह दाढ़ी! वह लम्बी-लम्बी मूंछें और भौंहें! एव
असली दार्शनिक!), लेकिन वास्तव में उसकी खोपड़ी में बुद्धि का
कण भी नहीं होता वह दिन ब दिन, ब दिन हुक्म चलाना और अ
मालिक पर भूंकता रहता है और मानसिक रोगियों की तरह किसी
किसी तरह की उछल-कूद मचाये रहता है। लेकिन इससे क्या भला ह
है? कुछ भी नहीं। महज़ दिखावा। अन्दर कुछ नहीं, सिर्फ़ भूसा है
फिर कुछ भी नहीं है।

नहीं, बीम इससे बिल्कुल भिन्न था। वह निष्कपट और ईमान
हृदय का कुत्ता था। यदि वह कोई बात नहीं जानता था तो साफ़ ज़ा
कर देता था; जो मैं नहीं जानता सो नहीं जानता। यदि वह किसी
नापसन्द करता तो स्पष्ट कह देता: "तुम अच्छे नहीं हो। यहां से जाअ
भौं!" और कभी-कभी तो वह ऐसी भौंक लगाता कि बस – भगवान
बचाये!

हां, तो जो औरत कहीं से ऐसा अद्भुत दूध ले आयी वह उस
प्रति सम्मान प्रदर्शित किये बिना नहीं रह सकता था, इसलिए वह उ
दरवाज़े की तरफ़ ताकता रहा जिससे होकर वह औरत अपनी बाल्टी सहि
ग़ायब हो गयी थी।

लेकिन तभी सड़क की तरफ़ से कोई आया और उसने पूरे विश्व
के साथ दरवाज़ा धकेल कर खोल दिया।

"कौन है?" बीम ने किसी लाग-लपेट के बग़ैर पूछा। "भौं भौं!

नवागंतुक फ़ौरन दरवाज़े से पीछे हट गया। इंडी घर से बाहर निक
और उसने ड्योढ़ी की रोशनी जलाकर पूछा:

"कौर है उधर?"

"मैं हूं, टोली-नेता," अजनबी ने जवाब दिया।

वह ड्योढ़ी के अन्दर प्रविष्ट हुआ और उन्होने हाथ मिला
(अच्छा तो वह दोस्त था, भूंकने की कोई ज़रूरत नहीं) औ
बीम के पास आ गये।

डैडी एड़ियों के बल बैठा और बीम को सहलाने लगा।

"तुम अच्छे बच्चे हो, कालू, अच्छे बच्चे—तुम अपना काम जानते हो। तुम अच्छे कुत्ते हो।" उसने रस्सी खोली और बीम को कमरे में आने दिया।

वहां मुख्य चीज़ एक लंगड़ी मुर्गी थी। बीम ने तुरंत आखेट-संकेत किया और फ़ौरन अपना अगला पंजा उठा लिया। लेकिन उसने यह काम किंचित दुविधा में किया जिसका मतलब यह था कि वह अपने आसपास के लोगों से कह रहा था: "यह किस क़िस्म का परिंदा है? इस क़िस्म के परिंदों से मेरा पहले कभी कोई वास्ता नहीं पड़ा..."

"टोली-नेता, उसे देखो!" डैडी ने उद्गार व्यक्त किये, "वाह, यह तो बहुत बढ़िया कुत्ता है। कालू—तुम्हें तो अपने काम के सभी दांव-पेंच मालूम है।"

लेकिन चूंकि उस मुर्गी ने बीम की तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया इसलिए वह नीचे बैठ गया। और कनखियों से उसे देखता रहा। कुक्कुर-भाषा में यह उन संक्षिप्त और अभिव्यंजनापूर्ण वाक्यों का द्योतक था: "अच्छा, अच्छा, मैं, मैं तो... आप अपने को क्या समझते हैं?.. मुझे बताइये, बताइयेगा ना!" फिर उसने सवालिया निगाहों से लोगों की तरफ़ देखा।

"और वह मुर्गियों को छूता नहीं!" अल्योशा ने ख़ुश होकर आवाज़ लगायी।

बीम ने उसके चेहरे पर नज़र गड़ाकर उसे ध्यान से देखा।

"कैसी आंखें हैं! मां, उसकी आंखें देखो! वे क़रीब-क़रीब आदमियों जैसी हैं," अल्योशा ख़ुशी-ख़ुशी कहता रहा। "कालू, इधर आओ, बच्चू!"

बीम ऐसी निश्छल प्रसन्नता का उत्तर दिये बिना कैसे रह सकता था? वह अल्योशा के पास गया और उसकी बग़ल में बैठ गया।

मेज़ पर बैठकर वे बातें करने लगे। डैडी ने एक बोतल खोली, मां कुछ खाना ले आयी। टोली-नेता ने अपना गिलास ख़ाली किया, डैडी ने भी ऐसा किया और मां ने भी। अल्योशा ने किसी कारणवश कुछ नहीं पिया, लेकिन थोड़ा हैम और रोटी खायी। उसने रोटी का एक टुकड़ा फ़र्श के बीचोंबीच फेंका, लेकिन बीम अपनी जगह से हिला भी नहीं (उससे खाने के लिए कहना ज़रूरी था)।

"शरीफ़ होगा," टोली-नेता, जिसका चेहरा अब लाल हो गया थ
ने कहा। "वह रोटी नहीं खायेगा।"

वह मुर्ग़ी लंगड़ाती हुई आयी और बीम के लिए फेंके हुए टुकड़े
उठाकर चलती बनी। सब हंसे, लेकिन बीम पहले से भी ज़्यादा ध्यान
अल्योशा को देखता रहा; जब दोस्तों के बीच भी आपसी समझ न
तो यह हंसी का मामला नहीं होता।

"एक मिनट, अल्योशा," डैडी ने कहा। उसने फ़र्श पर रोटी
एक टुकड़ा डाला, मुर्ग़ी को भगाया और बीम की तरफ़ मुड़कर कह
"इसे खा लो, कालू! खा लो इसे!"

बीम भूखा तो नहीं था, फिर भी उसने रोटी का वह स्वादिष्ट टुक
प्रसन्नतापूर्वक खा लिया।

फिर टोली-नेता ने हैम का एक टुकड़ा नीचे रखा।

"नहीं!" उसने चेतावनी दी।

बीम अपने स्थान पर बैठा रहा। मुर्ग़ी हैम के टुकड़े की तर
धीरे-धीरे आगे बढ़ी और जैसे ही वह उसे लेकर भागने ही वाली थी।
बीम ने उसे फुनफुनाते हुए अपनी नाक से लगभग धराशायी ही कर दिया
वह डगमगाती हुई खाट के नीचे जा घुसी। यह सचमुच ही एक प्रहस
जैसा दृश्य था।

"खा लो, कालू, खा लो!" टोली-नेता ने अनुमति प्रदान की

बीम ने नम्रतापूर्वक उस टुकड़े को भी खा लिया।

"लो अब, देखा उसे!" डैडी ने कहा। वह ज़ोर से बोला औ
उसका चेहरा अरुणाभ हो गया था और पहले से अधिक दयाद्र नज़र आ
लगा था। "कालू प्रकृति का एक चमत्कार है!" और उसने कुत्ते व
सचमुच गले लगा लिया।

"यह लोग अच्छे आदमी हैं," बीम ने सोचा। उस डैडी की मूं
भी पसन्द आयीं, वे मुलायम ऊन जैसी थीं, इस बात पर उसने ग
लगाये जाते समय ग़ौर किया था।

इसके बाद कुछ बातचीत हुई जिसमें बीम ने सिर्फ़ "भेड़" शब्द ह
समझ सका, लेकिन उसने यह बात समझ ली कि बातचीत के प्रारम्
में वे दो व्यक्ति एक दूसरे से सहमत नहीं थे।

"अच्छा ख्रिसान अंद्रेयेविच, हम काम की बात शुरू करें," टोली

नेता ने डैडी के कन्धे पर हाथ रखते हुए कहा। "भेड़ें चरना चाहती हैं या नहीं?"

"वे चरना तो ज़रूर चाहती हैं," डैडी ने उत्तर दिया। "लेकिन मेरा समय ख़त्म हो गया। मैं सेंट मैरी दिवस तक के लिए था और सैंट मैरी दिवस बीत गया है।"

"यह सबकी सब भेड़ें हमारे फ़ार्म के सदस्यों की व्यक्तिगत सम्पत्ति हैं, उन्हें भी खिलाया जाना चाहिए। हमारे सदस्य पहले ही मेरे पास आ चुके हैं। बर्फ़ अभी गिरी नहीं है, वे कहते हैं, अभी चराई की ख़ूब गुंजायश है। भेड़ों को बर्फ़ गिरने तक चराया जाना चाहिए। और उनकी बात सोलह आना सच है।"

"'जब तक बर्फ़ नहीं गिरती तब तक...' वे मुझे क्या समझते हैं–क्या मैं, और अल्योशा भी, लोहे के बने हैं?"

"जब तक बर्फ़ नहीं गिरती, ख्रिसान अंद्रेयेविच," टोली-नेता ने कहा, "हम तुम्हें दो गुना देंगे, समझे?"

"नहीं, मैं नहीं कर सकता," डैडी ने ज़ोर देते हुए कहा, "पत्नी उस चुकन्दर के पीछे खट रही है। हमें उसकी मदद करनी है और तुम अपनी 'बर्फ़ गिरने तक' की रट लगा रहे हो।"

पर इसके बावजूद उन्होंने सौजन्यतापूर्वक ज़ोर से हाथ मिलाये और बर्फ़ के बारे में वह वाक्य दोहराना बन्द कर दिया। फिर उन तीनों ने टोली-नेता को पोर्च के बाहर विदाई दी। वे भूल गये कि बीम भी वहीं है।

इसलिए वह भी पोर्च से बाहर निकल आया, अहाते में दौड़ा, बाड़े के पास खड़ा हुआ और उसने भेड़ों की वह गंध ली जिसमें उस आदमी की यादें निहित थीं जिसे वह सारे संसार में सबसे ज़्यादा प्यार करता था। वह अनिश्चय की स्थिति में बैठ गया।

वह रात का समय था। देहाती इलाक़े की अंधेरी, निश्शब्द शरत्कालीन रात, शिशिर से मिलने को तत्पर फिर भी उससे आशंकित रात का समय। बीम के लिए यह सब एक रहस्य था। जो भी हो, कुत्ते रात को यात्रा करना पसन्द नहीं करते (सिर्फ़ उन आवारा कुत्तों को छोड़कर, जो मनुष्य से बचना चाहते हैं, जो मानवता पर अपनी आस्था खो चुके हैं), लेकिन बीम–वह आवारा नहीं था! इसलिए वह हिचकिचा गया। इसके अलावा वहां अल्योशा भी था–इतना अच्छा नन्हा आदमी।

अल्योशा की एक पुकार से उसके संदेहों में बाधा पड़ी। उसकी चिं
आवाज़ अहाते के आरपार गूंजी।

"कालू-ऊ!"

बीम दौड़ता हुआ उसके पास पहुंचा और उसके पीछे-पीछे ड्योढ़ी
आ गया। अल्योशा ने उसे उसकी जगह पर सुलाया और उसके चा
तरफ़ कुछ और सूखी घास रख दी, उसे दुलराया और फिर ख़ुद भी सं
चला गया।

सब तरफ़ ख़ामोशी छायी हुई थी। न ट्राम की आवाज़, न ट्रालीब
की खड़खड़, न भोंपू बजने का शोर—ऐसी कोई आवाज़ नहीं थी जिस
कि बीम आदी था।

एक नया जीवन प्रारम्भ हो गया था।

आज बीम ने सीखा था कि डैडी ख़िसान अंद्रेयेविच भी है। और य
पेत्रोव्ना है। अल्योशा ज़रूर अब भी अल्योशा ही था। इसके अलावा उ
मुर्ग़ी से घृणा जैसी भी नहीं हुई थी, लेकिन उसके मन में इस मुर्ग़ी
प्रति सम्मान भी नहीं था। एक कुत्ते के विचार से पक्षी उड़ने में सक्ष
होना चाहिए, लेकिन यह सिर्फ़ चल भर सकता था, इसलिए वह सम्मा
करने लायक़ था ही नहीं। पंख न होने के अलावा वह लंगड़ा भी था
लेकिन भेड़ें, उन्होंने उसे इवान इवानिच की याद दिलायी; और अल्योश
से भी भेड़ों की गंध आती है... पर दूसरी तरफ़ पेत्रोव्ना से मिट्टी औ
चुकन्दर की गंध आती है... और यह पार्थिव गंधें बीम को हमेशा आकृष्
करती रही हैं। हो सकता है कि किसी दिन यहां इवान इवानिच प्रक
हो जाये...

मधुर गंधयुक्त सूखी घास में विश्रामदायी सुखद-ऊष्मा का अनुभव करत
हुआ बीम सो गया। इस तरह की घास, जिसकी गंध आपको हमेश
मुस्कराने को प्रेरित करती है, में मनुष्य भी तुरन्त निद्रामग्न हो जाता है
और नींद से पहले घास की गंध उसकी आंखों में नीला प्रकाश भर देत
है। बीम की घ्राण-शक्ति किसी मनुष्य के मुक़ाबले बहुत तीव्र थी, इसलिए
इस सुरभि की हर गहरी व फीकी अनुभूति उसे तुष्टि देती थी और उसक
उत्कट लालसा की आकुलता का दर्द घटाती थी।

एक मुर्ग़े की बांग से बीम की नींद खुली। उसने यह आवाज़ पहले
भी सुनी थी, लेकिन इतनी निकटता से कभी नहीं। यह आवाज़ तो सीधे

सीधे दीवार की दूसरी तरफ़ से आयी, इतनी लम्बी और गर्वीली : "कुकड़ूं-कूं!" गांव के सारे मुर्गों ने उसका जवाब दिया (कुछ समय बाद बीम को यह पता लगनेवाला था कि यह मुर्गा वृंदगान का नेता था और ऐसे नेता मुर्गे सामान्यतः दुष्ट स्वभाव के होते हैं)। बीम बैठा-बैठा इस अद्भुत संगीत को सुनता रहा। यह गांव के अन्दर लहरों की तरह गुज़रता गया, नज़दीक और दूर—यह इस बात पर निर्भर होता था कि अगली बारी किसकी है। अंतिम कुकड़ूं-कूं की पुकार एक कमज़ोर से बूढ़े मुर्गे ने ऐसी भर्रायी हुई आवाज़ में लगायी जो इज़्ज़तदार मुर्गे की प्रतिष्ठा के अनुरूप बिल्कुल नहीं थी। समय बीतने पर बीम को पता लगेगा कि ये मुर्गे कायर होते हैं, वे अपने इलाक़े में आये हुए एक अजनबी मुर्गे को देखकर भी भाग जायेंगे, जबकि मुर्ग़-जगत के सारे नियमों के अनुसार इस कायर का अनिवार्य कर्तव्य है कि वह उन मुर्ग़ियों की शांति की रक्षा करे जो उसके अधिकार क्षेत्र में रहती हैं। लेकिन वह, वह भुस का पुतला, भाग जायेगा। दूसरी तरफ़, इस क़िस्म का मुर्ग़ा अजनबी चूज़ों पर ज़रा भी दया नहीं करता और हमेशा उन पर चोंच चला देता है, गन्दा नीच कहीं का। जबकि वास्तविकता यह है कि थोड़ी सा भी आत्मसम्मान रखनेवाला मुर्ग़ा ऐसे किसी भी चूज़े पर चोंच नहीं चलायेगा जो उसके इलाक़े में आ पड़ता है। हां, अंतिम बार बांग देनेवाला मुर्ग़ा इसी प्रकार का था, ज़ाहिर था वह तभी बोला जब उसे पक्का यक़ीन हो गया कि उसने समय के मामले में कोई ग़लती नहीं की है। लोग ऐसे मुर्गे को अवसरवादी कहते, परन्तु बीम के लिए वह महज़ अजूबा था। प्रसंगतः, उसे, अनुभव की कमी के कारण, इस बात की कोई जानकारी नहीं थी कि लोग इस तरह की कमज़ोर बांग लगानेवाले अनाड़ी मुर्ग़ों की बांग से वक़्त नहीं बतलाते।

बीम लेट गया और उसे फिर से एक झपकी आ गयी। सहसा मुर्ग़ों की बांग की एक और लहर उठी और, एक छोर से दूसरे छोर तक, सारे गांव में फैल गयी। बीम उठकर बैठ गया और, एक बार फिर, आनन्द के साथ उसे सुनने लगा। इसके बाद एक तीसरी लहर उठी जो पहले से भी अधिक तीव्र, अधिक समृद्ध और अधिक प्रेरित लहर थी। उन्होंने कितना अच्छा गाया! यह था कुछ! वहां दूर, वे क्या करते थे, यह कल्पनातीत था। अभी तक बीम को इस बात का पता नहीं था कि इस काम-चलाऊ संगीत सभा का आयोजन उन सुन्दर, घमंडी, फेनिल-

श्वेत मुर्गपट्ठों ने किया था जो सामूहिक फ़ार्म के पौल्ट्री-विभाग में रहे थे। यदि वह ड्योढ़ी में बन्द न होता तो वह निश्चय ही छान करने जाता और ध्वनि के इस चमत्कार को ज़्यादा क़रीब से सुन लेकिन वह ड्योढ़ी उसका पिंजड़ा था।

धीरे-धीरे शरद का अरुणोदय दरवाज़े की फांक से भीतर सरक आय बीम उठा और उसने ड्योढ़ी का निरीक्षण किया ; वहां अनाज से भ एक टब था, एक कोने में एक पीपा पड़ा था जिसमें कुछ भुट्टे थे अ दूसरे कोने में गोभियां थीं। और इसके अलावा कुछ नहीं था।

पेत्रोव्ना अपनी बाल्टी लेकर आयी। बीम ने उसका स्वागत किय वह अहाते में गयी तो बीम भी उसके पीछे हो लिया। वह एक गाय पैरों के पास बैठ गयी। बाल्टी में दूध की पिचकारियां छूटने लगीं अ बीम हैरत में पड़कर अपने अगले पंजो को ऊपर-नीचे चलाने लगा। दूध गाय यथादिष्ट खड़ी थी और कुछ चबा रही थी। उसे सुनकर ऐसा ल रहा था मानो वह दूध का जीवित टैंक हो और उसके खुले नलों से दू के बहने की आवाज़ आ रही हो।

पेत्रोव्ना ने दुहना समाप्त करके बीम को बुलाया ("कालू!") एक कटोरे में थोड़ा दूध डाला और कहा : "नहीं।" फिर एक क्षण रुक के बाद बोली, "पी ले!" और सहृदयता से हंसती हुई घर के अन्द चली गयी।

हे भगवान, क्या दूध था वह! उष्ण और सुरभित, घास और फूल की हर गंध से परिपूरित एक सम्पूर्ण मैदान की तरह, और इसके अलाव (हां, उसे अब पक्का यक़ीन हो गया था) पेत्रोव्ना के हाथों की गं भी। वे, जैसा कि बीम ने पहली रात सोचा था, किसी भी अन्य हा जैसे नहीं थे। बीम ने लपलप करके सारा दूध पी लिया और कटोरे व चाटकर साफ़ कर दिया। इसके बाद उसने नित्यकर्म किया और शीघ्रत से अहाते का एक हवाई दौरा कर डाला। गाय ने उसे पूरे विश्वास साथ अंगीकार किया और उसके सिर को चाटा भी। इसके उत्तर में बी ने अपनी जीभ उसकी खुरदरी और दूधिया गंधवाली नाक से छुआई बाड़े के दूसरी तरफ़ खड़ी भेड़ों ने उसे देखकर घुड़की देने के अन्दा में पैर पटके, लेकिन जब उन्होंने देखा कि बीम का कोई आक्रामक इराद नहीं है तो वे जल्दी शांत हो गयीं। एक सूअरी और उसके दो बच्च

ने पहले तो बीम की उपस्थिति पर ध्यान ही नहीं दिया, वे एक दूसरे पर व्यंग्य सा करते हुए केवल घुरघुराते रहे, वैसे वे एक जाली के पीछे से बीम की तरफ़ मुंह किये पड़े थे। यह था चौपायों की तरफ़ से बीम का स्वागत। लेकिन मुर्ग़ियां—वह था हाल-चाल पूछने का असली ढंग। मुर्ग़ियों का नहीं, बल्कि लाल मुर्ग़े का। जैसे ही वह अपने उड़ने की जगह से नीचे उड़ा उसने अपने पंखों को क्रोधोन्मत्त होकर फड़-फड़ाना शुरू कर दिया: "कुकगुक-कुक-गुक!" फिर उसने चील की तरह बीम पर झपट्टा मारा और अपने पंजों तथा छाती से उस पर हमला किया। (ऐसे भी मुर्ग़े होते हैं!) बीम गुर्राया और अपने पंजे से एक करारा तमाचा मारा, इस पर मुर्ग़े ने अपने पंख समेटे और मुर्ग़ियों की ओर को रफ़ू-चक्कर हो गया। मुर्ग़ियां अहाते के एक कोने में हमदर्द दर्शकों की तरह इकट्ठा हो गयी थीं। उसकी लड़ाई ख़ासी अकीर्तिकर थी, लेकिन मुर्ग़ियों के बीच पहुंचने तक वह शूरवीर नायक बन चुका था। और तो और, वह ज़ोर से चिल्लाया भी: "देखा, मैंने कैसी गत बनायी उसकी! कैसी गत!" साफ़ ज़ाहिर था, मुर्ग़ियां खुले दिल से उसकी प्रशंसा कर रही थीं। और आप क्या सोचते हैं? बीम ने उस मुर्ग़े को एक तरह के सम्मान की दृष्टि से देखा। आप चाहे जो कहिये, लेकिन बीम ने अभी तक कोई ऐसा परिन्दा नहीं देखा था जो एक कुत्ते पर इतने साहस से हमला करे। यह हुई कुछ बात!

"क्या ग़ुल-गपाड़ा हो रहा है?" ख्रिसान अंद्रेयेविच ने ड्योढ़ी से बाहर आते हुए पूछा। फिर मुर्ग़ियों से कहा, "हुश! एक कुत्ते को देखकर डर गयीं, मूर्ख प्राणी!" वह बीम का पट्टा पकड़कर उसे मुर्ग़ियों के पास लाया। उसके साथ एक क्षण खड़ा रहा और फिर उसे छोड़ दिया।

बीम पीछे हटा और फिर मुड़कर दूर चला गया—निबटने दो उन्हें जैसे निबटते हैं। इसके बाद न तो कभी मुर्ग़ा उसके निकट आया, न मुर्ग़ियां। ऐसा नहीं था कि वे उससे किसी प्रकार का भय खाते हों; उसके निकट आने पर उसके रास्ते से बच निकलते समय कुछ चटर-पटर करने के सिवा उन्हें उससे और कोई डर नहीं था। उसे क्या परवाह थी? मुर्ग़ियां न तो उड़ती थीं न तैरती थीं और न किसी ने कभी उन पर गोली चलायी, इसलिए जहां तक उसका सम्बन्ध था वे परिंदे नहीं बल्कि कुछ अजीब प्राणी मात्र थे। हां, मुर्ग़ा ज़रूर कुछ भिन्न था। वह उड़कर

छत पर जा सकता था और अजनबियों के आने की चेतावनी बीम
लगभग, पहले ही दे सकता था। इसके अलावा वह अपने परिवार
अच्छी तरह से चलाता था; अगर उसे कोई कीड़ा मिल जाता था
वह उसे ख़ुद नहीं खाता था बल्कि अपने मातहतों को बुलाता था अ
कभी-कभी उनके बीच हिस्सा-बांट भी करता था। इस प्रकार, मुर्ग़ा अ
पद के सर्वथा योग्य था।

बीम को एक सप्ताह तक अहाते से बाहर नहीं निकलने दिया गय
इस तथ्य को देखते हुए वह वस्तुतः उस हिस्से का बड़ा मुखिया बन गय
वह अहाते के बीच पड़ा रहता और उसकी आंखें चौकसी से इधर-उ
देखती रहतीं। चौथे दिन तक वह सारी मुर्ग़ियों को अलग-अलग पहच
गया, यदि कोई अजनबी मुर्ग़ी उड़कर बाड़े में आ जाती तो वह उसे ऐ
ज़ोर-शोर से भगाता कि बाद में वह कुड़कुड़ाती और भय व कौतूहल
बीच अजीब अनिश्चय में फंसी आगे-पीछे को डगमगाती भागती। ख़ू
तमाशा होता!

लेकिन एक सूअर के बच्चे ने बराबरी के आधार पर अपना परिच
पेश किया। वह बीम के पास आया, एक बार गुरगुराया, उसने अप
नम थूथन से उसकी गर्दन में हल्का धक्का दिया और अपनी गावदियों जै
सफ़ेद भौंहोंवाली आंखों से उसे ताका। बीम ने उसके नम थूथन को चाटा
इससे वह सूअर इतना ख़ुश हुआ कि उछलने लगा। उसने बीम के गि
मिट्टी सूंघना शुरू कर दिया और उसके नीचे की ज़मीन खोदने लगा
बीम कृपापूर्वक हटा और दूसरी जगह को चला गया; मगर वह गुरगुरिय
उसके पीछे-पीछे चलता आया और अबोधगम्य बातें बुड़बुड़ाता रहा। (सूअ
और कुत्ते एक दूसरे की बातें उतनी ही अच्छी तरह से समझते हैं जै
दो विदेशी एक दूसरे को)। इसके बाद वह बीम की बालदार गर्म-ग
पीठ से टिककर लेट गया। फिर एक दिन जब बहुत ठण्ड थी और बी
सचमुच ही उदास था (दिन के समय ड्योढ़ी का दरवाज़ा बन्द रहत
था) तो वह उठा और मुलायम घास पर सूअर के बच्चों के बीच स
गया। उसे इस तरह सोते देख किसी को कोई आश्चर्य नहीं हुआ। औ
तो और अम्मा-सूअर को भी इस दोस्ती पर कोई आपत्ति नहीं थी। इस
विपरीत बीम जब भी उनके घर में घुसता तो वह ज़ोर-ज़ोर से विला
सा करती पर दर्द से नहीं सद्भावना से। बीम ने सूअर-भाषा की इ

ख़ासियत को तुरन्त समझ लिया, लेकिन भाषा के क्षेत्र में वह इससे अधिक प्रगति नहीं कर सका। शायद, भाषा जानना इतना महत्वपूर्ण नहीं है। आख़िर हर मामले में भिन्न होते हुए भी कुत्ता और सूअर शांति व सहमति से साथ रहने में समर्थ हैं।

बीम को बहुत अच्छी तरह से खिलाया-पिलाया जाता था, इसके अलावा अगर वह कभी सूअरों की नाद से भी एक-आध चीज़ें चख लेता तो उन्हें कोई आपत्ति न होती। जब वे बड़े हो गये, बीम के आधे के बराबर, तब भी उन्हें कोई एतराज़ नहीं होता था। बीम को रोज़ सवेरे एक लिटर दूध दिया जाता था, यहां इतने दूध को बहुत थोड़ा समझा जाता था। अब आप बताइये कुत्ते को इसके अलावा और क्या चाहिए? एक अहाता तो अहाता ही है, चारों तरफ़ बाड़ से घिरा और जेल के पिंजरे जैसा, फाटक हमेशा बन्द। यह शिकारी कुत्ते के लिए उपयुक्त जगह नहीं, जहां मुर्ग़ियों की चौकसी करने और सूअरों को राह पर लगाने के सिवा और कोई काम न हो। और असाधारण घ्राण-शक्तिवाले बीम जैसे कुत्ते के लिए तो यह निश्चय ही उचित नहीं है।

वह अहाते तथा उसमें रहनेवालों का आदी हो गया और उसने प्रचुरता के उस जीवन पर आश्चर्य करना बन्द कर दिया जो उसे सुलभ हो गया था। लेकिन जब चरागाहों से हवा आती तो बीम चिंतित होकर एक बाड़ से दूसरी तक चहलक़दमी करता या अपने अगले पंजों को बाड़ में टिकाकर खड़ा हो जाता, मानो आकाश के, किंचित, निकट आने की कोशिश कर रहा हो। इस तरह खड़ा वह आकाश में मुक्त भाव से निर्बाध उड़ते कबूतरों को देखता। कोई चीज़ उसकी अन्तरात्मा को कचोट रही थी और उसे अस्पष्ट सा अहसास हो रहा था कि उस प्रचुरता और सद्व्यवहार में किसी मुख्य वस्तु का अभाव था।

... ओ, निर्बन्ध उड़नेवाले कबूतरो, तुम ख़ूब खाये-पिये उस कुत्ते के बारे में कितना कम जानते हो जिसके पास सब कुछ है पर स्वतंत्रता नहीं!

बीम ने यह भी महसूस किया कि उसे बाहर नहीं जाने दिया जाता तो उस पर विश्वास भी नहीं किया जाता होगा। ख़्रिसान अंद्रेयेविच और अल्योशा अपनी भेड़ों को अहाते से हांककर बाहर ले जाते और अपनी छड़ियां लिये, लम्बी बरसातियां पहने दिनभर के लिए भेड़ों के साथ बाहर

चले जाते। लेकिन बीम को, उसके निवेदन के बावजूद, ग्रहाते में ही :
दिया जाता।

एक दिन बीम बाड़ के नीचे नाक डाले लेटा था कि हवा समा
लेकर ग्रायी कि पास ही एक चरागाह ग्रौर एक जंगल है। स्वतंत्रता इ
क़रीब थी! एक छेद से उसने देखा कि एक कुत्ता भागा जा रहा
यह उसकी बर्दाश्त के बाहर था। उसने ग्रपने एक पंजे से बाड़ के न
की मिट्टी हटायी, फिर ज़मीन खुरची ग्रौर ग्रगले क्षण वह ग्रपनी पृ
सामर्थ से ज़मीन खोदने में जुट गया। उसने ग्रपने ग्रगले दो पंजों से ग्र
नीचे की मिट्टी बाहर निकाली, फिर ग्रपने पिछले पैरों से उसे पं
की तरफ़ फेंक दिया; उसका लंगड़ा पैर भी काम करने लगा थ
चाहे ग्रन्य पैरों की तरह कठिन काम नहीं कर रहा था पर क
कर ज़रूर रहा था।

बीम की खुदाई ख़त्म हुई ही थी कि भेड़ें घर वापस लौट ग्रायं
यदि ऐसा न हुग्रा होता तो, कोई नहीं जानता कि क्या हो गया होता
भेड़ों ने बाड़ के नीचे से मिट्टी उछलती देखी तो वे उल्टे पांव फाटक व
तरफ़ भागीं। वहां ग्रल्योशा खड़ा था ग्रौर भेड़ों को भीतर बुला रहा था
इससे पहले कि वह जानता कि हुग्रा क्या लड़का पछाड़ खा गिरा ग्रौ
भेड़ों ने जंगली जानवरों की तरह झपाटे से फाटक पार कर सड़क व
तरफ़ भागना शुरू कर दिया। ग्रल्योशा भेड़ों के पीछे दौड़ा ग्रौर इध
बीम किसी चीज़ की परवाह किये बग़ैर खोदने में जुटा रहा।

पर तभी ख्रिसान ग्रंद्रेयेविच ग्राया ग्रौर उसने उसकी दुम पकड़ ली
बीम ग्रपने बिल में जहां का तहां खड़ा रह गया।

"तंग ग्रा गये हो ना, क्यों कालू?" ख्रिसान ग्रंद्रेयेविच ने बीम क
बाहर निकालने के लिए ग्राहिस्ता से उसकी दुम खींचते हुए पूछा।

बीम बाहर निकल ग्राया। जब किसी ने ग्रापकी दुम पकड़ ली हं
तो ग्राप ग्रौर क्या कर सकते हो!

"क्या मामला है, कालू?" ख्रिसान ग्रंद्रेयेविच ने कहा ग्रौ
फिर हैरत से पीछे हट गया। "तुम्हें कहीं पागलपन का रोग तो नहं
लग गया है?"

बीम की ग्रांखें लाल हो गयी थीं ग्रौर वह उत्तेजना से कांप रहा थ
ग्रौर ग्रपनी नाक को ग्रग़ल-बग़ल से ग्रागे करता हुग्रा इस तरह से हांप

रहा था मानो वह एक शिकार-अभियान में व्यस्त रहा हो। वह चिंतातुर सा अहाते में इधर-उधर दौड़ा और अन्त में खड़ा हुआ और मुड़कर ख्रिसान अंद्रेयेविच की तरफ़ देखते हुए फाटक को खुरचने लगा।

वह अहाते के बीच में खड़ा विचारमग्न हो गया। बीम उसके पास गया, नीचे बैठा और अपनी आंखों से असंदिग्ध रूप से बोला: "मैं बाहर खुले में जाना चाहता हूं, मुझे जाने दो!" वह निवेदन सा करता हुआ पेट के बल लेट साष्टांग दण्डवत करता हुआ धीरे-धीरे सकरुण स्वर में कूं-कूं करने लगा। ख्रिसान अंद्रेयेविच नीचे झुका और उसने उसे दुलराना शुरू कर दिया।

'अहा, कालू बेटे... एक कुत्ते को भी स्वतंत्रता चाहिए। हां, तुम्हें चाहिए।" फिर उसने बीम को ड्योढ़ी में बुलाया, उसे सूखी घास में सुलाया और एक रस्सी से बांध दिया। फिर वह मांस से भरा एक कटोरा लेकर आया।

और बस। बुरा, बहुत बुरा। बीम स्वतंत्रतारहित अच्छे जीवन से तंग आ गया था।

उसने मांस को छुआ भी नहीं।

बारहवां अध्याय

मैदानों के विस्तार।
एक असामान्य आखेट।
बच निकलना

ख्रिसान अंद्रेयेविच के घर में, हर सुबह की तरह, अगली सुबह भी वही दिन-चर्या रही। मुर्गों की तीसरी बांग के तुरन्त बाद कार्यकारी-दिवस का चक्र चलने लगा। गाय रंभायी और पेत्रोव्ना ने उसे दुहा और चूल्हा जलाया। अल्योशा बाहर निकला और कालू, जो अब उसका प्यारा बन गया था, को दुलराया। डैडी ने गाय और सूअरों को चारा डाला और मुर्ग़ियों को दाना दिया। इसके बाद वे सब मेज़ पर बैठे और नाश्ता किया। उस दिन सवेरे बीम ने अल्योशा की हज़ार मिन्नतों के बावजूद उस सुवासित

दूध को छुआ भी नहीं। जब अल्योशा के माता-पिता घर के अन्दर द
थे तब वह पानी लेकर आया और उसने गोशाला को धोया और एक
फिर बीम से खाने का आग्रह किया। उसने उमकी नाक को आहिस्ता
कटोरे की ओर धकेला, लेकिन कालू, सहसा, पूर्ण अजनबी बन ग
ख्रिसान अंद्रेयेविच ने एक बड़े से चाकू को तेज़ करके तथा उसे दरव
के ऊपर रखकर अपनी तैयारियां पूरी कर लीं।

जब सूरज उदय हो गया तो पेत्रोव्ना ने अपने मोटे कपड़े और श
पहने एक थैला और, डैडी द्वारा तेज़ किया हुआ, चाकू उठाया और बा
चली गयी। अल्योशा और उसके पिता ने अपनी-अपनी बरसातियां पह
और उसके पीछे चल पड़े। भेड़ों को बाड़े से निकालकर सड़क की अ
ले जाते हुए उनकी आवाज़ें सुनी जा सकती थीं।

क्या वे उस अंधियारे ड्योढ़ी में बीम को अकेला और रस्सी से बं
छोड़कर जा रहे थे? यह तो अति हो गयी! बीम ने कड़ुवी निरा
के स्वर में आर्त-नाद करना शुरू कर दिया।

बाहर का दरवाज़ा खुला और ख्रिसान अंद्रेयेविच भीतर आया, उस
बीम की रस्सी खोली, रस्सी पकड़े उसे सीढ़ियों से बाहर लाया, फि
उसने दरवाज़ा बन्द किया, भेड़ों के झुण्ड की तरफ़ चलता हुआ उस स्था
पर गया जहां अलशोशा खड़ा था और वह रस्सी उसे सौंप दी। वह खु
झुण्ड के सबसे आगे खड़ा हुआ और चिल्लाया :

"हम जा रहे हैं।"

भेड़ें सड़क पर उसके पीछे-पीछे चलीं। रास्ते में हर अहाते से पांच
या दस भेड़ें उस झुण्ड में शामिल हो जातीं। जब वे गांव के छोर पर
पहुंचे, तब तक ख़ासा बड़ा रेवड़ तैयार हो गया था। सबसे आगे ख्रिसान
अंद्रेयेविच और आख़िर में अल्योशा और कुत्ता।

वह बहुत ही शुष्क, पाले का दिन था और पैरों तले ज़मीन इतनी
सख़्त थी जैसी कि शहरों में कोलतार की सड़कें होती हैं, लेकिन यह रास्ता
कोलतार की सड़क से कहीं ज़्यादा बीहड़ था। बीच-बीच में हिम के गालों
की बौछार होने लगती जिससे ऊष्माहीन सूर्य अस्थायी रूप से छिप जाता
था; लेकिन यह जल्दी बीत गया। शरद ऋतु समाप्त हो गयी थी लेकिन
शिशिर अभी प्रारम्भ नहीं हुआ था, यह दोनों के बीच की वह चिंताकुल
अवधि थी जब वह हिम धवल शिशिर आने ही वाला होता है, जिसकी

हर किसी को अपेक्षा तो होती है लेकिन उसे देखकर हमेशा आश्चर्य भी होता है।

भेड़ें अपनी भेड़-भाषा में मिमियाती, बोलती, ख़ुशी-ख़ुशी चली जा रही थी, उनकी भाषा को समझना नितांत असम्भव था। इधर-उधर भली-भाति देखने के बाद बीम ने ग़ौर किया कि घूंघरदार सींगोंवाला एक मेढ़ा ख़्रिसान अंद्रेयेविच के ठीक क़दमों पर चल रहा था और एकदम पीछे अल्योशा के ठीक सामने एक छोटी लंगड़ी मादा भेड़ लगड़ाती चल रही थी, उसे आगे बढ़ाते रहने के लिए अल्योशा उसका अपनी छड़ी के मुड़े हुए सिरे से रह-रहकर धकेलता जाता था और तब ज़ोर से कहता था:

"डैडी, थोड़ा धीमे चलिये, लंगड़ी सबके बराबर नहीं चल सकती!"

उसके पिता ने अपना सिर भी नहीं घुमाया और रफ़्तार कम कर दी। उसके साथ ही सारे रेवड़ की रफ़्तार हलकी हो गयी।

बीम रस्सी से बंधा साथ-साथ चल रहा था। उसने देखा कि डैडी कितने प्रभावशाली ढंग से भेड़ों के आगे चल रहा है और वे उसकी हलकी से भी हलकी गति के अनुरूप कितनी तत्परता से आज्ञा का पालन कर रही हैं और अल्योशा झुण्ड के पीछे व पार्श्वों में कितनी कुशलता से देख-रेख कर रहा है। जब झुण्ड की एक भेड़ पीली पड़ी हुई घास को कुतरने के लिए अलग निकल आयी तो अल्योशा बीम को साथ लेकर उसके पीछे दौड़ा और ज़ोर से बोला:

"तू कहां को भागी जाती है?!" और उसने अपनी मुड़ी हुई छड़ी उस भगोड़ी भेड़ के सामने फेंक दी।

वह भेड़ वापस झुण्ड में आ मिली, लेकिन दूसरी तरफ़ तीन अन्य ने एक साथ अपनी स्वतंत्रता दिखलाने का फ़ैसला किया और वे एक हरे खण्ड की तरफ़ लपकीं। अल्योशा फिर उनके पीछे भागा और उन्हें वापस ले आया। बीम फ़ौरन समझ गया कि किसी भी भेड़ को समुदाय से विलग होने की अनुमति नहीं है। अगली बार उसने भी नियम भंग करनेवाली भेड़ों पर भूंकना शुरू कर दिया। "भौं-भौं-भौं!" वह भी वैसे ही दुर्भावनारहित ढंग से दौड़ा जैसे अल्योशा दौड़ा था और नियम तोड़नेवाली भेड़ों को ठीक उसी की तरह से चेतावनी दी जैसे कि लड़के ने दी थी: "तू कहां को भागी जाती है?"

"डैडी, आप सुन रहे हैं?" अल्योशा ने पुकारकर कहा।

ख्रिसान अंद्रेयेविच मुड़ा और अनुमोदन करते हुए चिल्लाया :
"अच्छा बच्चा, कालू!"
एक घाटी की ढलान पर उसने अपनी छड़ी अपने सिर के ऊपर उठ
और उतने ही ज़ोर से बोला :
"जाने दो उनको!" फिर उसने अपनी चाल हल्की कर दी
रेवड़ के सामने से आरपार जाना शुरू कर दिया।
अल्योशा ने भी यही किया, लेकिन चूंकि वह पीछे था इसलिए
भेड़ों को अपने पिता के निकट रखने की जल्दी करनी थी। और धी
धीरे सारा रेवड़ एक ऐसी पंक्ति में फैल गया जिसकी अलग-अलग क़तार
में तीन या चार से अधिक भेड़ें नहीं थीं। अब ख्रिसान अंद्रेयेविच रेव
के आमने-सामने था और उनकी पांतों का निरीक्षण कर रहा था। उस
बग़ल में रेवड़ का मुखिया मेढ़ा खड़ा था। उसने अपने थैले से एक पावरो
निकाली, उसकी एक पपड़ी काटी और किसी कारणवश मुखिया मेढ़े
दे दी। बीम को यह जानकारी नहीं हो सकती थी कि रेवड़ के मुखि
को गड़रिये का भय तो नहीं होना ही चाहिए, साथ ही उससे प्यार भ
होना चाहिए। इसलिए अपने अज्ञान के कारण बीम ने इस घटना को इ
तथ्य की पुष्टि मात्र माना कि डैडी एक दयालु व्यक्ति है। लेकिन, ईमान
दारी से कहें तो, डैडी एक चालाक आदमी भी था। इसी कारण से व
मेढ़ा कुत्ते की तरह उसके पीछे चलता था और उसकी आवाज़ पर हमेश
सही आचरण करता था। ज़ाहिर है कि भेड़ चरानेवाले की सारी चालाकिय
को समझना बीम का काम नहीं था। लेकिन ख्रिसान अंद्रेयेविच बहुत अच्छ
तरह से जानता था कि बग़ैर कुत्तेवाले किसी कम बड़े रेवड़ का मूर्ख
अड़ियल मुखिया उन्हें बुरी तरह से भटका सकता है—इसके लिए आपक
क्षणभर के लिए अपना ध्यान भटकने देने की या थकान अथवा दोपह
की गर्मी से एक झपकी भर लेने की ज़रूरत होगी। लेकिन इस रेवड़ क
मुखिया एक विशेष और समुचित प्रशिक्षित मेढ़ा था, इसलिए उसे बी
को देखकर ख़ासी प्रसन्नता हुई।
ख्रिसान अंद्रेयेविच ने अपना पाइप जलाया और अल्योशा से कहा
"उन्हें हांको मत—यहां काफ़ी अच्छा चारा है।"
... जी हां, पाठक महोदय, शरद के अंतिम दिनों भेड़ों के झुण
को खिलाने का धंधा बड़ा पेचीदा होता है। अकुशल हाथों में, अच

चरागाहों के बावजूद, हफ़्तेभर में आधे से ज़्यादा भेड़ें भुखमरी की शिकार हो जायें – वे अच्छे चारे को कुछ ही देर में कुचलकर ज़मींदोज़ कर देंगी; लेकिन अगर सावधानी और समझदारी से रेवड़ का संचालन किया जाय तो एक रेवड़ औसत चारेवाले चरागाहों के बावजूद फलफूल कर मोटा हो सकता है। ख़्रिसान अंद्रेयेविच जानता था कि एक रेवड़ को क़रीब-क़रीब बंजर ज़मीन में, यत्र-तत्र किनारों-कोनों में लगी घासों तथा अपने हल की फालों से ज़मीन खोदते ट्रैक्टरों के ठीक सामने किस प्रकार चराया जाता है। इसके लिए एक निश्चित प्रतिभा की, धन्धे के प्रति लगाव की भावना की और जानवरों के प्रति प्रेम की आवश्यकता होती है। एक रेवड़ को चराना बहुत बड़ा काम होता है, और इस काम का अपना ही एक सौंदर्य होता है, क्योंकि गड़रिया, कभी-कभी अनजाने ही, यह महसूस करता है कि वह प्रकृति का एक अंग है, उसका संरक्षक और हितकारी है। यह इसका सार है। लेकिन पाठक, आप मुझे इस क्षण बीम को भूलने तथा मनुष्य के बारे में, शरद के अंतिम दिनों खुले मैदानों में कार्यरत मनुष्य के बारे में, बातें करने के लिए क्षमा करें।

तब भेड़ें छोटी-छोटी घास को दांतों से काटकर खाने पर जुट गयीं। उनके खाने की चपर-चपर व कर्रकर की अटूट अविरत ध्वनि एकाकार होकर केवल एक ही शांत व विश्वासवर्धक आवाज़ में परिवर्तित हो गयी। अब डैडी और अल्योशा एक दूसरे के क़रीब थे और धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। अब उन्हें पहले की तरह, दूर से चिल्लाकर बोलने की ज़रूरत नहीं थी।

अल्योशा ने पूछा :

"डैडी क्या मैं कालू को खुला छोड़ दूं।"

"परीक्षण कर लो। अब उसे नहीं भागना चाहिए। कुत्ते स्वतंत्रता से भागते नहीं। उसे छोड़ दो, लेकिन रेवड़ से अपनी दूरी बनाये रखना, कुछ देर उसके साथ खेलना। और भेड़ों को चिन्ता में मत डालना।"

अल्योशा ने भेड़ों के रेवड़ को हटने दिया, फिर उसने रस्सी खोली, प्रसन्नतापूर्वक कहा :

"आओ, कालू, दौड़ लगायें!" इतना कहकर वह ढलान से नीचे घाटी की तरफ़ दौड़ा। उसके दौड़ते और फुदकते समय वहां की सख़्त ज़मीन से बूटों के टकराने की धप-धप की आवाज़ हो रही थी।

बीम की प्रसन्नता का वारा-पार नहीं रहा। वह भी कूदा और
अल्योशा के गालों को चाटने की कोशिश में उछल-कूद मचायी, फिर द
हुआ दूर निकला और तीर की तरह वापस लौटा। वह पूर्ण स्वतं
में उत्सव मना रहा था। फिर उसने एक छड़ी उठायी और उसे
वेग से दौड़ता हुआ अल्योशा के पास पहुंचा। अल्योशा ने लकड़ी ली
उसी के लिए उसे दूर फेंक दिया।

"कालू, लेकर आओ!"

बीम उसे लेकर वापस आया और उसने वह लकड़ी अल्योशा को
की। अल्योशा ने उसे फिर से फेंक दिया, लेकिन इस बार उसे लेने
बजाय अल्योशा ढलान में, ऊपर रेवड़ की तरफ़, चढ़ने लगा।

"इसे ले चल, कालू! ले चल!"

बीम अपने बोझ को लेकर उसके पीछे-पीछे आया। जब वे च
पर पहुंच गये तो अल्योशा ने लकड़ी की बजाय अपनी टोपी बीम के
में दे दी। बीम उसे प्रसन्नतापूर्वक ले चला। अल्योशा उछलता हुआ उ
संग चला और साथ ही दोहराता गया:

"ले चल, कालू। अच्छे लड़के, ले चल, अच्छा बेटा कालू, अ
बच्चा।"

लेकिन वे रेवड़ के नज़दीक ख़ामोशी से आये ("भेड़ों को चिंता
मत डालना")।

"इसे डैडी को दो," अल्योशा ने मृदु स्वर में आदेश दिया।

ख्रिसान अंद्रेयेविच ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और बीम ने टो
उसे दे दी। दोनों गड़रियों ने उसमें एक नयी क्षमता खोज निकाली अ
वे तीनों प्रफुल्लित हो गये।

एक सप्ताह से भी कम समय में बीम ने ख़ुद पता लगा लिया
उसे एक नया कर्तव्य पूरा करना है: इधर-उधर भटकी हुई भेड़ों
वापस झुण्ड में पहुंचाना और जब उन्हें एक पंक्ति में फैलाया जाता
तब उन पर नज़र रखना लेकिन शाम को जब वे गांव की सड़क में छो
छोटे समूह में बंटकर अपने-अपने घरों को जाती हैं तब किसी प्रकार
हस्तक्षेप न करना।

बीम उन दो कुत्तों को पहचानने लगा जो सामूहिक फ़ार्म के विशा
रेवड़ की पहरेदारी करते थे। उस रेवड़ की देख-रेख तीन वयस्क गड़रि

करते थे और वे तीनों एक जैसी लम्बी बरसातियां पहनते थे। यद्यपि वे दो रेवड़ न तो कभी एक दूसरे के निकट आते थे, न एक दूसरे से अन्तर्मिश्रित होते थे फिर भी अल्योशा शरत्काल के अल्पकालीन अवकाशों के दौरान सामूहिक फ़ार्म के गड़रियों से मिलने के लिए दौड़ता हुआ चला जाता था। उसके साथ बीम भी सामूहिक फ़ार्म के कुत्तों से मिलने के लिए चला आता था। उनका जोड़ा अच्छा था: हलका पीला रंग, लम्बे बाल, बड़ा आकार, लेकिन शांत और आज्ञाकारी; वे बीम से भी कृपापूर्वक और शांत भाव से खेलते थे और रेवड़ की गश्त, बीम की तरह, फुदकते, उछलते और कूदते या पूरी रफ़्तार से चौकड़ी भरते हुए नहीं बल्कि पैदल चलनेवाली रफ़्तार से लगाते थे। वे ख़ुद अपनी प्रतिष्ठा का बहुत ध्यान रखते थे। बीम उन्हें पसन्द करता था और भेड़ों को भी। इस तरह बीम के लिए भी एक स्वतंत्र कार्यकारी जीवन शुरू हो गया। दो आदमी और कुत्ता थककर घर लौटते और उनके पास कहने के लिए कोई ख़ास बात न होती। लेकिन यहां स्वतंत्रता थी और एक दूसरे पर विश्वास था। एक कुत्ता भी ऐसे जीवन को छोड़कर नहीं भागता।

लेकिन एक दिन, सहसा, हिमपात होने लगा। हवा चली और उसे, भंवर की तरह घूमते झोकों से, मैदानों के आरपार उड़ाने लगी। ख़्रिसान अंद्रेयेविच, अल्योशा और बीम ने भेड़ों को एक घेरे में इकट्ठा किया और थोड़ी देर इंतज़ार करने के बाद उन्हें दिन की समाप्ति से बहुत पहले ही वापस गांव की ओर हांका। भेड़ों के शरीर बर्फ़ से ढंक गये, मनुष्यों के कंधे भी और ज़मीन भी। हर जगह बर्फ़ ही बर्फ़ थी और मैदानों में बर्फ़ के सिवा और कुछ नहीं दिखायी देता था। शिशिर का आगमन हो गया था; वह आकाश से, नीचे, धरती में आ टपका था।

ख़्रिसान अंद्रेयेविच ने ज़रूर यह तय किया होगा कि ड्योढ़ी में बंधा या सूअरों के साथ लेटा रहना बीम जैसे कुत्ते के लिए उचित नहीं है, क्योंकि अब उसे रात को एक गर्म और आरामदेह कुत्ताघर में रख दिया जाता था। उन्होंने यह कुत्ताघर ड्योढ़ी के एक कोने में बनाया था और उसे मुलायम सूखी घास से भर दिया था। शाम को वह परिवार के सदस्य के रूप में घर के अन्दर आता और रात के खाने के बाद तक रहता।

"यह शिशिर नहीं हो सकता, उसके लिए अभी समय नहीं आया है," ख़्रिसान अंद्रेयेविच ने एक दिन अपनी पत्नी से कहा।

बातचीत में "शिशिर" शब्द का अक्सर ज़िक्र होता और ऐसा ज
पड़ता था कि वे इससे चिंतित हैं। पर जो हो, बीम सिर्फ़ यह जान
था कि शिशिर का मतलब सफ़ेद ठण्डी बर्फ़ होता है।

उस शाम पेत्रोव्ना बर्फ़ के गालों से भरी आयी, उसका चेहरा गी
और वातदग्ध था। बीम ने देखा कि कपड़े उतारते समय उसके हाथ क
रहे थे और वह कराह रही थी। उसके हाथ लाल-लाल बिवाइयों औ
बीम के पैर की गद्दियों की तरह, कठोरीकृत चमड़े से भरे थे। उ
उन्हें गर्म पानी से धोया और उनमें मरहम लगाया और ऐसा करते स
उसके मुंह से दर्दभरी आहें निकल रही थीं। ख्रिसान अंद्रेयेविच उसे दे
रहा था और किसी वजह से परेशान नज़र आता था (जैसा कि ब
उसके चेहरे को देखकर समझ गया था)।

अगली सुबह कुछ चाकू तेज़ किये और वे चारों एक साथ घर
रवाना हुए। शुरू में वे एक एकसार सफ़ेद मैदान से होकर गुज़रे,
हलकी बर्फ़ से ढका था और वह बर्फ़ आधे पंजे से ज़्यादा गहरी नहीं थ
इसलिए उस पर चलना आसान था। हवा शांत मगर ठण्डी थी। इस
बाद वे एक खेत में पहुंचे जहां चुकन्दर की ढेरियों की क़तारें लगी हु
थीं। चुकन्दरों के सिरे ऊपर को थे और उनके ऊपर पत्तियों की एक पर
रखी हुई थी। हर ढेरी के पास ठीक पेत्रोव्ना के जैसे कपड़े पहने ए
औरत बैठी थी और ख़ामोशी के साथ काम में व्यस्त थी।

वे चारों एक ढेर के गिर्द बैठे और बीम ने देखा कि आगे क्या हुआ
पेत्रोव्ना ने एक चुकन्दर के पत्तियोंवाले सिरे को पकड़ा और चुकन्दर क
ढेर से बाहर खींच लिया, उसे निपुणता से अपनी ओर घुमाया और चा
के एक ही वार से उसकी पत्तियां काट दीं, चाकू के दो-चार वार औ
पड़े तो वह चुकन्दर उसकी बग़ल के दूसरे ढेर में रखने लायक़ बन गया
ख्रिसान अंद्रेयेविच ने भी और अल्योशा ने भी ठीक ऐसा ही किया औ
अपने पिता से भी अधिक कुशलता से किया। उनका यह काम जारी रहा
खच – पत्तियां ग़ायब। खच-खच-खच – सिरा साफ़! ये टप्पा – और चुकन्द
नये ढेर में, जो उनके सामने बढ़ता चला जा रहा था।

उनसे कुछ ही दूरी पर एक अन्य ढेर के सामने एक औरत अके
बैठी थी और यही काम कर रही थी। इसी प्रकार अगले ढेर पर, लेकि
वहां दो या तीन औरतों साथ-साथ काम कर रही थीं। और सारे खेत

यही हो रहा था – चुकन्दर के ढेर, भारी-भारी मफ़लर पहने, हाथों में बिवाइयां फटीं और शीत से सूजे चेहरेवाली औरतें। वे सब या तो तिरपालों के बने हलके दस्तानों या नंगे हाथों से काम कर रही थीं। खच-खच – सिरा साफ़! खच-खच और कामगार चाकू नीचे डालतीं अपने हाथ में गर्मी पहुंचाने के लिए मुंह से भाप देतीं और उन्हें रगड़कर थोड़ी सी ऊष्मा पैदा करतीं। और फिर वही, खच-खच – पत्तियां ग़ायब! घड़ी की तरह लगातार यही सिलसिला।

ठण्ड बहुत थी। चाकुओं को चलते देखता हुआ चुपचाप बैठा बीम कांपने लगा, उसने अपने शरीर को झटका और उस इलाक़े का निरीक्षण करने चला, लेकिन वह बहुत दूर नहीं गया, शरीर की गर्मी वापस आने पर वह अन्य औरतों के बुलाने के बावजूद अपने परिवार के पास लौट आया (अब तक सारा गांव कालू को जान गया था)।

बाद में, जो औरत अकेली बैठी काम कर रही थी वह उनके पास आयी। वह जवान थी पर बेहद दुर्बल। उसने किसी चीज़ की शिकायत की, अपनी नाक सुड़की पेत्रोव्ना के पास बैठकर अपने हाथ दिखाने लगी। पेत्रोव्ना ने भी अपने हाथ दिखाये। दुखी होकर उस औरत ने तिरपाल से बने अपने अंगुलिरहित दस्तानों को अपनी छाती पर दबाया और ख़ामोश हो गयी। उसका नाम नताल्या था।

पेत्रोव्ना – खच-खच! ख्रिसान अंद्रेयेविच खच-खच! अल्योशा – खच-खच! फिर उन्होंने अपने हाथ में फूंक मारी गालों को रगड़ा। पेत्रोव्ना – खच-खच ... और सहसा – पच्च! .. उस दुखी औरत की आंखों से आंसू की एक बूंद चुकन्दर की पत्ती पर गिरी। उसने अपनी आस्तीन से अपना चेहरा ढंका और वापस अपने ढेर पर चली गयी।

"ईश्वर हमारी रक्षा करे, तुम्हें कहीं सर्दी न लग जाये," पेत्रोव्ना ने अल्योशा से कहा और उसके पास आकर उसकी टोपी के नीचे के गर्म स्कार्फ़ को ठीक किया, उसे उसकी गर्दन में लपेटा, अपनी कमर में लिपटे कैनवस के कमरबंद को अल्योशा के भेड़चर्म के कोट के गिर्द लपेट दिया।

बीम ने भी, पेत्रोव्ना की सहायतार्थ अपनी नाक अल्योशा के भेड़चर्म में कोंची। लेकिन, उसे पता लगा कि अल्योशा जितना दिखायी दे रहा है उसका आधा भी सर्द नहीं है, बल्कि सर्द होना तो दूर वह दोनों वयस्कों

से कहीं अधिक गर्म है (बीम इस बात का फ़ैसला लोगों के मुक़ाबले क
अधिक अच्छी तरह से कर सकता था)।

खिग्रसान अंद्रेयेविच, जो अपना चाकू दो गुनी तेज़ी से चला रहा थ
ने कहा:

"मैं बताता हूं कि तुम्हें क्या करना चाहिए," (बीम ने अपने का
खड़े कर लिये)। "तुम जाओ, कालू के साथ दौड़ो और अपने आपव
गर्म कर लो।"

तो बीम, लड़के के साथ चुकन्दर के खेत के पार चल पड़ा, खे
ठण्ड से जमकर सख़्त हो गया था। खेत पार करने तक अल्योशा को बहु
गर्मी हो गयी। उसने अपनी टोपी उतारी, स्कार्फ़ खोला, उसे अपनी जैके
के आगे नीचे को धकेल दिया, अपनी टोपी फिर से पहनी और का
ढकने के सिरों को ऊपर बांध दिया। जंगल के किनारे पर किसी घने
भूरी घास पर बीम क्षणभर के लिए रुक गया, उसने हवा को सूंघा
आगे-पीछे जाकर आखेट का परास मापा और सहसा अल्योशा को आश्चर
में डालता हुआ आखेट-संकेत की मुद्रा में खड़ा हो गया।

अल्योशा दौड़ता हुआ उसके पास आया:

"क्या है, कालू?"

बीम, आदेश की प्रतीक्षा में, स्थिर खड़ा था। अल्योशा ने अनुमान
लगा लिया कि हुआ क्या था।

"उन्हें डराओ! डराओ उन्हें!" वह चिल्लाया।

बीम उस जादुई शब्द "आगे बढ़ो!" का इन्तज़ार कर रहा था,
लेकिन अल्योशा पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से चिल्लाया:

"डराओ उन्हें!"

तो बीम धड़धड़ाता हुआ आगे बढ़ गया और तीतरों के एक झुण्ड को
उड़ा दिया।

अगले क्षण अल्योशा बीम के साथ दौड़ता हुआ वापस जा रहा था।
बीम समझ गया कि वे एक दूसरे को अच्छी तरह से समझ नहीं सके।
अल्योशा इवान इवानिच के शब्दों को नहीं जानता था। लेकिन वह उसके
साथ वापस दौड़ा और लड़के का चेहरा अरुणाभ हो गया था, उसने अपने
माता-पिता को बताया कि बीम ने किस तरह से कुछ तीतरों का पता
लगाया और उन्हें डराकर उड़ा दिया।

"वह शिकारी कुत्ता है, कालू समुचित प्रशिक्षण-प्राप्त कुत्ता है," ख्रिसान अंद्रेयेविच ने सराहना के स्वर में कहा, "अल्योशा यदि हमारे पास बंदूक होती तो हम शिकार के लिए जा सकते थे, ना?"

एक बंदूक, शिकार? यह ऐसे शब्द थे जिन्हें बीम जानता था और उनसे प्यार करता था! उसे दो बार बताने की ज़रूरत नहीं।

उसने अपनी दुम हिलायी और बारी-बारी से अल्योशा, ख्रिसान अंद्रेयेविच तथा पेत्रोव्ना के पास जाकर उन्हें अपनी नाक से गुदगुदाया। वह उनसे कुक्कुर-भाषा में स्पष्टता से बोल रहा था, लेकिन कोई समझा नहीं। कोई बंदूक कहीं दिखायी नहीं पड़ी और बन्दूक के बिना उसे आखेट के लिए कोई नहीं ले गया। बीम अल्योशा के पीछे उसके भेड़चर्म कोट से सटकर बैठ गया और मनन-चिंतन करने लगा—कम से कम ऐसा दिखायी ज़रूर पड़ता था।

जब वे घर पहुंचे तो सांझ ढल चुकी थी। वे थके थे और ठण्ड से सुन्न पड़ गये थे। कुछ दिनों बाद उन्होंने चुकन्दर काटने के लिए जाना बन्द कर दिया—उन्होंने अपने भाग का काम पूरा कर लिया था।

अब पेत्रोव्ना को कहीं जाना नहीं था और वह, स्पष्टतः, प्रसन्न थी। वह दिनभर व्यस्त रहती, गौशाला की सफ़ाई, धुलाई, फ़र्श की रगड़ाई, गोभी की कटाई, मक्खन बिलोना, चूल्हा जलाना, खाना पकाना, सिलाई की मशीन चलाना, मरम्मत का काम करना, चारे की नांदें गाय के लिए ले जाना—उसके कामों का कोई अन्त नहीं था—बीम हर समय उसे देखते रहता था।

एक बार अपने हाथों में पुस्तकें दबाये एक साफ़-सुथरी औरत अल्योशा के लिए आयी और उसने पेत्रोव्ना को डांटा (लेकिन, जैसा कि बीम ने गौर किया, क्रोधित होकर नहीं)। वे दोनों "अल्योशा", "भेड़", "चुकन्दर" शब्द दोहराते रहे। अगली सुबह अल्योशा कुछ पुस्तकें लेकर चला गया। तब से हर दिन और सारे दिन घर से बाहर ही रहता। ख्रिसान अंद्रेयेविच भी एक बड़ा सा कांटा लेकर रोज नियमित रूप से जाता और जब लौटकर आता तो उससे खाद की गंध आती थी।

एक निनांत सामान्य सी संध्या को जब वे सब रात का भोजन कर रहे थे तो एक आदमी भीतर आया। वह बड़े, चौड़े चेहरेवाला, मज़बूत काठी का तथा चौड़े कंधेवाला एक लम्बा आदमी था, लेकिन उसकी आंखें

छोटी-छोटी लोमड़ियों सरीखी थीं और वह लोमड़ी की खाल से बनी ट
पहने हुए था। बीम ने देखा कि ख्रिसान अंद्रेयेविच ने उस नवागंतुक
तरफ़ बग़ैर मुस्कराये देखा, वह सामान्यतः जैसा करता था उसके विप:
न तो मेज़ से उठा न उसने उन व्यक्ति से हाथ ही मिलाया।

"क्या हाल हैं!" आगंतुक ने अपना टोप उतारे बग़ैर यों ही कह

"हैलो, क्लिम," ख्रिसान अंद्रेयेविच ने उत्तर दिया, "बैठो।'

वह आदमी एक बेंच पर बैठ गया, उसने अपने लिए एक बड़ी
सिगरेट बनायी, बीम को ग़ौर से देखा और बोला:

"तो यह है कालू?" (बीम ने फ़ौरन कान खड़े कर लिये
अगर उसे शिकार खेलने को नहीं मिलेगा तो यह कुत्ता ख़राब हो जायेग
या यह भाग जायेगा। इसे मुझे बेच दो—मैं तुम्हें इसके लिए पच्चं
रूबल दे दूंगा।"

"वह बिकाऊ नहीं है," ख्रिसान अंद्रेयेविच ने जवाब दिया और मे
से उठ गया, क्योंकि उसने अपना खाना समाप्त कर लिया था।

तीन क़दम की दूरी से बीम यह बता सकता था कि आगंतु
से ख़रगोश की गंध आ रही है। वह नज़दीक आया और उसे सूंघ
अपनी दुम हिलायी और लोमड़चर्म की टोपी के नीचे उसके चेहरे व
देखा; बीम की भाषा में इन सबका अर्थ था: "मैं समझता हूं—तु
एक शिकारी हो।"

"इसे देखा?" क्लिम ने कहा। "कालू जानता है कि उसका वास्त
किससे है। उसे मुझे बेच दो, मैं कहता हूं बेच दो।"

"नहीं, मैं नहीं बेचूंगा। मैं इस समय वह बात बता सकता हूं जि
अल्योशा भी पहले नहीं जानता था। मैंने क्षेत्रीय अख़बार को तीन रूब
और एक विज्ञापन भेजा था। 'एक शिकारी कुत्ता, सफ़ेद पर एक का
काला मुझसे सम्बन्धित हो गया है।' और मुझे एक उत्तर मिला। 'कृपया
अब आगे और विज्ञापन मत दीजियेगा। समय आने तक उसे अपने पा
रहने दीजिये।' मैं नहीं जानता कि यह सब क्या है, लेकिन मेरा अनुमा
है कि यह ख़ासा महत्वपूर्ण कुत्ता है और उसकी देखभाल होनी चाहिए।

"लेकिन तुम उसे चौपट कर दोगे। उसे मुझे बेच दो," क्लिम
ज़ोर देते हुए कहा; उसकी आवाज़ से क्रोध झलकने लगा था।

"नहीं, वह बिकाऊ नहीं है," ख्रिसान अंद्रेयेविच ने उसकी बा

काटकर कहा, "अगर तुम चाहते हो तो उसे शिकार के लिए ले जा सकते हो, लेकिन उसे उसी दिन वापस ले आना। कालू को अपनी नस्ल के अनुरूप, जो उसे अनुमानतः करना है, करने दो।"

"लेकिन वह बिकाऊ नहीं है," अल्योशा ने भी अपनी बात कह दी।

"अच्छी बात है, जैसा तुम चाहते हो वही होगा," क्लिम ने कर्कश स्वर में कहा और बीम की गर्दन पर थपकी देकर चला गया।

खाना खाने के बाद ख्रिसान अंद्रेयेविच एक लालटेन लेकर बाहर गया, उसने एक भेड़ काटी, उसे उसके पिछले पैरों से लटकाया, खाल निकाली और आंतें आदि निकालकर उसे साफ़ किया व शेष भाग को धोकर उसे सुबह तक के लिए खलिहान में छोड़ दिया।

पेत्रोव्ना सारी शाम एक टोकरी में अंडे रखने, जारों में मक्खन व घी रखने में जुटी रही। उसने इन वस्तुओं को सफ़ेद तिनकों की बनी बाज़ार की टोकरियों में भी भरा।

इन सबसे (खालरहित भेड़, अंडों, मक्खन और टोकरियों से) बीम को शहरी मंडी की गंध आयी, और अगर इस बात को कोई जानता था तो वही जानता था। वह इवान इवानिच की खोज में अपने नगर के कोने-कोने में घूमा है। इससे वह भावावेशित हो गया: मंडी, नगर, टोकरियां, उसका पुराना फ़्लैट, यह सब एक दूसरे से सम्बन्धित जान पड़ी, इवान इवानिच वहां अवश्य होगा। उस रात वह क्षणभर के लिए भी नहीं सोया।

अगले दिन तड़के सवेरे ख्रिसान अंद्रेयेविच ने अकड़े हुए भेड़े की लोथ को एक साफ़ थैले में डाला, उसे डोरी से बांधा और अपने कंधों में उठा लिया। पेत्रोव्ना ने दो टोकरियों को एक बहंगी में लटकाया और उसे अपने कंधों में टिका लिया। बीम ने उनके साथ चलने के लिए हज़ार आग्रह किये। बिल्कुल स्पष्टता से इस बात को समझा दिया: "मुझे आपके साथ जाने की ज़रूरत है, कृपया, मुझे ले चलिये।"

उसकी भावनाओं को कोई नहीं समझा। यही नहीं जब ख्रिसान अंद्रेये-विच ने अपने कंधे के बोझ को ठीक ढंग से संभाल लिया तो वह बोला:

"ध्यान रखना, अल्योशा कालू को मज़बूती से पकड़े रहना। वह हमारे पीछे भाग आने की कोशिश कर सकता है।"

अल्योशा ने बीम के पट्टे को पकड़ लिया और उसे पोर्च में रोके रखा। मां और पिता ने भारी-भारी बोझ लिये, धीरे-धीरे, मुख्य सड़क की तरफ़,

बस के अड्डे को, चलना शुरू किया। बीम उन्हें आंखों से ओझल ह
तक देखता रहा और उसने अल्योशा के प्यार-दुलार पर ज़रा
ध्यान नहीं दिया।

उसी समय अपनी बंदूक़ और पीठ पर लटकाने का झोला लिये क्लि
आ गया। उसके पास मारे हुए शिकार को रखने का थैला और कारतू
की पेटी नहीं थी (उपकरणों के इस दोष को बीम ने तुरन्त देख लिया)
लेकिन उसके पास एक बंदूक़ ज़रूर थी! इसका महत्व था। बीम विश्व
के साथ इस शिकारी के पास आया और उसने तुरंत पता लगा लिया।
कारतूस जेब में हैं। बिल्कुल सही चीज़ यह भी नहीं थी, ख़ैर बन्दूक़ त
थी ही। वह एक बंदूक़धारी व्यक्ति के साथ कहीं भी जायेगा। हो सक
है बहुत लम्बे समय के लिए नहीं, फिर भी कुछ समय के लिए तो जाये
ही। यह अंतर्जात प्रेरणा सेटर नस्ल के सभी कुत्तों के ख़ून में होती
और बीम इसका अपवाद नहीं था। इससे घर की याद का वह दर्द भ
कम हो गया जो एक दिन पहले उसे परेशान किये हुए था। बंदूक़ के प्रति
अपने रवैये में बीम एक सामान्य शिकारी कुत्ता था। उस पर तर्कहीनत
का दोष नहीं लगाया जा सकता। यद्यपि वह एक चतुरतम कुत्ता था
फिर भी उसने सत्य का पता व्यावहारिक अनुभव से ही लगाया और उ
महज़ कुत्ता होने की वजह से अभी कुछ भुगतना था इसलिए हमें उस प
दोष नहीं लगाना चाहिए।

"आओ, कालू। आओ, शिकार की शूटिंग के लिए," क्लिम ने कहा

बीम उछलकर उसके सामने जा पहुंचा: "शिकार!"

क्लिम ने उसे चमड़े की एक डोरी से बांध लिया और तभी अल्योश
ने उसे आगाह किया:

"क्लिम चाचा, जब कालू रुकता है और एक निश्चित ढंग से ख
हो जाता है तो उसका मतलब है कि पास ही तीतर हैं। तब तुम्हें ज़ो
से कहना पड़ता है, 'उन्हें डराओ!' वरना वह आगे बढ़ेगा ही नहीं।

"तुम्हें पक्की तरह से मालूम है?"

"हां मैं जानता हूं," अल्योशा ने अभिमान से कहा, "मुझे स्कू
का काम करना है। वरना मैं तुम्हारे साथ आकर दिखला देता।"

"दो चार बातें तो मैं जानता ही हूं," क्लिम ने उसे आश्वस्त कर
हुए कहा, "यह मेरा पहला शिकार अभियान नहीं है।"

इस तरह एक लम्बी अवधि और कई अनुभवों के बाद बीम एक बार फिर शिकार पर चला। शुरू में एक दुर्गन्धयुक्त गंध-मार्जार के चिन्हों के सिवा और कोई उसके रास्ते में नहीं पड़ा।

"शुरू हो जा", क्लिम ने कहा।

बीम कुछ नहीं समझा, वह दूर हट गया और उलझन में पड़ कर बैठ गया।

दोपहर तक पहले के मुक़ाबले काफ़ी अधिक गर्म हो गया था। बर्फ़ की पतली परत सूर्य की किरणों से गल गयी थी और बीम के पंजे कीचड़ में धंस रहे थे। कुछ ही देर में उसके पैरों के लम्बे मुलायम बाल भीगकर चिपक से गये और बीम इतना पतला और अस्त-व्यस्त सा नज़र आने लगा जितना कि कोई भी भीगा हुआ सेटर कुत्ता दिखायी देता। लेकिन वह सही नियमों के मुताबिक़ शिकार की खोज करता रहा – क्लिम के सामने कभी इधर जाता कभी उधर और फिर कभी जांच के लिए उसके पीछे चला जाता। एक झुरमुट के किनारे पर बीम कुछ तीतरों की ओर आखेट-संकेत की मुद्रा में खड़ा हो गया।

क्लिम चिल्लाया :

"डराओ उन्हें!"

उसकी गूंजती हुई आवाज़ से बीम चौंक पड़ा और उसने अपनी घ्राण-शक्ति से उनका अनुगमन किये बग़ैर उन्हें एक ही झपट्टे में उड़ा दिया (एक बुरी ग़लती), लेकिन गोली दग़ने की आवाज़ नहीं हुई। बीम मुड़ा। शिकारी अपनी बंदूक़ में कारतूस डालने का असफल प्रयास कर रहा था। फिर उसे निकालने का – वह भी असफल। बीम उस जगह पर बैठ गया जहां उसने तीतरों को उड़ाया था और बैठा-बैठा उस शिकारी को देखने लगा। क्लिम ने उन आदमियों की तरह कोसना और गलियाना शुरू कर दिया जो सड़कों पर लड़खड़ाते चलते हुए अपने किसी साथी या काली रात को गालियां देते जाते हैं। क्लिम लड़खड़ा नहीं रहा था, लेकिन उसका कोसना जारी था।

यद्यपि क्लिम ने अन्त में कारतूस निकालने तथा बन्दूक़ के अन्दर दूसरा कारतूस डालने और बन्दूक़ को बन्द करने में कामयाबी हासिल कर ली थी, फिर भी वह क्रोध से बौखला रहा था, उसमें कुछ ऐसी बात थी जिसे देखकर बीम को उस स्लेटिये आदमी की याद आ गयी थी।

"खोजो!" उसने आदेश दिया, "खोजो, कालू!"

बीम मुड़ा और फिर बहती हवा के विपरीत शिकार की खोज ः
लगा लेकिन अब उसमें उत्साह नहीं रहा था: "अच्छी बात है,
खोजूंगा।"

लेकिन उसकी लंगड़ाती हुई दौड़ में एक उदासीनता सी पैदा हो
थी, उसमें उस उत्सुकता का चिन्ह भी नहीं था जो उसने तीतरों को उ
से पहले दिखलायी थी। क्लिम ने इसे शारीरिक थकान का चिन्ह समः
वह यह नहीं समझ सका कि इसका सही अर्थ क्या था, कि बीम को
बन्दूक़धारी पर अविश्वास होने लगा था। वह उसे कनखियों से दे
और बिना रुके मुड़कर उस पर दृष्टिपात करता और उससे अलग, निर
दूरी बनाये रखता। कभी-कभी ऐसा लगता कि वह खोज नहीं, f
शिकारी का अनुसरण कर रहा है, लेकिन यह एक भ्रम था। शिकारी कु
की अदमनीय अन्तःप्रेरणा तब तक मौजूद रहेगी जब तक इस धरती
ऐसे कुत्ते वर्तमान हैं। बीम क्लिम का नहीं उसकी बंदूक़ का अनुस
कर रहा था।

सहसा उसे एक ख़रगोश की गंध मिली। इवान इवानिच और बं
ने इन जानवरों का शिकार कभी नहीं किया, वैसे एक-दो मरतबा बं
ने उनकी ओर आखेट-संकेत अवश्य किया था। स्पष्ट है कि ख़रगोशों
ओर आखेट-संकेत करना व्यर्थ है क्योंकि आपके रुकते ही वे फ़रार
जायेंगे। और वह जानता था कि उसे उनका पीछा नहीं करना चाहिए
यह उसके मालिक के आदेशों के विरुद्ध था। माना कि ग्रीष्म में आ
संकेत के बाद वे कुछ क्षण रुके थे, लेकिन इवान इवानिच ने बीम
हमेशा वापस बुला लिया था; और एक बार उसने एक छोटे ख़रगो
को बीम के पंजे के नीचे से निकालकर छोड़ तक दिया था। अतः, ख़रगो
परिन्दा नहीं है। लेकिन अब ख़रगोश की गंध बीम की नाक में थी अ
वह आखेट-संकेत करता हुआ खड़ा हो गया—अपने लंगड़े पैर पर थो
सी वक्राकृतिक खड़ी एक भीगी आकृति। यह जैसी हुआ करती थी वै
मुद्रा नहीं थी—इसमें उस सुन्दर क्लासिकी अन्दाज़ का अभाव था।

"डराओ उन्हें!" क्लिम ने झल्लाकर कहा।

आर्द्र मौसम में, ख़ास तौर से जब कीचड़ हो रहा हो तो ख़रगो
अपने छिपने की जगह पर अड़ा रहता है, इसलिए बीम ने अपना आखे
संकेत बरक़रार रखा जैसे कह रहा हो: तुम सही आदेश नहीं दे रहे हो

"डराम्रो उन्हें, लंगड़े शैतान के बच्चे!" क्लिम ने गरजकर कहा।

बीम ने ख़रगोश को भगाया और लेट गया, ठीक उसी तरह जैसे कि बंदूक चलने से पहले उसे लेटना ही चाहिए।

क्लिम ने तोप का सा धमाका किया। ख़रगोश ने भागना शुरू कर दिया, लेकिन वह लड़खड़ाती गति से भाग रहा था। थोड़ी देर में वह बैठ गया और फिर चकमा देकर किसी एक खूंड़ में छुप गया।

क्लिम जंगलियों की तरह चीख़ा।

"पकड़ो! पकड़ो! दौड़ो उसके पीछे!" और वह उस स्थान की तरफ़ दौड़ा जहां ख़रगोश ग़ायब हुम्रा था।

यद्यपि बीम क्लिम की बग़ल में साथ-साथ उछलता-दौड़ता आया, पर वह निश्चित रूप से जानता था कि यह बात सारे नियमों के विरुद्ध थी; कोई भी शिकारी कुत्ते की तरह नहीं दौड़ता। अगर ज़रूरत होती तो बीम शिकार को खोज लेता, अगर इवान इवानिच ने उससे कहा होता तो वह एक ख़रगोश को भी पकड़ लाता।

क्लिम हांफता हुम्रा रुका और उसके मुंह से एक बार फिर एक जंगली चीख़ निकली:

"खोज, अहमक़! लंगड़े शैतान!"

बीम फिर से खोज में जुटा लेकिन अपेक्षाकृत क्षुब्ध होकर। ख़रगोश की गंध ने उसे किसी भी दशा में, कभी भी, अधिक आकृष्ट नहीं किया था और अब क्लिम पैर पटकता पीछे-पीछे आ रहा है। पर इसके बावजूद बीम ने गंध का पता लगाया और फिर से आखेट-संकेत करने के बाद उस घृणित "उन्हें डराम्रो" आदेश का इंतज़ार किया और ख़रगोश को भगाने तेज़ी से आगे बढ़ा। लेकिन वह ख़रगोश उस दरार से, वस्तुतः, रेंगता हुम्रा बाहर आया और बीमार व्यक्ति की तरह लड़खड़ाता हुम्रा आगे बढ़ा। क्लिम ने गोली दाग़ी, परन्तु ख़रगोश चलता ही रहा। उसने फिर गोली चलायी पर ख़रगोश फुदकता हुम्रा चलता रहा और बीच-बीच में रुकता भी रहा। बीम सही, कीचड़ होने पर भी स्वीकृत ढंग से लेटा था और वह आदेश की प्रतीक्षा कर रहा था।

क्लिम ने गरजकर कहा:

"पीछे, उसके पीछे, हरामी साले, उसके पीछे दौड़ बेवकूफ़!" और उसने ख़रगोश की तरफ़ इशारा किया।

बीम ने बुरी तरह से पिटे उस भगोड़े का फिर से पता लगा। और फिर से आखेट-संकेत किया। यह एक ही शिकार पर उसका ती आखेट-संकेत था। और ख़रगोश एक बार फिर भागा।

क्लिम अपने क्रोध में यह समझ ही न सका कि काल्‌ू को घ जानवरों को काटने-फाड़ने का प्रशिक्षण कभी दिया ही नहीं गया, यह सुशिक्षित सेटर-कुत्तों की प्रतिष्ठा के प्रतिकूल है, कि एक सेटर क़िस्म के शिकारियों से घृणा करता है। इसलिए जब वह ख़रगोश ग़ायब हो गया (वह अब पहले से अधिक तेज़ रफ़्तार से भाग रहा और स्पष्ट था कि उसका घाव महज़ सतही था) तो क्लिम फिर हो गया। वह बीम के पास आया और उसे असली क़िस्म की नफ़रत गालियां देने लगा।

बीम अभी भी बैठा हुआ था, उसने अपना मुंह दूसरी तरफ़ लिया। और क्लिम ने अपने भारी बूट के पंजे से, अपनी सारी ता लगाकर उसकी छाती में लात मारी।

बीम की सांस रुक गयी। उसका हांफना एक मनुष्य का जैसा हांप था। उसके मुंह से एक लम्बी "आह-आह!" निकली और वह ज़म पर लुढ़क गया। "ओह-ओह!" अब उसकी आवाज़, स्पष्टतः, मानव आवाज़ थी। "ओह... यह किस लिए?" और उसने इस आदमी तरफ़ असह्य पीड़ा से ग्रस्त, असमंजसपूर्ण, भ्रांत और संत्रस्त नज़ से देखा।

फिर उसने किसी तरह ज़ोर लगाकर उठने का प्रयत्न किया, ड मगाया और ज़मीन पर गिर गया, उसके पैर हवा में तड़फड़ाने लगे

"यह मैंने क्या कर दिया!" क्लिम ने अपना माथा पीटा, "अ मुझे पचीस रूबल देने पड़ेंगे। यह तो मेरा धन स्वाहा हो गया। और वह वहां से उस तरह खिसका मानो बीम की नज़रों से बच चाहता हो।

उस दिन क्लिम रात ढलने तक गांव से बाहर रहा। आधी रा को वह पीछे की गलियों में छुपता-छुपाता अपने कुटीर में पहुंचा जो गां के किनारे पर ही स्थित था।

लेकिन बीम का क्या हुआ? वह कहां था?

उसे उस नम व ठण्डी ज़मीन पर छोड़ दिया गया था, वह दुनिय

में अकेला पड़ा था। इस चोट से उसके अन्दर कुछ टूट गया था और वह कुछ गर्म था, दम घोंटनेवाला ऐसा कुछ था जो उसे सांस नहीं लेने दे रहा था। इसलिए वह बेहोश हो गया। लेकिन अन्त में वह किसी प्रकार खांसने में कामयाब हो गया, लेकिन उसे अभी भी उबकाइयां आ रही थी और सांस लेने में दर्द हो रहा था। उसने थोड़ी हवा और निगली, खांसा और बड़ी कोशिश से अपना सिर उठाया, सारा मैदान उसके सामने-सामने इस तरह ऊपर उठता आया मानो वह वसन्तकालीन बाढ़ की लहरों में तैर रहा हो। उसने हिम्मत बांधी और उठकर बैठ गया; मैदान दोलायमान हो रहा था और सूरज इस तरह आगे पीछे झूल रहा था मानो किसी रस्सी पर लटका हो।

उस दिन बीम से उससे अधिक की मांग की गयी जितना वह दे सकता था। उससे कहा गया कि उसे करना होगा, कि यह उसका कर्तव्य था कि वह कुछ ऐसा करे जिसे करने में वह समर्थ नहीं था, जो उसकी श्वान-प्रतिष्ठा व अन्तर्विवेक की भावना के विपरीत था। ऐसी अनाज्ञा-कारिता के लिए उसे निर्ममता से मारा गया। लेकिन इसके बावजूद बीम एक घायल जानवर को टुकड़े-टुकड़े करने की अनुमति नहीं देगा।

"किसके लिए... किसके लिए..." बीम चुपचाप रोता रहा। "कहां हो तुम, मेरे अच्छे दोस्त?.. कहां... कहां?.." उसका रुदन स्वर धीमा पड़ता गया और अन्त में ख़ामोश हो गया।

एक किनारे से देखने पर ऐसा प्रतीत होता कि वहां, उस खुले पंकिल मैदान में एक मृत कुत्ता पड़ा है। लेकिन यह बात नहीं थी।

आख़िरकार वह अपने पृष्ठभाग को उठाने और बग़ैर गिरे आगे घिसटकर चलने में कामयाब हो गया। उसने एक क़दम बढ़ाया—वह नहीं गिरा। वह कुछ देर खड़ा रहा। फिर उसने एक और क़दम उठाया और उस जुती हुई ज़मीन की खूंड़ के साथ-साथ लड़खड़ाता चलने लगा। वह अपने पैरों को घसीटता, अपने पगचिन्हों को मिटाता बढ़ने लगा।

एक कुत्ते में ऐसा साहस और ऐसी सहन शक्ति होती है! वह क्या चीज़ है जिसने उसे इतना शक्तिशाली और अवध्य बनाया कि गले में मौत का शिकंजा होने के बावजूद वह अपनी काया को अभी भी आगे बढ़ा सकता है, अपने आपको उस स्थान की ओर थोड़ा बहुत घसीटता

ले जा सकता है जहां शुद्ध हृदय और अकलुष चेतनावाले एक ला
परित्यक्त कुत्ते को विश्वास और सहृदयता मिल सकती है।

इस तरह बीम चलता गया। उसके पैर उसे मुश्किल से ले जा स
थे, फिर भी वह चलता ही रहा। उसके होंठों से ख़ून निकल रहा
पर वह चलता रहा। उसे ख़ून की खांसी आने लगी फिर भी वह चल
ही रहा। वह डगमगाया और घुटनों पर मरोड़ खाकर ज़मीन पर गि
उस ठण्डी ज़मीन पर पड़ा रहा, फिर भी वह उठा और संघर्ष कर
हुआ पुनः आगे बढ़ा। एक जल-स्रोत में उसने अपनी तीव्र प्यास बुझ
और थोड़ा अच्छा महसूस किया। किसी तरह उसे यह आभास हो ग
कि पानी से बहुत दूर न जाना बेहतर होगा। इसलिए वह रेंगता हु
घास के निकटतम ढेर के पास पहुंचा और ऊपर से लटकती हुई खु
घास के अन्दर घुसा और चुपचाप पड़ा रहा। कुत्ते बीमारी और चो
आदि से अच्छा होने के लिए इसी तरह से लेटते हैं ताकि वे मनुष्य अ
जानवरों की नज़रों से बचे रहें, यह उन्हें प्रकृति ने सिखलाया है। इसलि
उस प्रकृति की व्यवस्था का उसके विवेकपूर्ण उद्देश्य का गौरव बढ़े!

बीम कभी न जान सका कि चेतना-शून्यता की इस अवस्था में व
कितनी देर पड़ा रहा, लेकिन जैसे ही उसकी आंख खुली उसे अपनी छा
में तीव्र पीड़ा का अहसास हुआ; उसका सिर चक्कर खाने लगा और उ
ऐसा पूर्वाभास हुआ कि उसे कुछ होने जा रहा है। वह सूखी घास के ढे
से रेंगता हुआ बाहर आया और अपने बालों के सूखने तक खुले में पड
रहा। फिर वह उठकर बैठ गया। शरद की घास ने अब डोलना ब
कर दिया था, अब न घास, न सूरज—कोई नहीं डोल रहा था, व
ख़ूब चमक रहा था और थोड़ी सी गर्मी दे रहा था। बीम लंगड़ाता हुअ
सोते के पास गया और एक बार फिर छककर पानी पिया। कुछ सम
विश्राम किया और फिर थोड़ी-थोड़ी चुसकियां लेकर पानी पिया। सो
से कुछ ही दूरी पर बीम ने सरकंडा घास उगी देखी, जो ऊंची नहीं थ
पर अभी भी हरी थी और काउच घास (जो पाले के बावजूद जीवि
रहेगी) जैसी दिखायी पड़ती थी। बीम मुस्ता-पौधे खाने लगा। इ
वाहियात खरपतवाद को खाने के लिए उसे किसने प्रेरित किया यह बा
कोई मानव हमें नही बता सकता है; लेकिन वह जानता था कि यह
चीज़ है जिसे खाया जाना चाहिए। और उसने उसे खाया। इसके बा

उसने कुछ मुर्झाये हुए कैमील पुष्प के पौधे खोज निकाले, उनमें शरद के फूल अभी भी लगे हुए थे। तो उसने कैमील पुष्प के पौधे भी खा लिए। इसके उपरांत वह सोते के पास वापस आया, खूब छककर पानी पिया और गांव की तरफ़ रवाना हो गया।

जब वह गांव के बाह्य क्षेत्र में पहुंचा तब सांझ ढल चुकी थी। नहीं, वह गांव में प्रविष्ट नहीं हुआ। वह ऐसा कैसे कर सकता था। क्लिम वहीं तो गया था... नहीं, अब वह उसके पीछे नहीं जायेगा। हो सकता है कि क्लिम फिर से उसका पट्टा पकड़ ले और तब... नहीं, वह यह ख़तरा नहीं उठायेगा।

बीम ने सूखी घास के एक पुराने ढेर के अवशेषों के बीच शरण ली और कुछ समय तक वहां विश्राम किया। पास ही कहीं उसे बर्डोक की गंध आयी। उसने उसे चखा। वह मुर्झा चुका था, इसलिए उसे ज़मीन तक काटा और अपने दांत उसकी जड़ पर पहुंचा दिये। हां, वह यह भी जानता था। बर्डोक ऐसी एक और वस्तु थी जिसे उसे खाना ही चाहिए था।

एक कुत्ते का आयुर्वैज्ञानिक ज्ञान विविधतापूर्ण और व्यापक होता है। पागलपन की बीमारी के शुरू में एक कुत्ते को जंगल में भटकने के लिए मुक्त छोड़ दीजिये, वह कुछ समय बाद लौट आयेगा, बुरी तरह से थकाहारा पर पूर्णतः स्वस्थ होकर। यदि किसी कुत्ते का पेट ख़राब हो जाये तो उसे जंगल में ले जाइये या घास के मैदान में और दो या तीन दिन उसके साथ रहिये, वह जड़ी बूटियों से अपना इलाज स्वयं कर लेगा। कुत्ता स्वयं हमें शिक्षा देता है कि कुत्तों का इलाज कैसे होना चाहिए। प्रकृति ने कुत्तों के मस्तिष्क में "ज्ञान" की ऐसी सम्पदा भर दी है कि लोग इस चमत्कार से चमत्कृत होते कभी नहीं अघाते।

...रात बीत गयी। शरद की एक लम्बी मर्मर करती रात।

पहले मुर्ग़ों ने बांग देना समाप्त किया। बीम ने प्रभात के दूसरे और तीसरे पूर्वरंगों की प्रतीक्षा नहीं की। वह उठा और छाती के दर्द के कारण चलने में मुश्किल से ही समर्थ होने के बावजूद दो प्रयत्नों के बाद लंगड़ाता हुआ आगे बढ़ने के योग्य हो ही गया।

वह ख्रिसान अंद्रेयेविच के घर की ओर चला, दो सीढ़ियां ऊपर चढ़ा और अगले पोर्च में लेट गया। मकान निश्शब्द था।

कौन जानता है, शायद उसने वह मकान कभी न छोड़ा होता; ले
तभी क्लिम आ गया, वह चोर की तरह चुपचाप सरकता हुआ अ
था। बीम उसे देखकर कांपने लगा। वह अंतिम सांस तक अपनी
करने के लिए तैयार था। वह मौत की सज़ा प्राप्त व्यक्ति की तरह
गर्वीला, क्योंकि उसे अब और कुछ नहीं गंवाना होता है। लेकिन क्लि
बाड़े के ऊपर से झुका और आधा फुसफुसाता सा बोला:

"तो तुम वापस आ गये, कालू," फिर वह जल्दी-जल्दी वहां से खि
गया, वह अपनी इस खोज से, दृष्टतः, प्रसन्न दिखाई देता था।

बीम में उसका पीछा करने और निर्मम व कायरों जैसी उस लात
लिए बदला लेने की शक्ति नहीं थी। वह भूंक भी न सका क्योंकि उस
क्षतिग्रस्त छाती से महज़ खरखराहट के सिवा और कुछ न निकलत
लेकिन साथ ही वह यह भी नहीं चाहता था कि क्लिम वापस लौटे अ
उस पर हाथ डालने की चेष्टा करे। इसलिए वह उठ खड़ा हुआ। उ
चुपचाप बाड़े का चक्कर लगाया, शूकरशाला में सूअर के बच्चों क
गौशाला में गाय को और भेड़ों के बाड़े में भेड़ों को सूंघा और कुछ क्ष
के लिए ख़ामोश बैठा रहा और फिर गांव के बाहर रवाना हो गय
उसे अपने दोस्तों, उन शूकरों के साथ, लेटने की कैसी उत्कट लालसा थी

... मुर्गों की तीसरी बांग समाप्त हुई और प्रभात का प्रका
फैलने लगा।

एक कुत्ता मुख्य सड़क की तरफ़ जा रहा था। उसका सिर और पूं
पागल कुत्ते की तरह नीचे को झुकी थी। किसी अजनबी के लिए वह उ
बीमारी की अंतिम अवस्था में, अगली किसी वस्तु से टकराकर धराशाय
होने और वहीं पर मर जाने की अवस्था में पहुंचा हुआ नज़र आता था
यह हमारा बीम था, हमारा सदय, निष्ठावान बीम। वह अपने मालि
को, इवान इवानिच को खोजने जा रहा था। वह ठीक उसी रास्ते प
चल रहा था जिस रास्ते से उसे उस गांव में लाया गया था।

गांव से बस का अड्डा पांच या छह किलोमीटर दूर था। लेकिन आ
रास्ते में कहीं, बीम की ताक़त ने फिर जवाब दे दिया और वह मुश्कि
से सूखी घास के एक ढेर तक पहुंच सका। किसी रात्रिचर चोर ने उ
ढेर में एक बड़ा सा छेद बना दिया था, बीम उसी छेद में घुस गया
वह बहुत देर तक, लगभग सारा दिन, सूर्यास्त से ठीक पहले तक वह

पड़ा रहा। जब वह अपने शरणस्थल से निकला तो उसे प्यास लगी थी, पर वहां आसपास कहीं पानी न था। उसकी छाती में अभी भी रह-रहकर दर्द उठ रहा था लेकिन अब वह कुछ ज़्यादा आसानी से सांस ले पा रहा था और जब वह फिर आगे बढ़ा तो उसके सिर की बेचैनी दूर हो गयी थी। राह में उसे सदावहार फूलों का एक गुच्छा मिला, वह इन्हें भी खा गया – ये छोटे-छोटे सूखे पीले फूल खिलने के समय से लेकर अपनी परिपक्वता तक, सम्पूर्ण शिशिरकाल से लेकर अगले वसन्त तक अपना रंग नहीं बदलते हैं। उसने कैमील पुष्प की एक मंजरी भी काटी। यह फूल ज़्यादा पके हुए थे और उसके कुछ छोटे-छोटे टुकड़े उसके गले में चिपक गये। इससे उसकी प्यास और भी बढ़ गयी। लेकिन जब वह गाड़ियों के चलने से बने निशानों को पार कर रहा था तो उसे उनकी एक लीक में पिघली हुई बर्फ़ से बना पानी का एक गढ़ा मिल गया। उसने अपनी पानी को बीम के लिए सुरक्षित रखा था। बीम ने अपनी प्यास बुझाई और आगे बढ़ गया।

मुख्य सड़क तक पहुंचते-पहुंचते अंधेरा हो गया था। वह कुछ देर तक अपनी चौंधिया देनेवाली हैडलाइटों के साथ दौड़ती कारों और लॉरियों को देखता रहा और उसे किसी तरह से यह आभास हो गया कि उसे किस दिशा में जाना चाहिए। पर रात में नहीं! वह क्लिम से टकरा सकता है या स्लेटिये आदमी से या किसी भेड़िये से।

बीम ने तय किया कि उसे सड़क से दूर नहीं जाना चाहिए और रात में कहीं छुपे रहना चाहिए। वह लंगड़ाता हुआ बस के अड्डे तक गया; वहां एक छोटा सा मकान था जिसकी एक दीवार नदारद थी। वह एक कोने पर रखी बेंच के नीचे घुस गया और वहीं इंतज़ार करता पड़ा रहा।

बेहद थका हुआ होने के बावजूद वह सो नहीं सका। लॉरियां और कारें तेज़ी से घरघराती जा रही थीं, वह सड़क रात के समय भी सक्रिय थी। एक बस उस अड्डे पर रुकने को आयी जहां बीम लेटा हुआ था, लेकिन वहां कोई यात्री नहीं था इसलिए वह आगे बढ़ गयी।

वह एक बीमार सी, चिंताकुल रात थी, पर नियति को धन्यवाद, गर्म रात थी – शरद ने शिशिर को एक बार फिर पीछे भगा दिया था।

* * *

लेकिन बीम की अनुपस्थिति के उन दो दिनों की अवधि में उस
में क्या हो रहा था?

ख़िसान अंद्रेयेविच और पेत्रोव्ना शाम के धुंधलके में बाज़ार से
लौटे। अल्योशा घर में नहीं था और मकान में ताला लगा था। वे भी
गये, बिक्री से अर्जित धन की गिनती की और अगले दिन उसे बैंक
जमा करने के इरादे से पिटारी में रख दिया। तभी अल्योशा का आग
हुआ।

"तुम कहां थे?" उसके पिता ने पूछा।

"मैं क्लिम के घर गया था।"

"क्या वह कालू को वापस नहीं लाया?"

"वह शिकार से अभी भी नहीं लौटा है।"

"लौटेगा, उसे वापस लायेगा – वह और क्या कर सकता है?
पेत्रोव्ना ने एक नये स्वेटर को अल्योशा की छाती पर नापते हुए उ
आश्वस्त किया।

"ऐसा हो सकता है," ख़िसान अंद्रेयेविच ने संदिग्ध स्वर में कहा
"लेकिन, तुम जानते हो, क्लिम चोर है। यदि वह सिर्फ़ वही चुरा
जो सामूहिक का है–यानी किसी की सम्पत्ति नहीं है–तो इतनी बु
बात न होती। पर वह हमारा, हम किसानों का माल भी साफ़ कर जा
है। उसके साथ सम्पर्क रखना दुष्ट ग्राहक से सम्बन्ध रखना है। उस
हर कोई डरता है। हम उसे कालू को शिकार के लिए कभी-कभी
ले जाने देंगे, और इससे अधिक उससे कोई वास्ता नहीं रखेंगे।"

"आप कैसे कहते हैं कि सामूहिक की सम्पत्ति किसी की नहीं?
अल्योशा ने पूछा, "वह हमारी है, नहीं है क्या?"

"हां है तो, यह तो ... यह तो ज़बान से ग़लत बात निकल पड़
थी–तुम सही बात कह रहे हो–यह हमारी ही है। लेकिन मैं कैसे बता
कि तुम समझ लो? जो हमारा है सो हमारा है, लेकिन यहां पर यह ज
है, हमारा अपना है। मिसाल के लिए स्कूल को ले लो, वह हमारा
और बच्चे सब हमारे हैं, लेकिन तुम मेरे हो। इसी तरह हमारे खेत हैं
वे हमारे हैं लेकिन यह भूखण्ड हमारा अपना है... यही बात पशुअ
पर भी लागू होती है: कुछ महज़ हमारे हैं और कुछ हमारे अपने हैं
समझे?"

"हां समझ गया, लेकिन आपने कहा था 'किसी की नहीं है।'"

"हां, यह तुम ठीक कहते हो, ऐसी कोई चीज़ नहीं हो सकती जो किसी की न हो।"

अल्योशा के पिता उससे हमेशा ऐसे बातें करते थे जैसे वह वयस्क हो और अल्योशा भी इसी तरह से उत्तर देता था:

"इसलिए, क्लिम के लिए बेहतर है कि वह उसे ले जो हमारा है, पर उसे नहीं जो हमारा अपना है।"

"हूंह, यह है मामले की सचाई," पिता ने निष्कर्ष निकाला। "आख़िर कुछ चीज़ें हम ख़ुद भी तो उठा लाते हैं, नहीं लाते क्या? कभी कुछ घास-फूस, कभी गाय के लिए चुकन्दर। बेशक हम यही करते हैं और गुपचुप, चैयरमैन की जानकारी के बग़ैर करते हैं। लेकिन हम ज़्यादा माल नहीं लाते। इसके अलावा चैयरमैन इसके बारे में जानता है, टोली-नेता भी जानता है, हर कोई जानता है। इससे बचा नहीं जा सकता, हम उसी में से लेते हैं जो हमारा है और हम अन्तःचेतना की सीमा के अन्दर लेते हैं; सिर्फ़ पिछले साल के पुराने घास के चट्टों से, बचे-खुचे चुकन्दरों में से। वरना हम काम कैसे चलायें, हमें जानवरों को किसी न किसी तरह से खिलाना ही है।"

"हां, यही है इस मामले की सचाई," तेरह वर्ष के उस नन्हे आदमी ने जवाब दिया। यह आदमी अभी से ही भेड़ों के रेवड़ को चरा सकता है और "उसके अपने" पशुओं की देखभाल कर सकता है, अपनी मां की मदद के लिए मक्खन बिलो सकता है, बशर्ते उसके पास वक़्त हो, और पाले में बाहर जाकर "हमारे" चुकंदरों की काट-छांट कर सकता है और "हमारे अपने" आलू खोद सकता है।

लेकिन ख़्रिसान अंद्रेयेविच अपने स्पष्टीकरण को एक क़दम और आगे ले गया।

"यह सब नियमों में दर्ज़ है और हम सब ऐसे ही करते हैं। वह हमारा है और यह मेरा है। मिसाल के लिए, आज मैं एक भेड़ शहर को ले गया। क्यों न ले जाये? लोगों को किसी तरह तो खिलाना ही है—इसीलिए तो हम यहां हैं। और तुम्हारी मां कुछ अंडे और मक्खन ले गयी। सामूहिक फ़ार्म के नियमों के मुताबिक़, सिर्फ़ इतना ही। अल्योशा, ज़िन्दगी ख़ासी अच्छी चल रही है। हम सबके पास बढ़िया कपड़े

हैं, बढ़िया जूते हैं, लगभग उतने ही बढ़िया जितने कि स्कूल-अध्यापक या चेयरमैन के हैं। हमारे पास टेलीविजन है और उस तरह की सब चं हैं और हमारी ज़रूरतों के लिए पर्याप्त धन है। और जहां तक इ लिए किये गये कठिन काम का सम्बन्ध है, वह सब तुम्हें मज़बूत ब सकता है। लेकिन एक चीज़ है जो तुम्हें नहीं करनी चाहिए और वह वोद्का पीना," उसने उपदेशात्मक ढंग से अपनी बात समाप्त की।

"आप ख़ुद वोद्का पीते हैं," अल्योशा ने काफ़ी तर्क-सम्मत उर दिया। "अगर नहीं पीना चाहिए तो आप पीते क्यों हैं। इससे आप क्या भला होता है?"

"हां, यह तुम ठीक कह रहे हो," उसके पिता ने सहमति प्रव की। "लेकिन टोली-नेता के लिए तो सम्मान प्रदर्शित करना ही होता है लेकिन वह रिवाज हमने शुरू नहीं किया... और जहां तक क्लिम व प्रश्न है? वह तो चोर है। यह भी कोई करने का काम है—पड़ोसी व मुर्ग़ी चुरा ली। यह सारे अन्तर्विवेक के विरुद्ध है, विरुद्ध। वह ब दुश्चरित्र व्यक्ति है।"

अल्योशा और ख़्रिसान अंद्रेयेविच रात के ग्यारह बजे तक कालू क इन्तज़ार करते हुए इसी प्रकार से बातें करते रहे। इसके बाद उन्हों अहाते का चक्कर लगाया, शूकरशाला में नज़र डाली, पोर्च के नीचे देख (कालू क्लिम के पास से भागकर वहां छिप गया हो)। और अन्त ं ख़्रिसान अंद्रेयेविच ख़ुद क्लिम के घर गया।

क्लिम की पत्नी नताल्या एक नितांत दबायी-सतायी औरत थी, वही औरत जो चुकन्दरों के ढेर पर रोती रही थी। उसने दुख से कहा:

"वह तो अभी वापस नहीं आया है, वह विवेकशून्य जंगली। उसने रात बिताने की कोई जगह खोज ली होगी, या फिर पीकर धुत पड़ा होगा। मैं ही जानती हूं मुझे उसके साथ कैसी मुसीबतें झेलनी पड़ रही हैं! मुझे पक्का यक़ीन है कि कल वह लड़खड़ाता हुआ आ पहुंचेगा। लेकिन उसने कुत्ते का कुछ नहीं किया होगा, मैं उसे जानती हूं, वह कुत्ते को वापस ले आयेगा।"

ख़्रिसान अंद्रेयेविच घर आया और उसने जो कुछ सुना था बता दिया। वह और अल्योशा फुसफुसाकर बातें करते हुए बिस्तर पर लेटे ताकि मां की नींद न टूट जाये। उन्होंने कालू को पोर्च में आते या क्लिम को चोरी

से घुसते और फिर भागते नहीं सुना, उन्होंने अपने अच्छे दोस्त को उस क्रूर व्यक्ति से बचकर भाग निकलते हुए भी नहीं सुना।

सुबह अल्योशा को उसके पिता ने जगाया:

"उठो, पोर्च में कुछ नये निशान हैं, कालू ज़रूर वापस आ गया होगा।"

दोनों बाहर निकल आये। उन्होंने उसे खोजा, पुकारा, सीटियां बजायीं लेकिन इस बार कालू बहुत दूर गया था, वह उनकी पुकार सुन ही नहीं सकता था। ख़्रिसान अंद्रेयेविच लगभग दौड़ते हुए क्लिम के घर पहुंचा और उसने उसे जगाया।

"हां, मैं उसे वापस ले आया," क्लिम ने अपनी भारी मोटी आवाज़ में कहा, "यह आधी रात की बात है, मैं तुम्हें जगाना नहीं चाहता था... अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें उसके पहुंचने के निशान दिखा सकता हूं। पर तुमने मुझे जगा दिया है, मेरी नींद ख़राब कर दी है। क्या किसी आदमी के साथ ऐसी ही बरताव किया जाता है? और तुम्हारा कुत्ता शिकार के लिए निकम्मा है। पता नहीं मुझे उसे ले जाने की कैसे सूझी – मैं उसे फिर कभी अपने साथ नहीं ले जाऊंगा।"

ख़्रिसान अंद्रेयेविच जानता था कि उससे बहस करना व्यर्थ है।

उसने और अल्योशा ने सारे गांव में ढूंढ़ा, सारे मकानों को छान मारा, सामूहिक फ़ार्म का अहाता भी देखा (कालू शायद, वहां के कुत्तों से मिलने गया हो)। लेकिन नहीं, कालू को किसी ने कहीं नहीं देखा था। वह ग़ायब हो गया था।

"क्लिम ने उसे मारा होगा," ख़्रिसान अंद्रेयेविच समझ गया था। "कालू भाग गया है।"

शोक और करुणा से अल्योशा का हृदय निविड़ हो गया था, वह पोर्च की अगली सीढ़ियों पर कालू के चिन्हों को घूर रहा था। निशान सूख गये थे, लेकिन जिस स्थान पर कुत्ता लेटा था वह अभी भी स्पष्ट था। अल्योशा नीचे झुका और अचानक चिल्लाता हुआ घर को दौड़ा:

"डैडी! सीढ़ियों पर ख़ून है!"

उसके पिता दौड़ते हुए आये और ध्यान से देखने लगे। जहां कुत्ते का सिर टिका हुआ था उस स्थान पर लार में मिश्रित ख़ून के सूखे धब्बे दिखायी दे रहे थे।

"क्लिम असली राक्षस है!" उसने ज़ोर से कहा। कुछ क्षण सो
के बाद उसने अल्योशा को आगाह किया, "अल्योशा, उस व्यक्ति के स
कभी कोई सम्बन्ध मत रखना। मुसीबत के सिवा और कुछ हाथ न
आयेगा। मैं तुम्हें बताता हूं क्या करें। हम कोशिश करके कालू के पी
पीछे जायेंगे – सिर्फ़ एक ही रास्ता है जिससे कालू जा सकता है।"

वे बस के अड्डे को चल पड़े। वे सारे रास्ते उसे खोजते-पुकारते ग
बस के अड्डे में देर तक रुके रहे और अन्त में घर लौट आये। उन्हें
सोचा कि अगर वह उस रास्ते से आया होगा तो अब तक बहुत दूर निक
गया होगा। लेकिन उस दिन वे वस्तुतः घास के उस चट्टे के बिल्कुल क़री
से गुज़रे थे जहां बीम ने, उनके कालू ने आराम किया था।

उस शाम अल्योशा कई बार पोर्च में गया, वहां रुका और कुत्ते व
पुकारता रहा। फिर वह वापस भीतर चला गया और घास के मुलाय
बिस्तरवाले उस कुत्ताघर के पास बैठकर रोने लगा – एक बच्चे व
तरह खुलकर, सुबकता हुआ और आस्तीन के छोर से अपने आंसुओं क
पोंछता हुआ।

ख्रिसान अंद्रेयेविच ने उसका रोना सुना, वह ड्योढ़ी के अन्दर आय
और रोशनी जलायी।

"अब तुम यह क्या करने लगे, तुम यह नहीं हो, हो क्या?"

"हां मैं हूं," अल्योशा ने कहा, सुबकने से उसके कंधे कांप रहे थे

पिता ने अपने खुरदरे सख़्त हाथों से अपने बेटे के बालों को सहलाया।
"तुम अच्छे लड़के हो, अल्योशा, बेटे... तुम्हारा हृदय दयामय है...'

पेत्रोव्ना भी बाहर आ गयी।

"क्या तुम्हें कालू के खोने का दुख है?" उसने पूछा।

"हां, है मां!.. इतना दुख..."

"ओह, कैसी मुसीबत है," उसने ख्रिसान अंद्रेयेविच से सुबकते हुए
कहा। "अल्योशा, बेटे, यह अच्छा नहीं है, मेरे दुलारे बच्चे ... यह
होना था ... लेकिन कैसे खेद की बात है..."

... और जब यह सब हो रहा था तब बीम बस के अड्डे के एक बेंच
के नीचे लेटा था।

वह लेटा था और इन्तज़ार कर रहा था। उसे पौ फटने का
इंतज़ार था।

तेरहवां अध्याय

वनीय चिकित्सालय। ममी और डैडी। जंगल में गर्जन

जैसे ही क्षितिज में दिन का प्रकाश झिलमिलाया वैसे ही बीम ने उठने का प्रयत्न किया, लेकिन यह आसान नहीं था, वस्तुतः लगभग असम्भव था। वह जिस तरह की गोलाकार स्थिति में लेटा था उस स्थिति से अपने शरीर को सीधा करना सबसे कठिन काम हो गया था। ऐसा लगता था कि उसके अन्दर कोई वस्तु बुरी तरह से चिपक गयी है। जिस तरह से मुर्गी अपने पंख के नीचे से पैर बाहर निकालती है, कुछ-कुछ उसी तरह से उसने भी एक पैर निकाला, फिर दूसरा और दोनों से दीवार को धक्का देकर वह जैसे-तैसे घिसटता हुआ बेंच के नीचे से बाहर आया। फिर कुछ देर तक गतिहीन पड़े रहने के बाद रेंगता हुआ उस शरणस्थल से बाहर निकला और उठकर बैठ गया। उसके सुन्न पड़े हुए पैरों में चेतना लौट आयी। दर्द को सहता हुआ और हलकी आवाज़ में कूं-कूं करके रोता और अपने आपको सांत्वना सी देता हुआ वह अपनी यात्रा पर चल पड़ा। शुरू में चलना बड़ा कठिन था, पर धीरे-धीरे उसके क़दम अधिक मज़बूती से पड़ने लगे।

उसने थोड़ा-थोड़ा तेज़, दुलकी चाल से, चलने का प्रयत्न किया और उसे लगा कि ऐसे चलने पर छाती का दर्द कम मालूम पड़ता है। शीघ्र ही, वह नितांत हलके क़दम रखता हुआ, दुलकी चाल से चलने लगा। किसी अजनबी को, उसे देखकर, ऐसा लगता कि वह कुत्ता न तो दौड़ रहा है और न चल रहा है, लेकिन अपने पैरों को इस तरह से चला रहा है मानो उसके शरीर में, लगभग, कोई भी हरकत नहीं हो रही है। इस तरीक़े से चलने में बीम को सहूलियत हो रही थी और जो बूटियां उसने खायी थीं, उनसे वह, सामान्यतः, कुछ अधिक स्वस्थ अनुभव कर रहा था। इस तरह, वह सड़क के किनारे-किनारे चलता चला जा रहा था।

वह यातायात के प्रवाह की ओर मुंह किये, सड़क की बायीं ओर से चल रहा था। वह राजमार्ग की नियम-संहिता के बारे में, निश्चय ही नहीं

जानता था, और, जैसा कि वहां से गुज़रते हुए यान-चालकों को आश्च
हो सकता था, उसे सड़क के उचित पार्श्व से जाने को प्रेरित करनेवा
चीज़ न तो तर्कबुद्धि थी न मेधा, वह तो महज़ एक अन्तर्ज्ञान भा
थी जिसने उसे बताया था कि वह इस तरफ़ से आया था इसलिए इ
तरफ़ से उसे लौटना चाहिए। कारों की खिड़कियों से जिन लोगों की झल
उसे दिखायी देती थी वे ज़रूर यह सोचते रहे होंगे कि वह कितना च
कुत्ता है जो सड़क के नियमों का पालन करता है। लेकिन वह कित
बीमार लगता है! यह बात नहीं कि इस चीज़ को समझने में कोई ब
अक़्ल की ज़रूरत पड़ती हो कि सामने से आते हुए यातायात की ओ
मुंह करके चलने का नियम सुरक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करता है

बीम बहुत देर तक चलता रहा—तीन या शायद चार घंटे (उस
ठहरने और विश्राम करने की अवधियों को जोड़ने पर, निश्चय ही
इससे भी अधिक)। उसकी रफ़्तार सामान्य चलनेवालों से शायद थो
ही ज़्यादा थी, पर वह भी काफ़ी अच्छी थी!

और अन्त में जब वह वहां पहुचा गया तो उसे यह जानकर आश्च
हुआ कि उसने उस बस के अड्डे को पहचान लिया जहां वह और इवा
इवानिच शिकार अभियान से पहले हमेशा उतरा करते थे। हां, उसे पू
यक़ीन था कि उसने पहचान लिया है!

बस के अड्डे में कुछ लोग बस की प्रतीक्षा कर रहे थे। बीम उनके
क़रीब पहुंचने से पहले रुका और बायीं तरफ़ उस पगडण्डी की ओर मु
गया जिससे होकर वे शिकार के लिए जंगल में जाया करते थे। किसी
ने उसके पीछे सीटी बजायी, किसी ने हैलो-हैलो कहा तथा कोई औ
चिल्लाया: "यह पागल है!" बीम ने कोई ध्यान नहीं दिया। उसने
अपनी रफ़्तार बढ़ाने और चौकड़ी भरने तक की कोशिश की लेकिन व्यर्थ
उसकी प्रगति और भी ज़्यादा कठिन हो गयी।

लेकिन मुख्य चीज़ वहां जाना था। उस स्थल पर, जहां शायद इवान
इवानिच हाल में आया हो, या जहां शीघ्र आनेवाला हो, उसे वहीं जाना
था, आगे और आगे।

बीम दुलकी चाल से जंगल की तरफ़ चलता गया। जंगल के किनारे
पर रुककर उसने चारों ओर देखा और फिर उसमे प्रविष्ट हो गया।
थोड़ी ही देर में उसने वह सुपरिचित खुली जगह खोज निकाली और उस

ाड़ के ठूंठ के पास आकर ठहर गया। वह कुछ देर तक स्थिर खड़ा रहा, फिर उसने अपनी नाक से हर चीज़ की छानबीन की और बग़ैर हिले हवा को सूंघता रहा। और एकाएक, जैसे किसी निष्कर्ष पर पहुंचकर, वह उस ठूंठ के पास, गिरी हुई पत्तियों में, लेट गया। यह वही जगह थी, जहां इवान इवानिच शिकार खेलना शुरू करने से पहले हमेशा बैठा करता था। बीम ने अपनी थूथन आगे की तरफ़ धकेली और उसे उन पीली पत्तियों पर रगड़ा जहां कभी उसके दोस्त के पैर टिके होते थे, लेकिन उसकी सारी गंध बहुत पहले उड़ चुकी थी।

वह दिन गर्म दिन था, बहुत गर्म।

* * *

कभी-कभी, शरद के अंतिम दिनों, बल्कि शिशिर के प्रथम चरणों के बाद भी, ग्रीष्म थोड़ी सी अवधि के लिए लौट आता है और अपनी आग्नेय पूंछ को जाते हुए शरद के गिर्द लपेट देता है। शरद पिघल जाता है और किसी महिला द्वारा दुलारे जानेवाले स्नेहशील कुत्ते की भांति उसकी ऊष्मा का सुखोपभोग करता है। जंगल गिरी हुई पत्तियों की, जंगली गुलाब के रक्तिम फलों और पीतारक्त झड़बेरी की, वनीय अद्रक की ... तीव्रता की और ऐसे फलों की विदाई-सुरभि बिखेरता है जो नम और विखण्डित होते हुए भी ऋतु के अतीत गौरव की याद दिलाने को काफ़ी होते हैं; यह मनोहरी मुस्काती सुरभि, चीड़ से बर्च-वृक्षों की, बर्च से शाहबलूत की ओर प्रवाहित होती है। और शाहबलूत वन-प्रांतर की शक्ति और दृढ़ता की सम्पूर्ण चिरंतनता की सुवास से उसका उत्तर देता है। जंगल की गंधों में कुछ शाश्वत और अविनाशी होता है, कुछ ऐसा होता है, जो जाते हुए शरद की विदाई के सौम्य और दुलारभरे दिनों में ख़ास तौर से अनुभवगम्य होता है; उसने विषादकारी वर्षा को, आते हुए शिशिर के प्रबल आक्रमणों को और धवल-तुषार की दुराग्रही एकाग्रता को झाड़ फेंका है। वह अतीत की चीज़ हो गया है। और अब यह ऐसा है, मानो शरद को, निद्राभिभूत होते हुए शरद को, ग्रीष्म के सपने आ रहे हों और वह इन दैवी दृश्यों को, उनके स्वर्गीय सौन्दर्य की सारी शानबान के साथ, शारदीय धरती की जीवनदायी सुवासों के साथ, हमारे सम्मुख उद्घाटित करता है। धन्य है वह जो इस सब का रसास्वादन कर सका है और, हमारी आत्माओं

की मुक्ति के लिए प्रकृति-प्रदत्त पात्र से उसकी एक भी बूंद छलकाये व
जीवनपर्यंत उसे वहन करने में समर्थ रहा है।

जंगल में ऐसे दिन हृदय को अत्यंत क्षमाशील बना देते हैं, लें
साथ ही उसे स्वयं से अभियाचना करनेवाला भी बना देते हैं। मार्न
शांति में आप प्रकृति के संग एकाकर हो जाते हैं। शरद के स्वप्नों
इन गम्भीर क्षणों में आप यह चाहने लगते हैं कि इस पृथ्वी पर अ
या बुराई न हो। और विदा लेते हुए शरद की निस्तब्धता में, आग
शिशिर की विस्मृति के, सुकोमल-तंद्रिलता से पोषित इन दिनों में अ
समझने लगते हैं: कि यहां केवल सत्य, केवल प्रतिष्ठा और केवल निष्
अन्तःचेतना ही होनी चाहिए और इस सबके बारे में वचन ही दिया जा
चाहिए। उन नन्हे बच्चों को वचन दिया जाना चाहिए जो बाद में वय
बनेंगे, उन वयस्कों को वचन दिया जाना चाहिए जो यह नहीं भूले हैं
वे भी कभी बच्चे थे।

शायद इसीलिए मैं एक कुत्ते की नियति के, उसकी वफ़ादारी, आत्मसम्म
और निष्ठा के बारे में लिख रहा हूं। उस कुत्ते के बारे में लिख रहा
जो शरद के उस गर्म दिन, जंगल में पेड़ के एक ठूंठ के पास विदी
हृदय लेटा था।

* * *

इस तरह, शरद के एक सुखी दिन हमारा दुखी बीम जंगल में प
था। और वह दिन सुखद ऊष्मा से भरापुरा कैसा अद्भुत दिन था!

लेकिन ज़मीन ठण्डी थी, इसलिए बीम ठूंठ के पास मुड़-सिकुड़कर लेट
था मानो अपने मालिक के क़दमों पर लेटा हो। उसने कुछ देर विश्रा
किया, फिर उठा और बेढंगे तरीक़े से चलता हुआ जंगल में किसी वस
की खोज करने लगा। उसे सहसा भूख लग आयी थी। वह एक काले
गिरे हुए पौपलर-वृक्ष के सामने पहुंचा और उसकी समृद्ध, स्वादिष्ट छाल
जो बारहसिंगे का प्रिय भोजन है, को कुतरने लगा। क्या बीम ने य
अनुमान लगा लिया था कि यह छाल भी उसके लिए लाभदायी होगी

शायद यह कुत्ते का सूक्ष्म घ्राण-संवेद है जो उसे यह बतलाता है कि
उसके लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा। लेकिन सभी लोग इस बात व
नहीं समझते। आख़िर बीम ने विषाक्त जंगली जिंजर नहीं खाया। लेकि

ाह वालेरियन की एक जड़ के पास रुका ज़रूर था। कुत्ते और बिल्लियों को इस कंद की गंध क्यों पसंद है? हमें यह भी ज्ञात नहीं है। लेकिन बीम ने मुलायम और पत्तोंभरी मिट्टी को एक-दो मरतबा अपने पंजों से कुरेदा, जड़ को काट निकाला और कुछ खाया और फिर खाया। इसकी जड़ सतह के नज़दीक होती है और उसे निकालना कठिन नहीं होता है। उसने ठीक उतना ही खाया जितनी उसे ज़रूरत थी, उससे अधिक एक भी कौर नहीं खाया। फिर उसने एक स्थान को मुलायम बनाने की कोशिश की, जैसे कि अपने सोने के लिए बिस्तर तैयार कर रहा हो, पर फिर उसे वह जगह पसन्द नहीं आयी (कोई नहीं जानता कि क्यों)। वह एक चक्कर में घूमा और हर घुमाव के साथ चक्कर को छोटा बनाता गया और अन्त में युद्ध के समय की एक ऐसी पुरानी खाई के पास पहुंचा जो पत्तियों से भरी हुई थी। वह खाई में घुसा, उसे अच्छी तरह से सूंघ-सांघकर देखा। उसने जल्दी ही, अपने वास्ते एक मुलायम और गहरा बिस्तर तैयार कर लिया, लेकिन कुछ समय तक वह लेटना नहीं चाहता था और नींद को रोकने का प्रयत्न करता सा प्रतीत हुआ। फिर एक आकस्मिक झटके से लड़खड़ाया, पत्तियों के बिस्तर में लुढ़क गया और ज़रा ही देर में बेख़बर सो गया।

वालेरियन ने अपना असर डाल दिया था। ताम्बोव क्षेत्र में वे उसे जंगली चेर्विल कहते हैं। लेकिन ऐसा एक भी क्षेत्र या प्रांत नहीं है जहां स्वस्थ कुत्ते इसे खाते हों, वे इसे सूंघ तो सकते हैं पर खाते नहीं, लेकिन बीमार कुत्ते इसे खा जाते हैं। इस संदर्भ में बीम प्रकृति से बौद्धिक होते हुए भी, किसी भी अन्य कुत्ते के ही समान था। तो उसने वालेरियन की अपनी ख़ुराक खा ली और अब मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप बिल्कुल ख़ामोश रहें क्योंकि हमारा अच्छा सुशील बीम अपने गढ़े में सोया हुआ है।

यह तीसरा दिन था जबकि बीम ने जंगली जड़ी-बूटियों के सिवा और कुछ नहीं खाया था और इस सारी अवधि में दर्द और थकान ने उसे सोने नहीं दिया। अब वह ऐसे सोया था जैसे बहुत लम्बे समय से नहीं सो सका था। खाई में ऊष्मा थी और शांति थी। जंगल अपनी शरत्कालीन शांतिमयता में बीम की रखवाली कर रहा था और अपनी बूटियों व रोगहारी हवा से बीम का इलाज कर रहा था। हे जंगल, तुम्हें धन्यवाद!

बीम जागा तो शाम होने ही वाला थी, वह अपने बिल से बाहर आया। चलना अभी भी मुश्किल था लेकिन पहले की तुलना में आसान था

ग्रौर सुबह की तुलना में बहुत ग्रासान था। उसके ग्रन्दर कुछ मृदुता गयी थी ग्रौर तनाव खत्म हो गया था। लेकिन शरीर ग्रभी भी ग्रशक्त वह पेड़ के ठूंठ के पास गया, कुछ देर वहां बैठा ग्रौर फिर ग्रपनी मां वापस ग्रा गया। वह एक बार फिर कुछ देर बैठा, हवा को सूंघता इधर-उधर नज़र दौड़ाता रहा, सब कुछ निश्शब्द था, शांत था। वह से ग्रपने गहरे, गर्म ग्रौर ग्रारामदेह बिल में सो गया। उसने शायद सुखद स्वप्न देखा, सचमुच ही देखा होगा, क्योंकि उसकी निद्रावस्था उसकी पूंछ बहुत धीमे परन्तु ग्रसंदिग्ध रूप से हिल रही थी।

वह शीत का ग्रनुभव किये बिना रात भर सोया रहा।

तड़के सवेरे, किसी सरसराहट की ग्रावाज़ से उसकी नींद खुल गय उसने ग्रपना सिर उठाया ग्रौर सुना, कोई पत्तों को उखेल रहा थ बीम बाहर निकला, उसने प्रवाहरहित वायु की विरल सूक्ष्म धाराग्रों ग्रपनी नाक से पढ़ा ग्रौर निश्चित रूप से जान गया कि वह कौन थ वह एक वन-कुक्कुट था!

शिकार की दुर्निवार प्रेरणा ने उसके दुर्बलीकृत शरीर को तत्पर प्रदान की ग्रौर ग्रन्दरूनी दर्द को दबा दिया। वन-कुक्कुट ग्रधिक नहीं सि पांच क़दम दूर था। वह ग्रपने पंजों से पत्तियों को कुरेद रहा था ग्रं ग्रपनी चोंच ज़मीन में डाल रहा था, ताकि वहां से सम्पूर्ण केंचुए व बाहर निकाल सके। उसने केंचुए को बाहर खींचा ग्रौर प्रसन्नतापूर्व खा लिया। उसका एक पंख ज़मीन से लगकर घिसट रहा था (ग्रकुश बंदूक़चियों के सताये हुए ऐसे घायल पक्षी जाड़ों की ग्रवधि ग्राने तक ब जाते हैं पर बाद में या तो किसी लोमड़ी के ग्रास बन जाते हैं या, यरि ग्रधिक समय तक जी गये तो शिशिरकालीन तुषार में मृत्यु को प्राप्त ह जाते हैं)।

बीम ने एक पंजा ग्रागे बढ़ाया — वन-कुक्कुट बिल्कुल बेख़बर ग्रपने काम में जुटा रहा। बीम ने दूसरा क़दम बढ़ाया — वन-कुक्कुट ने फिर भी कुछ नहीं सुना ग्रौर वह ग्रपने धंधे से लगा रहा। उस पक्षी के पास भी बर्बाद करने के लिए समय नहीं था, केंचुए गर्म मौसम में ज़मीन की सतह के क़रीब ग्रा जाते हैं ग्रौर कभी-कभी पत्तों के नीचे ही मिल जाते हैं। बीम एक पेड़ की ग्राड़ से सरकता ग्रागे बढ़ा ग्रौर ग्राखेट-संकेत की मुद्रा में

स्थिर खड़ा हो गया। "आगे बढ़ो," किसी ने नहीं कहा। वह स्वयं अपनी इच्छा से बढ़ा। उसने पक्षी पर झपटने और उसे अपने पंजों से दबाने का प्रयत्न किया, लेकिन उसके शरीर में उछाल ही न थी, वह गिर भर गया और वन-कुक्कुट को दांतों में दबोच लिया। एक क्षण तक वह उसे इसी तरह से पकड़े अपने एक पार्श्व से लेटा रहा, फिर पलटकर पेट के सहारे टिक गया और – उस पक्षी को, पूरे का पूरा, खा गया। बचे तो केवल पंख बचे। यहां तक कि उसकी चोंच, जो बीम ने देखा कि काफ़ी मुलायम है, भी उदरस्थ हो गयी।

ऐसा कैसे सम्भव हुआ? एक अनुभवी शिकारी द्वारा प्रशिक्षित और शिकार के अभ्यस्त, बीम जैसे कुत्ते ने अपनी प्रतिष्ठा से ग़द्दारी की और शिकार को खा लिया? हां, इससे आप सोच में पड़ गये हैं। लेकिन एक कुत्ता भी जीना चाहता है और यही इसका पूर्णापूर्ण स्पष्टीकरण है।

इसके बाद बीम को अधिक ताक़त की अनुभूति हुई और प्यास लग आयी। उसने पानी से भरा एक ऐसा गढ़ा खोज निकाला जैसे गढ़े किसी भी वन में प्रचुरता से होते हैं। उसने छककर पानी पिया। लौटते समय उसे एक चूहे की गंध मिली और उसे, अपने दूसरे व्यंजन के रूप में, उदरस्थ किया। इसके बाद वह बूटियों की खोज में निकला। उसकी पहली पसन्द थी जंगली लहसुन के आधे-सूखे डण्ठल, इन्हें उसे उगलना पड़ा, लेकिन उसने नीचे की गांठ निकाली और मुंह बनाकर उसे खा लिया (आख़िर था तो वह लहसुन)। जंगल में घूमते-फिरते उसने वे चीज़ें खोज निकालीं जिनकी उसे ज़रूरत थी। उसे यह किसने बताया कि लहसुन में दशमलव दो प्रतिशत या दशमलव तीन प्रतिशत आयोडीन होता है? इस प्रश्न का उत्तर कोई नहीं दे सकता है। हम सिर्फ़ यह मान लेते हैं कि दो दिन पूर्व उस पर जो संकट पड़ा था उसने उसके मस्तिष्क में शताब्दियों के अनुभव को, उस अनुभव को झकझोर कर जगा दिया जो उसके दूरस्थ पुरखों के समय से, मूसा के समय से, संचित अनुभव था। और उस अनुभव का ऐसा तत्काल पुनस्स्मरण भी प्रकृति का एक चमत्कार था।

बीम ने पांच दिन और भी अपना इलाज जारी रखा। उसने वही खाया जो भगवान ने भेजा, पर इलाज लगातार किया। जिस बिल में वह सोता था वह उसका अस्थायी घर बन गया था। एक दिन उसे एक

सोया हुआ खरहा मिल गया, लेकिन उसका स्वाद लेने में असफल रः
वह उछलता और चौकड़ी भरता हुआ भाग निकला। बीम ने उ
पीछा करने की कोशिश भी नहीं की। वह ऐसे भागा कि एक स्वस्थ :
कुत्ता भी खड़ा का खड़ा रह जाता और बीम के लिए यह बिल्कुल असं
था। तो वह उसे जाता हुआ ताकता रहा और लालसा से अपने ह
को चाटता रहा। लेकिन जंगल उसे खिलाता रहा—बहुत बढ़िया ढंग
नहीं पर खिलाता ज़रूर था। उसके दुर्बल, भूख से मारे शरीर में जं
जड़ी-बूटियों ने अपना असर डाला। बीम जीवित ही नहीं बचा ब
अपनी खोज को फिर शुरू करने में भी समर्थ हो गया। इसकी प्रे
मस्तिष्क से नहीं; हृदय से आयी, निष्ठा और वफ़ादारी से आयी।

जंगल के बीच उस खुली जगह में अपनी एक दैनिक जांच के दौ
बीम ज़मीन पर लेटा, फिर उठ गया, इसके बाद फिर लेटा, फिर
गया। और शायद यही वह क्षण था जब उसने यह तय किया कि इव
इवानिच के लिए वहां पर इंतज़ार करने का कोई लाभ नहीं है। वह अ
बिल में गया, फिर वापस ठूंठ के पास चला आया, दोनों स्थानों पर :
एक-एक मिनट रुका और फिर उल्टे पांवों वापस लौटा। उसके आ
पीछे जाने में घोर अधैर्य झलकता था, उसका यह अधैर्य बढ़ता गय
अंत में वह ठूंठ के पास बग़ैर रुके आगे बढ़ गया और दुलकी चाल
अनायास चलता हुआ मुख्य सड़क की ओर रवाना हो गया। यह शाम
प्रारम्भिक घंटों की बात थी; तब सूर्य अस्त होने ही वाला था।

* * *

बीम देर रात गये शहर पहुंचा। यहां जंगल की तुलना में बहुत उजाल
था। बीम को इस उजाले से सहसा चिंता होने लगी। उसे इस प्रकार व
अनुभूति पहले कभी नहीं हुई थी। इसलिए वह बहुत सतर्कता से औ
साथ ही अपनी शक्ति के अनुरूप शीघ्रता से चलने लगा। वह, निस्संदेह
घर की दिशा में—अपने मालिक के पास, स्तेपानोव्ना के पास, लूस्य
और तोलिक के पास जा रहा था। निश्चय ही वे सब वहां होंगे। लेकि
जब वह बाह्य क्षेत्र में एक-समान मकानोंवाले नये ज़िले में पहुंचा तो बी
ने उस ख़तरनाक इलाक़े से बचकर निकलने का फ़ैसला किया जहां व
स्लेटिया आदमी रहता था। वह एक गली को पार करके सीधे एक बा

के पास पहुंचा। वह घूमकर अपने रास्ते में पहुंचने ही वाला था कि सहसा जहां का तहां खड़ा हो गया। वहां पर एक फाटक था और उस फाटक से तोलिक की गंध आ रही थी! जो लड़का बीम को इतना प्रिय था, इस राह से गुज़रा था और वह भी कुछ ही देर पहले। फाटक पर ताला लगा था लेकिन बीम उसके नीचे से धंसता-मुड़ता भीतर घुस गया और तोलिक की गंध के पीछे-पीछे चलने लगा। वह गंध उसे एक नन्हे से उद्यान के मध्य एक दो मंज़िले मकान में ले गयी।

बीम शीघ्र ही उस द्वार पर जा पहुंचा जहां से कुछ ही मिनट पहले तोलिक गुज़रा था। बीम जब पिल्ला ही था तभी से उसे हर दरवाज़े पर विश्वास करना सिखलाया गया था, उसने इस द्वार को खुरचा। कोई उत्तर नहीं मिला। बीम को इस बात की कोई जानकारी नहीं थी कि इस विशेष दरवाज़े के प्रति उसकी कार्यवाही को मूर्खतापूर्ण धृष्टता के सिवा और कुछ नहीं कहा जा सकता था। उसने दरवाज़े को फिर खुरचा और पहले से ज़्यादा ज़ोर से खुरचा।

दरवाज़े के पीछे से एक औरत की आवाज़ आयी।

"कौन है?"

"मैं हूं!" बीम ने उत्तर दिया। "भौं!"

"तोलिक कोई तुमसे मिलने के लिए कुत्ता लेकर आया है। अब आगे क्या होना है!"

"यह मैं हूं, मैं!" बीम ने अपनी बात दोहरायी। "भौं! भौं!"

"बीम! बीम!" तोलिक चिल्लाया और उसने द्वार खोल दिया। "बीम, प्यारे बीम, हैलो, बीमू बेटे!" और उसने बीम को गले लगा लिया।

बीम ने लड़के के हाथों को चाटा, उसकी जैकेट को चाटा, उसके स्लीपर चाटे और उसकी आंखों में निहारा। जिस कुत्ते ने इतना कुछ बर्दाश्त किया था उसकी आंखों में कैसा विश्वास, आशा और प्यार भरा था!

"ममी, ममी, ज़रा देखो उसकी कैसी आंखें हैं। वे मानवीय हैं! बीमू, चतुर बीम, तो तुमने मुझे खोज लिया। ममी, उसने मुझे ख़ुद खोज लिया..."

लेकिन जिस समय यह दो दोस्त मिलन की ख़ुशी मना रहे थे, उस

समय मां ने एक शब्द नहीं कहा। लेकिन जब उनकी ख़ुशी का ज
कुछ कम हो गया तो उसने पूछा:

"क्या यही है वह?"

"हां, यही है," तोलिक ने उत्तर दिया। "वह सदा ऐसा अ
कुत्ता रहा है।"

"तुम्हें उसे फ़ौरन बाहर निकाल देना चाहिए।"

"लेकिन ममी!"

"फ़ौरन!"

तोलिक बीम से और भी मज़बूती से लिपट गया।

"ओह, ममी नहीं, मेहरबानी कीजिये, ममी, नहीं नहीं!"
वह रोने लगा।

मधुर स्वर में दरवाज़े की घंटी बजी। एक व्यक्ति भीतर आया। उ
मृदु पर थके स्वर में पूछा:

"क्या शोर हो रहा है, तोलिक क्या तुम रो रहे हो?" उसने अप
ओवरकोट और जूते उतारे, स्लीपर पहने और कुत्ते के साथ बैठे लड़
के पास आया। "अब बताओ, क्यों यह शोर हो रहा है बुद्धू?" उस
कहा और तोलिक के सिर को सहलाया तथा बीम के कान को भी दोस्ता
अंदाज़ से खींचा। "ओहो, कैसा कुत्ता है यह! और कितना
पतला है।"

"डैडी! वह अच्छा कुत्ता है। डैडी! उसे रहने दीजिये ना।"

अब मां के चिल्लाने की बारी थी:

"हमेशा ऐसा ही होता है! मैं उससे एक बात करती हूं और तु
उसकी उल्टी बात कहते हो। क्या इसी को तुम लालन-पालन कहते हो
तुम बच्चे को बर्बाद कर दोगे।" फिर उसका स्वर औपचारिक हो गया
"सेम्योन पेत्रोविच, एक दिन आप ख़ुद अपने को लात मारना चाहेंगे
लेकिन तब बात हाथ से निकल चुकी होगी।"

"देखो सिर्फ़ एक मिनट। चिल्लाओ मत, शांति रखो," और वह उ
दूर के एक कमरे में ले गया और जब समझाने का प्रयत्न करने में लग
तो वह और भी ज़ोर से चिल्लाने लगी।

इन सब बातों से बीम ने यह अर्थ निकाला कि ममी बीम के विरु
है और डैडी उसके पक्ष में, और फ़िलहाल वह तोलिक के साथ ठहरेगा

बात समझने के लिए एक मनुष्य को भी शब्द सुनने की कोई ज़रूरत न होती, वह अपने कानों में रूई डाली हुई होने पर भी समझ जाता कि कहा क्या जा रहा था। पर यह तो कानोंवाला तथा चौड़ी, खुली आंखोंवाला बुद्धिमान कुत्ता था। बेशक, वह समझ गया था! और हुआ भी यही, तोलिक उसे अलग अपने कमरे में ले गया (उसमें केवल तोलिक ही की गंध थी)।

मां और बाप के बीच जो बातचीत हुई उसे न तो बीम ने सुना और ना ही तोलिक ने।

लेकिन दूर के उस कमरे में जो कुछ हुआ वह इस प्रकार है:

"तुम तोलिक की उपस्थिति में ऐसे शब्दों का इस्तेमाल क्यों करती हो—'तुम बच्चे को बर्बाद कर दोगे!' यह उसके लिए बहुत बुरा है।"

"और तुम समझते हो कि एक स्पष्टतः बीमार, आवारा कुत्ते को रखना—और वह भी हमारी जैसी साफ़ जगह में—बुरा नहीं है! तुम विवेकशून्य तो नहीं हो? कल उसे कोई ख़तरनाक बीमारी हो सकती है। मैं यह नहीं होने दूंगी। तुम्हें उस कुत्ते को फ़ौरन बाहर निकालना होगा!"

"देखो सुनो!" सेम्योन पेत्रोविच ने लम्बी सांस लेकर कहा। "तुम्हें ज़रा भी पता नहीं है कि युक्ति किसे कहते हैं।"

"सेम्योन पेत्रोविच, आपकी युक्ति भाड़-चूल्हे में जाये!"

"यह देख लो, फिर वही बात ... तुम्हें यह काम चतुराई से करने होते हैं। तोलिक को आघात लगनेवाले अनुभव से बचना और साथ ही कुत्ते से छुटकारा पाना बिल्कुल सम्भव है।" इसके बाद उसने फुसफुसाकर कोई बात कही और अन्त में कहा, "हां! यही हम करेंगे—उस जानवर से छुटकारा पा जायेंगे।"

"तुमने यह बात पहले ही कह देनी थी," मां ने राहत की सांस लेकर बड़बड़ाते हुए कहा।

"मैं तोलिक के सामने यह बात नहीं कह सकता था... और तुम, तुम मूर्ख प्राणी, मेरी युक्तियों को भाड़ में झोंकने के लिए चिल्ला रही थीं।" उसने यह दिखलाने के लिए उसके गाल में हलकी सी चुटकी काटी कि अब बुरी भावनाएं समाप्त हो गयी हैं।

वे तोलिक के कमरे में गये।

"अच्छा ठीक है," ममी ने कहा, "मैं समझती हूं कि वह यहां t
सकता है..."

"हां, क्यों नहीं, ज़रूर टिक सकता है," डैडी ने कहा।

तोलिक ख़ुशी से फूला नहीं समाया। अपने माता-पिता की त
कृतज्ञता से देखते हुए उसने उन्हें बीम के बारे में सब कुछ बतलाया अ
दिखलाया कि वह क्या-क्या कर सकता है।

वह एक सुखी परिवार था, वहां हर कोई जीवन से संतुष्ट था।

"लेकिन तोलिक, मुझे एक शर्त रखनी ही पड़ेगी: बीम तुम्हारे क
में नहीं, हाल में सोयेगा। यह ज़रूरी है।" डैडी ने अन्त में कहा।

"अच्छी बात है, मुझे कोई आपत्ति नहीं," तोलिक ने सहम
प्रकट की। "पर बीम बहुत साफ़ कुत्ता है। मैं उसके बारे में सब कु
जानता हूं।"

बीम ने ग़ौर किया कि डैडी वस्तुतः अच्छा, शांत, आत्मविश्वासी अ
दृढ़ व दयालु व्यक्ति है। कुछ देर बाद जब तोलिक बीम को अपने मक
की सैर कराने निकला तो बीम ने देखा कि डैडी अख़बार पढ़ते हुए अके
खाना खा रहा है—वह भी शांति और आत्मविश्वास से। डैडी, जो अन्य
सेम्योन पेत्रोविच कहलाता है, एक अच्छा आदमी है।

तोलिक बीम की देख-रेख में देर तक जगा रहा। उसने बालों
कंघी की, उसे थोड़ा सा खिलाया (डैडी ने कहा था उसे अधिक नहीं दे
चाहिए, "एक भुखमरे कुत्ते को अधिक नहीं देना चाहिए, वह मर सकत
है"), ममी से एक दरी मांगी (बिल्कुल नयी), उसे हाल के ए
कोने में रखा और कहा:

"बीम, यह तुम्हारा कोना है, अपने कोने में जाओ!"

बीम ने शंकारहित होकर आदेश का पालन किया। वह उसकी बा
को अच्छी तरह से समझ गया। वह फ़िलहाल यहीं रहनेवाला है। उसे ए
आंतरिक ऊष्मा का अनुभव हुआ जो उस नन्हे आदमी के प्यार-दुलार से
उसकी देख-रेख से उत्पन्न हुई थी।

"सोने का समय हो गया है, तोलिक, बहुत देर हो गयी है। सा
दस बज चुके हैं, अब सो जाओ," उसके पिता ने उससे आग्रह किया

तोलिक बिस्तर पर जा लेटा और नींद के आते-आते उसने सोचा
"'कल मैं जाऊंगा, स्तेपानोव्ना से मिलूंगा और उससे कहूंगा कि इवा

इवानिच के वापस आने तक बीम का मेरे साथ रहना बेहतर होगा...' और दूसरी बात जो उसे याद आयी वह यह थी कि जब उसने घर में उन्हें बताया था कि वह स्तेपानोव्ना के वहां जाता है और वहां लूस्या नाम की एक लड़की है और वह बीम को घुमाने ले जाता है तो मां ने बड़ा शोरशराबा मचाया और डैडी ने कहा: 'तुम्हें अब वहां क़तई नहीं जाना चाहिए, तोलिक,' और जब तोलिक रोने लगा तो डैडी ने ममी से यह कहकर बात समाप्त की: 'तुम और मैं युक्तियों की बात भूल गये हैं।' उसने तोलिक के सिर को सहलाते हुए कहा: 'यह अच्छी बात नहीं है, बेटे, तुम्हें वयस्क होकर बड़ा आदमी बनना है, कुत्तों का रखवाला या ऐसा व्यक्ति नहीं बनना है जो बुढ़ियों के यहां जाता है। तुम्हें ऐसा कुछ नहीं करना है।' और अब बीम उसके साथ रहेगा और 'बुढ़ियों के यहां जाने' की कोई ज़रूरत नहीं होगी ... लेकिन वह सिर्फ़ एक बार जाकर स्तेपानोव्ना से मिलेगा और उसे... तथा लूस्या—कितनी अच्छी लड़की है लूस्या—को बतायेगा... और बीम, अच्छा प्यारा बीम अब सो गया होगा।"

इन बातों को सोचते-सोचते तोलिक को नींद आ गयी, शांत और विश्वास से परिपूर्ण नींद।

...देर रात में बीम ने कुछ क़दमों की आहट सुनी। उसने बग़ैर सिर उठाये आंखें खोलीं और देखा। डैडी चुपचाप टेलिफ़ोन के पास गया, उसने कुछ क्षण रुककर सुना, फिर टेलिफ़ोन का चोगा उठाकर दो वाक्य फुसफुसाये:

"मुझे एक कार चाहिए ... अभी ..."

ज़ाहिर है, बीम के लिए इन शब्दों का कोई अर्थ नहीं था। लेकिन उसने देखा कि डैडी ने तोलिक के कमरे की तरफ़ घबरायी हुई निगाह डाली और फिर रसोईघर में गया और एक रस्सी तथा एक पुलिंदा लेकर पंजों के बल चलता हुआ वापस आया। बीम समझ गया कि कुछ गड़बड़ है, डैडी में कोई चीज़ बदल गयी है—वह, वह नहीं है जो था। उसकी अन्तर्जात बुद्धि ने कहा कि उसे भूंकना चाहिए और तोलिक के पास भागना चाहिए, और वह ठीक ऐसा करनेवाला ही था कि डैडी उसके पास आया और उसे थपकियां देने लगा (तो सब कुछ ठीक ही था), फिर उसने वह रस्सी उसके गले के पट्टे में बांधी, अपना ओवरकोट पहना, चुपचाप दरवाज़ा खोला और बीम की रस्सी थामे बाहर निकल गया।

एक जीवित कार उनके मुख्य द्वार पर घरघराती खड़ी थी।

और अगले क्षण बीम कार की पिछली सीट में बैठा चला जा र
है। उसके आगे ड्राइवर बैठा है और बग़ल में सेम्योन पेत्रोविच। बीम
बग़ल में पड़े पुलिंदे से मांस की गंध आ रही है। रस्सी अभी भी उ
पट्टे से बंधी है। दोनों व्यक्ति ख़ामोश हैं और बीम भी। रात का स
है। काली अंधेरी रात है। आकाश में बादल घिरे हैं, हर चीज़ का
है, ख्रिसान अंद्रेयेविच के घर में लोहे के बरतन जैसी काली। ऐसी का
अंधेरी रात में कोई भी कुत्ता कार की खिड़की से बाहर देखकर ऐसे कि
चिन्ह को याद नहीं कर सकता है जो उसे वापस आते समय राह सु
सके। उसे कहां ले जाया जा रहा है? यह भी बीम को मालूम नहीं थ
लेकिन एक कुत्ता क्यों चिंता करे? वे उसे कहीं ले जा रहे हैं और बस
इतना काफ़ी है। लेकिन रस्सी क्यों? बीम की असली चिंताएं तब श्
हुईं जब वे एक जंगल में पहुंचकर रुक गये।

कंधे में बंदूक़ लिये सेम्योन पेत्रोविच बीम की रस्सी पकड़कर उ
घने वन के अन्दर ले गया। एक टार्च की रोशनी में रास्ता देखते हुए
एक घाटी में नीचे उतरे। जंगल के बीच एक खुली साफ़ जगह, जो विशा
शाहबलूत-वृक्षों से घिरी थी, में आकर रुके। सेम्योन पेत्रोविच ने बी
को एक पेड़ से बांध दिया, फिर अपना पुलिंदा खोला, मांस का ए
कटोरा बाहर निकाला और एक भी शब्द बोले बिना उसे बीम के साम
रख दिया और वहां से चल दिया। लेकिन कुछ क़दम दूर जाने के बा
वह मुड़ा और अपनी टार्च की रोशनी बीम की आंखों में डालकर बोला

"अच्छा, भला हो तेरा।"

बीम ने टार्च की दूर जाती रोशनी को देखता रहा और इससे व
इतना आश्चर्यान्वित हो गया था, इतना चकरा गया था और उसे ऐस
आघात लगा था कि उसके मुंह से कोई आवाज़ ही नहीं निकली
वह बिल्कुल किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया था और वर्ष की इस अवधि के लि
असामान्य गर्मी होने तथा, लगभग, उमसभरा सा वातावरण होने के बावजू
कांपने लगा था।

कार चली गयी। बीम ने उसके इंजन की आवाज़ से उस दिशा क
अनुमान लगा लिया जहां को वह गयी थी। कार के इंजन की आवा
धीरे-धीरे हलकी होती गयी और अन्त में बिल्कुल ग़ायब हो गयी। य

उसके लिए एकमात्र ऐसा संकेत था जिससे वह, ज़रूरत पड़ने पर, यह जान सकता था कि उसे किस तरफ़ को जाना है।

जंगल ख़ामोश था।

बीम उस घोर अंधेरी शरद-रात में विशालकाय शाहबलूतों के कुंज में एक पेड़ से बंधा बैठा था।

और उस रात कुछ ऐसा हुआ जो शरत्काल में कभी-कभार, मुश्किल से ही होता है। मगर वह हुआ। नवम्बर के अंतिम दिनों में असाधारण रूप से गर्म उस मौसम से उद्दीप्त, दूर कहीं, तड़ित गर्जन होने लगा।

शुरू में वह बैठा-बैठा जंगल की ध्वनियां सुनता रहा और आसपास, जहां तक उसका घ्राण-संवेद पहुंच सकता था, वातावरण की जांच करता रहा। एक कुत्ते को ऐसा जंगल पहचानने में कोई दिक्कत नहीं होती जहां वह पहले एक बार भी कभी आया हो। बीम ने जल्दी ही जान लिया कि वह उसी जंगल में है जहां वह और उसका मालिक भेड़िये का शिकार करने आये थे। लेकिन अभी उसे भेड़िये की गंध नहीं मिली थी। बीम पेड़ के क़रीब सट गया, हाथ को हाथ न सूझनेवाले उस अंधेरे में विलीन होने का सा प्रयत्न करता हुआ वह सिकुड़ने लगा था। वह एकदम अकेला था, असहाय और उस आदमी द्वारा परित्यक्त था जिसको उसने कभी कोई नुक़सान नहीं पहुंचाया।

अन्दर से, अपने अन्तःकरण की गहराई में कहीं, शायद अपनी अन्तर्जात प्रेरणा से, बीम ने समझ लिया था कि उसे तोलिक के पास वापस नहीं लौटना चाहिए, कि उसे और कहीं नहीं केवल अपने ही घर के द्वार पर जाना चाहिए। तब, सहसा, उसके मन में वहां जाने की ऐसी उत्कट चाह उठी कि वह रस्सी को भूलकर, अपनी सम्पूर्ण शेष शक्ति से आगे की ओर पेड़ से परे कूदा, लेकिन उस रस्सी और छाती की उमड़ती वेदना ने उसे धराशायी कर दिया। कुछ देर तक वह अपने चारों पैर बाहर को फैलाये गतिहीन पड़ा रहा, लेकिन कुछ ही देर तक। उसने फिर हिम्मत बांधी, उठा और उस पेड़ के क़दमों पर, दृष्टतः, अपनी नियति को स्वीकारता हुआ सा बैठ गया।

उस घन अंधेरे में एक बार फिर बिजली कड़की और इस बार का तड़ित गर्जन काफ़ी नज़दीक था, उसकी गूंज-अनुगूंज मन्द-गति से चलती लहर की तरह उस पत्रहीन जंगल में फैल गयी। हवा का एक झोंका आया,

पेड़ों के कमज़ोर तने इस तरह दोलायमान होने लगे मानो उन्हें वि
महाविपत्ति के आने आभास हो रहा हो, और अन्त में जंगल की यह सा
ध्वनियां एक ही विकट-विकराल ध्वनि में विलीन हो गयीं; पास ही ए
का एक वृक्ष, जो जड़ के पास सड़ा हुआ था और चरमराकर नीचे गिर
वाला ही था। उसकी दमित कष्टमय कराह ने बीम को इतना अधिक ड
दिया जितना वह जंगल की सारी सम्मिलित ध्वनियों से भी नहीं डरा थ

लेकिन जंगल का ज़ोर से खड़बड़ाना और गरजना जारी रहा। र
भयानक अंधकार में हवा का एकछत्र राज्य था और वह ऐसे प्रचण्ड वे
से बह रही थी कि शाहबलूत के वृक्ष भी कराहने लगे थे। बीम को ऐ
प्रतीत हुआ कि कोई काला विराट प्राणी उन विशाल वृक्षों से, उस व
हताश व मृतप्राय एस्प से और स्वयं उससे, एक ऐसे कुत्ते से चिमट ग
है जो इन रात्रिकालीन संत्रासों के बीच खो गया है। वह काला विरा
प्राणी अपने लबादे को पेड़ों के ऊपर फड़फड़ा रहा है, तनों को पकड़क
उछलता-कूदता, ऐंठता-मुड़ता, इतराता-क़तराता और निष्ठुर नृशंसता
शत-स्वरीय वृन्दगान में हुंकारता व बेलगाम नाचता हुआ उन्हें झंझोड़े ज
रहा है।

बीम इतना आतंकित हो गया था कि उन क्षणों में अपनी शारीरि
वेदना को भी भूल गया। वह पेड़ की छाल से निकले गोंद की तरह पे
के तने का अंग बन गया था। ठण्डी हवा का एक झोंका सारी घाटी मं
ऐसा बर्फ़ानी शीत भर गया कि बीम की हड्डियां तक हिम-सदृश ठण्डी ह
गयीं। हमेशा की तरह, शरद की अंतिम ऊष्मा ने, सहसा, कड़कड़ाती
सर्दी के लिए राह छोड़ दी। बीम हवा से बचने के लिए पेड़ की दूसरी
तरफ़ सरक गया, लेकिन अधिक दूर नहीं ताकि वह उन गंधों को ग्रहण
कर सके जो हवा के साथ आ रही थीं और साथ ही हवा के बहाव की
दिशा पर भी, अपनी आंखों से, नज़र रख सके। लेकिन रात इतनी अंधेरी
थी कि वह कुछ नहीं देख सकता था। वह ख़ौफ़ से कांप गया।

अचानक अपनी आग्नेय असिधार से अंधकार चीरती बिजली कड़की
और क्षणभर के लिए वह उफनता हुआ वनक्षेत्र रोशन हो गया। फिर सिर
के ऊपर एक कानफोड़ धमाका हुआ और कोई वस्तु धमाके के साथ ज़मीन
पर गिरी और उसकी अनुगूंज चारों ओर फैल गयी। ऐसा जान पड़ा कि
उस तड़ित्प्रकाश और गर्जन-तर्जन से वह उछलता-कूदता, पेड़ों को झंझोड़ने

वाला दैव्य डर गया है और ज़रा सी देर में सर्वत्र शांति हो गयी। इसके बाद पानी की बूंदें टपाटप गिरने लगीं। एक लघु शीत-प्रलय सा मचाती वर्षा, थोड़ी ही देर बाद, थम गयी।

अपने आपसे चुपचाप बड़बड़ाते हुए जंगल ने अपनी शाखों को फड़फड़ाया और जैसे युद्ध के बाद अपनी पीठ सीधी की। लेकिन, अचानक, एस्प का वह वृक्ष फिर चरमराया और विदाई के एक आलिंगन में अन्य वृक्षों को पकड़ने की कोशिश सा करता हुआ टूटने लगा। उसने अंतिम बार एक विकट चीत्कार किया और टूटी हुई शाखाओं की कटु और दुर्दान्त वेदना के क्षणों में ऐंठता हुआ धरती पर गिर गया, उसने अंतिम लड़ाई को बर्दाश्त कर लिया था, पर आख़िर में यों वीरगति पाने के लिए। एस्प का वह वृक्ष बीम के काफ़ी नज़दीक था और, जैसा कि मालूम पड़ता था, उसे सीधे अपनी तरफ़ को गिरता हुआ महसूस करने पर वह अपने बलूत-वृक्ष से पीछे की ओर हटा लेकिन – रस्सी तो रस्सी ही है।

बीम सुबह होने तक कांपता हुआ, बीमार तथा संत्रस्त बैठा रहा। मांस का कटोरा अभी भी उसके सामने था – उसने उसे छुआ तक न था।

सुबह होने से ठीक पहले एक भेड़िये की हूंक सुनायी पड़ी। वह एक अकेला भेड़िया था, उस जंगल में उसकी पुकार का उत्तर देनेवाला और कोई भेड़िया नहीं था। यह वही भेड़िया था जो उस शिकार के समय भाग निकला था – वह उस झुण्ड का सबसे ज़्यादा चालाक भेड़िया था। बीम के बाल खड़े हो गये, दांत किटकिटाने लगे और वह ग़ौर से सुनने तथा हवा को सूंघने लगा। वह भेड़िये से होनेवाले मुक़ाबले की तैयारी कर रहा था, उसे एक क्षण के लिए भी यह भान नहीं हुआ कि उसमें अपनी रक्षा करने का साहस था, हताशा का वीरत्व (आख़िर उसने उस स्लेटिये आदमी को काटा था और उसे लगभग भूमि पर गिरा दिया था!)। लेकिन इस बार वह भेड़िया नहीं आया। हवा बहुत स्थिर थी इसलिए वह दूर से उसकी गंध नहीं पकड़ सका और, दृष्टतः, जंगल के उस भाग में उसकी गश्त का वह समय नहीं था। लेकिन प्रतीक्षा की तनावपूर्ण दुविधा में उसने रस्सी को इस क़दर कसकर खींच रखा था कि उससे बीम का गला रुंधने लगा। वह पीछे पेड़ की तरफ़ को हटा, अपना पिछला भाग पेड़ के साथ सटाया और उस रस्सी को अपने पिछले दांतों के बीच पकड़ा तथा चाकू की तरह साफ़ काट दिया।

आख़िर उसने यह कर ही दिया!

बीम उस घने जंगल में अकेला तो था पर आज़ाद था।

आख़िर में कोई भी कुत्ता ऐसा करेगा, वैसा करने का ढंग अलग-अ नस्लों में अलग-अलग तरह का होता है। जो कुत्ते ज़ंजीर से बांधकर जाते हैं; वे रस्सी को फ़ौरन काट देते हैं क्योंकि वे मज़बूत ज़ंजीर सिवा और किसी बंधन का सम्मान नहीं करते। एक छोटी जाति का गो में बैठ सकनेवाला कुत्ता रस्सी को नहीं काटेगा, लेकिन बांधे जाने पर घूमेगा-मुड़ेगा और संघर्ष करेगा। वह इस संघर्ष में ख़ुद अपना गला घोंट सकता है। हाउण्ड प्रजाति के कुत्ते इसके बारे में बहुत समय त सोचते रहते हैं, पर अन्त में, वे भी अपने दांतों का इस्तेमाल कर दे हैं। लेकिन बौद्धिक नस्ल के वे कुत्ते, जो असली आखेट क्रीड़ा में क करते हैं, कई दिनों तक अपने मालिक का इंतज़ार करते बैठे रह सक हैं और रस्सी को सिर्फ़ तभी काटते हैं जब ख़तरे या हताशा की स्थि हो और जब यह साफ़ ज़ाहिर हो जाता है कि अब उनकी मदद के लि कोई नहीं आयेगा। ऐसा ही बीम के साथ भी हुआ, समय आया औ उसने वह किया जिसे करने के लिए वह विवश था।

बीम सतर्कता के साथ उस पेड़ से अलग हटा। वह इधर-उधर देख तथा जंगल की आवाज़ों को सुनता जा रहा था। एकाएक, बिल्कुल पा ही से, एक कालकण्ठ पक्षी ज़ोर-ज़ोर से कूजने लगा: "कोई है! को है!" और कालकण्ठ की पहली चेतावनी पर बीम एक विशाल शतवर्षी वृक्ष के गिर्द उगे छोटे शाहबलूतों के घने झुरमुट में रुक गया। अब उ अपने दर्द का मुश्किल से ही अहसास हो रहा था, उसका दर्द कहीं अन्द गहराइयों में छुप गया था। वह अपनी गर्दन बाहर को ताने तथा सि को ज़मीन की ओर किये कुछ पत्तियों के ऊपर लेट गया। कालकण्ठ पक्ष बिल्कुल क़रीब था – बीम एक पेड़ की ऊपरी शाखा पर उसे बैठा देख सकत था। वह भागकर चला गया होता लेकिन वह पक्षी जिस दिशा से ख़त के आने की चेतावनी दे रहा था बीम को उसी दिशा में जाना था। व तनाव की स्थिति में, पर दृढ़ता से, प्रतीक्षा कर रहा था और शत्रु क स्थिति के बारे में इस सामयिक चेतावनी के लिए उसका आभारी था धन्यवाद, कालकण्ठ! इस पक्षी को, इस शानदार अग्रदूत को सिर्फ़ ख़ूंख़्वा जानवर ही कोसते हैं। अपनी पूंछ में एक टेलिग्राफ़ के साथ जन्मा य

पक्षी जंगल के समस्त शांतिप्रिय निवासियों का स्वेच्छिक सहायक है। अगर यह पक्षी न होता तो वे जंगल के जीवन से सम्बन्धित जानकारी से पूर्णतः वंचित हो जाते।

मादा भेड़िया जंगल के बीच उस खुली जगह के किनारे पर आकर रुक गयी। उसका एक अगला पंजा टेढ़ा था (उसे किसी समय मनुष्य ने घायल किया होगा)। वह लंगड़ाती हुई कुछ क़दम और चली, अपना सिर सीधे बीम की तरफ़ किया और–छलांग लगा दी। लेकिन, अपनी टेढ़ी टांग के कारण निशाना चूक गयी। बीम अंतिम क्षण पर कूदकर अलग हट गया। वह खूंख्वार जानवर मुड़ा और अपनी तीन टांगों पर एक प्रकार से फुदककर फिर बीम पर झपटा। लेकिन बीम तीर की तरह बलूत-वृक्ष के पीछे हो गया और अपनी पीठ से पीछे की तरफ़ एक छेद की उपस्थिति को महसूस करके, पेड़ के तने में बने उस खोखले में धंसता हुआ अन्दर को प्रविष्ट हो गया–ठीक उसी समय मादा भेड़िये ने फिर हमला किया। बीम ने अपने दांत निकाले, गुर्राया और भूंकने लगा–वह ऐसे भूंका जैसे अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं भूंका था। वह शिकारी कुत्तों के झुण्ड के साथ भागते हुए कुत्ते की तरह, भालू की मांद पर हस्की कुत्ते की तरह बग़ैर रुके भूंकता रहा। बीम की आवाज़ जंगल के आरपार गूंजती हुई सिर्फ़ एक शब्द कह रही थी बशर्ते कि कोई उसे समझ सकता: "संकट! संकट! संकट!" और जंगल ने अपनी अनुगूंजों से उसकी पुकार को आगे बढ़ाया: "संकट! संकट!"

हे जंगल, तुम्हें धन्यवाद!

यह आशंकाजनक समाचार एक कालकण्ठ पक्षी से दूसरे कालकण्ठ पक्षी के ज़रिए टेलिग्राफ़ से भी ज़्यादा तेज़ी से फैला: "कोई किसी को खा रहा है, कोई किसी को खा रहा है, कोई किसी को ..." अपनी चौकी में जंगल के वार्डन ने यह महसूस किया कि ऐसी भावतुरता से कुत्ते का भूंकना और कालकण्ठ पक्षियों की असाधारण घबराहट एक अशुभ चिन्ह है। उसने अपनी बंदूक़ उठायी, उसमें छर्रे भरे और जंगल के मध्य भाग की तरफ़ चल पड़ा। वह निश्शंक होकर जंगल से जा रहा था क्योंकि जंगल उसका घर ही जैसा था और जंगल के रहनेवाले उसे पहचानते थे। वह स्वयं भी उनमें से अनेक को जानता था; वह मादा भेड़िये को भी जानता था लेकिन उसने किसी कारणवश उसे मारा नहीं था। हो सकता

है कि उन युवा शिकारियों में से कोई मादा भेड़िये के अपने इलाके
उससे टकरा गया हो। हो सकता है कि वह डर के मारे पेड़ पर
गया हो और अपने कुत्ते को मादा भेड़िये का ग्रास बनने के लिए छ
गया हो। उसने ऐसा सोचते-सोचते अपनी रफ़्तार तेज़ कर दी। भूंकने
आवाज़ दूर रह गयी थी, भेड़ियों की घाटी के ठीक अंत में। लेकिन
अचानक रुक गया। "वह मारा गया!" वार्डन ने मन ही मन सो
और पहले से अधिक सावधानी से परन्तु उसी दिशा में बढ़ता रहा।
उचित बात क़तई नहीं थी। उसे जल्दी करनी चाहिए थी।

लेकिन शाहबलूत के उस पुरातन वृक्ष के पास क्या घटना घटी थी

वह मादा भेड़िया "घिसा घाघ" थी। वह वृक्ष के खोखले से पी
हट गयी थी ताकि बीम भूंकना बन्द कर दे क्योंकि वह जानती थी
आम तौर पर कुत्ते के भूंकने के बाद एक बंदूक़धारी आदमी प्रकट
जाता है। और बीम इसलिए चुप हो गया था क्योंकि अब मादा भेड़ि
उस पर हमला नहीं कर रही थी। लेकिन कुछ समय बाद वह निकटत
आयी और स्थिर दृष्टि से बीम को घूरती हुई बैठ गयी थी। दो कु
निगाह से निगाह मिलाकर एक दूसरे को घूर रहे थे; एक बीम का दूरस
पुरखा, वह जंगली कुत्ता और मनुष्य का दुश्मन, और दूसरा अत्यंत अच्छ
तरह से प्रशिक्षित कुत्ता जो मनुष्य की दया के बग़ैर जीवित नहीं रह सकता
भेड़िया सारे लोगों से घृणा करता था और बीम उन सबसे प्यार करत
बशर्ते कि वे सब उसके प्रति सहृदयता का बर्ताव करते; एक कुत्ता, ज
मनुष्य का दोस्त था और दूसरा जो मनुष्य का शत्रु था, एक दूसरे क
आंखों में घूरते हुए खड़े थे।

मादा भेड़िया समझ गयी थी कि वह उस खोखले में नहीं पहुंच सकत
जहां बीम ने शरण ले रही थी, लेकिन वह निकट आयी और उसने
अपने जबड़े को खुले भाग की ओर बढ़ाया, बीम पीछे हटा और उसने
अपने दांत बाहर को निकाल दिये लेकिन भूंका नहीं, वह अपने उस दुर्ग
में निरापद था।

हम कभी नहीं जान सकते कि यह स्थिति कब तक बनी रहती।
एकाएक उस मादा भेड़िये ने हवा में ज़ोर से सांस ली, उस पेड़ से ऐसे
दबककर पीछे हटी मानो उसे कोई ख़तरा हो। वह सावधानी से, हलके
क़दम रखती उस बलूत-वृक्ष की ओर बढ़ी जहां पर बीम को बांधा गया

था। वह एक प्रकार से आतंकित सा होकर चल रही थी, उसकी झबरेदार दुम दबकर टांगों के बीच जा अकड़ी थी।

बीम को शिकार बनाने के अपने लालच में वह इस स्थल को देखने से चूक गयी थी क्योंकि रात की वर्षा के कारण गंधें मिट गयी थीं। अब जंगल में थोड़ी सी हवा प्रवाहित हुई तो मादा भेड़िये को उनका आभास हुआ – पेड़ से बंधी रस्सी और मांस का कटोरा। वह जानती थी कि इसका क्या अर्थ है: वहां पर कोई आदमी रहा होगा। रस्सी से मनुष्य की महक आती थी, गोल वस्तु से लोहे की और पैर के निशान भी उसी के थे। और मांस, स्पष्टतः, एक जाल था। उससे जाल व फंदों की और धोखाधड़ी की दुर्गन्ध आ रही थी। मादा भेड़िया एक क्षण रुकी, उचककर बग़ल को हटी और भागी, इस तरह भागी मानो किसी बहुत बड़े संकट से बचकर भाग रही हो। कोई भी भेड़िया असावधानी से लगाये गये ऐसे किसी भी जाल को देखकर इसी तरह से भागेगा जिसकी गंध और उपस्थिति को समुचित ढंग से न छुपाया गया हो।

जंगल की अंतिम मादा भेड़िया, बहादुर और गर्वीली होने के बावजूद बीम के पास से भाग खड़ी हुई।

... हां, पृथ्वी पर मनुष्य ही एकमात्र ऐसा प्राणी है जिससे भेड़िया नफ़रत करता है। संसार के आख़िरी भेड़िये आज पृथ्वी पर चल रहे हैं और तुम, तुम मनुष्य, उनका, जंगलों और मैदानों की सफ़ाई करनेवाले उन स्वतंत्रता-प्रेमी प्राणियों का, संहार कर रहे हो, जिनका प्राकृतिक कार्य गंदे, घृणित व हानिकारक जंतुओं, सड़ीगली लाशों और रोगव्याधियों से पृथ्वी को मुक्त करना है, यह देखना है कि केवल स्वस्थ संतानें ही जीवित रहें। दुनिया के अंतिम भेड़िये... वे इस पृथ्वी पर चलते-फिरते हैं, खुजलही लोमड़ियों को नष्ट करने और इस तरह अन्य को रोग-संक्रमण से बचाने के लिए; वे इस पृथ्वी पर चलते हैं, एकिनोकाकस से ग्रस्त कमज़ोर खरहों को जंगलों व मैदानों में रोग फैलाने तथा बीमार संताने पैदा करने से रोकने के लिए; वे इस पृथ्वी पर चलते हैं, ताकि जिन वर्षों में तुलारेमिया से ग्रस्त चूहे अत्यधिक संख्या में संतानोत्पत्ति करते हैं, उन वर्षों में उनका हज़ारों की तादाद में सफ़ाया किया जा सके। लेकिन जो भेड़िये आज इस पृथ्वी पर चलते-फिरते हैं वे दुनिया के अंतिम भेड़िये हैं।

रात को जब वे हताश और शोकाकुल स्वर में हूंक लगाते हैं
किसी कारणवश सम्पूर्ण पड़ोस के लिए की गयी उनकी इस खुली
प्रत्यक्ष घोषणा—"मैं हूं! हूं"—पर मनुष्य का हृदय कांप उठता
पर फिर भी मनुष्य जानता है कि एक भेड़िया एक छोटे पिल्ले को नुक़
नहीं पहुंचायेगा, इसके विपरीत वह उसे अपने बच्चे की तरह अंगी
कर लेगा; वह एक छोटे बच्चे को भी नुक़सान नहीं पहुंचायेगा, ब
उसे घसीटकर अपनी मांद में ले जायेगा और उसे दूधपीते भेड़िये के ब
के बीच धकेल देगा। ऐसे कितने ही मामले हुए हैं जब किसी भेड़िये
किसी आदमी के बच्चे को पाल-पोसकर भेड़िया-पुरुष के रूप में विक
किया! गीदड़ ऐसा नहीं कर सकते। कुत्ते भी ऐसा नहीं कर सक
और, क्या एक भेड़िया जिस ज़िले में रहता है वहां की भेड़ों को छूना
कभी नहीं। लेकिन इसके बावजूद तुम भेड़िये से डरते हो। इस तरह क
कभी विवेक को अंधा बना देनेवाली घृणा (मनुष्य और जानवरों के ब
अन्तर!) मनुष्य पर इस तरह हावी हो जाती है कि अच्छे को हानिका
और हानिकारक को अच्छा माना जाने लगता है।

लेकिन दुनिया के आख़िरी भेड़िये आज भी इस पृथ्वी पर चलते

उनमें से एक अभी-अभी भागा है, बीम से नहीं पर मनुष्य की घृणास
व ख़तरनाक गंध से। हम यह कभी नहीं जान पायेंगे कि उन दोनों
टकराव का क्या परिणाम होता या उस खोखले पेड़ में बीम के शरणस्थ
के सम्मुख वह मादा भेड़िया कब तक बैठी रहती। शायद वे आपस
दोस्ती कर लेते (आख़िर वह एक अकेली मादा भेड़िया थी और बी
नर था)। हमें उसकी चर्चा करने की कोई ज़रूरत नहीं जो हुआ
नहीं, केवल अपने आपको याद दिलाने के लिए ही इसकी चर्चा हो सकत
है कि लोगों ने भेड़ियों के झुण्ड में एक कुत्ते को दौड़ते अक्सर ही देख
है। लेकिन बीम उस नियति से बच गया।

जब मादा भेड़िया भाग गयी, तो बीम को फ़ौरन ही अपनी घाय
छाती के दर्द का अहसास होने लगा। गला घुटने की सी अनुभूति हो
पर वह खोखले से बाहर निकल आया और क्या होगा इसकी चिंता कि
बिना धप से ज़मीन पर गिर गया। लेकिन ठीक होने तथा चलने में सम
हो जाने के बाद भी उसने वह मांस नहीं खाया। उसे सिर्फ़ एक ही का

ग्रना था; चलते रहना, जब तक शरीर में शक्ति है तब तक चलते रहना।

तब बीम फिर चल पड़ा। एक किलोमीटर लम्बी चढ़ाई चढ़ने में उसे काफ़ी समय लगा और काफ़ी कोशिश करनी पड़ी। लगभग आधा रास्ता चढ़ने पर उसे मादा भेड़िये की गंध मिली तो उसने उसे पार न करने का फ़ैसला लिया (वह मादा भेड़िया उस रास्ते से ग्रायी थी), इसलिए वह कांटों के एक घने भाग की तरफ़ मुड़ गया और – एक भेड़िये से जा टकराया – वह उसके सामने पड़ा था और मर चुका था। यह वही भेड़िया था जो घातक रूप से घायल होने के बाद शिकारियों के घेरे से निकल भागा था और जिसके गिर्द चक्कर लगाते हुए उस मादा भेड़िया ने अपनी घृणा व शोक प्रकट करने के लिए चीत्कार किया था ताकि मनुष्य सुने और भय से थर्रायें। एक मुर्दा भेड़िया। उसके बाल, गुच्छों में इधर-उधर बिखरे हुए थे। उस जानवर के कुछ हिस्से भर शेष रह गये थे। लेकिन उसके नाख़ून बहुत लम्बे व साफ़ थे और इससे उनका डरावनापन बढ़ गया था। बीम ने देखा भेड़िये के नाख़ून मरने के बाद भी बने रहते हैं और ख़ौफ़ पैदा कर सकते हैं।

बीम फिर उस रास्ते को गया जिस पर वह पहले चल रहा था, लेकिन वह उस जगह से हटकर चला जहां मादा भेड़िये के पद चिन्ह थे। वह जितना तेज़ सम्भव था चलता गया। अंत में वह घाटी के ऊपरी सिरे पर पहुंचा, उस स्थान पर रुका जहां एक दिन पहले वह कार रुकी थी, उसने चारों तरफ़ देखा और ठीक उस दिशा को चल पड़ा जहां उसे जाना था – अपने घर। वह एक बार फिर थककर चूर हुआ और उसे घास के ढेर पर या चीड़ की पत्तियों पर फिर लेटना पड़ा; उसने कुछ बूटियां फिर खोजीं और खायीं।

इस तरह एक दुबला-पतला लंगड़ा कुत्ता मुख्य सड़क के किनारे कुक्कुर चाल से चलता जा रहा था। आगे, हमेशा आगे को, उस दरवाज़े की ओर जहां सहृदयता थी, जहां वह लेटेगा और प्रतीक्षा करेगा, अपने मालिक का इन्तज़ार करेगा, विश्वास और साधारण मानवीय स्नेह की प्रतीक्षा करेगा।

... लेकिन तोलिक का क्या हुआ। उस सुबह जब वह उठा तो उसका क्या हाल हुआ?

वह बीम को देखने के लिए दौड़ा तो रात के कपड़ों में ही ब
निकल आया।

"मम्मी! बीम कहां है? कहां!!!"

मम्मी ने उसे आश्वस्त किया:

"बीम बाहर जाना चाहता था, इसलिए डैडी ने उसे बाहर जाने दि
और वह वापस नहीं आया। वह भाग गया है। डैडी ने उसे बड़ी देर
पुकारा लेकिन वह चला गया था।"

"डैडी!" तोलिक के आंसू छलक आये। "यह सच नहीं है।
सच नहीं हो सकता!" वह जैसा था, उसी अवस्था में, अपने के
सोने के कपड़े में चारपायी पर लुढ़क गया और इस उम्मीद से कि ऐ
नहीं था, अभ्यर्थना करता हुआ भर्त्सना के स्वर में चिल्लाया: "यह स
नहीं है!"

सेम्योन पेत्रोविच ने उसे दिलासा देने का बीड़ा उठाया:

"वह वापस आयेगा... और अगर वह नहीं आता तो हम ख
जायेंगे और उसे खोजकर घर लायेंगे। कुत्ता तो कुत्ता ही होता है, उ
खोजना कोई कुएं झांकना थोड़ा ही है।"

तोलिक ने रोना बन्द कर दिया और शून्य दृष्टि से दीवार की ओ
ताका। फिर उसने अपने माता-पिता की तरफ़ नज़र डाली और अप
आंसू पोंछते हुए दृढ़ता से कहा:

"चाहे कुछ भी क्यों न हो मैं उसे खोज निकालूंगा।"

उसने यह शब्द इतने आत्मविश्वास से कहे कि उसकी मां और पित
ने एक दूसरे की तरफ़ आशंकित दृष्टि से देखा: "लड़के के अपने ही स्वतं
इरादे हैं।"

उस दिन से तोलिक अपने घर और स्कूल में चुप रहता और अप
परिवार के प्रति उसने संयमित व सतर्कता का रुख़ अपना लिया।

वह बीम की खोज कर रहा था। एक सौभाग्यशाली, सुसंस्कृत परिवा
का एक साफ़ सुथरा नन्हा बालक अक्सर नगर में इधर-उधर घूमता औ
आने-जानेवालों, जिन्हें वह विशुद्धरूपेण उनकी बाह्याकृति के अनुसार छांटत
था, को रोकता तथा यह पूछते हुए देखा जाता था:

"क्षमा कीजिये, क्या आपने कोई ऐसा सफ़ेद कुत्ता देखा है, जिसक
एक कान काला है?"

चौदहवां अध्याय

उसके अपने दरवाज़े का रास्ता।

तीन चालें

शहर पहुंचते-पहुंचते उसके पैर मन-मन भर के हो गये थे। भूख से उसके हाल बेहाल थे। मुख्य सड़क पर खाने के लिए धरा भी क्या था? किसी के फेंके हुए तरबूज़ के एक छिलके के सिवा, शायद, कुछ भी नहीं। लेकिन वह भोजन नहीं था। बीम जैसे एक कुत्ते को मांस, अच्छे खाने, खाने की मेज़ (अगर किसी मेज़ पर खाना चल रहा हो तो) से बचे सब्ज़ियों का सूप, जिसमें रोटी भी पड़ी हो, की ज़रूरत होती है, संक्षेप में, उसकी ज़रूरत होती है जिसे अधिसंख्य लोग खाते हैं। लेकिन बीम लगभग दो सप्ताह से भुखमरी की ख़ूराक पर जी रहा था। और छाती के उस घाव के साथ जी रहा था जो उस नीचतापूर्ण लात से उसे लगा था, इसका अर्थ था घुल-घुलकर मरता। यदि हम इसमें यह तथ्य भी जोड़ दें कि उस मादा भेड़िये के साथ अपने टकराव के वक़्त उसका वह पैर फिर घायल हो गया था जो रेल की पटरी में फंसा था और वह पुनः अपने तीन पैरों पर डगमगाता चल रहा था, तो हम यह कल्पना कर सकते हैं कि जब बीम अपने नगर में प्रविष्ट हुआ तब वह कैसा दयनीय दिख रहा होगा।

लेकिन इस दुनिया में कुछ दयालु लोग अभी भी मौजूद हैं। नगर के बाह्य भाग में वह एक दरवाज़े तथा एक खिड़कीवाली झोपड़ी के पास ठहर गया। वह झोपड़ी ईंटों, कंक्रीट के खण्डों, तख़्तों, लोहे के गर्डरों, पाइपों आदि के विशाल ढेर से घिरी थी और दूसरी तरफ़ एक विशाल अधबनी नयी इमारत खड़ी थी और अभी उसमें खिड़कियां, दरवाज़े या छत कुछ नहीं लगे थे। हवा उन खिड़कियों की चौखटों से होकर गुज़रती, ईंटों के ढेर पर फुफकारती, तख़्तों के ढेर पर कोई राग अलापती और टावर-क्रेन के ऊपरी भाग से हुंकारती निकल जाती—हर जगह उसकी आवाज़ भिन्न थी। बीम के लिए इस दृश्य में सामान्य से भिन्न कुछ नहीं था (वे कुछ न कुछ कहीं न कहीं हमेशा बनाते रहते थे) और, ईमानदारी की बात यह है कि यायावरी के अपने दिनों में वह इन निर्माताओं से अनेक बार थोड़ा बहुत खाने को मांग चुका था। लड़के उसकी भाषा समझ गये और उन्होंने उसे कुछ न कुछ दिया था। दोपहर के भोज के अवसर

पर एक मज़ाक़िये ने तो गोश्त के एक टिन में चम्मच भर वोद्का डालव
बीम को पेश की थी।

"चल पी ले कुत्ते, पी ले। उन लोगों की सेहत के लिए जो य
कभी चोरी नहीं करते।"

बीम बुरा मान गया, उसने अपना मुंह फेर लिया।

"समझदार छोकरा है!" मज़ाक़िया बोला, "यहां ऐसा कोई न
जिसके लिए तुम पी सको, है कोई? पक्की बात है, कोई नहीं।"

अन्य लोग भी उसकी हंसी में शामिल हो गये और वे उस मज़ाक़िये व
शूरिक कहकर बुलाते रहे। लेकिन शूरिक ने सौसेज का, किसी कूड़े के डिब
का नहीं, असली दूकान के सौसेज का, टुकड़ा काटा और उसे बीम
सामने रख दिया।

"काले-कान, यह पुरस्कार सच बोलने के लिए है।"

और गन्दे ओवर-आल पहने हुए उसके साथी फिर हंसे, तब शूरि
ने वह बात कही जो दृष्टतः उस परिहास का सार तत्व था :

"तुम समझे, प्यारे, कल रात तख़्तों का वज़न एक तिहाई और घ
गया — सिकुड़ने की वजह से।"

फिर हंसी के फ़ौव्वारे छूटे लेकिन मज़ाक़िया ख़ुद गम्भीर चेहर
बनाये रहा।

बीम ने शूरिक की बातों को अपने ही ढंग से समझा। पहली बात
वोद्का कुत्तों के लिए बुरी चीज़ है, और अगर आप उसे नहीं पियेंगे त
वे तुम्हें कुछ सौसेज दे देंगे; दूसरी बात, ईंटों और सीमेंट की गंधवा
यह सब लड़के अच्छे लोग हैं। बीम को ऐसा जान पड़ा कि शूरिक सा
वक़्त इसी बात को कहे जा रहा था।

इस बात को याद करके तथा अतीत की गंधों की स्मृति से निर्देशि
होकर बीम, जो अब थकावट की चरम सीमा पर था, उस छोटे से मकान
पहरेदार की झोपड़ी, के दरवाज़े पर लुढ़क गया।

तड़के सवेरे का समय था। आसपास, हवा के सिवा और कोई
था। थोड़ी देर बाद झोपड़ी के अन्दर कोई खांसा और अपने आपसे बा
करने लगा। बीम उठा और एक बार फिर स्मृति से निर्देशित हो दरवा
को खुरचने लगा। बेशक वह खुला, ठीक वैसे ही जैसे कि दरवाज़े हमेश
खुला करते थे। एक दाढ़ीवाले आदमी ने द्वार खोला, उसका एक कनछो

ऊपर उठा था और दूसरा नीचे लटका था और उसके लम्बे भेड़-चर्मी कोट के ऊपर एक बग़ैर ग्रस्तीन का लबादा कसकर लिपटा हुआ था; उसकी आकृति ऐसी थी जो बीम को विश्वास की प्रेरणा देती थी।

"अरे वाह, हमारे घर अतिथि आया है, अतिथि। ग़रीब बेघर, तेरी दशा निश्चय ही ख़राब लगती है, अच्छी बात है, अगर चाहते हो तो अन्दर आ जाओ।"

बीम झोपड़ी में घुसा और सीढ़ी के अन्दर की तरफ़ आकर नीचे गिर गया। उस पहरेदार ने पावरोटी का टुकड़ा काटा, उसे मुलायम बनाने के लिए पानी में डाला और नीचे बीम के सामने रख दिया। बीम ने कृतज्ञतापूर्वक उसे खाया, फिर अपना सिर पंजों में रखकर ऊपर उस बूढ़े की ओर निहारा।

और फिर उन्होंने ज़िन्दगी के बारे में बातचीत शुरू की।

"काले-कान, मैं साफ़-साफ़ देख सकता हूं कि तुम एक वाहियात ज़िन्दगी बिता रहे हो... कष्ट क्या है?" उसने पहले यह पूछा। "क्या आवास विभाग की प्रतीक्षा-सूची में तुम्हारी बारी नहीं आयी? मेरा भी यही हाल है, प्यारे। बारियां आती हैं और चली जाती हैं, लेकिन मिख़ेई जहां था वहीं रह जाता है। ज़रा देखो, उन्होंने किस बड़ी संख्या में मकान बनाये हैं, पर इसके बावजूद वे मुझे इस छोटी सी झोपड़ी में एक जगह से दूसरी को पहुंचाते रहते हैं। मान लो तुम अभी भाग कर चले जाते हो, फिर मुझे एक चिट्ठी लिखने की कोशिश करते हो। तुम लिख ही नहीं सकोगे, लिख सकोगे क्या? चार या इससे भी ज़्यादा वर्षों से मेरा कोई पता ही नहीं है, सिर्फ़ 'मिख़ेई, एस० एम० ऊ०-१२'। बस, इतना ही। यह मज़ाक़ नहीं है, निगोड़ा अपमान है। खाना पीना, हां ख़ूब है, जितना चाहो, पेट फटने तक खाये जाओ, जूते और कपड़े, उनका भी यही है, एक टाई बांध लो और एक शहरिये की टोपी, अगर तुम चाहो तो, पहन लो; लेकिन इसके बावजूद मेरे पास रहने की उचित जगह अभी भी नहीं है, समझे? और तुम, तुम इस मामले में कुछ नहीं कर सकते। यह हमेशा 'अस्थायी कठिनाइयां!' होती हैं... हां, मेरा नाम मिख़ेई है। मैं मिख़ेई हूं," उसने अपनी छाती की ओर इशारा किया और अपनी बोतल से एक चुसकी ली (वह अपने भाषण के हर उफान बाद ऐसा ही कर रहा था)।

बीम ने मिख़ेई के एकल भाषण को अपने तरीक़े से, बहुत अ-
तरह से, समझा, यानी उस आदमी की बाह्य रूपाकृति से, उसके स्व
के उतार-चढ़ाव से, उसकी सदयता और सरल तौर-तरीक़ों से : मि
एक अच्छा आदमी था। और इतना समझने के बाद बीम को झपकी
गयी और उसने शेष वार्तालाप को एक कान से भीतर और दूसरे से बा
जाने दिया। लेकिन अपने साथी के प्रति सम्मान की वजह से वह सम
समय पर अपनी आंखों को अभी भी जैसे-तैसे खोल ही देता था।

और मिख़ेई अपने उसी सुर में बोलता गया :

"और यह लो, तुम्हें नींद आ गयी है, और आ गयी है तो बस
आ गयी है। लेकिन मुझे सोना मना है। निरीक्षक सहसा जांच के लि
आ सकता है: 'मिख़ेई कहां है? यहां नहीं। बर्ख़ास्त करो उसे।' औ
यह बकवास नहीं है, सचमुच ऐसा ही है। अगर आप अपने ठिकाने प
नहीं हैं या सो गये हैं तो वे फ़ौरन आ धमकते हैं: 'कहां है मिख़ेई
यहां नहीं। बर्ख़ास्त करो उसे!' और बस मामला ख़त्म।"

और बस, बीम अपनी झपकियों के बीच इतना ही समझ पाया
"मिख़ेई... मिख़ेई... मिख़ेई... और बस इतना ही।"

मिख़ेई ने बोतल से दो चार चुसकियां और लीं, अपनी मूंछों क
पोंछा, रोटी के एक टुकड़े पर नमक लगाया, उसे सूंघा और उसे खा
लगा, पर बीम से उसका बोलना जारी था :

"काले-कान, मैं जो तुझसे कह रहा हूं वह यह है। अपने हृदय क
बात कुत्ते से कह देना बेहतर है। कोई तर्क-वितर्क नहीं। कुत्ता आपक
बात किसी को बतायेगा नहीं और आपके मन का बोझ उतर जायेगा..
यह मैं हूं, मिख़ेई, एक चौकीदार। मेरे पास, ध्यान दो, एक बंदूक़ है
लेकिन, यदि वे चोरी करनेवाले घुस-पैठिये एक से अधिक हों तो आप
क्या कीजियेगा? उनके गिरोह के ख़िलाफ़ मिख़ेई क्या कर सकता है?
कुछ भी नहीं। बस मामला ख़त्म... वे कहते हैं क़ानून है। अगर आप
किसी को पकड़ लें तो वह हरामी पांच साल की खायेगा, हैं!! लेकिन
घपला यह है कि आपको उसे पकड़ना होगा, और आप पकड़ें, तो कैसे?
मिसाल के लिए, तुम एक कुत्ते हो। अगर मैं एक थैले में बीस ख़रगोश
लूं और उन सबको एक साथ छोड़ दूं और तुमसे कहूं कि उन्हें पकड़ो
वे चारों दिशाओं में तितर-बितर हो जायेंगे। हो सकता है कि तुम एव

को दबोच लो। लेकिन बाक़ी का क्या होगा? वे साफ़ निकल भागेंगे!"
मिख़ेई ऐसे संक्रामक ढंग से हंसा कि बीम ने अपना सिर उठाकर देखा और ऐसा महसूस किया कि उसे ख़ुद भी मुस्कराना चाहिए।

दरवाज़ा खुला। एक और आदमी, जो ख़ुद भी चौकीदार था, अन्दर आया और बोला:

"ड्यूटी बदल आ गया, मिख़ेई, तुम्हें छुट्टी।"

मिख़ेई अपने सोने की पटिया पर चढ़ा और तुरन्त सो गया। लेकिन उसका "बदल" मिख़ेई की जगह पर बैठ गया। कुछ देर बैठे रहने के बाद उसकी नज़र बीम पर पड़ी।

"यह उल्लू यहां क्या कर रहा है?" उसने बीम से पूछा; ज़ाहिर था कि वह बीम की बड़ी-बड़ी आंखों से प्रभावित हो गया था।

जैसा कि शिष्टता का तक़ाज़ा था, बीम उठकर बैठ गया और उसने परिक्लांत ढंग से अपनी दुम हिलायी ("मैं बीमार हूं और मैं अपने मालिक को खोज रहा हूं।")। लेकिन मिख़ेई का "बदल" बात समझा नहीं। बहुत से लोगों की भांति वह भी कुक्कुर-भाषा नहीं समझता था। सो उत्तर देने की बजाय, उसने दरवाज़ा खोला और अपने पैर से बीम को धक्का दिया।

"गन्दे-घिनौने, फ़ौरन फ़रार हो जा।"

बीम यह दृढ़ धारणा लेकर बाहर चला गया कि "बदल" वाहियात क़िस्म का आदमी है। लेकिन वह दूर नहीं जा सका। मिख़ेई ने उसे जो टुकड़े खिलाये थे उनसे वह किसी कारणवश अपने को और भी ज़्यादा कमज़ोर महसूस करने लगा था और उसे वस्तुतः चलते-चलते ही नींद आने लगी थी। तंद्रा के साथ संघर्ष करता हुआ वह उस अर्धनिर्मित घर में जा पहुंचा और लकड़ी की छीलन के एक ढेर, जिससे चीड़ की सी गंध आ रही थी, जा घुसा और गहरी नींद सो गया।

उसकी नींद में दिनभर कोई विघ्न नहीं पड़ा। शाम के धुंधलके में उसने पहली मंज़िल की छानबीन की तो उसे एक खिड़की पर लगभग आधी पावरोटी मिल गयी। उसने उसका लगभग आधा भाग खा लिया (जब तक उसका पेट नहीं भरा) और शेष भाग को घर के बाहर लाकर एक बुनियाद की खाई के निकट मुलायम ज़मीन में गाड़ दिया। उसने यह काम भली-भांति और स्वीकृत विधि से सम्पन्न किया। थका हुआ होने के बावजूद

उसे कुक्कुर-नियम का पालन करना ही था "वक्त ज़रूरत के लिए ज़
में गाड़कर रखो।" अब उसे महसूस हुआ कि वह अपनी यात्रा जारी
सकता है। और स्वयं अपने घर के दरवाज़े की तरफ़ चल पड़ा।

घर के दरवाज़े को, उस दरवाज़े को जिसे वह अपने जीवन
प्रारम्भिक दिनों से जानता, जिस दरवाज़े के पार विश्वास तथा सर
परितोषदायी सत्य, करुणा, मैत्री और सहानुभूति इतनी सहज स्वाभा
थीं कि इन संकल्पनाओं को परिभाषित करने की कोई आवश्यकता न थ
और आख़िर बीम इन सबके प्रति सचेत क्यों हो? क्योंकि पहले तो कु
की जाति का प्राणी होने के कारण वह मानवीय-विवेक की अगम्य ऊंचाइ
तक पहुंच ही नहीं सकता था और दूसरे यदि वह इसका प्रयत्न कर
भी तो वह केवल इसलिए नष्ट हो जाता क्योंकि लोग उसके निश्छल खरे
को असाधारण ही नहीं बल्कि एक अपराधपूर्ण चीज़ मानते। क्योंकि ब
जिस दुष्ट बदमाश का पर्दाफ़ाश करता उसे अवश्य काटता, किसी
कायर और असत्यवादी को ज़रा भी हिचकिचाये बिना काट देना न
किसी भी नौकरशाह आदि को वह चबा-चबाकर टुकड़े-टुकड़े कर देना
वह अपने कर्तव्य का पालन करता हुआ उन सबको समझ-बूझकर काटना
न कि उस तरह जैसे उसने उस स्लेटिये आदमी को, सिर पर चोट कि
जाने की निर्दयतापूर्ण उत्तेजनात्मक हरकत के बाद, काटा था। नहीं, जि
दरवाज़े की तरफ़ बीम बढ़ रहा था वह उसके अस्तित्व का एक अंग था
वह उसका जीवन था। बस। दुनिया में ऐसा कोई भी कुत्ता नहीं है ज
अपनी निष्ठा को साधारण से भिन्न मानता हो। यह लोग हैं जो यह समझ
हैं कि कुत्ते में अन्तर्निहित इस भावना को वीरता का कारनामा माना जान
चाहिए। वे ऐसा केवल इसलिए सोचते हैं क्योंकि उनमें से सभी अप
दोस्तों के प्रति पर्याप्त वफ़ादार और कर्तव्य के प्रति इतने निष्ठावान नह
होते कि वफ़ादारी जीवन का मूल, अस्तित्व का स्वाभाविक आधार व श
बन जाये।

बीम जिस दरवाज़े की तरफ़ जा रहा था वह उसके दोस्त का दरवाज़
था, इसलिए बीम का भी दरवाज़ा था। वह विश्वास और जीवन के
दरवाज़े की तरफ़ बढ़ रहा था। बीम उस तक इसलिए पहुंचना चाहता
था कि या तो वहां अपने दोस्त के आने तक का इंतज़ार करे या इंतज़ार
करता-करता मर जाये, अब बीम में शहर के अन्दर उसे खोजने की ताक़त

बाक़ी नहीं रही थी। वह केवल रुका रह सकता था। केवल प्रतीक्षा कर सकता था।

लेकिन यदि, आख़िर में, बीम उस रात घर नहीं पहुंचा तो हम क्या कर सकते हैं?

मुख्य बात यह थी कि उसे स्लेटिये आदमी के ज़िले से काफ़ी दूर हटकर जाना था और ऐसा करने के लिए उसके पास तोलिक के घर से होकर जाने के सिवा और कोई चारा न था। यही हुआ बीम ने देखा कि वह अपने किशोर दोस्त के फाटक पर है और वह उसके सामने से इस तरह नहीं जा सकता कि मानो वह किसी अजनबी का फाटक हो। वह ईंटो की ऊंची दीवार से पास अपने सिर को एक तरफ़ मोड़कर लेट गया; वहां से गुज़रनेवाले किसी भी व्यक्ति ने यही सोचा होगा कि वह या तो कोई घायल या मृतप्राय अथवा, शायद कोई मरा हुआ कुत्ता है।

नहीं, बीम उस घर के दरवाज़े पर नहीं जायेगा। वह दर्द और अपनी व्यग्रता को कम करने के लिए दीवार के पास सिर्फ़ आराम करेगा, फिर घर को जायेगा। और शायद... शायद तोलिक स्वयं आ जाये... जब इसमें तर्क का समावेश हुआ ही नहीं तो हम बीम पर तर्कशून्यता का दोष कैसे लगा सकते हैं? वह किसी तर्क के बग़ैर अपनी शोकाकुल स्थिति में पड़ा भर रहा।

वह एक अंधेरी शाम थी।

एक कार आकर रुकी। उसकी चौंधियानेवाली आंखों ने दीवार के एक हिस्से को अन्धकार से बाहर निकाल दिया और फिर सारी दीवार का स्पर्श करती हुई सीधे बीम को घूरती सी रुक गयी। बीम ने अपना सिर उठाया और लगभग मुंदी हुई आंखों से उसकी ओर देखा। कार थोड़ा सा घुरघुरायी, फिर कोई बाहर निकला। कार से निकलनेवाले धुंवे ने उस व्यक्ति की गंध को दबा दिया था, लेकिन जब वह प्रकाश में आया तो बीम उठकर बैठ गया। वह सेम्योन पेत्रोविच था। वह कुछ नज़दीक आया और उसने यक़ीनी तौर से देख लिया कि वह सचमुच बीम ही है, फिर बोला:

"तो तुम बच निकले। अरे, लानत है मुझ पर!"

कार से एक आदमी और बाहर निकला (वही, जो तूफ़ान की रात

बीम को मादा भेड़िया के पास कार चलाकर ले गया था), उसने कु
की तरफ़ देखा और सहज सद्भाव से बोला :

"यह चतुर है, उसे कोई नुक़सान नहीं हो सकता।"

सेम्योन पेत्रोविच अपनी पेटी उतारते हुए बीम की तरफ़ बढ़ा।

"बीम, बेटा... अच्छे कुत्ते, बीम... आ-जा मेरे पास..."

अरे नहीं! अब बीम को उस पर विश्वास नहीं रह गया था। निलभ
भी विश्वास नहीं रहा था। सम्भव है कि सेम्योन पेत्रोविच ने अपने पु
की मनःस्थिति समझ ली हो और वह उसे कुत्ता वापस दिलाना चाहत
हो, लेकिन बीम ने उसे मौक़ा नहीं दिया। वह सेम्योन पेत्रोविच को देखक
महज़ पीछे नहीं हटा, वह भागा – सीधे, उस प्रकाशित दीवार के किनारे
किनारे। उसमें इस दौड़ के लिए ताक़त कहां से आयी?!

सेम्योन पेत्रोविच उसके पीछे दौड़ा, दूसरा आदमी उसका रास्ता काटने
के लिए लपका। बीम प्रकाश से अन्धकार की तरफ़ तीर की तरह निकल
भागा, एक गहरी खाई में जा फिसला और फिर पैदल-चाल की रफ़्तार
चला – लेकिन उस दिशा को नहीं जहां वह प्रकाश में भाग रहा था; वह
उल्टी दिशा को लौट गया था।

बीम के पुरुखों ने ख़तरे के क्षण में अपनी बुद्धिमानी एक बार फिर
से उद्घाटित की थी: जिस दिशा को भागना पड़ रहा हो उससे उल्टी
दिशा को पलटकर भागो! खरहे, लोमड़ियां, भेड़िये तथा अन्य जानवर
सभी, पीछा किये जाने पर यह चाल चलते हैं। लोमड़ियां और भेड़िये
अपने ही क़दमों पर इतनी कुशलता से वापस पलट आते हैं कि
कुशल शिकारी भी बाद ही में जान पाता है कि वह कैसा धोखा खा गया
था – वह पंजों के निशानों से बतला सकेगा; और चाल नम्बर दो है,
एक वक्राकार पांत में पलटना (बायीं ओर भागो और दायीं ओर से
पलटो) या चकमा देकर जगह बदलना (पलटने के बाद एक तरफ़ को
छलांग लगा लो); और चाल नम्बर तीन है दुबककर छिपना; जब आप
पलटकर वापस आ गये हैं तो किन्हीं घनी झाड़ियों में दुबक जाओ और
सुनो (यदि वे चले गये हैं तो जहां हो वहीं रहो; यदि वे तुम्हारी तरफ
आ रहे हैं तो फिर दुबारा भागना शुरू करो)। असली शिकारी जानवरों
की इन तीनों चालों को जानते हैं, लेकिन सेम्योन पेत्रोविच कभी भी

शिकारी नहीं रहा, वैसे उसने बंदूक का इस्तेमाल किया था और शिकार के मौसम के प्रारम्भ में हमेशा गाड़ी लेकर जाया भी करता था।

तो अब वह टार्च की रोशनी में एक तरफ़ को दौड़ा और नाली की आड़ में छिपा बीम दूसरी तरफ़ को।

लेकिन थोड़ी ही देर में नाली का अंतिम सिरा आ गया; अब बीम एक खड़ी दीवार के सामने था और उस दीवार के किनारे पर एक एक्सकेवेटर का यांत्रिक बेल्चा लटका हुआ था। यह किसी जाल में फंसने से कम बुरा न था। वह उसमें फिसलता हुआ घुस तो आया था लेकिन उसमें ऊपर चढ़कर बाहर निकलने की शक्ति नहीं थी। अग़ल-बग़ल और सामने दीवारें थीं। यदि बीम स्वस्थ होता और चारों पैरों से चलने में समर्थ होता तो बात दूसरी थी; लेकिन अब वह उछलकर या घिसटता हुआ चढ़कर नहीं सिर्फ़ चलकर ही बाहर निकल सकता था।

इसलिए हमारा बीम वहां पर बैठ गया, उसने ऊपर एक्सकेवेटर के यांत्रिक बेल्चे की तरफ़ नज़र उठायी, किसी प्रकार अपने पिछले एक पैर पर अपने आपको उठाया, अपने अगले पंजों से दीवार पर लधर कर नाली के किनारे की दीवार का सर्वेक्षण किया और पुनः बैठ गया। वह कुछ सोचता हुआ सा प्रतीत होता था, परन्तु वास्तव में वह सुन रहा था। क्या पीछा करनेवाले उसकी तरफ़ आ रहे हैं? बाद में उसने अपने आपको उठाकर नाली की विपरीत दिशा को देखा, टार्च का प्रकाश एक स्थल पर इधर-उधर हिल-डुल रहा था, फिर बिल्कुल बुझ गया। उसने कार को पीछे को जाते और फिर अपनी ओर, परन्तु एक तरफ़ को, आते देखा। बीम नाली के कोने में दबककर बैठ गया और कांपता हुआ सुनने लगा। कार उसके बिल्कुल पास से होकर निकल गयी।

आसपास बिल्कुल शांति थी। जो आवाजें सुनायी दे रही थीं वे दूर से आ रही थीं: कारों की हलकी, करकराने की संक्षिप्त सी आवाज़, ट्राम की खड़बड़ व चीत्कार जैसी आवाज़—सब परिचित और हानिरहित ध्वनियां।

शरद की एक ठण्डी रात को नाली में बैठा एक कुत्ता। इस लम्बी चौड़ी दुनिया में ऐसा कोई भी न था जो उसकी मदद करता। लेकिन उसे अपने निजी दरवाज़े पर पहुंचने की सख़्त ज़रूरत थी। बीम ने कूदकर बाहर आने की कोशिश की, लेकिन पीछे गिरा। यह कैसी उम्मीद है!

वह उल्टी तरफ़ को अपने क़दमों पर वापस चला, सावधानी से, आहि
आहिस्ता, सुनते हुए और साथ ही दीवारों को छूकर देखते हुए।
में उसने एक ऐसा स्थान खोज लिया जहां दीवार थोड़ा ढह गयी
वह गिरी हुई मिट्टी पर चढ़ा और अपने एक अच्छे, पिछले पैर पर
हो गया। अब उसके अगले पैर नाली की बाहरी दीवार तक पहुंच र
थे। उसने मिट्टी को अपनी ओर खुरचना प्रारम्भ किया; वह जि
अधिक मेहनत करता उतनी ही अधिक मिट्टी उसके नीचे जमा होती।
ने आराम किया और फिर काम शुरू कर दिया। अब वह अपनी छ
को नाली के किनारे पर टिका सकता था, लेकिन अब नाली के बा
किनारे की दीवार में नीचे डालने को मिट्टी नहीं थी। वह अपने
छोटे टीले से नीचे उतरा और खाई के निचले तल पर लेट गया।
ज़ोर से हूंकना चाहता था, अपने मालिक या तोलिक को पुकारना चा
था, इतने ज़ोर से विलाप करना चाहता था कि सारा नगर जाग उ
लेकिन उसे ख़ामोश ही रहना चाहिए। वह पस्त होकर लेटा हुआ थ
सहसा वह दृढ़ता से उठ खड़ा हुआ, अपने बनाये हुए टीले से पीछे ह
और, दर्द को भूलकर, अपने सारे शरीर को चीथड़ों की गठरी, जै
कि वह था, की तरह झुलाया और अपने दोनों पिछले पैरों को टीले
टिकाकर उछला तथा नाली के ठीक किनारे उस छोटे खोखले में गि
जिसे ख़ुद उसी ने खोदकर बनाया था।

वह ऐसे दर्द और ऐसी कमज़ोरी को किस तरह से बर्दाश्त कर सका
कौन जाने... मसलन, एक भेड़िया जाल में फंसने पर, अपने पंजे वि
तरह से ख़ुद ही काट कर विलग कर लेता है? कोई नहीं बता सक
कि एक जानवर ऐसा काम किस प्रकार कर पाता है—अपने ही पैर
अपने ही दांतों से काट फेंकना। यह कल्पना भर की जा सकती है
भेड़िया आज़ादी के लिए एक अन्तर्जात प्रेरणा के वशीभूत ऐसा कर पा
है, लेकिन बीम सहृदयता और विश्वास के दरवाज़े पर पहुंचने की अद
प्रेरणा के वशीभूत अपने दर्द को भूला था।

जो भी कारण हो, बीम उस जाल से बाहर निकल आया और अ
नाली के कगार में बने गढ़े में पड़ा था।

वह एक ठण्डी रात थी। नगर पत्थर और धातु की तंद्रा में सोय
हुआ था और रात के समय भी, अपनी नींद में भी चुपचाप चरमरा रह

था, करकरा रहा था। बीम कान धरे देर तक सुनता रहा और अन्त में शीत से कांपते हुए उसने फिर अपनी यात्रा शुरू कर दी।

उसे एक अल्पकालिक विश्राम करना नितांत ज़रूरी था इसलिए एक ऐसे द्वार के अन्दर जा घुसा जो संयोगवश उस समय भी खुला था। आप सड़क में नहीं लेट सकते (उसने बहुधा ऐसे कुत्ते देखे थे जो गाड़ियों के नीचे कुचल गये थे)। और इसके अलावा कोलतार की सड़क ठण्डी थी। लेकिन उस प्रवेशकक्ष में वह एक गर्म रेडियेटर से सटकर नीचे लेटा और सो गया।

देर रात गये एक अजीब कुत्ता एक अजीब मकान के प्रवेशकक्ष में सो रहा था।

ऐसा होता है।

ऐसे कुत्ते पर सख़्ती मत कीजियेगा।

पंद्रहवां अध्याय

अंतिम दरवाज़े पर। लौह वाहन का रहस्य

पौ फटने से पहले बीम जाग गया। कैसे खेद की बात थी कि उसे यह गर्म और सत्कारशील जगह, जहां उसे किसी ने सताया नहीं, को छोड़ना था। अपनी कुछ शक्ति के लौट आने का अनुभव करने पर उसने उठने की कोशिश की परन्तु बैठने की स्थिति से आगे नहीं बढ़ सका। इतना तो उसने कर लिया, लेकिन उसका सिर चक्कर खाने लगा (ठीक वैसे ही जैसे उस जंगल में छाती पर लात लगने के बाद हुआ था)। दीवारें लड़खड़ाती सी परे हटीं, सीढ़ियों के जंगले कांपे, सीढ़ियां पहाड़ी की तरह ऊपर चढ़ गयीं और ऐंठने-मुड़ने लगीं तथा बिजली का बल्ब छत के साथ झूलने लगा। बीम बैठा-बैठा यह सोचता हुआ रुका रहा कि अब आगे क्या होगा। उसने अपना सिर नीचे झुका लिया।

सिर का चकराना जिस तरह शुरू हुआ उसी तरह एकाएक बन्द हो गया। बीम अपने पेट के बल सीढ़ियों से नीचे उतरा। द्वार खुला था। वह रेंगता हुआ बाहर आया और कुछ देर उस स्फूर्तिदायक शीतलता में

लेटा रहा और अन्त में किसी तरह उठ खड़ा हुआ। वह चेतना की समाप्ति के कगार पर आ पहुंचा था इसलिए उसे दर्द की अनुभूति नहीं हो रही थी, ऐसी स्थिति में वह किसी ऐसी श्वान-इच्छा का अनुपा करता हुआ, जिसके बारे में हम कुछ नहीं जानते। एक पागल कुत्ते तरह, लड़खड़ाता आगे बढ़ा।

यदि वह एक ऐसे कूड़े के ढेर से न गुज़रता जहां एक छोटी, झ बालोंवाली कुतिया खाने की तलाश कर रही थी तो वह अपने घर क न पहुंच पाता। बीम पास आया और बैठ गया। उस झबरे बालोंवा छोटी और गंदी कुतिया ने उसे सूंघा और अपनी दुम हिलायी।

"तुम कहां जा रहे हो?" उसने इस ढंग से पूछा।

बीम ने झबरी को तुरन्त पहचान लिया। वह मैदानों में उस ि उससे मिला था जब वह कुछ नरकुलों की जड़ें चबा रही थी। उ विश्वासपूर्वक पर दुख के साथ सिर्फ़ आंखों से उत्तर दिया: "प्रिय, मे दशा ख़राब है।"

वह फिर कूड़े के ढेर में जुट गयी। उसने उसकी ओर इस त मुड़कर देखा मानो एक अतिथि को नियंत्रण दे रही हो। साथ ही उस अपनी दुम हिलायी जिसका तात्पर्य था: "आओ, यहां कुछ है।"

और आप क्या सोचते हैं? एक टुकड़ा यहां, एक वहां, रोटी व एक टुकड़ा या हेरिंग-मछली का सिर। इस तरह बीम को खाने के लि काफ़ी मिल गया। उसकी शक्ति धीरे-धीरे वापस लौट आयी और फि जल्दी ही अपने होंठों को चाटकर और झबरी को धन्यवाद देकर व पहले से कहीं अधिक दृढ़ क़दमों से अपनी राह पर चल दिया।

हां, जीवन के संकटापूर्ण क्षणों में कूड़े का ढेर बहुत महत्व की चीज़ सिद्ध हो सकता है। उस समय से बीम ऐसे स्थानों के प्रति सम्मानपूर्ण व्यवहार करता, बशर्ते कि.....

कहानी के इस कथांश को कहना दुःसह है।

धूसर प्रभात के उजाले में जब कल के धूम्रमय कोहरे के अवशेष एक हलकी, पारदर्शी नीली धुंध के रूप में धरातल पर बैठ गयी तो बीम, अन्ततः, अपने घर पर पहुंच गया... वह था उसका घर! वह थी खिड़की जहां से वह और इवान इवानिच कभी-कभी सूर्य को उदय होते देखते थे। शायद वह अभी खिड़की पर आये? बीम सड़क के पार बैठा

ग्रौर देखने लगा। ग्रब वह उल्लास ग्रौर ग्राशा के साथ देख रहा था। उसे सुखानुभूति हो रही थी। उसने सड़क पार की ग्रौर धीरे-धीरे, मगर सिर ऊंचा उठाये चल रहा था, मानो वह मुस्करा रहा हो, मानो वह ग्रपने ग्रविस्मरणीय मित्र से मिलने ही वाला हो। यह प्रसन्नता की ग्रपेक्षा का क्षण था ग्रौर ऐसा कौन जीवित प्राणी है जो ग्रपेक्षा के क्षण पर स्वयं प्रसन्नता के क्षण से भी ग्रधिक सुखी न हुग्रा हो?

सड़क के बीच, ग्रपने ही घर के सम्मुख ग्रौर उस द्वार विशेष से कुछ ही दूरी पर बीम द्विगुणित ग्राशा से सुखी हो रहा था।

पर सहसा उसने कोई भयावह वस्तु देखी। ग्रहाते के ग्रन्दर जानेवाले फाटक से काकी प्रकट हो गयी! बीम बैठ गया, उसकी ग्रांखें भय से फैल गयी थीं ग्रौर उसका हर ग्रंग कांप रहा था। काकी ने उस पर एक ईंट मारी। बीम जल्दी से सड़क पार कर दूसरी ग्रोर चला गया।

उतने सवेरे वहां ग्रौर कोई नहीं था, यहां तक कि ग्रहाते के सफ़ाई-कर्मी भी झाड़ू लेकर नहीं पहुंचे थे। सिर्फ़ काकी ग्रौर बीम एक दूसरे के ग्रामने-सामने खड़े थे। उसने, स्पष्टतः, यह तय कर लिया था कि वह वहां पर खड़ी रहेगी ग्रौर उसे भीतर नहीं घुसने देगी। उसने ग्रपने शरीर के बेहतर संतुलन के वास्ते ग्रपने पैरों को तक फैला लिया था ग्रौर ग्रपनी मुट्ठियां कमर से टिकाये फाटक के बीचोंबीच मूर्ति जैसी तनकर खड़ी हो गयी थी। उसने ग्रपनी ख़ुद की शान, श्रेष्ठता तथा पवित्रता को महसूस करते बीम को नगण्य बनाते हुए उसे दर्प, ग्रवहेलना ग्रौर घमण्ड से घूरा। दूसरी तरफ़ बीम नितांत ग्रसहाय था, लेकिन उसके पास ग्रपने दांत थे जो काफ़ी भरोसेमंद थे ग्रौर ग्रगर मरते दम तक लड़ने की नौबत ग्रा जाये तो ख़तरनाक भी थे। वह इसे जानता था, वह इसे भूला नहीं था, इसलिए उसने ग्रपने सिर को थोड़ा झुका लिया, ग्रपने ऊपरी होंठ को पीछे खींच कर ग्रगले दांतों को बाहर निकाल लिया। कुत्ता ग्रौर मनुष्य, वे एक दूसरे पर नज़र गड़ाये घूरते जा रहे थे। वे मिनट बीम को कितने लम्बे लगे थे।

...जब तक वे दोनों एक दूसरे को उनकी हलकी से हलकी गति पर नज़र गड़ाये देख रहे हैं तब तक ग्राइये हम काकी पर विचार करें। वैसे हम उसे, कुछ हद तक, बीम से सम्बन्धित घटनाग्रों से जानते हैं। काकी पूरी तरह से ग्राज़ाद ग्रौरत थी, वह किसी एक पूंजीपति द्वारा किये

जानेवाले किसी भी तरह के शोषण से और ममाजवाद के प्रनि कर्त
की भावना के नामोनिशान से भी मुक्त थी और काम करने की आवश्यक
से भी मुक्त थी। परन्तु अपने एक बंधन से बेख़बर होने के बावजूद
अभी भी क्षुधा की ग़ुलाम थी और कुछ स्व-आरोपित कर्तव्यों को मान
भी थी। मिसाल के लिए, वह फ़्लैटों के इस बड़े खण्ड में किसी भी अ
किरायेदार से पहले, पौ फटने के पूर्व ही, उठ जाती थी। वह यह मान
थी कि उसका पहला कर्त्तव्य निम्नांकित बातें नोट करना था : तड़के स
किसी अजनबी का किसी घर से चुपचाप निकलकर जाना ; जब सारे
को सोया होना चाहिए तब किसी की रोशनी का जला होना, कोई व्यक्ति
जो मछली पकड़ने या शिकार खेलने गया हो—और किसके साथ गया
तथा कोई ऐसा व्यक्ति जो कूड़े के ढेर के लिए कुछ लेकर मुंह अंधे
आया हो। अगर वह बोतलें लाया तो वह उन्हें अपनी पत्नी से छुपा
रहा होगा ; अगर वह एक पुराना ओवरकोट हो तो वह घर में सामा
की जमाख़ोरी करनेवाला कंजूस होगा ; यदि वह फेंकने के लिए ला
गया ख़राब गोश्त हो तो घर की मालकिन फूहड़ होगी आदि, आदि
यदि कोई लड़की तड़के सवेरे घर आयी तो वह काकी के लिए विजय क
चर्मोत्कर्ष होता था। इसके अतिरिक्त वह सब कुत्तों और उनके मालिक
से घृणा करती थी, इस लिए उन पर नज़र रखना उसका एक सर्वाधि
महत्वपूर्ण दायित्व था ; इस दायित्व को पूरा करने के लिए वह उन सबक
एक-आध गालियां सम्प्रेषित करती थी, उसके पास गालियों का अक्ष
भंडार था जो उसकी प्रबल स्मरण शक्ति तथा पांडित्य का प्रमाण था

यह सब उस दैनिक संसूचना-विनिमय के लिए ज़रूरी था जो उसी क
जैसी कई अन्य औरतों के साथ उसकी बैठक के समय होता था। वे अहा
में रखी सावधानी के साथ रंगी हुई बेंचों पर बैठतीं और घंटों तक रिपो
पेश करतीं और इस बात पर बहस करतीं कि कौन क्या है ; इन बैठकों
में न तो किसी व्यक्ति को भूला जाता था न किसी वस्तु को। यह हु
प्रतिभा ! उसका समाचार-बुलेटिन, कभी भी प्रकाशित न होने के बावजूद
नियमित रूप से निकलता था। और वह इसे समुदाय के प्रति अपना दूसर
कर्तव्य मानती थी। उसका ज्ञान तो अन्तर्राष्ट्रीय मामलों तक फैला थ
(उसने यह ख़ुद अपने कानों से सुना था : एक लड़ाई निश्चय ही छिड़ने
वाली है, आपको अनाज और नमक की जमाख़ोरी कर लेनी चाहिए) ;

सके जैसे अन्य लोगों की मदद से अफ़वाह फैलती, लेकिन अब एक ऐसे हत्वपूर्ण "विशिष्ट" व्यक्ति के निश्चित हवाले से फैलती जो विद्वान यक्ति होने की वजह से ऐसी बातें गढ़ता नहीं, उसने यह बात ख़ुद अपने ानों से सुनी थी।

और इस सबके बावजूद, जैसा कि हम पहले ही सुन चुके हैं, काकी पने आपको एक "सोवियत नारी" कहती थी और इस तथ्य पर गर्व रती थी तथा यह दृढ़ धारणा रखती कि यह बात सही है और कि उसका ुन लगा हुआ अन्तर्विवेक वस्तुतः एक ऐसा उदाहरण है जिसका अनुकरण किया जाना चाहिए। यदि इस औरत का कोई बच्चा हुआ होता तो वह नल-बढ़कर कैसा व्यक्ति बना होता!

लेकिन सप्ताह में दो दिन उसके छुट्टी के दिन होते थे। रविवारों को वह बाज़ार में सामूहिक किसानों से वस्तुएं ख़रीदा करती थी और सोमवारों को उन्हें बेचा करती थी। इस तरह, यद्यपि उसके पास मुर्ग़ियां नहीं थीं, शाकवाटिका, मछली पकड़ने का जाल आदि कुछ नहीं था फिर भी वह अंडों, मुर्ग़ियों, टिमाटरों व ताज़ा मछलियों तथा मनुष्य की ज़रूरत की अन्य हर वस्तु का अच्छा ख़ासा व्यापार करती थी। अपने इस तृतीय कर्तव्य (जिसे वह, ध्यान दीजियेगा, अपनी छुट्टियों के दिन निभाती थी) की कृपा से काकी के पास एक बचत-खाता था और वह ख़ूब अच्छी तरह से रहती थी, इसी वजह से उसने अपनी ज़िन्दगी में कभी और कहीं भी काम नहीं किया। उसके पास फ़्लैट था जिसमें उसके ऊंचे सांस्कृतिक स्टैंडर्ड के अनुरूप सारी सुविधाएं थीं (दो साइडबोर्ड, तीन दर्पण, एक चित्र जिसका शीर्षक 'लड़की और राजहंस' था और जिसे उसने बाज़ार से ख़रीदा था, एक रेफ़्रीजिरेटर व एक टेलीविजन सेट)। उसके पास जो होनी चाहिए वह हर चीज़ थी और जो नहीं होनी चाहिए वह कुछ नहीं था...

तो यह काकी वहां, फाटक के मध्य में खड़ी थी और बीम वहां से नहीं गुज़र सका। उसे वहां से चला जाना चाहिए था, लेकिन वह अपने ही घर को छोड़कर नहीं जा सका। वह अपने दांत खोले गुर्राहट की मुद्रा में तब तक प्रतीक्षा करनेवाला था जब तक कि उसका शत्रु चला नहीं जाता, और वह तब तक रुकने के लिए तैयार था जब तक कि रुकने की ज़रूरत हो!

लेकिन [उस धुंधले ठण्डे झुटपुटे में एक अकेला वाहन आया
अनपेक्षित रूप से काकी तथा बीम के बीच खड़ा हो गया। वह
गहरे स्लेटी रंग का था और उसका पिछला भाग धातु के एक वि
बक्से जैसा था जिसमें कोई खिड़कियां नहीं थीं। दो व्यक्ति
निकले तथा काकी की तरफ़ गये। बीम अपनी जगह से हिले
ध्यान से देखता रहा।

"यह कुत्ता किसका है?" एक मूंछोंवाले आदमी ने बीम की
इशारा करते हुए पूछा।

"यह मेरा है," काकी ने अकड़कर और रंचमात्र भी हिचकि
बग़ैर कहा।

"तुम इसे क़ाबू में क्यों नहीं रखती?" दूसरे, जवान व्यक्ति
जानना चाहा।

"ज़रा कोशिश तो कर देखो! उसके पट्टे में वह रस्सी का टु
देखते हो—इसने उसे काट दिया है। वह हर चीज़ काट देता है,
कुत्तों के पागलपन का रोग है, घिनौना जानवर। मुझे पक्का यक़ीन
कि यह पागल है।"

"तो इसे बांधकर रखो," मूंछोंवाले व्यक्ति ने कहा, "वरना
आयेंगे और इसे उठा ले जायेंगे।"

"मैंने तो इसके लिए पहले से ही अर्ज़ी दे रखी है। और मैं इ
लिए व्यक्तिगत रूप से दफ़्तर भी गयी। लेकिन क्या फ़ायदा, वे तो नौक
शाहों का एक झुण्ड मात्र हैं!" उसने चिल्लाना शुरू कर दिया, "
नौकरशाह तो मेरी जान ले लेंगे।"

"आ जाओ," मूंछोंवाले आदमी ने दाढ़ीमूंछ सफ़ा-चटवाले से कह

दूसरे ने वाहन से छोटे बोर की एक बंदूक़ और मुछंदर ने वाहन
एक किनारे से एक लम्बा डण्डा निकाला, डण्डे के एक सिरे पर एक जा
लगी थी जो तितली पकड़ने की जाली जैसी थी लेकिन उससे भेड़ के बरा
बड़ी तितली पकड़ी जा सकती थी। बंदूक़वाला पहले आया और दूस
जाल को तैयार करता हुआ पीछे खड़ा रहा।

बंदूक़ देखकर बीम ने अपनी दुम हिलायी। उसका मतलब था: "बंदू
हां मैं जानता हूं कि बंदूक़ क्या होती है।"

"वह मुझसे दोस्ती जता रहा है," लड़के ने कहा। "वह पागल क़तई नहीं है। अच्छी बात है, आओ इसे निबटायें।"

मूंछोंवाला आगे आया। बीम को उससे कुत्ते की गंध आयी।

"हां, आप बेशक अच्छे लोग हैं!" उसकी सम्पूर्ण शारीरिक मुद्रा से यही प्रकट होता था।

लेकिन सहसा उस वाहन के अन्दर से एक कुत्ते की निराशा और करुणाभरी चिचियाहट सुनायी पड़ी। बीम तुरन्त सारी बात समझ गया। यह एक चाल थी! यहां तक कि बन्दूक़ भी चाल थी, सब कुछ छल था। उसने बग़ल से निकल भागने की कोशिश की – लेकिन मौक़ा निकल गया था। जाल का गोल घेरा उस पर आ गिरा। उसने कूद मारी तो ख़ुद को जाल में फंसा पाया, उसने ख़ुद ही उस जाल को डण्डे के गोल घेरे में कसकर बन्द कर दिया था।

बीम ने धागों को कुतरने की कोशिश की, दांत पीसे, गुर्राते हुए वहशियों की तरह ऐसी जद्दोजहद की मानो उसे दौरा चढ़ा हुआ हो। लेकिन उसने यह अपनी बची-खुची अंतिम शक्ति से किया और फिर थोड़ी ही देर में शांत हो गया। कुत्ता-पकड़नेवालों ने जाल को वाहन के अन्दर धकेला और उसे हिलाकर बीम को उसकी फ़र्श पर गिरा दिया।

दरवाज़ा फटाक से बन्द हो गया।

मूंछोंवाला आदमी काकी की तरफ़ मुड़ा, अब वह अनपेक्षित रूप से प्रसन्न नज़र आ रही थी।

"तुम किस पर हंस रही हो, मेंढक-मुखी? यदि तुम कुत्ते की देखभाल नहीं कर सकती तो, कम से कम, उसे सताना तो नहीं चाहिए। ख़ुद तो खा-पीकर मेंढक जैसी मुटायी हुई हो और कुत्ते की वह दशा कर रखी है। देखते ही दिल कांपता है।"

(वह अच्छा पर्यवेक्षक था: काकी के बड़े-बड़े, किनारों पर लटके होंठ, चपटी नाक तथा बाहर को निकली हुई आंखों से आपको, सचमुच ही "मेंढ़क-मुख" की याद आ जाती थी)।

"तुम समझते हो कि तुम, तुम गंदे कुक्कुर-लपकू मेरी, एक सोवियत नारी की, बेइज़्ज़ती कर सकते हो!" और फिर वह, हमेशा की तरह, अपनी ज़बान को लगाम देने की ज़रा भी कोशिश किये बग़ैर, चालू हो गयी। उसके मुंह से धारा प्रवाह ऐसे शब्दों का नाला बह निकला जिन्हें

काग़ज़ पर लिखा भी नहीं जा सकता, साफ़ ज़ाहिर था कि वे उ
दिमाग़ में भरे पड़े थे और उनका तत्काल प्रवाह चालू करने के लिए
आले को छूने भर की ज़रूरत थी।

"ऐसी असभ्यता मत दिखला!" उन दो में से कम उम्रवाले
कहा, "अगर तू संभलकर बात नहीं करेगी तो मैं यह जाल तेरे ऊ
डाल दूंगा और तुझे भी इसी वाहन में ठूंस दूंगा। तुम जैसों के लिए स
जगह यही है। साल में हफ़्ते भर इसके अन्दर रहेगी तो तेरा दिमाग़ ठिक
आ जायेगा," उसने सचमुच ही में अपना डण्डा थाम लिया और उस
तरफ़ इस तरह बढ़ा मानो उसने जो कहा वही करने जा रहा हो।

काकी इस बेइज़्ज़ती के ख़िलाफ़ शिकायत लिखने के लिए भाग ख
हुई। उसकी शिकायत नगर-सोवियत के अध्यक्ष को सम्बोधित थी अ
उसमें कुत्ता-पकड़नेवालों की बजाय अध्यक्ष पर अधिक आरोप लगाये :
थे। ख़ुद पूर्णतः ग़ैरज़िम्मेदार होने के बावजूद वह अन्य सभी से दायि
की भावना की मांग करती थी – सभी सामाजिक परजीवी ऐसा
करते हैं।

...उस सुबह सूरज निकला तो बड़ा-बड़ा और पीला-पीला सा
और आते हुए शिशिर की ठण्डी व विषादपूर्ण झलक लिये हुए था। उस
सुबह की धुंध को ऐसी अनिच्छा के साथ झटका कि उसका जीर्ण-शी
नीला आवरण नगर के सारे हिस्सों में छाया ही रहा, नगर की एक ग
में प्रकाश था तो दूसरी में उदास-उदास धुंधलका।

लोहे की दीवारोंवाला वह गहरा-स्लेटी वाहन नगर के बाहर ग
और ऊंची बाड़ से घिरी एक अकेली इमारत के अहाते में मुड़ गया
फाटक पर लगे एक नोटिस में लिखा था: "ख़तरा – भीतर आना म
है।" यह क्वारेंटाइन-स्टेशन था जहां पागल कुत्तों को लाकर जला दि
जाता था। संक्रामक रोगों के सम्भव वाहकों के रूप में आवारा कुत्तों व
भी यहीं लाया जाता था। उन सबको जलाया नहीं जाता था। कुछ व
अनुसंधान कार्यों के लिए भेज दिया जाता था और जिन्हें नष्ट करना ह
होता था उन्हें भी कभी-कभी उनकी खालों के लिए उपयोग में लाया जात
था। संक्रामक रोगों से पीड़ित अन्य जानवरों को अलग-थलग रखा जाता थ
और यदि वे योग्य हुए तो उनका इलाज किया जाता था; मसलन, घोड़
को उनके अंतिम क्षण तक दवा दी जाती थी और उन्हें सिर्फ़ तभी नष

किया जाता था जब वे एक असामान्य रोग, अश्व ग्रंथि, से पीड़ित होते; मगर यह रोग बहुत विरल है, इसका कारण घोड़ों की कम संख्या है।

जिन दो आदमियों ने बीम को पकड़ा था वे उस स्टेशन के सामान्य कर्मी थे और वे किसी भी सूरत से बुरे नहीं थे। वास्तव में, उन्हें हर समय किसी ख़तरनाक रोग से ग्रस्त होने या किसी पागल कुत्ते द्वारा काटे जाने का भय बना रहता था। वे नगर को नियमपूर्वक आवारा कुत्तों से मुक्ति दिलाते थे या उनके मालिकों के कहने पर उन्हें पकड़कर ले जाते थे। वे इस ड्यूटी को असुखकर और विषादकारी मानते थे, यद्यपि उन्हें पकड़े जानेवाले हर कुत्ते के लिए बोनस दिया जाता था जो उनके नियमित वेतन के अलावा होता था।

बीम ने उस वाहन को अहाते में लाये जाने या उन दो व्यक्तियों के गाड़ी से उतरकर चले जाने की आवाज़ नहीं सुनी; वह बेहोश था।

वह दो या तीन घंटे बाद ही होश में आया। उसकी पुरानी परिचित झबरी, जो उसे सुबह कूड़े के ढेर में मिली थी, उसकी बग़ल में बैठी थी। उस समय वह उसकी नाक चाट रही थी...

कुत्ता एक अदभुत प्राणी है! यदि कोई पिल्ला मर रहा हो तो उसकी मां उसकी नाक और कानों को चाटेगी और लगातार चाटती रहेगी तथा उसके पेट में मालिश करती जायेगी। कभी-कभी पिल्ला स्वस्थ हो जाता है। यह स्पष्ट है कि कुत्ता नवजात पिल्लों की देखभाल में मालिश को एक अनिवार्य तत्व मानता है। इस तथ्य पर विस्मित होने के लिए बहुत कुछ है।

झबरी भी बीम को चाटते समय किसी ऐसी अन्तर्जात प्रेरणा से काम कर रही थी, जिसके बारे में हम कुछ नहीं जानते। बीम ने अपना सिर उठाया। वे दो – बीम और झबरी अपने लौह-बंदीघर में अकेले थे। अपनी छाती के दर्द को सहते हुए बीम ने अपनी स्थिति को बदलने की चेष्टा की, लेकिन उसका पहला प्रयत्न सफल नहीं हुआ। परन्तु दूसरे प्रयत्न में वह अपने चारों पंजों को अपने नीचे लाने तथा अपनी बग़ल को उस ठण्डी धातु से अलग हटाने में कामयाब हो गया, जिसमें वह पड़ा हुआ था। झबरी, जो ख़ुद भी शीत के कारण हड्डियों तक अकड़ गयी थी, उसकी बग़ल में गेंद की तरह मुड़कर लेट गयी। इस तरह साथ बैठने में पहले से अधिक ऊष्मा का अनुभव हो रहा था।

लोहे के अपने बंदीघर में दो कुत्ते पड़े-पड़े अपनी नियति की प्रत
कर रहे थे।

बीम की आंखें दरवाज़े पर, धूप की उस पतली किरन पर टि
थीं जो उसके लिए प्रकाश की एक अकेली संदेशवाहक थी। तभी व
से, पर बहुत दूर नहीं, गोली चलने का तेज़ धमाका हुआ। बीम च
गया। वह उस आवाज़ को कितनी अच्छी तरह से जानता था! यह
अपने मालिक की, इवान इवानिच की याद दिलाती थी; उस आव
का अर्थ था आखेट, जंगल, स्वतंत्रता; यदि कोई कुत्ता किसी पक्षी अथ
खरहे का पीछा करता-करता गुम हो जाये या राह भटक जाये तो
उसे पुकारने का संकेत भी था। गोली चलने की उस आवाज़ के बाद ब
को खड़े होने, लड़खड़ाते हुए द्वार तक जाने, अपनी नाक को दरव
को फांक में लगाने और स्वतंत्रता की सांस खींचने की शक्ति कहां
मिली? लेकिन अब वह अपने पैरों पर खड़ा था, ऐसा जान पड़ता
कि उसे जीवन के लिए फिर वापस बुलाया गया है। और वह वाहन
एक कोने से दूसरे तक, घड़ी के पेंडुलम की तरह चलने लगा। इस
बाद वह फिर दरवाज़े के पास गया, फिर फांक में नाक लगायी और
अन्त में उसने, गंधों से, यह पता लगाया कि अहाते में कोई आशंकाजन
काम हो रहा है। वह, एक बार फिर, वाहन के अन्दर चहलक़दमी कर
लगा। बीच-बीच में वह लोहे को खुरचता था और अपने आपको अधि
सक्रिय बना रहा था, मानो किसी चीज़ के लिए तैयारी कर रहा हो
अपने आपको चुस्त बना रहा हो।

यह कहना कठिन है कि ऐसी स्थिति कब तक बनी रही, पर अन
में बीम ने द्वार पर खुरचना शुरू कर दिया।

उसने जितने भी दरवाज़े देखे थे यह उन सबसे भिन्न था। यह लो
की चादरों के खोल में बन्द था और वह खोल कई जगहों पर फट गय
था और खुरदुरा व दांतेदार हो गया था। लेकिन था दरवाज़ा ही औ
उस समय एकमात्र ऐसा दरवाज़ा था जिसके ज़रिए वह सहायता औ
सहानुभूति की पुकार कर सकता था।

रात आयी – ठण्डी, तुषारमण्डित रात।

झबरी करुण स्वर में आर्त्तनाद करने लगी।

लेकिन बीम द्वार खुरचता रहा। उसने लोहे के उभरे हुए कांटों क

काट डाला और फिर खुरचा, पर अब वह लेटकर खुरच रहा था। वह बाहर जाने देने के लिए पुकारता रहा, गिड़गिड़ाता रहा।

सुबह होने तक वाहन शांत हो गया था। झबरी का आर्त्तनाद बन्द हो गया था और बीम भी ख़ामोश था। लेकिन वह उस धातु को खुरचने के लिए अपने पैरों को, अभी भी, रह-रहकर, उठा रहा था। हम नहीं जानते कि वह पूरी तरह से थककर चूर-चूर हो गया था या उसने उम्मीद त्यागकर अपने आपको भाग्य के हवाले कर दिया था। यह, अभी तक, उस लौह-वाहन का रहस्य है।

सोलहवां अध्याय

एक खोज के दौरान मुलाक़ातें। पृथ्वी पर बीम के चिन्ह। चार धमाके

सामान्य दिनों की अपेक्षा, रविवारों को शहर में अधिक लोग नज़र आते हैं। वे जाते हैं, चलते हुए, दौड़ते हुए, ख़रीदते और बेचते हुए। अपने आपको डिब्बाबन्द मछलियों की तरह रेलों, बसों, ट्रालीबसों और ट्रामों में ठूंस-ठूंसकर वे शहर से ऐसे जल्दी-जल्दी भागते हैं गोया दुनिया के सारे भूतप्रेत उन्हीं के पीछे पड़े हों। बीच दोपहरी में शोरग़ुल कुछ कम हो जाता है, लेकिन शाम को फिर शुरू हो जाता है। कुछ तो गांवों, जंगलों से लौट रहे होते हैं और कुछ वहां को वापस जा रहे होते हैं।

इसलिए ख़्रिसान अंद्रेयेविच और अल्योशा का एक रविवार को शहर आना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। वे यह तय करके आये थे कि अल्योशा कालू को खोजने की कोशिश करेगा और उसके पिता अपना माल बाजार में बेचेंगे। ख़्रिसान अंद्रेयेविच पहले भी अपने बेटे को कई बार शहर ले गया था और उसे बग़ैर किसी चिंता के नगर के अन्वेषणार्थ जाने दिया था (वह ट्राम का नम्बर जानता था, "अपना" बस का अड्डा जानता था और जहां तक किसी नटखटपने में जा फंसने का सम्बन्ध था, अल्योशा कभी ऐसा नहीं करता था)। ऐसे दिनों में अल्योशा को

अपनी पसन्द की चीज़ ख़रीदने और इच्छानुसार नगर में कहीं भी देने के लिए – अगर जाना चाहे तो सरकस और सिनेमा में भी – रूबल दिये जाते थे। लेकिन इस बार ख़िसान अंद्रेयेविच ने उसकी में पन्द्रह रूबल रख दिये थे और कहा :

"अगर तुम्हें कहीं कालू मिल जाये और वे तुम्हें उसे ले जाने तो उन्हें दस का एक नोट देना। अगर वे तब भी न दें तो बारह क और अगर वे इस पर भी न मानें तो पूरे पन्द्रह पेश कर देना। यदि इ बाद भी वे इनकार कर दें तो उनका पता लिख लेना और मुझे बुलान मैं ख़ुद आऊंगा और उनसे बातें करूंगा। फिर भी देर तक इधर-उ न घूमना। चार बजे तक बस के अड्डे पर आ जाना। अब दिन छोटे रहे हैं और हमें अंधेरे में सफ़र करना पड़ेगा। और कालू के बारे में पू समय विनीत भाव से पूछना : 'क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूं फिर उन्हें सारी कहानी बता दो कि हम देहात के गड़रिये हैं, हम अ कुत्ते के बिना काम नहीं चला सकते और हमारा कुत्ता ग़ायब हो है। वह भाग गया होगा और शहर में रास्ता भटक गया होगा। दुनि में दयावान लोगों की कमी नहीं है; तुम अपने प्रश्न पूछे जाना अ अभीष्ट की उम्मीद रखना।"

...एक हृष्ट-पुष्ट धीर नज़र आनेवाला बालक नगर की सड़कों घूम रहा था और समय-समय किसी एक ऐसे आदमी को चुन लेता था कि वह अपने विश्वास के योग्य समझता और उसके पास पहुंच जाता।

"क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूं? देखिये ना, हम ल गड़रिये हैं..."

उसे अनगिनत मोटे लोग, ख़ास तौर से औरतें मिलीं पर उसने उ जाने दिया (वे शायद काम नहीं करते इसलिए मोटे हो गये हैं)। लेकि तथ्य यह है कि वह एक हृष्ट-पुष्ट मोटा ताज़ा आदमी ही था जि अल्योशा का प्रश्न – जो उससे नहीं बल्कि किसी अन्य से पूछा गया थ सुनने के बाद रुककर उसे सलाह दी कि वह स्टेशन जाये (दिनभर सारे युवजन वहां से गुज़रेंगे और उनमें से कोई न कोई जानता ही होगा अल्योशा किसी भी लड़के को अपना प्रश्न सुनाये बिना जाने नहीं दे रहा थ

उसी समय तोलिक भी बीम की खोज के लिए अपने नियमित द पर निकला था। वह पिछले तीन दिन से स्कूल के बाद रोज़ उसे खोज

था, लेकिन आज रविवार को उसे स्कूल नहीं जाना था इसलिए वह सवेरे से ही इस काम पर जुट गया था।

इस तरह एक सुसंस्कृत परिवार का यह साफ़-सुथरा लड़का नगर में यत्र-तत्र घूम रहा था; वह सड़क से गुज़रनेवालों के चेहरों में ऐसे ग़ौर से देखता जैसे उनका अध्ययन कर रहा हो। फिर जिसे वह छांट लेता उससे प्रश्न पूछता :

"माफ़ कीजियेगा, कहीं आपने एक काले कानवाला कुत्ता तो नहीं देखा... उसके बाल सफ़ेद हैं और बदन पर पीले धब्बे हैं... नहीं, आपने नहीं देखा, ख़ैर कोई बात नहीं, माफ़ कीजियेगा।"

तोलिक अपने मां-बाप के आदेशों के बावजूद एक बार स्तेपानोव्ना के यहां गया था और उसने लूस्या को एक स्केच बुक व उन रंगीन चेकोस्लोवाकी पेंसिलों का डिब्बा भेंट किया जिन्हें आप दूकानों से कभी नहीं ख़रीद सकते। तोलिक ने उन्हें बताया कि बीम उसके घर आया और एक रात बिताकर ग़ायब हो गया था। उसे स्तेपानोव्ना से यह भी मालूम हुआ कि इवान इवानिच, जिसे उसने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था, ने एक पत्र भेजा है जिसमें कहा है कि वह जल्द घर वापस आ जायेगा। उस शाम तोलिक ने उनके यहां फिर आने तथा यह देखने का निश्चय किया कि बीम के बारे में कोई नयी ख़बर है या नहीं। इसके अलावा, लूस्या ने उससे वायदा किया था कि वह उसे अपनी बनायी हुई एक तस्वीर देगी 'हमारा बीम'।

स्टेशन के नज़दीक की एक सड़क पर मर्दों की सूट पहने लगभग तेरह वर्ष का एक हृष्ट-पुष्ट और धूप से श्यामल बदनवाला एक लड़का तोलिक के पास आया और बोला :

"क्या मैं आपसे एक सवाल पूछ सकता हूं?"

तोलिक को वयस्कों की शैली में किया गया यह सम्बोधन पसन्द आया और उसने तुरन्त उत्तर दिया :

"हां, पूछ सकते हैं," साथ ही उसने स्वयं भी एक प्रश्न पूछ लिया, "आप क्या जानना चाहते थे?"

"हम गड़रिये हैं और हमारा कुत्ता खो गया है – वह शहर को गया था। हो सकता है आपने उसे कहीं देखा हो? वह पीले धब्बोंवाला सफ़ेद

कुत्ता है और एक कान इतना काला है जितना कि काला-काला होना :
और उसका पैर..."

"कुत्ते का नाम क्या है?" तोलिक ने विस्मित होकर कहा।

"कालू," आल्योशा ने उत्तर दिया।

"वह बीम है," तोलिक ने कहा, "बीम ही होना चाहिए!"

तोलिक को यह पता लगाने में देर नहीं लगी कि बीम को कब औ
कहां ख़रीदा गया, वह गांव से कब गया और अल्योशा को पता लगा
में कोई वक़्त नहीं लगा कि तोलिक के घर जो कुत्ता आया था वह का
ही रहा होगा। हर बात मिलती थी। बीम शहर में ही कहीं होगा। दो
लड़कों में से किसी ने भी इस प्रश्न पर विचार नहीं किया कि बीम व
पता लगने पर उसे किसे सौंपा जायेगा। मुख्य बात खोज करना थी

"सबसे पहले हम स्टेशन पर जाकर खड़े होंगे," अल्योशा ने प्रस्ता
किया, "एक आदमी ने मुझे सलाह दी है।"

"हां, वहां ढेर सारे लोग मिलेंगे। किसी ने बीम को अवश्य देख
होगा," तोलिक ने सहमति प्रकट की।

खोज की ऐसी पद्धति की व्यर्थता साफ़ ज़ाहिर थी, लेकिन तोलिक य
अल्योशा के लिए नहीं। वे तो महज़ सखा-भाव से प्रेरित थे और केव
एक कामना से, बीम के प्रति अपने प्यार से, एकसूत्र में बंधे थे। उन
आस्था थी—यह इसका सार था। अपने मन की आंखों में वे, पहले :
ही, बीम को अपने सामने प्रकट होता हुआ देख सकते थे।

"और उसके बाद हम तुम्हारी स्तेपानोव्ना को देखने जायेंगे," अल्योश
ने कहा, "वह उसके स्थान से बहुत समय तक बाहर नहीं रहेगा
वास्तव में, वह वहीं को जा रहा होगा। वह उसका घर है।"

"हां, हम ऐसा करेंगे," तोलिक ने सहमति ज़ाहिर की।

वह अल्योशा को उसके बोलने के गम्भीर और निश्छल तौर तरीक़
सहित सचमुच पसन्द करने लगा था। ऐसी मुलाक़ातों से लोग कभी-कभ
जीवनभर के दोस्त बन जाते हैं और वह लड़का भाग्यशाली है जो सड़
में किसी दुष्ट बुद्धि या चोर-उचक्के के हाथ में न पड़कर, संयोग से, ऐ
अच्छा दोस्त पा जाता है।

यह दोनों लड़के लगभग सौ आदमियों से पूछ चुके थे और अभी :
ऐसे लोगों को रोककर पूछ रहे थे जो प्रश्न पूछने योग्य थे।

उस सुबह स्टेशन की सामान्य रेलपेल और आपाधापी में सम्मिलित लोगों में भूरा ओवरकोट पहने, सफ़ेद बालोंवारा एक व्यक्ति भी था जो छड़ी के सहारे से एक एक्सप्रेस ट्रेन के डिब्बे से बाहर निकला था। वह रुका और चारों तरफ़ ऐसे देखने लगा जैसे कि बहुत समय तक बाहर रहने-वाला व्यक्ति यह जानने के लिए देखता है कि कहीं कुछ बदला तो नहीं है, कि हर चीज़ अभी भी अपनी जगह पर ही है। उसी क्षण दो अजनबी लड़के उसके पास आये। उनमें से एक ने, जो स्पष्टतः गांववासी था, एक प्रश्न पूछा:

"क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूं?"

उस श्वेतकेशी व्यक्ति ने अपना सिर एक तरफ़ को मोड़ा और अपनी मुस्कान छिपाकर उत्तर दिया:

"बेशक, आप पूछ सकते हैं।"

दूसरे लड़के ने, जो स्पष्टतः नगरवासी था, प्रश्न को आगे बढ़ाया:

"कृपया बताइये कि आपने कोई ऐसा कुत्ता देखा है जिसका एक कान काला है, रंग सफ़ेद और पीले..."

श्वेतकेशी व्यक्ति ने लड़के के कंधे को दबाया।

"बीम! ?" उसने भावातिरेक का संवरण न करते हुए विस्मय से पूछा।

"हां, बीम। आपने उसे देखा? कहां?"

कुछ ही देर बाद वे तीनों स्टेशन के सामने, बग़ीचे की बेंच पर बैठे थे। यद्यपि उन लड़कों ने इस वृद्ध सज्जन को पहले कभी नहीं देखा था फिर भी वे एक दूसरे पर अव्यक्त रूप से विश्वास करने लगे थे। जब तक उसने स्वयं नहीं बताया तब तक उन्होंने इस बात का अनुमान भी नहीं लगाया था कि यह व्यक्ति इवान इवानिच है। बीम का मालिक है।

पहली नज़र में उसके अपने दोस्त भी उसे न पहचान पाते। उसका शरीर पहले से अधिक झुक गया था, उसका चेहरा पतला हो गया था और उसकी झुर्रियां गहरी हो गयी थीं (हृदय के बिल्कुल क़रीब से किया जानेवाला आपरेशन छुट्टी मनाना नहीं होता)। लेकिन उसकी आंखें अभी भी वैसी ही थीं, वही सचेत और अन्तर्वेधी दृष्टि। उसकी वे गहरी भूरी आंखें इस बात का एकमात्र संकेत थीं कि कभी उसके बालों का रंग काला रहा होगा, अब वे हिम-सदृश हो गये थे।

तोलिक ने वे सारी बातें बतायीं जो वह बीम के बारे में जानता :
यह तथ्य भी कि वह लंगड़ा और बीमार था। अल्योशा ने कालू के देह
जीवन का संक्षिप्त व सटीक वर्णन पेश किया। उन लड़कों को इवान इ
निच बहुत भाया। वह उनसे ऐसे बातें कर रहा था मानो वे वयस्क
और कभी-कभी वह अपना एक हाथ उनके कंधे पर रख देता था। उ
दूसरे की बात में बाध डाले बग़ैर, सुनने का उसका ढंग भी पसन्द अ
और यह तथ्य भी कि उसके बाल इतने सफ़ेद हैं और कि उसका न
इतना अच्छा है और सबसे बड़ी बात यह कि उसे उन्हें देखके ही :
पर लगाव हो गया – यह बात दिन के उजाले की तरह सुस्पष्ट थी। अन्य
वह अन्त में यह न कहता:

"तुम अच्छे लड़के हो, हम दोस्त बनने जा रहे हैं, सच्चे दोस्
परन्तु इस समय हम घर को, मेरे रहने की जगह को चलें। बातों
ऐसा जान पड़ता है कि बीम वहां पहले ही पहुंच चुका होगा।"

रास्ते में उसने युक्तिपूर्ण प्रश्न पूछकर यह पता लगा लिया कि
लड़के कौन हैं, किस प्रकार के परिवारों से आये हैं, उनके काम-ध
क्या हैं तथा वे क्या पसन्द करते और क्या ना-पसन्द।

"तो तुम भेड़ों की देख-रेख करते हो, क्यों अल्योशा? यह काम अच
है। और तुम स्कूल भी जाते हो? इससे तुम बहुत व्यस्त रहते होगे
है कि नहीं?"

"यह जानना ज़रूरी है कि भेड़ों को कैसे चराया जाता है," अल्यो
ने अपने पिता की तरह उत्तर दिया। "यह एक मुश्किल काम है। आप
सारा रेवड़ इस तरह एक साथ आगे बढ़ाना होता है कि वे अपने पैरों त
घास को रौंद न दें; यह आसान काम नहीं है – आपके पैर घिस सक
हैं, ऐसा हो ही सकता है। आपको हमेशा पौ फटने के साथ उठना हो
है और कोई न कोई चिंता की बात हमेशा होती है। एक कुत्ते के हो
से स्थिति बेहतर हो जाती है, वह ऐसे आदमी की तुलना में आपकी अधि
सहायता कर सकता है जो इस काम को नहीं जानता। नहीं, हम ए
कुत्ते के बिना अपना काम चला ही नहीं सकते। हम गड़रिये हैं, बस य
इस बात का सार है।"

"और तोलिक, तुम क्या करते हो?" इवान इवानिच ने पूछ

"मैं क्या करता हूं?" तोलिक ने विस्मित होकर कहा। "मैं स्क
जाता हूं।"

"तुम्हारे घर में कोई जानवर हैं?" अल्योशा ने तोलिक से पूछा।

"नहीं, हमारे पास कोई जानवर नहीं हैं," उसने उत्तर दिया। एक बार, मेरे पास कुछ गिनीपिग थे, लेकिन ममी मुझे उन्हें पालने ही नहीं देती थी। उसने कहा वे बदबू फैलाते हैं।"

"तुम हमारे यहां आओ। मैं तुम्हें दिखाऊंगा अपनी मिल्का गाय – वह एक अद्भुत गाय है। तुम उसके नीचे से रेंगते हुए जा सकते हो, वह अपना पैर भी नहीं हिलायेगी। वह तो तुम्हारी टोपी तक चाट लेती है... और हाथों को भी। और हमारा मुर्गा, वह असली मुर्गा है, सिरधरा सरदार है वह। सुबह होने पर सबसे पहले वही बांग देता है और बाक़ी सबको उसी की सरदारी पर चलना पड़ता है। आपको इस तरह के मुर्गे आसानी से नहीं मिलते ... लेकिन अब हमारे पास कुत्ता नहीं है। हमारे पास पहले एक कुत्ता होता था पर वह मर गया और कालू भाग गया," अल्योशा आह भरी। "जब वह गया तो मुझे दुख हुआ, वह इतना स्नेहशील था..."

इवान इवानिच ने स्तेपानोव्ना के दरवाज़े की घंटी बजायी। उसने तथा लूस्या ने साथ-साथ द्वार खोले।

"ओह इवान इवानिच!" वह फूट पड़ी। "अब मैं क्या कहूं बीम यहां नहीं है, तीन दिन पहले वह तोलिक के यहां था, लेकिन वह घर वापस नहीं आया।"

"अच्छा तो वह नहीं पहुंचा," इवान इवानिच ने विचार सा करते हुए दोहराया, लेकिन लड़कों को ख़ुश करने के लिए उसने कहा, "हम उसे खोज लेंगे, मुझे पक्का यक़ीन है, अवश्य खोज लेंगे।"

स्तेपानोव्ना ने उसे उसके अपने फ़्लैट की चाबियां दीं और वे पांचों उसके साथ फ़्लैट में प्रविष्ट हुए। कमरा ठीक वैसा ही था जैसा कि वह छोडकर गया था। पुस्तकों की वही अलमारी जो एक पूरी दीवार घेरे हुए थी और जिसे देखकर अल्योशा विस्मित हो गया; वही डेस्क था, अब कमरा पहले से अधिक साफ़ था (स्तेपानोव्ना ने इस बात का ध्यान रखा था); लेकिन बीम के बग़ैर वह बिल्कुल ख़ाली-ख़ाली सा लग रहा था। उसके कोने पर कोरे कागज़ का एक पर्चा था – इवान इवानिच का पत्र; स्तेपानोव्ना ने उसे भी संभालकर रखा था। इवान इवानिच ने अपने मेहमानों की तरफ़ से निगाह हटायी और खिड़की के बाहर ताकने लगा,

उसके कंधे ढल गये थे। स्तेपानोव्ना को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसने ए
कराह सी सुनी।

"इवान इवानिच," उसने उसे सलाह दी, "तुम्हें अपनी इस यात
के बाद बिस्तर पर आराम करना चाहिए।"

वह बिस्तर में लेटा और लेटा-लेटा छत को ताकने लगा था तब कम
में ख़ामोशी छायी थी। स्तेपानोव्ना ने बातचीत के ज़रिए उसके दर्द व
बंटाने का प्रयत्न किया:

"अच्छा, तो आपरेशन ठीक ही हो गया, क्यों? अगर उन्होंने तुम
अकेले आने दिया, तो तुम बिल्कुल ठीक हो जाओगे।"

"सब कुछ ठीक है, स्तेपानोव्ना, बिल्कुल ठीक है। तुम्हें इस सबवे
लिए धन्यवाद। तुमने एक अजनबी के लिए जो कुछ किया उतना लोग
अपने सगे-सम्बन्धियों के लिए भी नहीं करते।"

"यह भी कोई कहने की बात है! क्यों व्यर्थ ऐसा कहते हो। अपने
एक पड़ोसी की मदद करना कोई मुसीबत थोड़ा ही है, दुनिया में जब
तक सहृदयता है।" (प्रशंसा करने पर स्तेपानोव्ना को बड़ी झेंप लगने
लगती थी।)

कुछ मिनटों के उपरांत इवान इवानिच उठ गया, उसने लड़कों की
तरफ़ देखा और कहा:

"अच्छा लड़को, हमारी योजना यों है। तुम तो यहां, हमारे ज़िले
में खोज करो और लोगों से पूछने में हिचको मत। बीम को यहीं कहीं
होना चाहिए। और मैं ..." उसने एक क्षण विचार किया। "मैं एक
जगह जाऊंगा... पता लगाने... हो सकता है कि वह पहरुये कुत्तों के
साथ उलझ गया हो... कहीं किसी जगह।"

जब वे बाहर जा रहे थे तो लूस्या ने तोलिक को अपना चित्र 'हमारा
बीम' दिया। तोलिक ने उसे अल्योशा को दिखाया और अल्योशा आश्चर्य-
चकित रह गया:

"क्या इसे तुमने ख़ुद बनाया?"

"हां।"

"क्या तुम कलाकार हो?"

"नहीं," लूस्या हंसी। "मैं अभी-अभी पांचवें दर्जे में गयी हूं।"

तस्वीर बीम से बहुत मिलती थी: एक काला कान, एक काली टांग,

सफ़ेद बदन पर चंद पीले धब्बे; शायद एक कान दूसरे से ज़रा बड़ा था, लेकिन इससे कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ता था।

अब अल्योशा और तोलिक एक बार फिर अपनी खोज में जुट गये। पहले की ही तरह उन्होंने उन लोगों को छांटा जो उनकी समझ से प्रश्न पूछे जाने योग्य थे (लेकिन अब भली-भांति सलाह-मश्विरा लेने के बाद)। वे हमेशा एक ही सवाल से शुरू करते और बताते कि बीम कैसा दिखायी देता था।

लेकिन इवान इवानिच ने उस समय खाट में पड़े-पड़े ही तय कर लिया था कि उसे फ़ौरन क्वारेंटाइन-स्टेशन जाना चाहिए। कुत्ते पकड़नेवालों को आगाह करने तथा यह बताने कि किस प्रकार के कुत्ते की खोज में रहना है और उन्हें कुछ पैसे देने के लिए भी ताकि वे उसे देखने पर उसकी सूचना उसे दे दें। परन्तु, हो सकता है कि बीम वहां पहले से ही मौजूद हो। वह बुधवार की रात को – तीन दिन पहले तोलिक के घर से चला था। उसे जल्दी करनी चाहिए!

उसने एक टैक्सी किराये पर ली और कुछ ही देर में क्वारेंटाइन-स्टेशन के फाटक पर पहुंच गया। वहां, चौकीदार के सिवा और कोई नहीं था (रविवार के दिन छुट्टी थी)।

लेकिन इवान इवानिच के प्रश्नों के उत्तर में चौकीदार ने एक लम्बा और विस्तृत उत्तर दिया:

"बृहस्पतिवार और शुक्रवार को कोई कुत्ता नहीं पकड़ा गया, लेकिन जिन्हें कल लाया गया वे यहां हैं; वे अभी भी वाहन में ही हैं। मैं नहीं जानता कि कितने हैं, बेकार का बखेड़ा, लेकिन कुछ हैं ज़रूर। डाक्टर कल आयेगा और बतायेगा कि कौन विज्ञान के लिए भेजा जायेगा, किसे हमेशा को सुला दिया जायेगा और किसे खाल के लिए इस्तेमाल किया जायेगा। उनमें से कुछ खाल समेत दफ़न होते हैं, समझे आप। यही बताने के लिए डाक्टर यहां आते हैं। जानते हैं, कभी-कभी उन्हें जलाना भी पड़ता है।"

"क्या यहां शिकारी कुत्ते भी लाये जाते हैं?" इवान इवानिच ने पूछा।

"कभी-कभी। जब ऐसे कुत्ते आते हैं तो उनका तुरन्त सफ़ाया नहीं किया जाता, न वैज्ञानिकों के पास जो मर्ज़ी सो करने के लिए ही भेजा

जाता है। पहले हम शिकारियों के संगटन को ख़बर करते हैं—यह प
लगाने के लिए कि क्या किया जाये। बेशक, हम यही करते हैं! य
तो डाक्टरों का काम है। उस समय भी उसके अन्दर एक शिकारी कु
है; इवान ने बताया था कि एक सफ़ेद कुत्ता है और सचमुच ही बु
दशा में है, उसने कहा, उसकी ठीक देखभाल नहीं होती; उसे उस
मालकिन ने ख़ुद ही उनके हवाले कर दिया था। हां उसने यही किया
हो सकता है उसका पति मर गया हो।"

इवान इवानिच ने सोचा, वह बीम हो सकता है।

"कृपया मुझे वाहन में जाकर देखने दीजिये," उसने कहा। "
अपने कुत्ते को खोज रहा हूं, वह एक शानदार कुत्ता है। हो सकता
जो कुत्ता वाहन में पड़ा है वही हो ज़रा। मुझे देखने दें।"

लेकिन चौकीदार कठोर बन गया था।

"वे वहां शानदार कुत्ते नहीं रखते। यह सिर्फ़ ख़तरनाक कुत्तों के लि
है ताकि वे रोग न फैलायें," उसने स्पष्ट रूप से और दृढ़ धारणा
ऐलान किया। और यह बात कहते-कहते उसका चेहरा बदल गया। उस
अपनी ठोड़ी ऊंची कर ली और ऐसी मुद्रा दिखलायी मानो वह बखेड़
खड़ा करनेवाले इस आदमी को फाटक से परे हटा रहा हो। इवान इवानि
वहां खड़ा था, उसे लग रहा था कि वह बहुत कमज़ोर है और कुछ कर
में असमर्थ है। चौकीदार अपने अधिकार-प्रदर्शन का लोभ संवरण न क
सका, वह कठोर स्वर में बोला, "तुम्हें नोटिस नहीं दिखायी देता, भीत
आना मना है। या तुम समझते नहीं कि इसमें क्या कहा गया है?" उसने
स्वर्णिम रंग के अक्षरों में लिखे तथा चौखट में मढ़े नोटिस की तरफ़ इशारा
किया: "ख़तरा—भीतर आना मना है।"

अब इवान इवानिच अहाते के अन्दर आने की सारी उम्मीद छोड़
चुके थे, लेकिन, इसके बावजूद उसने एतराज़ किया:

"आप इस तरह का बरताव कैसे करते हैं! और उस पर आप
अपने को इनसान कहते हैं... मेरा अभी हाल में आपरेशन हुआ है।
मैं युद्ध के समय से अब तक बम के एक टुकड़े को यहां, ठीक यहां लिये
फिर रहा था। आपरेशन के बाद जब मैं लौटा तो मेरा कुत्ता ग़ायब हो
गया था।"

"क्या कहा? बम का एक टुकड़ा बीस साल से भी ज्यादा अर्से से

तुम्हारे बदन के अन्दर था?" वह चौकीदार सहसा फिर अपने आपे में आ गया, फिर से वही आदमी बन गया जैसा वह पहली बार मिलने पर था। "अच्छा, अच्छा। आसानी से यक़ीन नहीं आता! यही बात होगी, तभी तभी..." अपना वाक्य पूरा किये बग़ैर उसने सिटकनी नीचे सरका दी, "अन्दर आओ। लेकिन किसी से कहना मत।"

इवान इवानिच ने टैक्सी को इस उम्मीद से वापस भेज दिया था कि वह बीम को डोरी से बांधकर पैदल चलता हुआ घर वापस जायेगा। वह जल्दी-जल्दी उस वाहन की तरफ़ बढ़ा। वास्तव में अब उसे बीम के मिलने की पूरी उम्मीद हो गयी थी। अगर बीम वहां होगा तो वह उससे मिलकर उसे सांत्वना दे सकेगा। अगर वह नहीं होगा, तो वह अभी जीवित होगा और खोज लिया जायेगा।

"बीम, प्यारे बीमू बेटे ... अरे ओ मूर्ख," वह अहाते को पार करता फुसफुसाया।

चौकीदार ने वाहन का द्वार खोल दिया।

इवान इवानिच सहमकर पीछे हटा और पत्थर बनकर जहां का तहां खड़ा रह गया...

बीम दरवाज़े पर नाक लगाये पड़ा था। टूटी-फूटी कांटेदार धातु से उसके होंठ और मसूड़े कट गये थे। उसके अगले पैरों के नाख़ून ख़ून में सने थे।

वह इस अंतिम दरवाज़े पर बहुत लम्बे समय तक, अपनी आख़िरी सांस तक खुरचता रहा था। और उसकी मांग कितनी छोटी थी! सिर्फ़ स्वतंत्रता और विश्वास – इससे अधिक कुछ नहीं।

एक कोने में दुबकी झबरी कूं-कूं करने लगी।

इवान इवानिच ने अपना हाथ बीम के सिर पर रखा।

हिम के गाले गिरने लगे थे। उनमें से दो बीम की नाक पर गिरे पर पिघले नहीं।

... इसी बीच अल्योशा और तोलिक, जो पहले से भी अधिक गहरे दोस्त बन गये थे, नगर की गश्त लगा रहे थे। जब लोगों से प्रश्न पूछते-पूछते कुछ समय बीत गया तो उन्होंने देखा कि वे जानवरों के उस अस्पताल में पहुंच गये हैं जहां तोलिक बीम को ले गया था। वहां उन्हें पता लगा कि अस्पताल के अहाते में कुत्ते नहीं रखे जाते और अगर

कोई कुत्ता खो गया है तो उसके बारे में पूछताछ का पहला स्
क्वारेंटाइन-स्टेशन है।

हमारे यह दोनों लड़के उस क़िस्म के नहीं थे जो चिट्ठियां भेजने
ग्रौर उसमें पता लिखते हैं: "गांव में दादा जी को मिले।" इसलिए ।
घंटे से भी कम समय में वे बस के ग्रड्डे से उतरकर, बंजर धरती
पार करते हुए स्टेशन की तरफ़ बढ़े चले जा रहे थे। वे स्टेशन के क़र
पहुंच ही रहे थे कि इवान इवानिच स्टेशन से बाहर निकला। लड़कों
मज़र पड़ते ही वह तेज़ी से उनकी तरफ़ बढ़ा।

"क्या तुम यहां ग्रा रहे थे?"

"उन्होंने हमें यहीं भेजा है," ग्रल्योशा ने कहा।

"बीम तो यहां नहीं, है क्या?" तोलिक ने पूछा।

"क्या वह यहां था?" ग्रल्योशा ने प्रश्न दोहराया।

"नहीं, लड़को... बीम यहां नहीं है... ग्रौर कभी था भी नहीं।
इवान इवानिच ने ग्रपनी वेदना को छिपाने की कोशिश की ग्रौर उस
जैसी दशावाले व्यक्ति के लिए यह बड़ा ही कठिन काम था।

तोलिक ने ग्रपनी गहरी, काली भौंहों को ऊपर उठाया ग्रौर मा
को सिकोड़ता हुग्रा बोला:

"इवान इवानिच... कृपया... हमें सच-सच बताइये!"

"लड़को, बीम यहां नहीं है," इवान इवानिच ने पहले से ग्रधि
दृढ़ता से कहा। "हमें उसे ढूढ़ना चाहिए। हमें उसकी खोज जारी रख
चाहिए।"

हिम वर्षा की एक ग्रौर झड़ी।

निश्शब्द हिम।

श्वेत हिम।

शीतल हिम, पृथ्वी को ग्राच्छादित करता हुग्रा हिम, जीवन के ग्रग
वार्षिक पुनर्नवीकरण तक के लिए, नवीकरण जो वसन्त के साथ ग्रायेगा

हिम-सदृश श्वेत बालोंवाला एक ग्रादमी श्वेत बंजर धरती को पा
करता जा रहा था। उसके साथ दो लड़के थे जो हाथ में हाथ डाले च
रहे थे, ग्रपने दोस्त को खोजने। उनके पास ग्राशा का संबल था।

एक झूठ भी सत्य के समान पावन हो सकती है। एक मरता हुग्र
ग्रादमी ग्रपने प्रियजनों से मुस्कराता हुग्रा कह सकता: "मैं सहसा, बिल्कु

स्वस्थ महसूस करने लगा हूं।" एक मां असाध्य रोग से ग्रस्त अपने बच्चे को हंसी-ख़ुशी का गीत सुना सकती है और गाते-गाते मुस्करा भी सकती है।

लेकिन जीवन चलता जाता है। जब तक आशा है तब तक जीवन है, क्योंकि हताशा जीवन को नष्ट कर देगी।

* * *

दोनों लड़कों ने सारा दिन बीम को खोजते-खोजते बिताया। जब तोलिक ने अल्योशा को विदा देने के वास्ते उसके साथ "हमारे" बस के अड्डे को जाने के लिए ट्राम पकड़ी तो शाम ढलने लगी थी।

"यह मेरे पिता जी हैं," अल्योशा ने तोलिक का परिचय कराया।

ख्रिसान अंद्रेयेविच ने तोलिक की ओर हाथ बढ़ाया।

"अच्छा, तो तुमने अपने लिए एक दोस्त खोज निकाला है। क्या तुम अल्योशा से मिलने आ रहे हो? तुम्हारे आने से हमें प्रसन्नता होगी।"

तोलिक के बदले अल्योशा ने उत्तर दिया।

"वह बाद में आयेगा। और मैं इवान इवानिच से मिलने जानेवाला हूं। हम अपनी खोज जारी रखेंगे।"

"तब तो अच्छा है। तुम मुझे यह सारी बातें घर पर बता सकते हो, क्योंकि इस वक़्त हमारी बस यहां हाज़िर है।"

उनके चढ़ने से पहले अल्योशा ने अपने पिता को पन्द्रह रूबल दिये।

"सब यही हैं, मुझे इनकी ज़रूरत नहीं पड़ी।"

"हां, मैं समझ रहा हूं," उसके पिता ने उदास होकर कहा।

बस चली और तोलिक विदाई की मुद्रा में हाथ हिलाता रहा। उसे नये दोस्त से विलग होने का दुख था पर साथ ही, मन ही मन, वह ख़ुश भी था। तोलिक उस वक़्त का इंतज़ार करेगा जब अल्योशा से उसकी फिर भेंट होगी। और वह बीम था जो पृथ्वी पर यह चिन्ह छोड़ गया, एक सुस्पष्ट चिन्ह।

घर पर तोलिक ने पूर्ण विश्वास के साथ अपने पिता से कहा:

"बीम शहर ही में कहीं होगा। हम उसे खोज लेंगे। मुझे पक्का यक़ीन है कि हम ज़रूर खोज लेंगे।"

"और यह 'हम' कौन हैं?"

"अल्योशा, इवान इवानिच और मैं... हम उसका पता लगा र
आप देख लीजियेगा।"

"अल्योशा कौन है? और इवान इवानिच कौन है?" उसकी
ने पूछा।

"अल्योशा गांव का एक लड़का है, उसके पिता चाचा ख्रिसान हैं
इवान इवानिच, मैं नहीं जानता कि वे कौन हैं पर वे दयालु हैं और
के मालिक हैं।"

"अगर बीम के मालिक आ गये हैं तो तुम्हें बीम की क्या ज़रू
है?" उसके पिता ने जानना चाहा।

तोलिक इसका उत्तर नहीं दे सका। उसके लिए यह प्रश्न बहुत
अनपेक्षित और जटिल था।

"मैं नहीं जानता," उसने शांतिपूर्वक कहा।

देर रात में, जब तोलिक सो गया था और स्वप्न देख रहा था
अल्योशा की गाय उसकी टोपी चाट रही है, उसके माता-पिता दूर
कमरे में बैठे बहस कर रहे थे।

"तुम्हारा लड़का आवारा छोकरों की तरह बड़ा हो रहा है," पि
ने सख़्ती से कहा।

"तो तुम कुछ क्यों नहीं करते?" मां ने तुरन्त जवाब दिया।

"मुझे अपना काम देखना होता है।"

"मुझे तो काम से भी ज़्यादा ख़राब किसी चीज़ से निबटना हो
है। तुम तो घर से बाहर चले जाते हो, लेकिन मैं... क्या कहूं, सि
सफ़ाई करने में ही मेरा कचूमर निकल जाता है।"

"काम कोई भी क्यों न हो, एक व्यक्ति के कुछ दायित्व होते
जिन्हें उसे निभाना ही पड़ता है। मैं जिसके बारे में कह रहा हूं वह य
है। तोलिक का पालन-पोषण कौन करने जा रहा है? तुम या मैं?
हम दोनों? अगर हम दोनों यह काम करने जा रहे हैं तो हमें एक
तरह की बात कहना ज़रूरी है।"

"मुमकिन है कि यह तुम या मैं नहीं होंगे।"

"तो कौन होगा?" पिता ने ज़ोर देकर पूछा।

"हमारी एकमात्र आशा स्कूल है।" मां ने पहले की तुलना में अधि
शांति से उत्तर दिया।

"ग्रौर सड़क?" पिता ने ज़ोर दिया।

"सड़क भी क्यों न हो? सारे बच्चे बाहर सड़क में जाते हैं।"

"सामान्य ईमानदारी का क्या होगा? उसे इसकी शिक्षा कौन देगा?" पिता की ग्रावाज़ ऊंची हो गयी।

"ग्रच्छी बात है, इसे पढ़िये। ठहरिये, इसे मैं ख़ुद पढ़ देती हूं। सुनिये," मां ने ग्रख़बार से योंही बेतरतीबी से उठाये हुए वाक्यांश पढ़े। "'संगठन, ग्रनथक चौकसी, कठोर नियंत्रण ग्रौर ऊंचे मानकों पर बल देना – यह हैं वे चीज़ें जो ईमानदारी का संवर्धन करती हैं...' 'ईमानदार व्यक्ति को एक नमूना मानना चाहिए ...' सुना इसे? एक नमूना! ग्रोह, दूर हो जाइये मेरे सामने से!" ग्रौर वह मुंह नीचे को करके कोच में जा लेटी।

पिता ने तर्क को ग्रौर ग्रधिक गहराई में न ले जाता बेहतर समझा। वह ग्रपनी पत्नी को ग्रच्छा मानता था ग्रौर वह उससे प्यार करती थी, वैसे झगड़े की समाप्ति की पहल हमेशा वही करता था। पर उनके बीच दीर्घकाल तक चलनेवाले मतभेद कभी नहीं हुए। ग्रतः, इस बार भी उसी ने समझौते के स्वर में कहा:

"ख़ैर, हमें इस सब की छंटाई-सफ़ाई करनी होगी। मैं बीम को खोजने की कोशिश करूंगा। हां, मैं कोशिश करूंगा। उसका मालिक ग्रा गया है, इसलिए तोलिक कुत्ते को यहां लायेगा नहीं, ग्रौर ग्रगर हम उसे ढूंढ़ लेंगे तो तोलिक की दृष्टि में हम ऊंचे हो जायेंगे।"

नहीं, वह जो कहना चाहता था वह ठीक यही बात नहीं थी। उस रात सेम्योन पेत्रोविच वह शांत तथा ग्रात्मविश्वासी व्यक्ति नहीं रहा जो वह हुग्रा करता था। उसका लड़का उसकी सहभागिता के बग़ैर पलने-बढ़ने लगा था ग्रौर वह ग्रपने जीवन की ग्रापाधापी में इस बात को देख नहीं पाया था। सेम्योन पेत्रोविच सोचने के लिए विवश हो गया। उसे एक ऐसे लड़के की याद ग्रायी जिसे उसने बीयर की एक दुकान के क़रीब एक दीवार के पास देखा था। वह छोकरा महज़ एक लड़का भर था ग्रौर दीवार के पास झूमता ग्रौर डगमगाता खड़ा था। वह बीच-बीच में चिल्लाता ग्रौर उन्माद-ग्रस्त सा सुबकने लगता... उस लड़के की याद से सेम्योन पेत्रोविच का कलेजा कांप गया। उसने ग्रपनी कल्पना में, लगभग पांच साल की ग्रवधि के ग्रन्दर तोलिक को इस भूमिका में देखा ग्रौर उसे

प्रतीत हुआ कि उसका गला रुंध रहा है। वह अपनी पत्नी के प
गया और ऐसे शांत सुकोमल स्वर में बोला कि उसकी पत्नी आश्च
में पड़ गयी :

"हम तोलिक के लिए एक शालीन कुत्ता भी ख़रीद सकते हैं, क्यों
या फिर बीम के मालिक से उसे हासिल करने की कोशिश कर सकते हैं
हम उसे अच्छे दाम देंगे। तुम इसके बारे में क्या सोचती हो?"

"ओह, मैं नहीं जानती, सेम्योन, बिल्कुल नहीं जानती। तुम कह
हो तो चलो, उसके लिए एक कुत्ता ख़रीद लेते हैं।"

हां, सेम्योन पेत्रोविच एक छोटी सी बात भूल गये कि दोस्ती औ
विश्वास ख़रीदे नहीं जा सकते और वे बिकाऊ नहीं होते। न वह यह
जानता था कि अब अगर वह बीम को खोजना भी चाहता तब भी उसे
नहीं खोजा जा सकता था। लेकिन हमारे बीम ने, हमारे अच्छे, सहृदय
बीम ने तोलिक के पिता के हृदय में भी अपना एक शेषचिन्ह छोड़ा था
या शायद, यह उसके अन्तःकरण की आवाज़ थी, ऐसी आवाज़ थी जिससे
कोई कभी नहीं बच सकता। हां अगर उसका अन्तःकरण ही ऐसी सीधी
लचीली लकड़ी सरीखा हो जो ज़रूरत पड़ने पर मोड़कर दोहरी बनायी
जा सके तो बात दूसरी है। लेकिन बीम रात के समय भी सेम्योन पेत्रोविच
की चिंता का कारण बना रहा।

यह वही रात थी जबकि बीम उस लौह-वाहन के अन्दर पड़ा था।
अगले दिन तोलिक का पिता बीम की खोज का आयोजन करनेवाला था।
क्या वह उसे पा लेगा? क्या वह उस लौह-वाहन के रहस्य का पता लगा
लेगा? क्या वह प्रकाश व स्वतंत्रता के लिए, मैत्री और सदभाव के लिए
बीम की कामना के बल तथा उसकी अदम्यता को समझ सकेगा?

एक अत्यंत सामान्य कारण से ऐसा कभी हुआ ही नहीं। अगली सुबह,
सोमवार को, इवान इवानिच ने अपनी बन्दूक़ को खोल सहित उठाया
और क्वारेंटाइन-स्टेशन को चल पड़ा। वहां उसकी भेंट कुत्ते-पकड़नेवाले
उन दो व्यक्तियों से हुई और यह जानकर उसका कलेजा टुकड़े-टुकड़े हो
गया कि उन्होंने बीम को उसके अपने घर के बाहर ही से पकड़ा था।
दोनों आदमी काकी पर बहुत क्रोधित थे और उसे गालियों पर गालियां
दे रहे थे। इवान इवानिच यह सोचकर दुख से विह्वल हो गया कि बीम
ग़द्दारी और बदनामी का शिकार हो गया था। उसने उन दो मज़दूरों को

दोष नहीं दिया क्योंकि वे केवल अपना कर्तव्य कर रहे थे। वैसे उनमें से कम उम्रवाला अपने आपको दोषी समझ रहा था, कम से कम काकी पर विश्वास करने का।

"यदि मैं जानता होता..." उसने अपना वाक्य अधूरा छोड़कर अपनी मुट्ठी उस वाहन के बोनट पर मारी। "ताज्जुब है, हमने उस जैसी घास की सर्पिणी पर यक़ीन कर लिया!"

इवान इवानिच ने उनसे निवेदन किया कि वे बीम को अपनी गाड़ी से जंगल में पहुंचा दें, इस काम के लिए दोनों को पांच रूबल देने का प्रस्ताव किया। वे ख़ुशी-ख़ुशी राज़ी हो गये। वे तीनों एक ही वाहन में बैठकर चल पड़े।

जंगल के मध्य जिस खुली जगह में इवान इवानिच, शिकार करने से पहले बैठता तथा जंगल की आवाज़ें सुनता था, जहां बीम ने अपनी विपन्नता में धरती पर बिखरी पत्तियों पर अपना चेहरा रगड़ा था वहीं पेड़ के उसी ठूंठ से चंद क़दमों की दूरी पर उन्होंने बीम को दफ़नाया और उसकी क़ब्र को बर्फ़ मिश्रित पीली पत्तियों की एक पतली परत से ढक दिया।

जंगल की मर्मर ध्वनि लगातार जारी, पर दबी-दबी सी, थी।

इवान इवानिच ने बन्दूक़ को उसके खोल से बाहर निकाला, उसमें कारतूस भरे, और, किसी बात पर विचार सा करते हुए क्षणभर रुकने के बाद, हवा में गोली दाग़ी।

जंगल ने शारदीय अनुगूंज से उसका उत्तर दिया और यह अनुगूंज वन की मर्मर ध्वनि के ऊपर उठती हुई एक संक्षिप्त व अचानक बन्द होनेवाली कराह में समाप्त हो गयी।

कुत्ते के मालिक ने फिर बंदूक़ दाग़ी और एक बार फिर उस कराह का इन्तज़ार किया।

उसके दोनों साथी उसे घूरते खड़े थे। लेकिन उसने अपने स्थान से हिले बग़ैर अपनी बन्दूक़ में दो कारतूस और भरे तथा दूर जाकर समाप्त होनेवाली आवाज़ के इस नपे-तुले समयान्तरवाली उसी विलम्बित लय से दो धमाके और किये। इसके बाद उसने बन्दूक़ पर खोल चढ़ा दिया और पेड़ के उस ठूंठ तक चलकर आया।

उन दो व्यक्तियों में से अधिक उम्रवाले ने पूछा:

"यह क्यों? तुमने चार ही बार बंदूक़ क्यों दाग़ी?"

"यह रिवाज है," इवान इवानिच ने कहा, "कुत्ते के जीवन के ह वर्ष के लिए एक बार बदूक़ दाग़ी जाती है। बीम... चार वर्ष का था ऐसे क्षणों पर हर शिकारी अपनी टोपी उतार देता है और ख़ामोशी खड़ा हो जाता है।"

"अब ज़रा इस बात पर विचार तो करो!" छोटे ने शांतिपूर्वक अप उद्गार प्रकट करते हुए कहा, "यह ठीक ऐसा ही है जैसे कोई सचमु का संकट पड़ा हो।" ऐसा कहकर वह लम्बे डग भरता वाहन की तर गया, अन्दर घुसा और घुसते ही द्वार बन्द कर लिया।

इवान इवानिच अपने ठूंठ पर बैठ गया।

जंगल लगातार और नीरस स्वर में मर्मर ध्वनि कर रहा था, उसक यह आवाज़, लगभग शिशिर काल की जैसी ठण्डी, रूखी और बेचैन स सरसराहट थी। आसपास छिट-फुट स्थानों को छोड़ बर्फ़ कहीं नहीं थी उसे अब तक बरस जाना चाहिए था, पर ऐसा नहीं हुआ, उसने देर क दी। शायद इसी वजह से जंगल की मर्मर ध्वनि कान-खाऊ आवाज़ ब गयी, ऐसी अलसायी हुई कान-खाऊ आवाज़ बन गयी जिससे ऐसा जान पड़ता था मानो उस जंगल ने शिशिर को या वसन्त को फिर कभी देखने की उम्मीद ही छोड़ दी हो।

लेकिन अपने अंतिम दोस्त को खो देने के कारण उत्पन्न इस निविड़ता में इवान इवानिच को सहसा एक आन्तरिक ऊष्मा की अनुभूति हुई। वह तुरन्त समझ नहीं पाया कि वह था क्या। वह था, उन दो लड़कों का सम्पर्क। बीम, इस बात को स्वयं जाने बिना, उन्हें अपने मालिक के पास ले आया था। और वे फिर आनेवाले थे, एक बार नहीं, अनेक बार।

इवान इवानिच जब उस वाहन में सवार हुआ तो उसने लगभग अपने आपसे कहा:

"नहीं, यह सच नहीं है। वसन्त आयेगा। हिम-सुमन फिर खिलेंगे ...रूस के अपने शिशिर और अपने ही वसन्त हैं। हमारा रूस इसी तरह का है—यहां शिशिर भी अवश्य होगा और वसन्त भी अवश्य होगा।"

उसके इन शब्दों को सुनकर उन दो, अपेक्षाकृत सीधे-सरल, कुत्ते-पकड़नेवालों को लगा होगा कि इवान इवानिच एक विचित्र व्यक्ति है।

* * *

वापस लौटते समय उन दो में से कम उम्र के युवा व्यक्ति ने एक छोटे से गांव, जो मुख्य सड़क से थोड़ी ही दूर था, के सामने अनपेक्षित रूप से गाड़ी रोकी, वाहन का द्वार खोला और झबरी को बाहर निकलने दिया।

"अब मैं यह काम नहीं चाहता। मैं इसे नहीं करूंगा," उसने कहा, "जा, भाग जा कुत्ते, इस गांव में अपने लिए एक घर खोज ले। वहां तू बिल्कुल ठीक-ठाक रहेगा।"

"तुम क्या कर रहे हो?!" अधिक उम्रवाला व्यक्ति केबिन से चिल्लाया, "वे जानते हैं कि यहां दो कुत्ते थे।"

"उनमें से एक मर गया और दूसरा भाग गया—बस सारा क़िस्सा यही है, इसके अलावा और कुछ नहीं। अब मैं यह काम नहीं करूंगा। नहीं करूंगा। और बस सारी बात यहीं पर ख़तम!"

झबरी मुख्य सड़क से भागी, बैठी और जाते हुए वाहन को ताज्जुब से देखती रही। फिर उसने चारों ओर देखा और अपनी ही इच्छा से गांव की तरफ़, उस तरफ़ चल पड़ी जहां लोग रहते थे। समझदार कुतिया।

इवान इवानिच को जंगल में ही यह मालूम हो गया था कि कुत्ते-पकड़नेवालों में कम उम्रवाला जवान व्यक्ति इवान कहलाता था और उसका साथी भी इवान ही था। वे तीनों इवान थे—यह एक दुर्लभ संयोग था। इससे वे एक दूसरे के और ज़्यादा क़रीब आ गये थे। वे तीनों समान रूप से जानते थे कि उन सबने एक ऐसे कुत्ते को दफ़नाया था जो कुत्ते के क़ैदख़ाने को बर्दाश्त नहीं कर सका। कभी-कभी ऐसा होता है कि लोग किसी महान उद्देश्य की ख़ातिर एक दूसरे के निकट आते हैं और फिर कभी न मिलने के लिए जुदा हो जाते हैं, और ऐसा भी होता है कि वे किसी नितांत छोटी बात से एकता के सूत्र में बंधते हैं और उनकी दोस्ती जीवन पर्यंत बनी रहती है।

जब इवान इवानिच गाड़ी से उतरा और उसने वायदे के मुताबिक युवा इवान को पांच रूबल दिये तो इवान ने अपना हाथ परे हटा लिया और फिर उन्हीं शब्दों में उत्तर दिया:

"अब मैं यह काम नहीं करना चाहता। मैं इसे नहीं करूंगा। बस इतनी सी बात है और कुछ नहीं!"

अब यह बात साफ़ ज़ाहिर हो गयी थी कि वह बीम की मृत्यु
लिए अपने को दोषी समझता था; उसके लिए यह मृतक की फटकार
और यह सबसे बुरी फटकार होती है। क्योंकि मृतक न तो माफ़ कर स
हैं न उन पर दया कर सकते हैं जिन्होंने उनके विरुद्ध पाप किये हैं अ
इसके लिए पश्चाताप कर चुके हैं। लेकिन युवा इवान ने अपनी ग़ल
को आवश्यकता से अधिक गहराई से महसूस किया था और यह उस
प्रतिष्ठा को बढ़ानेवाली बात थी। यह एक वफ़ादार और निष्ठावान कु
द्वारा इस पृथ्वी पर छोड़ा गया एक और छोटा सा चिन्ह था। लेकि
प्रौढ़ इवान को अन्तर्विवेक की किसी ख़ास पीड़ा का अनुभव नहीं हुआ
उसने इवान इवानिच के दिये हुए पांच रूबल स्वीकार कर लिये, उ
कृतज्ञतापूर्वक अपनी बग़ल की जेब में डाल लिया। लेकिन इसके लिए उ
दोष देने का कोई आधार नहीं है; उसने उस चीज़ का भुगतान प्रा
किया जो उसे मिलना चाहिए था और बीम को पकड़ने में वह अप
कर्तव्य पूरा कर रहा था।

...उसी दिन सेम्योन पेत्रोविच ने एक खोज का आयोजन किया
पहली चीज़ समाचारपत्रों में प्रकाशित एक घोषणा थी: "गुमशुदा कुत्ता
सेटर जाति का सफ़ेद और एक कान काला। उसका नाम बीम है
असाधारण बुद्धि का प्रशिक्षित कुत्ता। यदि कोई उसके बारे में कुछ जानत
हो तो उससे प्रार्थना की जाती है कि यह निम्नांकित पते पर सूचित करे
उसे एक ख़ासा बड़ा पुरस्कार प्रदान किया जायेगा..."

वह बड़ा नगर बीम के बारे में बातें करने लगा। टेलिफ़ोनों के
घंटियां लगातार बजतीं, हमदर्द पाठकों की चिट्ठियों पर चिट्ठियां आतीं;
गुमशुदा कुत्ते की खोज में संदेशवाहक इधर-उधर भागते-फिरते।

इस तरह बीम का नाम दो बार फैला, एक बार उसके जीवन के
दौरान एक पागल कुत्ते के रूप में और दूसरी बार, उसके मरणोपरान्त
"असाधारण बुद्धि के प्रशिक्षित कुत्ते" के रूप में। बीम की बाद की इस
प्रसिद्धि में सेम्योन पेत्रोविच का योगदान संदेह से परे है।

लेकिन सम्पूर्ण शिशिर काल में तथा बाद में भी बीम का किसी को
कोई चिन्ह नहीं मिला। उन्हें कौन बताता? युवा इवान ने क्वारेंटाइन-
स्टेशन में अपना इस्तीफ़ा दे दिया और इस विज्ञापन का, स्पष्ट कारण
से, कोई उत्तर नहीं दिया; प्रौढ़ इवान को इवान इवानिच ने आगाह कर

दिया था कि वह इस बारे में एक भी शब्द न बोले। इनके अलावा और किसी को भी यह पता नहीं था कि बीम जंगल में सो रहा है, तुषार से अभी-अभी जमी मिट्टी में, जिसमें अब बर्फ़ बिखरी हुई है और कि अब उसे कोई भी फिर कभी नहीं देख सकेगा।

उस साल का शिशिर बड़ा प्रचंड था और उसमें दो काली आंधियां आयी थीं। उन आंधियों के बाद मैदानों का स्वच्छ श्वेत हिम बिल्कुल काला पड़ गया था। लेकिन जंगल के बीच जिस खुली जगह को हम इतनी अच्छी तरह से जानते हैं वह स्वच्छ श्वेत बनी रही। उसे जंगल ने बचाया था।

सत्रहवां अध्याय

नव जीवन का उच्छ्वास

(उपसंहार के स्थान पर)

वसन्त का फिर आगमन हुआ। सूरज बाहर निकला और उसने शिशिर को दूर भगा दिया। वह अपने कमज़ोर, पसीजते पैरों पर, विपन्न दशा में घिसटता चला गया। बूढ़े शिशिर के पीछे-पीछे, उसके श्वेत हिमानी वस्त्रों में छेद करते, उन्हें फाड़-फाड़कर, सफ़ेद चीथड़ों की गंदी पट्टियों में तब्दील करते गर्म दिनों की भीड़ सी चली आयी। वसन्त मरणासन्न शिशिर के प्रति हमेशा निष्ठुर होता है।

जब पिघली बर्फ़ से उत्पन्न बाढ़ों का वेग शांत हुआ, फिर केवल एक मंद धारा जैसा रह गया और जब रात को वे धाराएं लगभग समाप्त ही हो गयीं तभी वसन्त आया, देर से, मगर शांत वसन्त।

"इस तरह का वसन्त अच्छी फ़सल देता है," यह बात ख्रिसान अंद्रेयेविच ने कुछ समय पहले तब कही थी जब वह और अल्योशा रातभर के लिए इवान इवानिच के साथ टिके हुए थे।

वे शीघ्र ही भेड़ों को चरागाहों को हांकेंगे, लेकिन जब तक छुट्टियां नहीं होंगी तब तक अल्योशा सिर्फ़ सुबह के समय पिता के साथ उन्हें विदा करेगा और शाम के समय उन्हें गांव में घर पहुंचते हुए देखेगा।

अल्योशा कई बार अकेले ही शहर आया था। वह और तोलिक – जो दोनों अच्छे लड़के थे – दिन का समय बीम की खोज में बिताते। लेकिन

जब एक दिन वे सब इवान इवानिच के घर पर चाय पी रहे थे तो ख्रिस
अंद्रेयेविच ने निम्नांकित राय ज़ाहिर की :

"जब अख़बारों में सूचना प्रकाशित होने के बाद भी किसी ने क
ख़बर नहीं दी है, तो कोई उसे बहुत दूर उठा ले गया होगा। मातृभू
रूस एक बहुत बड़ा देश है—उसे खोजने की कोशिश करना और खो
लेना बहुत कठिन है। यदि उसे कोई क्षति पहुंची होती तो कोई न को
उस विज्ञापन का उत्तर देता! वह कहता : 'मुझे आपको बतलाते हु
खेद हो रहा है कि आपका कुत्ता मर गया है, मैंने उसे अमुक-अमुक स्था
पर देखा था।' इसलिए मुख्य बात यह है कि वह ज़िन्दा है। खो जा
पर हर किसी को उसका कुत्ता वापस नहीं मिलता। इस सब का कु
प्रयोजन यह है कि हम इस बारे में कुछ नहीं कर सकते।" उसने इवा
इवानिच की ओर इवान इवानिच ने उसकी ओर आपसी समझ की नज़र
से देखा। ख्रिसान अंद्रेयेविच ने आगे कहा, "इसलिए लड़को, अब आ
खोज करना व्यर्थ है। क्यों इवान इवानिच यह ठीक है ना?"

इवान इवानिच ने सिर हिलाकर हामी भरी।

फिर उस दिन से खोज का काम बन्द कर दिया गया। केवल या
बाक़ी रही और उन लड़कों के जीवन पर्यंत बनी रही। शायद, कई वर्ष
बाद हमारे लड़के अपने बच्चों को बीम के बारे में बतायेंगे। आख़िर
ऐसा कोई पिता या पितामह नहीं होता जो अपने बच्चों या नाती-पोत
को हंसी की या दुख की वे घटनाएं बताने का अवसर चूकता हो जो उसके
लड़कपन में उसके साथ घटी हों। और तब वे युवजन अपना ख़ुद क
कुत्ता रखना चाहेंगे।

जब वे वहां से चले तो ख्रिसान अंद्रेयेविच की जैकेट के अन्दर गड़रिया
कुत्ते की जाति का महीनेभर का एक पिल्ला भी था जो उसे इवान इवानिच
ने उपहार स्वरूप भेंट किया था। अल्योशा ख़ुशी से फूला न समाता था

...इवान इवानिच के कमरे की फ़र्श में एक नया पिल्ला एक पुराने
जूते से खेल रहा था। उसका नाम भी बीम था और वह इंगलिश सेटर
जाति के लाक्षणिक रंगोंवाला असली नस्ल का कुत्ता था। उसे इवान
इवानिच ने "हम दो की साझेदारी में"—अपने तथा तोलिक के लिए
ख़रीदा था।

लेकिन वह अपने पुराने दोस्त को कभी नहीं भूलेगा। वह शिकार

की उन उषाग्रों को नहीं भूलेगा जो बीम ने उसे दी थीं, वह भलमनसाहत की प्रकृति तथा सर्व-क्षमाशील मैत्री को भी नहीं भूल सकता। अपने वफ़ादार दोस्त तथा उसकी दुखद नियति उस बूढ़े व्यक्ति को चिंतित करती थी। अतः, एक दिन वह जंगल के बीच उसी खुले स्थान पर आया और पेड़ के उसी पुराने ठूंठ पर बैठकर इधर-उधर देखने लगा। वह जंगल की ध्वनि सुनने के लिए आया था।

वह एक असाधारण शांत वसन्ती दिन था।

आकाश ने उस खुली जगह में हर जगह हिम-सुमन बिखेर दिये थे (पृथ्वी पर आकाश की बूंदें!)। यह एक ऐसा चमत्कार था जो इवान इवानिच के जीवन में कई बार हुआ था। और अब फिर हो रहा था, शांत परन्तु अपनी सच्ची सरलता में सशक्त और जीवन के जन्म की—वसन्त की—अप्रतिम नवीनता में हमेशा ही हैरतअंगेज़।

जंगल खामोश था। स्वर्गिक छिड़काव से सम्पृक्त तथा अभी तक अनखुली पत्तियों के जिह्वासम चमकीले व शिथिल सुकुमार सिरों पर पड़ती सूर्य की किरणों से आंदोलित वह जंगल अपनी तंद्रा से अभी जाग ही रहा था। इवान इवानिच को ऐसा प्रतीत हुआ कि वह एक नीले फ़र्श, नीले गुम्बद और जीवित बलूत-वृक्षों के स्तम्भोंवाले एक शानदार मंदिर में बैठा है। वह स्वप्नवत था।

लेकिन सहसा... उसका क्या अर्थ हो सकता था? उच्छ्वास जैसी एक ध्वनि जंगल के ऊपर से गुज़री। वह राहत की सांस से बहुत मिलती-जुलती थी, इस बात की राहत कि अनेक दिनों की प्रतीक्षा के बाद वृक्षों में जीवन लौट रहा है और फूटती हुई पत्र-कलिकाओं की नन्ही जिह्वाओं में अपने आपको प्रदर्शित कर रहा है। अन्यथा सब शाखाएं एक साथ क्यों आन्दोलित हुईं और उसके तुरन्त बाद नन्ही चिड़ियों की चहक, कठफोड़वे का सुखद संगीत-मय ताल वाद्य-वादन तथा अपने सहचर को पुकारना और जंगल को प्रेम के समारम्भ की सूचना देना क्यों कर प्रारम्भ हुआ? वन-कुक्कुट की तरह ही वह भी वसन्त की भव्य सिम्फ़नी के प्रारम्भिक स्वरों की गुंजार करनेवाला पहला प्राणी होता है। लेकिन वन-कुक्कुट कोमलता से पुकारता है और धुंधलके में पुकारता है, जबकि कठफोड़वा, किसी पेड़ पर अपने खोखले को पा लेने के बाद अपनी प्रिय

शाखा से प्रफुल्लता के आदि वाद्य पर साहस और दृढ़ता से घोषणा क
है: "यह है, बिस्मयकारी-ई-ई है!"

तो स्पष्ट है कि जंगल का उच्छ्वास राहत की सांस थी क्योंकि अन्
चमत्कार शुरू हो गया था, आशा-पूर्ति का समय पास आ गया थ
और पक्षियों ने इस महान और शक्तिशाली दानव को, अपने परित्र
को समुचित उत्तर दिया। इवान इवानिच ने उस उच्छ्वास को साफ़-स
सुना। यही वह चीज़ थी जिसके लिए वह यहां आया था, जंगल अ
उसके प्राणियों की आवाज़ सुनने के लिए।

और अगर उस खुली जगह के किनारे, एक स्थान पर एक पौधरहि
नीलिमा से वंचित और केवल ताज़ी मिट्टी तथा पिछले साल की पत्ति
से ढका स्थल न होता तो वह सुखी हो गया होता। वसन्त में ज़मीन
ऐसे स्थलों को देखना, ख़ास तौर से तब जब कि प्रकृति का सारा उल्ल
फूट पड़ने को तैयार हो, दुखदायी काम है।

लेकिन सद-प्रकृति की स्नेहशील आंखो से एक नया नन्हा बीम इवा
इवानिच की तरफ़ निहार रहा था। वह तोलिक को पहले ही मोहित क
चुका था। उस नन्हे बीम ने अपना जीवन ऐसे शुरू किया था—एक लड़
के हृदय पर सहृदयता से अधिकार करके।

"जीवन में उसका क्या होगा?" इवान इवानिच ने सोचा, "
नहीं चाहता कि इस नये बीम पर वही गुज़रे जो मेरे दोस्त को भुगतन
पड़ा था। मैं यह नहीं चाहता। नहीं चाहता।"

वह उठकर खड़ा हो गया, पीठ सीधी की और लगभग चिल्लात
हुआ बोला:

"नहीं!"

जंगल ने एक संक्षिप्त अनुगूंज से कई बार इसका उत्तर दिया
"नहीं... नहीं..." और फिर ख़ामोश हो गया।

यह वसन्त था।

पृथ्वी पर आकाश की बूंदें – हिम-सुमन – थीं।

शांति थी।

इतनी शांति कि वहां कहीं कोई बुराई नहीं हो सकती थी।

पर इसके बावजूद... जंगल में कहीं बंदूक का एक धमाका गूंजा!
फिर दूसरा और फिर तीसरा। तीन बार!

कौन ? क्यों ? किस लिए ?

शायद किसी हृदयहीन ने उस कठफोड़वे को घायल कर दिया हो और फिर उसे दो और गोलियां दाग़कर ख़त्म कर रहा हो...

या किसी शिकारी ने किसी ऐसे कुत्ते को दफ़नाया हो जो केवल तीन वर्ष का रहा हो।

"नहीं, निर्दोष शांति यहां भी नहीं है, जीवित बलूत-वृक्षों के स्तम्भों-वाले इस नीले मंदिर में भी नहीं है," इवान इवानिच ने मन ही मन कहा। वह अपने श्वेत सिर से टोपी उतारे खड़ा था और आकाश की ओर निहार रहा था। वह इस प्रकार खड़ा था मानो प्रार्थना कर रहा हो, वसन्त के लिए प्रार्थना।

जंगल ख़ामोश था।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये :

प्रगति प्रकाशन,
१७, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।